

ओम शान्ति



दिव्य गुण माला

भाग - 3

अव्यक्त वाणी संकलन
1969 से 2015



शुभकामनाएँ एवं आशीर्वचन



भाग : 3

इस भाग में हम उन 14 गुणों के बारे में जानेंगे जो हमें ईश्वरीय जीवन में फेथफुल रहना सिखाते हैं। इस आध्यात्मिक जीवन में एकनामी और इकॉनॉमी से कैसे चियरफुल रह सर्विसएबुल बनना सिखाते हैं।

जो बच्चे ज्ञान की गुह्यता में जाते हैं, उनके अंदर सभी बातों का संतुलन आता है। वह गम्भीरता के साथ रमणीक रहते हैं और एकनामी के साथ इकॉनॉमी से चलते हैं। हर सेवा में वह इजी और अलर्ट रहने से मिलनसार होते हैं। बाबा के साथ फेथफुल बन चलने से वह फ्रॉकदिल से सेवा करते हैं, जिससे वह हमेशा चियरफुल रहते हैं और दूसरों को उनसे दिव्यता का अनुभव होता है। वह सदैव ईश्वरीय जीवन में दृढ़ता की शक्ति से विजय हासिल करते हैं।

इन 14 गुणों की गुह्यता में जाये और उन्हें मन-वचन-कर्म में उपयोग करें और चेक करे कि पुरुषार्थ में कितना फर्क पडता है, सफलता और विजय में कितनी प्रतिशत वृद्धि हुई।

धन्यवाद ।

परम आदरणीय नलिनी दीदी जी,
संचालिका, घाटकोपर सबझोन

दिव्य गुण माला -3

सूची

क्र.	गुण	पृष्ठ क्र.
1	इजी और अलर्ट	1
2	फेथफुल	4
3	फ्राकदिल	6
4	गम्भीरता , रमणीकता	7
5	गुह्यता	10
6	हर्षितमुखता	13
7	हिम्मत / साहस	40
8	होलिएस्ट / ऑनेस्ट	75
9	जिम्मेवारी	80
10	खुशी	81
11	क्षमा भाव	140

1. इज़ी और अलर्ट

17.11.69... ..बापदादा भी कई बार समझाते हैं कि सभी बातों में इज़ी रहो। जब खुद सभी में इज़ी रहेंगे तो सभी कार्य भी इज़ी होंगे। अपने को टाइट करने से कार्य में भी टाइटनेस आ जाती है।

22.01.70... ..ड्युटी की ड्रेस बदलकर घर की ड्रेस पहन लेते हो जैसे ही सर्विस प्रति यह शरीर रूपी वस्त्र का आधार लिया फिर सर्विस समाप्त हुई और इन वस्त्रों के बोझ से हल्के और न्यारे हो जाने का प्रयत्न करो। एक सेकेण्ड में चोले से अलग कौन हो सकेंगे? अगर टाइटनेस होगी तो अलग हो नहीं सकेंगे। कोई भी चीज़ अगर चिपकी हुई होती है तो उनको खोलना मुश्किल होता है। हल्के होने से सहज ही अलग हो जाता है। जैसे ही अगर अपने संस्कारों में कोई भी इज़ीपन नहीं होगा तो फिर अशरीरीपन का अनुभव कर नहीं सकेंगे। सुनाया था ना कि क्या बनना है। इज़ी और एलर्ट। ऐसे भी नहीं कि ऐसा इज़ी रहे जो माया भी इज़ी आ जाये। कोई समय इज़ी रहना पड़ता है, कोई समय एलर्ट रहना पड़ता है। तो इज़ी और एलर्ट, ऐसे रहने वाले ही इस अभ्यास में रह सकेंगे।

15.03.1981... जब संस्कार, संस्कार में टकराते हैं वह भी सीन अच्छी होती है। फिर जैसे फारेन वालों की बाडी इलास्टिक होती है, जहाँ मोड़ने चाहें मोड़ लेते, तो वर्तमान समय अपने को मोड़ने में भी इज़ी होते जा रहे हैं।

11.11.1989... जिसके संस्कार इज़ी रहने के होते हैं, उनको हर कार्य सहज अनुभव होने के कारण इज़ी रहते हैं। संस्कार टाइट हैं तो सरकमस्टांस भी टाइट हो जाते हैं, सम्बन्ध-सम्पर्क वाले भी टाइट व्यवहार करते हैं। टाइट अर्थात् खींचातान में रहने वाले। तो सभी ड्रामा के हर दृश्य को देख-देख हर्षित रहने वाले हो ना। वा कभी अच्छे-बुरे के आकर्षण में आ जाते हो? न अच्छे में, न बुरे में – किसी में आकर्षित नहीं होना है, सदैव हर्षित रहना है।

08.04.1992... जैसे स्थूल में जहाँ चाहते हो बैठ जाते हो ना। सोचा और बैठा कि युद्ध करनी पड़ती है - बैठें या न बैठें? तो यह मन बुद्धि की बैठक भी ऐसी इज़ी होनी चाहिए। जब चाहो तब टिक जाओ। इसको कहा जाता है - राजयोगी राजा। राजा बनने का युग है। राजा क्या करता है? आर्डर करता है ना? राजयोगी जैसे मन-बुद्धि को आर्डर करे, जैसे अनुभव करें।

21.11.1992... वर्तमान समय कर्मों की गति के ज्ञान में बहुत इज़ी हो गये हैं। लेकिन यह छोटे-छोटे सूक्ष्म पाप श्रेष्ठ सम्पूर्ण स्थिति में विघ्न रूप बनते हैं। इज़ी बनने की निशानियां क्या हैं? वह सदा ऐसा ही सोचते-समझते कि यह तो और भी करते हैं, यह तो आजकल चलता ही है। या तो अपने आपको हल्का करने के लिए यही कहेंगे कि-मैंने हंसी में कहा, मेरा भाव नहीं था, ऐसे ही बोल दिया। यह विधि सम्पूर्ण सिद्धि को प्राप्त होने में सूक्ष्म विघ्न बन जाता है। इसलिए ज्ञान तो बहुत मिल गया है, रचता और रचना के ज्ञान को सुनना, वर्णन करना बहुत स्पष्ट हो गया है। लेकिन कर्मों की गुह्य गति का ज्ञान बुद्धि में सदा स्पष्ट नहीं रहता, इसलिए इज़ी हो जाते हैं।

26.01.1995... समय प्रति समय पुरुषार्थ को बहुत सहज कर दिया है, इज़ी कर लिया है। स्वभाव को इज़ी नहीं करते, स्वभाव में टाइट होते हैं और पुरुषार्थ में इज़ी हो जाते हैं। फिर सोचते हैं सहज योग है ना! लेकिन जीवन में, पुरुषार्थ में इज़ी रहना-इसको सहज योग नहीं कहा जाता। क्योंकि इज़ी रहने से शक्तियाँ मर्ज हो जाती हैं, इमर्ज नहीं होती।

30.03.2000... एक संस्कार या नेचर कहो, नेचर तो हर एक की अपनी-अपनी है लेकिन सर्व का स्नेही और सर्व बातों में, सम्बन्ध में सफल, मन्सा में विजयी और वाणी में मधुरता तब आ सकती है जब इज़ी नेचर हो। अलबेली नेचर नहीं। अलबेलापन अलग चीज़ है। इज़ी नेचर उसको कहा जाता है - जैसा समय, जैसा व्यक्ति,

जैसा सरकमस्टांश उसको परखते हुए अपने को इज़ी कर देवे। इज़ी अर्थात् मिलनसार। टाइट नेचर बहुत टू-मच आफ़िशियल नहीं, आफ़ीशियल रहना अच्छा है लेकिन टू-मच नहीं और समय पर जब समय ऐसा है, उस समय अगर कोई आफ़िशियल बन जाता है तो वह गुण के बजाए, उनकी विशेषता उस समय नहीं लगती। अपने को मोल्ड कर सके, मिलनसार हो सके, छोटा हो, बड़ा हो। बड़े से बड़ेपन में चल सके, छोटे से छोटेपन में चल सके। साथियों में साथी बनके चल सके, बड़ों से रिगार्ड से चल सके। इज़ी मोल्ड कर सके, शरीर भी इज़ी रखते हैं ना तो जहाँ भी चाहें मुड जाते हैं और टाइट होगा तो मुड नहीं सकेगा। अलबेला भी नहीं, इज़ी है तो जहाँ चाहे इज़ी हो जाए, अलबेला हो जाए। नहीं। बापदादा ने कहा ना इज़ी हो जाओ तो इज़ी हो गये, ऐसे नहीं करना। इज़ी नेचर अर्थात् जैसा समय वैसा अपना स्वरूप बना सके।

03.02.2002... अगर सेवा से दुआयें मिलती हैं तो दुआयें मिलने का अनुभव यही होगा जो स्वयं भी सम्बन्ध में आते, कार्य करते डबल लाइट (हल्का) होगा, बोझ नहीं महसूस करेगा और जिनकी सेवा की, सम्बन्ध-सम्पर्क में आये वह भी डबल लाइट फील करेगा। अनुभव करेगा कि यह सम्बन्ध में सदा हल्का अर्थात् इज़ी है, भारी नहीं रहेगा। सम्बन्ध में आऊं, नहीं आऊं... लेकिन दुआयें मिलने के कारण दोनों तरफ नियम प्रमाण, ऐसा इज़ी भी नहीं - जैसे कहावत है, ज्यादा मीठे पर चींटियाँ बहुत आती हैं। तो इतना इज़ी भी नहीं, लेकिन डबल लाइट रहेगा। तो बापदादा कहते हैं - अपने खजाने चेक करो। समय दे रहे हैं। अभी समाप्ति का बोर्ड नहीं लगा है। इसलिए चेक करो और बढ़ते चलो।

15.12.2007... जैसे अपनी दादी को देखा अचानक एवररेडी। हर स्वभाव में, हर कार्य में इज़ी रहे हैं। सम्पर्क में इज़ी, स्वभाव में इज़ी, सेवा में इज़ी, सन्तुष्ट करने में इज़ी, सन्तुष्ट रहने में इज़ी। इसीलिए बापदादा समय की समीपता का बार-बार इशारा दे रहा है। स्व-पुरुषार्थ का समय बहुत थोड़ा है, इसलिए अपने जमा के खाते को चेक करो।

31.12.2010... 5 स्वरूप जो सुनाये थे, वह भी जब चाहो तो सेकण्ड में वह स्वरूप बन सकते हो? यह प्रैक्टिस करके अपने आपका मालूम पड़े कि मैं जो चाहूँ उस स्थिति में सेकण्ड में रह सकता हूँ, या टाइम लगता है। अभ्यास करते-करते यह ऐसा हो जायेगा जैसे अभी द्वापर कलियुग के अभ्यास में देह अभिमान में आना नेचरल हो गया है ऐसे जिस स्वरूप में भी स्थित होने चाहो वह ऐसा ही इज़ी हो जाए क्योंकि समय ऐसा आने वाला है जिसमें आपको इस अभ्यास की आवश्यकता पड़ेगी।

27.11.2012... अभ्यास करते-करते यह ऐसा हो जायेगा जैसे अभी द्वापर कलियुग के अभ्यास में देह अभिमान में आना नेचरल हो गया है ऐसे जिस स्वरूप में भी स्थित होने चाहो वह ऐसा ही इज़ी हो जाए क्योंकि समय ऐसा आने वाला है जिसमें आपको इस अभ्यास की आवश्यकता पड़ेगी।

मिलनसार

8.6.72... जितनी गम्भीरता उतना ही मिलनसार भी हों। ऐसे भी नहीं - सिर्फ गम्भीरमूर्त हों। मिलनसार अर्थात् सर्व के संस्कार और स्वभाव से मिलने वाला।

19.3.2000 बापदादा सभी बच्चों में यह विशेषता देखने चाहते हैं कि सेवा के साथ निर्मानता, मिलनसार - यह पुण्य का खाता जमा होना बहुत-बहुत आवश्यक है। फिर नहीं कहना कि मैंने तो बहुत सर्विस की, मैंने तो यह किया, मैंने तो यह किया, मैंने तो यह किया, लेकिन नम्बर पीछे क्यों? इसलिए बापदादा पहले से ही इशारा देते हैं कि वर्तमान समय यह पुण्य का खाता बहुत-बहुत जमा करो। ऐसे नहीं सोचो - यह तो है ही ऐसा, यह तो बदलना

नहीं है। जब प्रकृति को बदल सकते हो, एडजेस्ट करेंगे ना प्रकृति को? तो क्या ब्राह्मण तो एडजेस्ट नहीं कर सकते हो? अगेन्स्ट को एडजेस्ट करो, यह है – निर्माण और निर्माण का बैलेन्स। सुना!

30.3.2000... ..बापदादा ने देखा है कि एक संस्कार या नेचर कहो, नेचर तो हर एक की अपनी-अपनी है लेकिन सर्व का स्नेही और सर्व बातों में, सम्बन्ध में सफल, मन्सा में विजयी और वाणी में मधुरता तब आ सकती है जब इज़ी नेचर हो। अलबेली नेचर नहीं। अलबेलापन अलग चीज़ है। इज़ी नेचर उसको कहा जाता है - जैसा समय, जैसा व्यक्ति, जैसा सरकमस्टांश उसको परखते हुए अपने को इज़ी कर देवे। इज़ी अर्थात् मिलनसार। टाइट नेचर बहुत टू-मच आफ़िशियल नहीं, आफ़िशियल रहना अच्छा है लेकिन टू-मच नहीं और समय पर जब समय ऐसा है, उस समय अगर कोई आफ़िशियल बन जाता है तो वह गुण के बजाए, उनकी विशेषता उस समय नहीं लगती। अपने को मोल्ड कर सके, मिलनसार हो सके, छोटा हो, बड़ा हो। बड़े से बड़ेपन में चल सके, छोटे से छोटेपन में चल सके। साथियों में साथी बनके चल सके, बड़ों से रिगार्ड से चल सके। इज़ी मोल्ड कर सके, शरीर भी इज़ी रखते हैं ना तो जहाँ भी चाहें मुड जाते हैं और टाइट होगा तो मुड नहीं सकेगा। अलबेला भी नहीं, इज़ी है तो जहाँ चाहे इज़ी हो जाए, अलबेला हो जाए। नहीं। बापदादा ने कहा ना इज़ी हो जाओ तो इज़ी हो गये, ऐसे नहीं करना। इज़ी नेचर अर्थात् जैसा समय वैसा अपना स्वरूप बना सके।

18.1.2008... ..कुमारी अर्थात् बापदादा के सेवा साथी और निर्विघ्न साथी। अपने को एडजेस्ट करने वाली। एडजेस्ट करने वाली हो ना कि अगेन्स्ट होने वाली हो। किसी वेन प्रति भी अगेन्स्ट नहीं हो, एडजेस्ट होने वाली। अच्छा तो ऐसी कुमारियां बनेंगी, हाथ उठाओ। एडजेस्ट होने वाली। सोच के हाथ उठाओ। तो सबसे मिलनसार। सबसे अपने को साथी बनाने वाली। निर्विघ्न। तब तो बहुत हैण्डस बन सकते हैं।

20.3.2012... ..बापदादा की एक आशा रह गई है और भी। ज़ोन वालों के प्रति। वह कौन सी है? हर सेन्टर यहखुशखबरी लिखे कि हमारा सेन्टर निर्विघ्न है। मिलनसार है।

2. फेथफुल

26.3.70..... महारथियों के मुख से कब शब्द भी नहीं निकलेगा। कब करेंगे वा अब करेंगे। कब शब्द शोभता नहीं है। कब शब्द ही कमजोरी सिद्ध करता है। एक होता करके ही दिखायेंगे, एक होता है हां करेंगे, सोचेंगे। हिम्मत है, लेकिन फ़ेथ नहीं। फ़ेथफुल के बोल ऐसे नहीं होते। फ़ेथफुल का अर्थ ही है निश्चयबुद्धि। मन, वचन, कर्म हर बात में निश्चयबुद्धि। सिर्फ ज्ञान और बाप का परिचय, इतने तक निश्चयबुद्धि नहीं। लेकिन उनका संकल्प भी निश्चयबुद्धि,

वाणी में भी निश्चय, कभी भी कोई बोल हिम्मतहीन का नहीं। उसको कहा जाता है महारथी।

1.4.78... .. आज के संगठन में बापदादा किन्हों को देख रहे हैं—जो आदि से अन्त तक बाप-दादा के सदा फ़ेथफुल, सदा बाप के कदमों पर कदम रखने वाले, सदा के सहयोगी और साथी हैं। हर समय बाप और सेवा में मगन रहने वाले, सदा श्रेष्ठ मर्यादाओं की लकीर से संकल्प में भी बाहर न निकलने वाले मर्यादा पुरुषोत्तम, ऐसे बच्चे सदा हर सेकेण्ड हर संकल्प में जन्म-जन्म साथ रहते हैं। जो अभी बाप से वायदा निभाते हैं कि तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से हर सेकेण्ड हर कर्म में साथ निभाऊँ, ऐसे वायदे को निभाने वाले सपूत बच्चों को बाप भी जन्म-जन्मान्तर साथी भव का वरदान अभी देते हैं। साकार बाप के साथ भिन्न नाम रूप से पूज्य में भी साथी और पुजारीपन में भी साथी। ज्ञानी तू आत्मा बनने में भी साथी और भक्त आत्मा बनने में भी साथी। ऐसे सदा साथी का वा तत्वम् का वरदान ऐसी विशेष आत्माओं को अभी प्राप्त होता है।

1.4.78... .. आज के संगठन में बापदादा किन्हों को देख रहे हैं—जो आदि से अन्त तक बाप-दादा के सदा फ़ेथफुल, सदा बाप के कदमों पर कदम रखने वाले, सदा के सहयोगी और साथी हैं। हर समय बाप और सेवा में मगन रहने वाले, सदा श्रेष्ठ मर्यादाओं की लकीर से संकल्प में भी बाहर न निकलने वाले मर्यादा पुरुषोत्तम, ऐसे बच्चे सदा हर सेकेण्ड हर संकल्प में जन्म-जन्म साथ रहते हैं। जो अभी बाप से वायदा निभाते हैं कि तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से हर सेकेण्ड हर कर्म में साथ निभाऊँ, ऐसे वायदे को निभाने वाले सपूत बच्चों को बाप भी जन्म-जन्मान्तर साथी भव का वरदान अभी देते हैं। साकार बाप के साथ भिन्न नाम रूप से पूज्य में भी साथी और पुजारीपन में भी साथी। ज्ञानी तू आत्मा बनने में भी साथी और भक्त आत्मा बनने में भी साथी। ऐसे सदा साथी का वा तत्वम् का वरदान ऐसी विशेष आत्माओं को अभी प्राप्त होता है।

10.12.78... .. ड्रामा अनुसार जो विशेषता प्राप्त है उसे सदा कार्य में लगाओ तो औरों की भी विशेषता दिखाई देगी। विशेषता न देख बातों को देखते हो इसलिए हार होती है। हरेक की विशेषता को स्मृति में रखो एक दो में फ़ेथफुल रहो तो उनकी बातों का भाव बदल जावेगा। अगर आपस में दो मित्र होते हैं और उनके बीच तीसरा उनकी कुछ ग्लानि करने आता तो वह उसके भाव को बदल देते हैं। जैसे आपको कोई ब्रह्मा बाप के लिए कहे कि यह क्या, यह तो गाली देते हैं – लेकिन तुम उन्हें निश्चय से समझावेंगे कि यह गाली नहीं है यह तो स्पष्टीकरण है।

जहाँ निश्चय होता है वहाँ शब्द का भाव बदल साधारण बात हो जाती है। हरेक की विशेषता को देखो तो अनेक होते भी एक दिखाई देंगे। एक मत संगठन हो जावेगा।

3. फराकदिल

04.05.73...कोई-कोई आर्टिस्ट अच्छे होते हैं। लेकिन फ़राकदिल नहीं होते तो कुछ कमी कर देते हैं। तो जैसे आर्टिस्ट अच्छे हों, सामान भी बहुत अच्छा मिला हुआ हो तो वैसे फ़राकदिल भी बनो। अर्थात् अपने संकल्प, कर्म, वाणी, समय, श्वास सभी खजानों को फराकदिल से यूज़ (use) करो तो तस्वीर अच्छी बन जायेगी। कइयों के पास होते हुए भी वे यूज़ नहीं करते हैं। एकॉनामी (economy) करते हैं। इसमें जितना फ़राकदिल बनेंगे उतना फर्स्ट क्लास (first class) बनेंगे।

05.05.77... 'सब कर दो राम हवाले' – अब जब करने का समय आया तब अपने हवाले क्यों करते? मेरा स्वभाव, मेरा संस्कार – यह मेरा कहां से आया? अगर मेरा खत्म, तो नष्टो मोहा हो गये। जब मोह नष्ट हो गया तो सदा स्मृति स्वरूप हो जायेंगे। सब कुछ बाप के हवाले करने से सदा खुश और हल्के रहेंगे। देने में फ़राकदिल बनो, अगर पुरानी कीचड़पट्टी रख लेंगे तो बीमारी हो जाएगी।

20.06.77...फ़राकदिल से उदारचित्त होकर प्राप्ति के खजानों को बाँटते जाओ। उदारचित्त बनने से स्वयं का उद्धार सहज हो जाएगा।

4. गम्भीरता, रमणीकता

09.10.71... .. समझो – आपके ओरीजनल संस्कार आफिशल हैं; लेकिन समय, संगठन रमणीकता लाता है। तो यह भी कला होनी चाहिए जो स्वभाव को मिला सके। ऐसे ही 16 कला सम्पन्न बन सकेंगे।

08.06.72... .. कहाँ एकान्तवासी और कहाँ रमणीकता! शब्दों में तो बहुत अन्तर है, लेकिन सम्पूर्णता में दोनों की समानता रहे। जितना ही एकान्तवासी उतना ही फिर साथ-साथ रमणीकता भी होगी। एकान्त में रमणीकता गायब नहीं होनी चाहिए। दोनों समान और साथ- साथ रहें। आप जब रमणीकता में आते हो तो कहते हो अन्तर्मुखता से नीचे आ गये और अन्तर्मुखता में आते हो तो कहते हो आज रमणीकता कैसे हो सकती है? लेकिन दोनों साथ-साथ हों। अभी-अभी एकान्तवासी, अभी-अभी रमणीक।

19.9.72... .. वास्तविक गम्भीरता रमणीकता में समाई हुई है। वह तो अज्ञानी लोगों का गम्भीर रूप होगा तो बिल्कुल ही गम्भीर, रमणीकता का नाम-निशान नहीं होगा। लेकिन यथार्थ गम्भीरता का गुण रमणीकता के गुण सम्पन्न है। जैसे लोगों को भी समझाते हो कि – हम आत्मा शान्तस्वरूप हैं, लेकिन सिर्फ शान्तस्वरूप नहीं हैं लेकिन साथ-साथ आनन्द, प्रेम, ज्ञान सभी समाया हुआ हो।

18.06.73... .. दिव्य गुण ब्राह्मणों की स्वाभाविक चीज़ है अर्थात् ब्राह्मण-जीवन का स्वभाव सर्व दिव्यगुण हैं। गम्भीरता, रमणीकता, हर्षितमुखता, सहनशीलता, सन्तोष, यह ब्राह्मणों के जीवन का स्वभाव है और संस्कार है – 'विश्व के सेवाधारी।'

03.12.78... .. जैसे आवाज़ द्वारा रमणीकता का अनुभव करते हो, सुख का अनुभव करते हो ऐसे ही आवाज़ से परे अविनाशी सुख-स्वरूप रमणीक अवस्था का अनुभव करते हो! शान्त के साथ-साथ अति शान्त और अति रमणीक स्थिति का अनुभव है! स्मृति का स्विच आन किया और ऐसी स्थिति पर स्थित हुए। ऐसी रूहानी लिफ्ट की गिफ्ट प्राप्त है? सदा एवररेडी हो।

24.10.81... .. ब्रह्मा बाप की विशेषता सूरत में क्या देखी? गम्भीरता के चिह्न भी और मुस्कराहट भी। गम्भीरता अर्थात् अन्तर्मुखता और साथसाथ रमणीकता। अन्तर्मुखी की निशानी सदा सागर के तले में खोये हुए गम्भीरमूर्त्त। मननचिंतन करने वाला चेहरा और फिर रमणीक अर्थात् मुस्कराता हुआ चेहरा। तो दोनों ही लक्षण सूरत में देखे ना! ऐसे आपकी सूरत भी ब्रह्मा बाप के कापी स्वरूप हो। सूरत और सीरत से ब्रह्मा बाप दिखाई दे।

14.03.82... .. जैसे पिकनिक में नमकीन भी चाहिए, मीठा भी चाहिए। और वैरायटी प्रकार का चाहिए तो जब भी अनुभव करने बैठते हो तो समझो अभी बापदादा से वैरायटी पिकनिक करने जा रहे हैं। पिकनिक का नाम सुनकर ही फुर्त हो जायेंगे। सुस्ती भाग जायेगी। वैसे भी आप लोगों को पिकनिक करना, बाहर में जाना अच्छा

लगता है ना! तो चले जाओ बाहर, कभी परमधाम में चले जाओ, कभी स्वर्ग में चले जाओ, कभी मधुवन में आ जाओ, कभी लण्डन सेन्टर में चले जाओ, कभी आस्ट्रेलिया पहुँच जाओ। वैरायटी होने से रमणीकता में आ जायेंगे।

21.04.83... .. मैं बाप का, बाप मेरा यही ज्ञान है ना! यही एक बात याद रखनी है। सदा मन में यही गीत चलता रहे – जो पाना था वह पा लिया। मुख का गीत तो एक घण्टा भी गायेँगे तो थक जायेंगे; लेकिन यह गीत गाने में थकावट नहीं होती। बाप का बनने से सब कुछ बन जाते हो, डांस करने वाले भी, गीत गाने वाले भी, चित्रकार भी, प्रैक्टिकल अपना फ़रिश्ते का चित्र बना रहे हो! बुद्धियोग द्वारा कितना अच्छा चित्र बना लेते हो। तो जो कहो वह सब कुछ हो। बड़े ते बड़े बिज़नेसमैन भी हो, मिलों के मालिक भी हो, तो सदा अपने इस आव्यूपेशन को स्मृति में रखो। कभी खान के मालिक बन जाओ तो कभी आर्टिस्ट बन जाओ, कभी डांस करने वाले बन जाओ...बहुत रमणीक ज्ञान है, सूखा नहीं है। कई कहते हैं क्या रोज़ वही आत्मा, परमात्मा का ज्ञान सुनते रहें, लेकिन यह आत्मा परमात्मा का सूखा ज्ञान नहीं है। बहुत रमणीक ज्ञान है, सिर्फ़ रोज अपना नया-नया टाइटिल याद रखो – मैं आत्मा तो हूँ लेकिन कौन सी आत्मा हूँ? कभी आर्टिस्ट की आत्मा हूँ, कभी बिज़नेसमैन की आत्मा हूँ... तो ऐसे रमणीकता से आगे बढ़ते रहो। बाप भी रमणीक है ना! देखो कभी धोबी बन जाता तो कभी विश्व का रचयिता, कभी ओबीडियन्ट सर्वेन्ट... तो जैसा बाप वैसे बच्चे... ऐसे ही इस रमणीक ज्ञान का सिमरण कर हर्षित रहो।

12.03.85... .. जहाँ भी जायेंगी तो सब क्या कहेंगे? बापदादा की यादप्यार लाई हो? तो जैसे बापदादा स्नेह की, सहयोग की शक्ति देते हैं, वैसे आप भी बाप से ली हुई स्नेह, सहयोग की शक्ति देते जाना। सभी को उमंग-उत्साह में उड़ाने के लिए कोई न कोई ऐसे टोटके बोलती रहना। सब खुशी में नाचते रहेंगे। रूहानियत की खुशी में सबको नचाना और रमणीकता से सभी को खुशी-खुशी से पुरुषार्थ में आगे बढ़ना सिखाना।

03.02.88... ..चाहे क्रिश्चियन हैं, चाहे मुस्लिम हैं लेकिन भारत की फ़िलाँसॅफी (दर्शन) को अन्दर से रिगार्ड देते हैं क्योंकि भारत की फ़िलाँसॅफी में सब प्रकार की रमणीकता है। ऐसे और धर्मों में नहीं है। कहानियों की रीति से, ड्रामा की रीति से जो भारत की फ़िलाँसॅफी को प्रसिद्ध करते हैं, वैसे और धर्मों में कहाँ भी नहीं है। इसलिए, अन्दर-ही-अन्दर जो एकदम कट्टर रहे हैं, वह अन्दर समझते हैं कि भारत की फ़िलाँसॅफी, उसमें भी आदि सनातन फ़िलाँसॅफी कम नहीं है। वह भी दिन आ जायेंगे जो सब कहेंगे कि अगर फ़िलाँसॅफी है तो आदि सनातन धर्म की है। हिन्दू शब्द से बिगड़ते हैं लेकिन आदि सनातन धर्म को रिगार्ड देंगे। गॉड एक है तो धर्म भी एक है, हम सबका धर्म भी एक है – यह धीरे-धीरे आत्मा के धर्म की तरफ़ आकर्षित होते जायेंगे।

19.03.88... .. रमणीक ज्ञान है। रमणीक अनुभव स्वतः ही सुस्ती को भगा देता है। यह तो कई कहते हैं ना – वैसे नींद नहीं आयेगी लेकिन योग में नींद अवश्य आयेगी। यह क्यों होता है? ऐसी बात नहीं कि थकावट है

लेकिन रमणीक रीति से और नैचरल रूप से बुद्धि को सीट पर सेट नहीं करते हो। तो सिर्फ एक रूप से नहीं लेकिन वैरायटी रूप से सेट करो। वही चीज़ अगर वैराइटी रूप से परिवर्तन कर यूज़ करते हैं तो दिल खुश होती है। चाहे बढ़िया चीज़ हो लेकिन अगर एक ही चीज़ बार-बार खाते रहो, देखते रहो तो क्या होगा? ऐसे, बीजरूप बनो लेकिन कभी लाइट-हाऊस के रूप में, कभी माइट-हाऊस के रूप में, कभी वृक्ष के ऊपर बीज के रूप में, कभी सृष्टि-चक्र के ऊपर टॉप पर खड़े होकर सभी को शक्ति दो। जो भिन्न-भिन्न टाइटल मिलते हैं, वह रोज़ भिन्न-भिन्न टाइटल अनुभव करो। कभी नूरे रत्न बन बाप के नयनों में समाया हूँ - इस स्वरूप की अनुभूति करो। कभी मस्तकमणि बन, कभी तख्तनशीन बन.. भिन्न-भिन्न स्वरूपों का अनुभव करो। वैराइटी करो तो रमणीकता आयेगी।

16.12.93... .. किसी की नेचर रमणीक है तो स्वतः ही रमणीकता चलती रहती है ना। उसको पता भी नहीं पड़ेगा कि मैंने क्या किया? कोई कहेगा तो भी कहेंगे कि मैं क्या करूँ, मेरी नेचर है। तो विशेषता की भी ऐसी नेचर हो जाये। कोई पूछे आपकी नेचर क्या है? तो सबके दिल से निकले कि हमारी नेचर है ही विशेषता की। साधारण कर्म की समाप्ति हो गई। क्योंकि मरजीवा हो गो ना। तो साधारणता से मर गये, विशेषता में जी रहे हैं माना नया जन्म हो गया। तो साधारणता पास्ट जन्म की नेचर है, अभी की नहीं। क्योंकि नया जन्म ले लिया। तो नये जन्म की नेचर विशेषता है—ऐसे अनुभव हो। तो अभी क्या करेंगे? साधारणता की समाप्ति। संकल्प में भी साधारणता नहीं।

31.12.94... .. नवीनता सभी को प्रिय लगती है ना? पुरानी चीज़ शो में रखने के लिये तो पसन्द करेंगे लेकिन यूज़ करने के लिये नहीं। यूज़ करने के लिये तो सोचेंगे नया। तो हर बात में नवीनता हो, संकल्प भी नया हो। रमणीकता से पुरुषार्थ करो। कभीकभी कोईकोई बच्चे इतना हठ से पुरुषार्थ करते हैं जो बापदादा को देखकरके तरस पड़ता है। बहुत युद्ध करते हैं। आवश्यकता नहीं है लेकिन करते हैं, क्यों? अपनी कमजोरी के कारण। तो मेहनत का पुरुषार्थ नहीं करो। पुरुषार्थ भी मौजमौज से करो।

24.02.98... ..अभी बापदादा सभी बच्चों के चेहरे पर सदा फरिश्ता रूप, वरदानी रूप, दाता रूप, रहमदिल, अथक, सहज योगी वा सहज पुरुषार्थी का रूप देखने चाहते हैं। यह नहीं कहो बात ही ऐसी थी ना। कैसी भी बात हो लेकिन रूप मुस्कराता हुआ, शीतल, गम्भीर और रमणीकता दोनों के बैलेन्स का हो।

5. गुह्यता

25.1.74.....जैसे आनन्द स्वरूप कहते हैं, तो वह आनन्द स्वरूप की स्टेज क्या है? उसकी अनुभूति क्या है, आनन्द स्वरूप होने से उसकी विशेष प्राप्ति क्या है और आनन्द कहा किसको जाता है? उस समय की स्थिति का प्रत्यक्ष प्रभाव स्वयं पर और अन्य आत्माओं पर क्या होता है?—ऐसे हर गुण की गुह्यता में जाओ

25.1.75.....अब इसी स्मृति-स्वरूप के अभ्यास की गुह्यता में जाना चाहिए। जैसे साइंस वाले हर वस्तु की गुह्यता में जाते हैं और नई-नई इन्वेन्शन (खोज, inventions) करते रहते हैं ऐसे ही अपने निजी स्वरूप और उसके अनादि गुण व संस्कार इन एक-एक गुण की डीपनेस (deepness; गहराई) में जाना चाहिए।

16.10.75.....अभी तो जो मिलता है वह बुद्धि में जमा करते जाते हो फिर बैठ जब रिवाइज़ करके उसकी महीनता व गुह्यता में जायेंगे तो दूसरों को भी गुह्यता में ले जा सकेंगे।

28.5.77.....जैसे साइंस वाले कोई न कोई इन्वेन्शन करने में बीजी रहते हैं, इसी प्रकार से जो पाइंट चल चुकी है उनकी गुह्यता में नए रूप की इन्वेन्शन करने के लिए अमृतवेले लक्ष्य ले बठेंगे तो टच होगा। नई-नई इन्वेन्शन निकलेंगी जिससे औरों को भी नवीनता का अनुभव होगा। अच्छा।

30.6.77.....जो शक्ति धारण की उस शक्ति की प्रैक्टिकल रिजल्ट होने कितने परसेन्ट रही? 'अभी अनुभवों की गुह्यता की प्रयोगशाला में रहना।' ऐसे महसूस हो जैसे यह सब कोई विशेष लगन में मगन इस संसार से उपराम हैं। कर्म और योग का बैलेंस और आगे बढ़ाओ। कर्म करते योग की पॉवरफुल स्टेज रहे – इसका अभ्यास बढ़ाओ।

30.6.77.....अभी वर्णन सब करते योग अर्थात् याद, योग अर्थात् कनेक्शन। लेकिन कनेक्शन का प्रैक्टिकल रूप, प्रमाण क्या है, प्राप्ति क्या है, उसकी महीनता में जाओ। मोटे रूप में नहीं, लेकिन रूहानियत की गुह्यता में जाओ।

30.11.79.....व्यर्थ संकल्प चलना अर्थात् मनन शक्ति की कमी है। मनना करना सीखो। एक ही शब्द लेकर के उसकी गुह्यता में जाओ।

7.4.81.....तो चेक करो कौन से विटामिन की कमी है। आत्मा की अनुभूति की कमी है, परमात्म सम्बन्ध की कमी है, ड्रामा के गुह्यता के अनुभूति की कमी है।

8.1.86.....इस वर्ष में हर गुण की, हर शक्ति की रिसर्च करो। हर गुण की महीनता में जाओ। महीनता से उसकी महानता का अनुभव कर सकेंगे। याद की स्टेजेस का, पुरुषार्थ की स्टेजेस का महीनता से रिसर्च करो। गुह्यता में जाओ। डीप अनुभूतियाँ करो।

14.11.87.....कई बच्चे अभी भी समय प्रति समय बाप से मांगते रहते कि इस बात पर थोड़ी-सी दुआ कर लो, आशीर्वाद दे दो। तो मांगने वाले दाता कैसे बनेंगे? इसलिए पवित्रता की शक्ति की महानता को जान पवित्र अर्थात् पूज्य देव आत्मायें अभी से बनो। ऐसे नहीं कि अन्त में बन जायेंगे। यह बहुत समय की जमा की हुई शक्ति अन्त में काम में आयेगी। तो समझा, पवित्रता की गुह्य गति क्या है? सदा सुख-शान्ति की जननी आत्मा - यह है पवित्रता की गुह्यता!

10.1.88.....मनन शक्ति अर्थात् सागर के तले में जाकर अन्तर्मुखी बन हर ज्ञान-रत्न की गुह्यता में जाना। सिर्फ रिपीट (Repeat) नहीं करना है लेकिन हर एक पॉइन्ट का राज़ क्या है और हर पॉइन्ट को किस समय, किस विधि से कार्य में लगाना है और हर पॉइन्ट को अन्य आत्माओं के प्रति सेवा में किस विधि से कार्य में लगाना है – यह चारों ही बातें हर एक पॉइन्ट को सुनकर मनन करो। साथ-साथ मनन करते प्रैक्टिकल में उस राज़ के रस में चले जाओ, नशे की अनुभूति में आओ। माया के भिन्न-भिन्न विघ्नों के समय वा प्रकृति के भिन्न-भिन्न परिस्थितियों के समय काम में लगाकर देखो कि जो मैंने मनन किया कि इस परिस्थिति के प्रमाण वा विघ्न के प्रमाण यह ज्ञान रत्न मायाजीत बना सकते वा बनाने वाला है, वह प्रैक्टिकल हुआ अर्थात् मायाजीत बने? वा सोचा था मायाजीत बनेंगे लेकिन मेहनत करनी पड़ी वा समय व्यर्थ गया? इससे सिद्ध है कि विधि यथार्थ नहीं थी, तब सिद्धि नहीं मिली। यूज करने का तरीका भी चाहिये, अभ्यास चाहिए।

4.12.95.....पहला नम्बर सुनाया 'यथार्थ निश्चय' और दूसरा नम्बर 'अच्छा लगता है' और तीसरा नम्बर – दुनिया के सम्बन्धियों के दुःखमय वातावरण से बचकर जितना समय भी सेवाकेन्द्र पर आते हैं उतना समय दुःख से किनारा होकर शान्ति का अनुभव करते हैं। ज्ञान की गुह्यता में नहीं जायेंगे लेकिन शान्ति की प्राप्ति के कारण कभी आते हैं और कभी नहीं भी आते हैं। लेकिन यथार्थ निश्चय बुद्धि विजयी होते हैं। और देखा जाता है कि जब शुरु- शुरु में आते हैं तो अशान्ति से तंग होते हैं, शान्ति के इच्छुक होते हैं। तो जैसे प्यासे को एक बूंद भी अगर पानी की मिल जाये तो वो बहुत बड़ी बात अनुभव करता है।

3.2.2006.....बाप के दिल पसन्द स्थिति है ही सम्पूर्ण पवित्रता। इस ब्राह्मण जन्म का फाउण्डेशन भी सम्पूर्ण पवित्रता है। सम्पूर्ण पवित्रता की गुह्यता को जानते हो? संकल्प और स्वप्न में भी रिचक मात्र अपवित्रता का नाम-निशान न हो। बापदादा आजकल के समय की समीपता प्रमाण बार-बार अटेंशन खिंचवा रहे हैं कि सम्पूर्ण पवित्रता के हिसाब से व्यर्थ संकल्प, यह भी सम्पूर्णता नहीं है। तो चेक करो व्यर्थ संकल्प चलते हैं? किसी भी प्रकार के व्यर्थ संकल्प सम्पूर्णता से दूर तो नहीं करते? जितना-जितना पुरुषार्थ में आगे बढ़ते जाते हैं, उतना रॉयल

रूप के व्यर्थ संकल्प व्यर्थ समय तो समाप्त नहीं कर रहे हैं? रॉयल रूप में अभिमान और अपमान व्यर्थ संकल्प के रूप में वार तो नहीं करते? अगर अभिमान रूप में कोई भी परमात्म देन को अपनी विशेषता समझते हैं तो उस विशेषता का भी अभिमान नीचे ले आता है। विघ्न रूप बन जाता है और अभिमान भी सूक्ष्म रूप में यही आता, जो जानते भी हो - मेरापन आया, मेरा नाम, मान, शान होना चाहिए। यह मेरापन अभिमान का रूप ले लेता है। यह व्यर्थ संकल्प भी सम्पूर्णता से दूर कर लेते हैं क्योंकि बापदादा यही चाहते हैं - स्वमान, न अभिमान, न अपमान। यही कारण बनते हैं व्यर्थ संकल्प आने के।

6. हर्षितमुखता

25.1.69... .. समर्पण उसको कहा जाता है जो श्वांसों श्वांस स्मृति में रहे। एक भी श्वांस विस्मृति का न हो। हर श्वांस में स्मृति रहे और ऐसे जो होंगे उनकी निशानी क्या है? उनके चेहरे पर क्या नजर आयेगा? क्या उनके मुख पर होगा, मालूम है?(हर्षितमुख) हर्षितमुखता के सिवाए और भी कुछ होगा? जो जितना सहनशील होगा उनमें उतनी शक्ति बढ़ेगी। जो श्वांसों श्वांस स्मृति में रहता होगा उसमें सहनशी-लता का गुण जरूर होगा और सहनशील होने के कारण एक तो हर्षित और शक्ति दिखाई देगी। उनके चेहरे पर निर्बलता नहीं।

25.10.69... .. परिवर्तन में मुख्य-मुख्य बातें चेक करनी हैं। बहुत सहज है। दो शब्द याद रखना है। एक तो आकर्षण मूर्ति बनना है और दूसरा हर्षित मुख। आकर्षण करने वाला है रूह। रूहानी स्थिति में ही एक दो को आकर्षण कर सकेंगे। अगर यह दोनों बातें अपने में धारण कर ली तो सम्पूर्ण विजयी हैं ही।

9.11.69... .. मधुबन के फूलों में विशेषतायें क्या होनी चाहिए? नाम ही है मधुबन। तो पहली विशेषता है मधुरता। मधुरता ऐसी चीज है जो कोई को भी हर्षित कर सकते हैं। मधुरता को धारण करने वाला यहाँ भी महान् बनता है, और वहाँ भी मर्तबा पाता है।

17.11.69... .. आकर्षित बनने लिये हर्षित भी रहना पड़ेगा। हर्षित का अर्थ ही है अतीन्द्रिय सुख में झूमना। ज्ञान को सुमिरण करके हर्षित होना। अव्यक्त स्थिति का अनुभव करते अतीन्द्रिय सुख में झूमना। इसको कहा जाता है हर्षित। हर्षित भी मन से और तन से दोनों से होना है। ऐसा जो हर्षित होता है वही आकर्षित होता है।

26.1.70... .. सभी से अच्छी सौगात है अपने इस चेहरे को सदैव हर्षित बनाना। कभी भी कोई परेशानी की रेखा न हो। जैसे सम्पूर्ण चन्द्रमा कितना सुन्दर लगता है। वैसे अपना चेहरा सदैव हर्षित रहे। चेहरा ऐसा चमकता हुआ हो जो और भी आप के चेहरे में अपना रूप देख सकें। चेहरा दर्पण बन जाये। अनेक आत्माओं को अपना मुखड़ा दिखलाना है। अभी पदमापन्न भाग्यशाली बनना है। महादानी बनना है।

5.3.70... .. अज्ञानी लोग सवेरे उठ कोई ऐसी शक्ल देखते हैं तो कहते हैं सवेरे उनकी शक्ल देखी तब यह प्रभाव पड़ा। तो शक्ल का प्रभाव पड़ता है। तो आप बच्चों का हर्षित चेहरा देख सभी के अन्दर हर्ष आ जायेगा। ऐसा होने वाला है। अच्छा-जितना अपने ऊपर चेकिंग करेंगे उतनी चेन्ज आती जायेगी। संकल्प, कर्म, समय, संस्कार इन चारों के ऊपर चेकिंग करनी है कदम-कदम पर ।

27.7.70... .. जितना हर्षितमूर्त्त उतना आकर्षणमूर्त्त बनना है। आकर्षणमूर्त्त सदैव बने रहें इसके लिए आकारी रूपधारी बन साकार कर्त्तव्य में आना है।

22.10.70... .. हर्षितमुख रहने का जो गुण है वह पुरुषार्थ में बहुत मददगार बन सकता है। जैसे सूरत हर्षित रहती है वैसे आत्मा भी सदैव हर्षित रहे। इस नेचुरल गुण को आत्मा में लाना है। सदा हर्षित रहेंगे तो फिर माया

की कोई आकर्षण नहीं होगी। यह बाप की गैरन्टी है। लेकिन वह तब होगा जब सदैव आत्मा को हर्षित रखेंगे। फिर बाप का काम है माया के आकर्षण से दूर रखना।

15.4.71... .. वाचा के दानी बनने वाले को विशेष प्राप्ति एक तो खुशी रहती है, क्योंकि धन को देख हर्षित होता है ना। और दूसरा वह कभी भी असंतुष्ट नहीं होंगे। क्योंकि खजाना भरपूर होने के कारण, कोई अप्राप्त वस्तु न होने के कारण सदैव सन्तुष्ट और हर्षित रहेंगे। उनका एक-एक बोल तीर समान लगेगा। जिसको जो बोलेंगे उनको वह लग जायेगा। उनके बोल प्रभावशाली होते हैं। वाणी का दान करने से वाणी में बहुत गुण आ जाते हैं। अवस्था में सहज ही खुशी की प्राप्ति होगी। प्राप्ति करने का पुरुषार्थ नहीं करेंगे लेकिन स्वतः ही प्राप्त होगी। जैसे कोई खान से चीज निकलती है तो अखुट होती है ना। ऐसे ही अन्दर से खुशी स्वतः ही निकलती रहेगी। यह वरदान के रूप में प्राप्त होता है। खुशी के लिए पुरुषार्थ नहीं किया। पुरुषार्थ तो वाणी द्वारा दान करने का किया। प्राप्ति खुशी की हुई।

6.5.71... .. खेल में हर्ष होता है ना। तो जो लड़ाई को खेल समझते, ऐसी स्थिति में रहने वालों की निशानी क्या होगी? हर्ष। सदा हर्षित रहने वाले को माया कभी भी किसी भी रूप से आकर्षित नहीं कर सकती। तो माया की आकर्षण से बचने के लिए एक तो सदैव अपनी शान में रहो, दूसरा माया को खेल समझ सदैव खेल में हर्षित रहो।

11.6.71... .. कोई भी संगदोष में अपने को लाने के बजाय, बचाते रहना। कई प्रकार के आकर्षण पेपर के रूप में आंगे, लेकिन आकर्षित नहीं होना। हर्षितमुख हो पेपर समझ पास होना है।

24.6.71... .. अन्तर्मुखी होकर के कार्य करने से एक तो विघ्नों से बचाव; दूसरा समय का बचाव; तीसरा – संकल्पों का बचाव वा बचत हो जायेगी। प्रैक्टिस तो है ना। कभी-कभी अनुभव भी करते हो। अन्तर्मुखी हो बोलते भी हो। लेकिन बाहरमुखता में आते भी अन्तर्मुख, हर्षितमुख, आकर्षणमूर्त भी रहेंगे – कर्म करते हुए यह प्रैक्टिस करनी है।

29.6.71... .. अभी तक जो किया है उसमें हर्षित होना है। 'वाह! वाह!' करने का कार्य अभी करना है। हर्षित इसलिए होते क्योंकि खुमारी और खुशी अच्छी रीति कायम है।

28.7.71... .. जो स्वयं हर्षित है वह कैसे भी मन वाले को हर्षित करेगा। हर्षित रहना – यह तो ज्ञान का गुण है। इसमें सिर्फ रूहानियत एड करना है। हर्षितपन का संस्कार भी एक वरदान है, जो समय पर बहुत सहयोग देता है।

1.8.71... .. एक अन्तर्मुखता और दूसरी बाहर से शो करने वाली हर्षितमुखता, वह अवस्था है? दोनों साथ-साथ चाहिए। इस रीति हिम्मत के साथ उल्लास भी चाहिए, जिससे दूर से ही मालूम हो कि इन्हों के पास कोई विशेष प्राप्ति है।

एक अन्तर्मुखता और दूसरी बाहर से शो करने वाली हर्षितमुखता, वह अवस्था है? दोनों साथ-साथ चाहिए। इस रीति हिम्मत के साथ उल्लास भी चाहिए, जिससे दूर से ही मालूम हो कि इन्हों के पास कोई विशेष प्राप्ति है।

2.2.72... .. एक तो उनकी सूरत पर अन्तर्मुखता की वा अन्तर्मुखी की झलक रहती है और दूसरा अपने संगमयुग की और भविष्य की सर्व स्वमान की फलक रहती है। समझा? एक झलक दिखाई देती है, दूसरा फलक दिखाई देती है। तो ऐसे सदैव न सिर्फ फलक दिखाई दे लेकिन झलक भी दिखाई दे, हर्षितमुख के साथ अन्तर्मुखी भी दिखाई दे – ऐसे को कहा जाता है सदा बाप के सम्मुख रहने वाले प्रीत बुद्धि।

12.6.72... .. एक तरफ वह नजारा, दूसरे तरफ रिफाइन होने का नजारा, दोनों का फोर्स है। अगर रिफाइन नहीं तो फाइन समझो। दोनों साथ-साथ नजारे दिखाई दे रहे हैं। वह भी अति में जा रहा है और यह भी अति प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देता जा रहा है। गुप्त अब प्रख्यात हो रहा है। तो जब दोनों बातें प्रत्यक्ष हों उसी अनुसार ही तो नम्बर बनेंगे। माला हाथ से नहीं पिरोनी है। चलन से ही स्वयं अपना नम्बर ले लेते हैं। अभी नम्बर फिक्स होने का समय आ रहा है। इसलिए दोनों बातें स्पष्ट दिखाई दे रही हैं और दोनों को देखते हुए साक्षी हो हर्षित रहना है।

14.6.72... .. सदा साथ रखो, सम्बन्ध में रहो। परिवार की पालना में रहो तो जो पालना के अन्दर सदैव रहते हैं वह सदा निश्चित और हर्षित रहते हैं।

16.6.72... .. सदा हर्षित रहने के लिए कौन-सी सहज युक्ति है? सदा हर्षित रहने का यादगार रूप में कौन-सा चित्र है, जिसमें विशेष हर्षितमुख को ही दिखाया है? विष्णु का लेटा हुआ चित्र दिखाते हैं। ज्ञान को सिमरण कर हर्षित हो रहा है। विशेष, हर्षित होने का चित्र ही यादगार रूप में दिखाया हुआ है। विष्णु अर्थात् युगल रूप। विष्णु के स्वरूप आप लोग भी हो ना। नर से नारायण वा नारी से लक्ष्मी आप ही बनने वाले हो या सिर्फ बाप बनते हैं? नर और नारी, दोनों ही जो ज्ञान को सिमरण करते हैं वह ऐसे हर्षित रहते हैं। तो हर्षित रहने का साधन क्या हुआ? ज्ञान का सिमरण करना। जो जितना ज्ञान को सिमरण करते हैं वह उतना ही हर्षित रहते हैं।

ज्ञान का सिमरण ना चलने का कारण क्या है? व्यर्थ सिमरण में चले जाते हो। व्यर्थ सिमरण होता है तो ज्ञान का सिमरण नहीं होता। अगर बुद्धि सदा ज्ञान के सिमरण में तत्पर रखो तो सदा हर्षित रहेंगे, व्यर्थ सिमरण होगा ही नहीं। ज्ञान सिमरण करने के लिए, सदैव हर्षित रहने के लिए खजाना तो बहुत मिला हुआ है।

16.6.72... संगमयुग का असली संस्कार है जो सदा नॉलेज देता और लेता रहता है उसको सदा ज्ञान स्मृति में रहेगा और सदा हर्षित रहेगा। ब्राह्मण जीवन के विशेष संस्कार ही हर्षितपने के हैं।

21.4.73... .. महान् आत्माओं के हर्षितमूर्त्त, आकर्षण-मूर्त्त और अव्यक्त-मूर्त्त का मूर्त्ति के रूप में यादगार है। ऐसे अपने को देखो कि सारे दिन में जो हमारी-मूर्त्त व सीरत रहती है वह ऐसी है जो मूर्त्ति बन पूजन में आये और हमारे कर्म ऐसे हैं जो हमारे चरित्र रूप में गायन हों? यह लक्ष्य है ना?

जो पूजनीय बनेंगे उनको देख हर्षित होते हैं। अब बनना है वा सिर्फ देखकर हर्षित होना है? जितना साज-युक्त हो उतना ही राज-युक्त बनो।

16.5.73... .. बागवान भी बगीचे को देख हर्षित होते हैं। जहाँ देखो, जो सुनो, और जो बोलो उसमें विशेषता। अपने में हर बात की विशेषता भरो। जब हर बात में विशेषता भरेंगे तो क्या बन जायेंगे? विशेष आत्मा कभी कीचड़ में नहीं फँसती। सदैव हर्षित रहती है। निश्चय बुद्धि के एक-एक बात में निश्चय होना चाहिए। चतुर बाप की सन्तान हैं। जो बहु रूपी बनना जानता है वह हर बात में सफलता-मूर्त्त होगा।

8.3.73... .. सीट को छोड़कर अगर कोई ड्रामा देखे तो फिर क्या हाल होगा उसका? तो सीट पर सैट होकर वैरायटी ड्रामा की स्मृति रखते हुए, अगर एक-एक पार्टधारी का हर पार्ट देखो तो सदैव हर्षित रहेंगे। मुख से वाह-वाह निकलेगी। वाह! मीठा ड्रामा! यह क्या हुआ, क्यों हुआ यह नहीं निकलेगा बल्कि वाह-वाह शब्द मुख से निकलेंगे अर्थात् सदा खुशी में झूमते रहेंगे। सदा अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान् अनुभव करेंगे। क्या ऐसे स्वयं को प्रैक्टिकल में अनुभव करते हो?

8.7.73... .. अमृत वेले को सफल करने से अमर भव का वरदान मिल जाता है। फिर सारा दिन कोई भी विघ्नों में मुरझायेंगे नहीं। सदा हर्षित रहने में और सदा शक्तिशाली बनने में अमर रहेंगे।

15.4.74... .. विघ्न आना आवश्यक है और जितना विघ्न आना आवश्यक है अगर उतना यह बुद्धि में रहेगा तो उतना ही ऐसा महारथी हर्षित रहेगा। नथिंग न्यू (Nothing new) यह है फाइनल स्टेज

16.5.74... .. कैसे करूँ? कैसे होगा? यह न स्वयं प्रति न दूसरों के प्रति चले। दोनों ही रूप में प्रश्न समाप्त हों। ऐसा ही सदा प्रसन्नचित्त व हर्षित रहता है। अब समझा। महारथी के लक्षण क्या हैं?

20.5.74... .. जैसे बाप बच्चों के श्रेष्ठ भाग्य को देख, हर्षित होते हैं क्या वैसे ही आप अपने सौभाग्य को देख सदा हर्षित रहते हो? क्या भाग्य का सितारा सदा सामने चमकता हुआ दिखाई देता है या कभी कभी भाग्य सितारा आपके सामने से छिप जाता है? जैसे स्थूल सितारे कभी-कभी जगह बदली करते हैं, तो ऐसे भाग्य का सितारा बदलता तो नहीं है? एक ही सितारा है, जो अपनी जगह बदली नहीं करता, क्या ऐसे सितारे हो? वह है दृढ़ संकल्प वाला सितारा, जिसको अपनी इस दुनिया में 'ध्रुव' सितारा कहा जाता है। तो ऐसे दृढ़ निश्चय बुद्धि, और एक-रस स्थिति में सदा स्थित पद्मापद्म भाग्यशाली बने हो, या बन रहे हो?

30.5.74... .. ऑर्डर किया और हर शक्ति जी-हजूर करेगी। उनका मस्तिष्क सदा मस्तक मणि अर्थात् आत्मा की झलक से चमकता हुआ दिखाई देगा। उनके नैन रूहानी लाइट और माइट के आधार से सर्व-आत्माओं को मुक्ति और जीवन-मुक्ति का मार्ग दिखाने के निमित्त बने हुए होंगे। उनका हर्षितमुख अनेक जन्मों के अनेक दुःखों को विस्मृत करा, एक सेकेण्ड में अन्य को भी हर्षित बना देगा? क्या ऐसा एवर रेडी ग्रुप है व विजय की माला गले में है?

14.7.74... .. जो गायन भी है कि 'जैसे कर्म हम करेंगे, हमको देख और सभी करेंगे' ऐसे उनके हर कर्म, अनेक आत्माओं को, एक पाठ पढ़ाने के निमित्त बन जावेंगे और उनका हर कर्म शिक्षा-स्वरूप होगा। इसको ही कहा जाता है—समर्थ-कर्म। ऐसे संकल्प, बोल और कर्म वाला ही हर बात में सदा स्वयं से सन्तुष्ट होगा। सन्तुष्ट होने के कारण ही वह हर्षित भी होगा लेकिन उसे हर्षित बनाना नहीं पड़ेगा बल्कि वह स्वतः ही सदा हर्षित होगा।

ऐसे सफलतामूर्त से अन्य आत्मायें भी सदा संतुष्ट रहेंगी अर्थात् उन सर्व की संतुष्टता की सफलता, प्रत्यक्ष फल के रूप में दिखाई देगी। भविष्य फल नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष फल ऐसे सदा हर्षित आत्मा को देख कर, अन्य आत्मायें भी, उनके प्रभाव से, दुःख व उलझन की लहर से बदल कर हर्षित हो जावेंगी। अर्थात् ऐसी आत्मा के सम्पर्क में और उसके समीप आने से अन्य आत्माओं पर भी हर्ष का प्रभाव पड़ जायेगा। जैसे सूर्य के समीप व सम्मुख जाने वाले के ऊपर, न चाहते भी किरणें पड़ती रहती हैं। ऐसे ही सफलतामूर्त के हर्ष की किरणें, अन्य आत्माओं पर भी पड़ती हैं अर्थात् जैसे कि बाप के संग का रंग, एक सेकेण्ड में अनुभव करते हो। अर्थात् जब योग-युक्त होते हो तो बाप का संग लगता है तो उसके रंग का अनुभव होता ना? ऐसे ही सफलता के सितारों के संग का रंग, अन्य आत्माओं को भी अनुभव होता है। यह है सफलतामूर्त व सफलता के सितारों की निशानी।

2.2.75... .. वर्तमान समय-प्रमाण पुरुषार्थ की गति चिन्तन के बजाय चिन्ता के स्वरूप में होनी चाहिए। सेवा के विशेष प्रोग्राम तो बनाते हो, दिन-रात चिन्ता भी रहती है कि कैसे सफल करें और उसके लिए भी दिन-रात समान कर देते हो। लेकिन यह चिन्ता सुख स्वरूप चिन्ता है। अनेक प्रकार की चिन्ताओं को मिटाने वाली यह चिन्ता है। जैसे सर्व- बन्धनों से छूटने के लिए एक शुभ-बन्धन में स्वयं को बाँधते हो, इस बन्धन का नाम भले ही बन्धन है लेकिन बनाता यह निर्बन्धन ही है। ऐसे ही इसका नाम चिन्ता है लेकिन प्राप्ति बाप द्वारा वर्से की है। ऐसे ही इस चिन्ता से सदा-सन्तुष्ट, सदा-हर्षित और सदा कमल-पुष्प समान रहने की स्थिति अथवा स्टेज सहज बन जाती है। वर्तमान समय-प्रमाण पुरुषार्थ की गति चिन्तन के बजाय चिन्ता के स्वरूप में होनी चाहिए। सेवा के विशेष प्रोग्राम तो बनाते हो, दिन-रात चिन्ता भी रहती है कि कैसे सफल करें और उसके लिए भी दिन-रात समान कर देते हो। लेकिन यह चिन्ता सुख स्वरूप चिन्ता है। अनेक प्रकार की चिन्ताओं को मिटाने वाली यह चिन्ता है। जैसे सर्व- बन्धनों से छूटने के लिए एक शुभ-बन्धन में स्वयं को बाँधते हो, इस बन्धन का नाम भले ही बन्धन है लेकिन

बनाता यह निर्बन्धन ही है। ऐसे ही इसका नाम चिन्ता है लेकिन प्राप्ति बाप द्वारा वर्से की है। ऐसे ही इस चिन्ता से सदा-सन्तुष्ट, सदा-हर्षित और सदा कमल-पुष्प समान रहने की स्थिति अथवा स्टेज सहज बन जाती है।

2.2.75... .. हर्षित रूप से यहाँ ही कर्म-भोग को कर्म योग से चुक्तु करना है। ऐसा न समझे कि मैं सर्विस नहीं करती हूँ – जैसे वाणी द्वारा सर्विस करते हैं, जितना एक भाषण का रिजल्ट होता है, उससे हजार गुणा ज्यादा इस प्रैक्टिकल अनुभव की सर्विस का रिजल्ट निकलता है – ऐसे समझ कर साक्षीपन से हिसाब-किताब चुक्तू करे तो सर्विस बहुत है। जो है ही सर्विसेबल उनका शारीरिक रोग निमित्त कारण बन हिसाब चुक्तू होता है लेकिन उसमें भी सेवा भरी हुई है। यह कोई रेस्ट नहीं है बल्कि यह भी भिन्न प्रकार की सेवा का चान्स है। ऐसे समझकर सेवा में बिजी रहे तो डबल फल मिल जायेगा। मुक्ति भी और सेवा भी।

9.9.75... .. होपलेस केस में व ना-उम्मीदवार को उम्मीदों का सितारा बनाना-कमाल इसी बात में है। ऐसी कमाल दिखाने वाले बने हो? या सिर्फ बाप की कमाल देख हर्षित होने वाले बने हो? जब कि फॉलो फादर है तो कमाल करने वाला बनना है न कि देखकर हर्षित होने वाला बनना है। समझा? इसको कहा जाता है 'फॉलो फादर।'

सर्व नियमों का पालन भी करते हैं, फिर भी स्वयं को सदा हर्षित अनुभव नहीं करते। मेहनत बहुत करते हैं लेकिन फल का अनुभव कम करते हैं। माया को दासी भी बनाते हैं, लेकिन फिर भी कभी-कभी उदासी महसूस करते हैं। इसका कारण क्या है? शक्तियाँ भी है, साथ-साथ ज्ञान भी है, नियमों का पालन भी करते हैं, तब कमी किस बात में है कि स्वयं, स्वयं से ही कम्प्यूज रहते हैं? इसमें कमी यह है कि प्राप्त की हुई शक्ति को व ज्ञान की प्वाइन्ट्स को जिस समय, जिस रीति से कार्य में लगाना चाहिए उस समय, उस रीति से यूज करना नहीं आता है। बाप से प्रीति है, ज्ञान से भी प्रीति है, दिव्य गुण-सम्पन्न जीवन से भी प्रीति है – लेकिन प्रीति के साथ-साथ रीति नहीं आती है व रीति के साथ 'प्रीति' नहीं आती। इसलिए अमूल्य वस्तु भी साधारण प्राप्ति का आधार बन जाती हैं।

20.9.75... .. जैसे दान के लिये कहावत है – 'धन दिये धन न खुटे', अर्थात् देना ही बढ़ना है, ऐसे ही इन ईश्वरीय प्राप्तियों को अनुभव में लाने से प्राप्ति कम नहीं होगी, बल्कि और ही प्राप्ति स्वरूप का अनुभव करोगे। बार-बार युज करने से, जैसा समय वैसा स्वरूप अपना बना सकेंगे व जिस समय जो शक्ति यूज करनी चाहिये वह शक्ति उस रीति यूज कर सकेंगे। समय पर धोखा खाने से बच जायेंगे। धोखा खाने से बचना अर्थात् दुःख से बचना। तो क्या बन जायेंगे? – सदा हर्षित अर्थात् सदा सुखी, खुशानसीब बन जायेंगे। तो अब अपने ऊपर रहम करके, प्राप्तियों को यूज करके और प्रीति के साथ रीति को जान करके, सदा मास्टर ज्ञान सागर बनो, शक्ति का सागर बनो और सर्व प्राप्तियों का सागर बनो।

1.10.75... .. जब सुनने में इतनी खुशी होती है तो स्वरूप बनने में कितनी खुशी होगी? इस समय सभी हर्षित मुख हो – ऐसे ही सदा हर्षित मुख रहो तो स्वयं का भी समये बचायेंगे और निमित्त बनी हुई आत्माओं का भी समय बचा लेंगे। अभी तक गिरने और चढ़ने में, स्वयं को सम्भालने में व बुद्धि को ठिकाने लगाने में समय जो इसमें जाता है तो यह समय बच जायेगा और वह कमाई में जमा हो जायेगा। अब बचत करना सीखो। समझा?

3.10.75... .. अपने खजानों को जानते हो? सर्व खजानों को स्मृति में रखते हुए सदा हर्षित अर्थात् सदा प्रकृति और पाँच विकारों के आक्रमण से परे। इसी खुशी के खजानों से सम्पन्न-स्वरूप “एक बाप दूसरा न कोई ” – ऐसा अनुभव करते हो?

11.10.75... .. सफल टीचर अर्थात् सदा हर्षित रहना और सर्व को हर्षितमुख बनाना। समझा सफलतामूर्त की निशानी?

27.1.76... .. एवर वेल्दी के साथ-साथ अपने को एवर हैप्पी अर्थात् सदाहर्षित भी अनुभव करते हो? अगर कोई भी प्रकृति व माया के आकर्षण नहीं हैं, तो सदा हर्षित होंगे। ऐसे सदा हर्षित का सदैव एक ही संकल्प स्मृति में रहता है कि पाना था सो पा लिया, पाने के लिये अब कुछ नहीं रहा। ऐसे संकल्प में स्थित रहने वाले की अर्थात् एवर हैप्पी रहने वाले की निशानी क्या होगी? सदा हर्षित रहने वाला मन, वाणी और कर्म से सर्व आत्माओं को सदा खुशी का दान देता रहेगा। किसी भी आत्मा के प्रति बाप-समान दुःख-हर्ता, सुख-कर्ता, सदा बेगमपुर का बादशाह अनुभव करेगा। बादशाह अर्थात् दाता। ऐसे हर्षितमुख रहने वाली आत्मा के हर संकल्प के वायब्रेशन्स द्वारा, एक सेकेण्ड की रूहानी नज़र द्वारा, एक सेकेण्ड के सम्पर्क द्वारा, मुख के एक बोल द्वारा दुःखी व गम में रहने वाली आत्मा अपने को सुखी व खुशी का अनुभव करेगी। उसका कर्तव्य होगा – सुख देना और सुख लेना। जैसे प्रजा अपने योग्य राजा को देख खुश हो जाती है, ऐसे एवर हेल्दी, वेल्दी और हैप्पी आत्मा को देख कैसी भी दुःखी आत्मा सुख का अनुभव करेगी। अप्राप्त आत्मा दाता को देख प्राप्ति की खुशी में झूमने लगेगी। ऐसे अपने को अनुभव करते हो? देने वाले दाता के बच्चे, बाप-समान दाता हो या भक्त के समान लेने वाले हो या लेना और देना साथ-साथ चलता है? लेना है ही देने के लिये, खजाना है बाँटने के लिये और विश्व-कल्याण के लिये। हर सेकेण्ड लेने के साथ-साथ देने वाले दाता भी बनो, तब ही विश्व-कल्याणकारी कहला सकेंगे। अपना लेने और देने का पोतामेल चेक करो – जितना लेना है, उतना लेते हैं और लेने के साथ-साथ जितना देना है उतना ही देते हैं? लेना और देना साथ-साथ और समान है? ऐसे विश्व-कल्याणी ही विश्व-महाराजन् बन सकते हैं। समझा?

करावनहार बाप-दादा के निमित्त करनहार समझ कर चलने से सदैव निश्चिन्त और हर्षित रहेंगे।

16.1.77... .. टीचर्स को तो विशेष खुशी होनी चाहिए क्योंकि टीचर्स को लिफ्ट है – एक बाप और सेवा में रहने की और कोई वातावरण नहीं है। तो इस लिफ्ट का लाभ उठाना चाहिए ना? तो सदा हर्षित हो ना? सदा हर्षित

कौन रहता है? जो कहाँ भी आकर्षित न हो। अगर किसी भी तरफ चाहे प्रकृति, चाहे आत्माओं, चाहे आत्माओं के गुणों की तरफ आकर्षित होते हो तो हर्षित नहीं रह सकेंगे। सर्व आकर्षण से परे, सिवाए एक बाप के, ऐसी आत्मा ही सदा हर्षित रह सकती है।

23.1.77... .. बाप के खज़ाने को सुमिरण करते हुए सदा हर्षित रहो। इतना खज़ाना सारे कल्प में किसी जन्म में भी नहीं मिलेगा। तो कितनी खुशी में उड़ना चाहिए?

3.5.77... .. कई आत्माएं बहुत अच्छे हुल्लास, उमंग, हिम्मत और बाप के सहयोग से बहुत आगे मंजिल के समीप तक पहुँच जाती हैं, लेकिन 63 जन्मों के हिसाब यहाँ ही चुक्ती होने हैं। अपने पिछले संस्कार, स्वभाव बाहर इमर्ज ही, सदा के लिए समाप्त हो रहे हैं, उस कर्मों की गुह्य गति को न जान घबरा जाते हैं – क्या लास्ट तक यही चलेगा? अब तक भी यह टक्कर क्यों होता? इन व्यर्थ संकल्पों की उलझन के कारण प्यार नहीं कर पाते। सोचने में ही टाईम वेस्ट कर देते हैं और कोटों में कोई तूफानों को भी ड्रामा का तोफ़ा समझ स्वभाव संस्कारों की टक्कर को आगे बढ़ने का आधार समझ, माया को परखते हुए पार करते, सदा बाप को साथी बनाते हुए साक्षी हो हर पार्ट देखते, सदा हर्षित हो चलते रहते। सदैव यह निश्चय रहता है कि अब तो पहुँचे। तो बाप इतने प्रकार की लीला बच्चों की देखते हैं।

कनेक्शन ठीक हो तो आटोमेटिकली सर्वशक्तियों की करेंट आएगी। जब सर्व शक्तियां मिलती रहेगी तो सदा हर्षित रहेंगे। गम ही खत्म हो जाएगी। संगम का समय है खुशियों का, अगर ऐसे समय पर कोई गम करे तो बुरा लगेगा ना?

19.5.77... .. सदा मायाजीत अर्थात् सदा हर्षित। स्वयं और दूसरों की सेवा का बैलेन्स हो तो मेहनत कम और सफलता ज्यादा होगी।

21.5.77... .. सदा हर्षित, सदा संतुष्ट इस प्राप्ति का वरदान, सेवाधारी को स्वतः ही प्राप्त होता है। क्योंकि वह जानते हैं कि हर आत्मा का भिन्न पार्ट है। पार्टधारी के किसी भी प्रकार के पार्ट को देख, असंतुष्ट न हो। ऐसे सेवाधारी के मन से सदैव हर्षित और संतुष्ट रहने के गीत कौन-से निकलते? वाह बाबा! वाह मेरा पार्ट! और वाह मीठा ड्रामा! जब स्वयं सदा यह मन के गीत गाते तब ही सर्व आत्माएं भी अब भी और सारे कल्प में भी उनकी वाह-वाह करती हैं।

बड़े से बड़ा संग 'सर्वशक्तिवान' का है। सत्संग की महिमा है तो सदा बुद्धि द्वारा सत् बाप, सत् शिक्षक, सत् गुरु का संग करना – यही 'सत्संग' है। इस सत्संग में रहने से सदा हर्षित और हल्के रहेंगे। किसी भी प्रकार का बोझ अनुभव नहीं होगा।

29.5.77... .. जैसे लौकिक रूप में कमाया और खाया, कुछ खाया कुछ उड़ाया। इसी रीति से धारणा शक्ति की कमजोरी होने कारण, विधि से वृद्धि न करने कारण सदा स्वयं को ज्ञान और शक्तियों के खजाने से खाली अनुभव करते हैं। इसलिए निरन्तर शक्तिशाली नहीं बन पाते हैं। निरन्तर हर्षित नहीं रह सकते। कमजोर होने के कारण, माया के विघ्नों के वशीभूत वा माया के दास बन जाते हैं। साथ-साथ अन्य आत्माओं को सम्पन्न देखते हुए, स्वयं उदास हो जाते हैं। ज्ञान का खजाना जमा करना, श्रेष्ठ समय का खजाना जमा करना, वा स्थूल खजाने को, एक से लाख गुणा बनाना अर्थात् जमा करना, इन सब खजानों को जमा करने का मुख्य साधन है – स्वच्छ अर्थात् हमारे बुद्धि और सच्ची दिल।

12.6.77... .. सदा कमल पुष्प समान स्थिति के आसन पर स्थित रहो। समझा क्या चैकिंग करनी है? सर्व कर्म इन्द्रियां कहाँ तक 'कमल' बनी हैं? ऐसे कमल समान बनने वाले सदा आकर्षण से परे अर्थात् सदा हर्षित रहेंगे। सदा हर्षित न रहना अर्थात् कहाँ-न-कहाँ आकर्षित होते हैं तब हर्षित नहीं रह सकते। अब इन सब बातों से बुद्धि द्वारा किनारा करो। 'कहना और करना' एक करो। वायदा करने वाला नहीं लेकिन निभाने वाले बनो।

12.6.77... .. विजयी रत्न सदा खुश अर्थात् हर्षित रहते हैं। स्वप्न में भी दुःख का दृश्य न आए अर्थात् दुःख के अनुभव की महसूसता न आए। स्वप्न में भी तो दुःख होता है। कोई ऐसा दृश्य देख करके स्वप्न में भी दुःख की लहर आती है? सदा विजयी के स्वप्न भी सुखदायी होते हैं, दुःख के नहीं। जब स्वप्न भी सुखदाई होंगे तो जरूर साकार में सुख स्वरूप होंगे।

18.6.77... .. अगर सदा अभ्यास में बिजी रहो तो व्यर्थ संकल्पों की कम्प्लेन्ट भी समाप्त हो जाए। साथ-साथ आपके अभ्यास में रहने का प्रभाव आपके चेहरे से दिखाई दे। क्या दिखाई देगा? 'अन्तर्मुखी सदा हर्षितमुखी' दिखाई देंगे, क्योंकि माया का सामना करना समाप्त हो जाएगा।

7.1.78... .. आप सब भी हर्षित होते हो। बाप ज़्यादा हर्षित होते या आप ज़्यादा हर्षित होते हो? सदैव यही खुशी के गीत गाते रहो कि जो पाना था, वह पा लिया। इस खुशी में रहने से किसी भी प्रकार की उलझन व उदासी आ नहीं सकती अर्थात् मायाप्रूफ हो जायेंगे। ऐसे मायाप्रूफ बन जाओ जो आपका एग्ज़ाम्पल। बाप-दादा सभी को दिखावें। ऐसे एग्ज़ाम्पल बने हो?

14.2.78... .. सदैव अपनी तकदीर को देखते हर्षित रहो तो आप सबको हर्षित रहते हुए देख अनेक दुःखी आत्मायें सुखी अनुभव करेंगी। आपकी खुशी अनेकों को बाप का परिचय दिलायेगी। हर एक चलता फिरता म्यूज़ियम बन जाये। जैसे म्यूज़ियम के चित्र परिचय दिलाते हैं वैसे आपका चैतन्य चित्र अनेकों को बाप का परिचय दे या प्राप्ति कराये। ऐसे सर्विसएबुल बनो।

16.2.78... .. दुःखी अशान्त आत्मायें, रोगी आत्मायें, शक्तिहीन आत्मायें एक सेकेण्ड की प्राप्ति की अंचली के लिए वा एक बूँद के लिए बहुत प्यासी हैं। आपका खुश नसीब सदा खुश अर्थात् हर्षित मुख चेहरा देख उन्हीं में मानव जीवन का जीना क्या होता है, उसकी हिम्मत, उमंग उत्साह आयेगा। अब तो जिन्दा होते भी नाउम्मीदी की चिंता पर बैठे हुए हैं। ऐसी आत्माओं को मरजीवा बनाओ। नये जीवन का दान दो। अर्थात् तीनों प्राप्तियों से सम्पन्न बनाओ। सदा स्मृति में रहे यह तीनों प्राप्तियाँ हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार हैं। तीनों ही प्रैक्टिकल धारणा के लिए डबल अण्डर लाइन लगाओ।

27.11.78... ..खिलाड़ी बनकर हर समय का खेल देखने में मज़ा आता है ना। खिलाड़ी की स्टेज सदा हर्षित मुख रहने का अनुभव कराती है। किसी भी प्रकार की कोई भी बात, जिसको दुनिया वाले आपदा समझते हैं लेकिन खिलाड़ी बन खेल करने वाले और खेल देखने वाले ऐसी आपदा के रूप को भी खेल को जैसे मनोरंजन अनुभव करेंगे। बड़े में बड़ी आपदा मनोरंजन दृश्य अनुभव हो – यह है मास्टर रचता की स्टेज। जैसे महाविनाश को भी स्वर्ग के गेट खुलने का साधन बताते हो – कहाँ महाविनाश और कहाँ स्वर्ग का गेट! तो महाविनाश की आपदा को भी मनोरंजन का रूप दे दिया ना – तो ऐसे किसी भी प्रकार की छोटी बड़ी समस्या वा आपदा मनोरंजन का रूप दिखाई दे। हाय-हाय के बजाए ओहो! शब्द निकले। इसको कहा जाता है अंगद के समान स्टेज।

29.11.78... .. स्वयं की वृत्ति वायब्रेशन फैलाती है और वायब्रेशन के आधार पर सर्व को अनुभूति होगी। इसलिए कार्य करने के पहले विशेष स्वयं की वृत्ति के अटेंशन की भट्टी चाहिए। इससे ही वायब्रेशन द्वारा अनेकों की वृत्ति को परिवर्तन कर सकेंगे। पहले यह अटेंशन रखना - सदा खुशी के झूले में झूलते रहो – हर्षित मुख अनेकों को अपने तरफ आकर्षित करता है।

3.12.78... .. विजयी की निशानी सदा हर्षित होंगे। किसी भी प्रकार के आकर्षण से परे होंगे। क्या भी हो जाए लेकिन बाप जैसा आकर्षण स्वरूप कोई है क्या ? तो सबसे सुन्दर कौन ? शिव बाबा है ना तो सदैव बाप की याद रहे, उसी आकर्षण में आकर्षित रहो फिर कोई आकर्षण आकर्षित नहीं कर सकता। अगर कोई भी आपको अपना राज्यभाग देने आये तो लेंगे? (नहीं) क्यों? क्योंकि आजकल के प्रेज़ीडेण्ट की कुर्सी काँटों की कुर्सी है। ताजतख्त छोड़कर काँटों की कुर्सी कौन लेगा? आज है कल नहीं। सदा इस नशें में रहो कि हमको जो मिला वह किसी को मिल नहीं सकता। अभी यह प्रेज़ीडेण्ट चाहे तो स्वर्ग में आयेगा? जब तक बाप का न बने तब तक स्वर्ग में नहीं आ सकते। यहीं रह जायेंगे। हम स्वर्ग में जायेंगे, ऐसा नशा और खुशी रहे - हम विश्व के मालिक के बालक हैं। सदा भाग्य का सुहाग प्राप्त है – तो सदा सुहागिन हो गई ना। विजयी की निशानी सदा हर्षित होंगे। किसी भी प्रकार के आकर्षण से परे होंगे

6.1.79... .. सन्तुष्ट आत्मायें सम्पन्न होने के कारण किसी से भी तंग नहीं होगी। सम्बन्ध में भी कोई खिटखिट नहीं होगी। अगर होगी भी तो उसका असर नहीं आयेगा। किसी भी प्रकार की उलझन या विघ्न एक खेल अनुभव

होगा। समस्या भी मनोरंजन का साधन बन जायेगी क्योंकि नालेज्जुल होकर देखेंगे। वह सदा निश्चयबुद्धि होने के कारण निश्चय के आधार पर विजयी होंगे। सदा हर्षित होंगे।

14.1.79... .. ब्राह्मण जीवन में संस्कार ही परिवर्तन हो जाते हैं। मन्सा में सदा श्रेष्ठ स्मृति – आत्मिक स्वरूप अर्थात् भाई-भाई की रहती है – इस स्मृति के आधार पर मन्सा प्यूरिटी के मार्क्स मिलते हैं। वाचा में सदा सत्यता और मधुरता – विशेष इस आधार पर वाणी की मार्क्स मिलती हैं। कर्मणा में सदा नम्रता और सन्तुष्टता इसका प्रत्यक्ष फल सदा हर्षितमुखता होगी, इस विशेषता के आधार पर कर्मणा में मार्क्स मिलती हैं। अब तीनों को सामने रखते हुए अपने आपको चैक करो कि हमारा नम्बर कौनसा होगा।

16.1.79... ..सभी सदा संगमयुग के श्रेष्ठ भाग्य को सुमिरण कर हर्षित रहते हो? संगमयुग का भाग्य और कोई भी युग में पा नहीं सकते। संगमयुग का एक-एक सेकेण्ड अति भाग्यशाली है। एक सेकेण्ड कई जन्मों का भाग्य बनाने के निमित्त बनता है। तो ऐसे श्रेष्ठ भाग्य को सदा याद रखते, अन्दर में भाग्य को देख करके सदा खुशी में नाचते रहो। वाह मेरा भाग्य – ऐसे अन्दर की खुशी बाहर दिखाई देती है दूसरे भी देखने वाले अनुभव करें कि इन्हों को कुछ मिला है, कुछ पाया है। ऐसे सदा खुश रहो। सदा अटेन्शन रखो तो माया खुशी का खज़ाना छीन नहीं सकती।

23.1.79... .. सदा सुहागिन अर्थात् सदा सम्पन्न और सदा हर्षित अनुभव करते हो – सदा अपने को आत्मा और परमात्मा के कम्बाइण्ड रूप का अनुभव करते हो – सिंगल हो वा युगल हो? अकेले समझेंगे तो वियोगी जीवन अनुभव करेंगे। सदा सुहागिन अर्थात् कम्बाइण्ड समझेंगे तो सदा मिलन महफिल में अपने को अनुभव करेंगे।

19.11.79... .. अमृतवेले सदा स्मृति का तिलक लगाओ कि हम अधिकारी हैं। अगर तिलक लगा होगा तो सदा हर्षित रहेंगे। तिलक को मिटने नहीं देना। माया कितना भी मिटाने की कोशिश करे लेकिन मिटाना नहीं तो सदा 'अविनाशी भव' का वरदान मिलता रहेगा।

5.12.79... .. शक्तियाँ सदा शस्त्रधारी श्रृंगारीमूर्त और संहार करने वाली – दोनों ही स्वरूप में स्थित रहती हो? कभी रोने वाली तो नहीं हो ना? सदा हर्षित। मन से भी रोने वाली नहीं। ज़रा भी माया से हार हुई तो मन से रोना होता है। माताओं को तो सदा खुशी में नाचना चाहिए – क्योंकि ना-उम्मीद से उम्मीदवार हो गई, बाप ने सिर का ताज बना दिया तो कितनी खुशी होनी चाहिए।

12.12.79... .. जो विजयी होते हैं वह सदा निश्चिन्त विष्णु के समान सदा हर्षित रहते हैं। हर्ष भी तब होगा जब ज्ञान का सुमिरण करते रहेंगे। तो यह चित्र आप का ही है ना। जो भी बाप के बच्चे बने और विजयी हो रहे हैं, उन सब का यह चित्र है। सदा सामने देखो कि विकारों को अधीन किया हुआ अधिकारी हूँ। आत्मा सदा आराम

स्थिति में रहे। शरीर को सोने का आराम नहीं, वह तो सेवा में हड्डियाँ देनी हैं लेकिन आत्मा की निश्चिन्त स्थिति – यह है आराम? क्योंकि कि अब भटकने से बच गये।

19.12.79... .. सदा अपने भाग्य की महिमा के गीत गाते रहते हो? जैसे स्थूल साधारण गीत भी गाते हैं तो कितना खुशी में आ जाते हैं। भक्तिमार्ग में कीर्तन करते हैं तो भी कितना खुश होते हैं। तो आप सभी भी बाप द्वारा की गई महिमा के गीत सदा गाते रहो। पहले हम क्या थे और बाप ने क्या बना दिया, उसी का सुमिरण करते सदा हर्षित रहो। इसी सुमिरण में समर्थी समाई हुई है। क्योंकि बाप ने समर्थ बनाया है ना। जो स्वप्न में बनना न था, वह साकार स्वरूप में अनुभव कर रहे हो इसीलिए बाप-दादा सभी बच्चों को लकी सितारे कहते हैं। तो लकी सितारे हो ना?

7.3.81... .. आप सबका कितना श्रेष्ठ भाग्य है जो बच्चों से मिलने बाप खुद आते हैं। इसी भाग्य का सिमरण कर सदा हर्षित रहो – कि बाबा हमारे लिए आया है। भगवान को मैंने लाया। भगवान को अपने प्रेम के बंधन में बाँध लेना और क्या चाहिए। ऐसे नशे में रहो तो माया भाग जायेगी। माया को तो सबने तलाक दे दिया है ना! तलाक देना अर्थात् संकल्प में भी न आवे। मंसा से भी खत्म करना यह हुआ तलाक। तो तलाकनाम दे दिया ना। आप सब कितने लकीएस्ट हो जो दूर-दूर से बाप ने अपने बच्चों को ढूँढ लिया। इसलिए सदा अपने को सिकीलधे समझो।

9.3.81... .. कल्प-कल्प के विजय हैं अब की बार नहीं हर कल्प के, अनगिनत बार के विजयी हैं। ऐसे विजयी सदा हर्षित रहते हैं। हार के अन्दर दुख की लहर होती है। सदा विजयी जो होंगे वह सदा खुश रहेंगे, कभी भभ किसी सर्कमस्टॉस में भी दुख की लहर नहीं आ सकती। दुख की दुनिया से किनारा हो गया, रात खत्म हुई, प्रभात में आ गये तो दुख की लहर कैसे आ सकती। विजय का झण्डा सदा लहराता रहे नीचे न हो।

15.3.81... .. बापदादा हरेक बच्चे को देख, हरेक बच्चों में उनके 21 जन्मों की प्रालब्ध को देखते हैं? क्या थे, क्या बने हैं और क्या बनने वाले हैं? तीनों काल देखते हुए भविष्य कितना श्रेष्ठ है, उसको देखकर हर्षित होते हैं। आप हरेक भी अपनी प्रालब्ध को समझकर, अनुभव कर हर्षित होते हो? अपनी प्रालब्ध इतनी स्पष्ट है कि आज हम यह हैं, कल यह बनने वाले हैं। यह तो अवश्य है जब बाप का बन गये तो बाप का बनना अर्थात् ब्राह्मण बनना। ब्राह्मण सो देवता भी अवश्य बनेंगे। बाकी देवता में भी क्या पद मिलना है वह है हरेक के अपने पुरुषार्थ पर।

15.4.81... .. सदा ज्ञान सागर की भिन्न-भिन्न लहरों में लहराते रहते हो? शुरू से लेकर अब तक बाप द्वारा ज्ञान की कितनी पाइंटस मिली हैं, उसी पाइंटस को मनन कर सदा हर्षित रहो। जैसे ज्ञान सागर बाप ज्ञान में सम्पन्न हैं वैसे बच्चे भी ज्ञान में सम्पन्न बन ज्ञान की हर पाइंट के नशे और खुशी में रहो। अखुट पाइंटस मिली हैं। एक भी

पाइंट रोज बुद्धि में रखो और उसी के अनुभव में सदा रहो तो ज्ञान स्वरूप बन जायेंगे। कितना श्रेष्ठ ज्ञान और किसने दिया है! यही सदा स्मृति में रहे। भक्त आत्मायें जिसके लिए तड़प रही हैं, प्यासी हैं, उससे आप तृप्त हो गये। भक्ति की प्यास बुझ गई है ना! तो सदा यही गीत गाते रहो – पाना था सो पा लिया.....

17.10.81... .. सदा अपने हीरो पार्ट को देख हर्षित रहो, वाह ड्रामा और वाह मेरा पार्ट! अगर ज़रा भी साधा-रण कर्म हुआ तो हीरो नहीं कहला सकते। जैसे बाप हीरो पार्टधारी है तो उनका हर कर्म गाया और पूजा जाता है, ऐसे बाप के साथ जो सहयोगी आत्मायें हैं उन्हीं का भी हीरो पार्ट होने के कारण हर कर्म गायन और पूजन योग्य हो जाता है। तो इतना नशा है या भूल जाता है? आधाकल्प तो भूले, अभी भी भूलना है क्या? अब तो याद-स्वरूप बन जाओ। स्वरूप बनने के बाद कभी भूल नहीं सकते।

19.10.81... .. स्वमान की सीट पर सदा सुखी, सदा श्रेष्ठ, सदा सर्व प्राप्ति-स्वरूप का अनुभव करो। अपनी विशेषता बाप को जानने और मिलन मनाने की, इसी को स्मृति में रख सदा हर्षित रहो। जैसे सुनाया कि चन्द्रमा सितारों को देख हर्षित हो रहे थे, ऐसे फालो फादर।

सभी कुमारियाँ बापदादा के कुल की दीपक हो ना? अपने भाग्य को देखकर सदा हर्षित रहो तो इस जीवन में बाप की बन गई। यही जीवन गिराने वाली भी है और चढ़ाने वाली भी है। तो सभी चढ़ती कला के रास्ते पर पहुँच गई हो।

18.11.81... .. हरेक विश्व की आत्माओं के लिए लाइट हाउस हो, माइट हाउस हो, धरती के चमकते हुए सितारे हो। हरेक सितारे की श्रेष्ठ कर्म, श्रेष्ठ संकल्प द्वारा जमा की हुई विशेषताएं वा ख़ज़ाने इतने अखुट हों जो हरेक सितारे की अपनी विशेष दुनिया दिखाई दे। हरेक देख-देख अपने दुःख भूलकर सुख की अनुभूति कर हर्षित हो जायें। सर्व प्राप्तियों की हरेक की अलौकिक दुनिया देख वाह-वाह के गीत गाएं। यह है दिलाराम बापदादा के दिल की बात।

17.3.82... .. सिर्फ सन्देश देने के सहयोगी नहीं बनो, अपने परिवर्तन से सहयोगी बनो। अपने सर्व प्राप्तियों के अनुभव सुनाने के सहयोगी बनो। अपने सदा हर्षित रहने वाली सूरत से सहयोगी बनो। किसी को गुणों के दान द्वारा सहयोगी बनो। किसी को उमंग-उत्साह बढ़ाने के सहयोगी बनो। जिसमें भी सहयोगी बन सको उसमें सहयोगी सदा बनो। यही सहज योग है। समझा क्या करना है?

17.3.82... .. आपके तकदीर की लकीर कितनी लम्बी है। 21 जन्म तक सर्व प्राप्तियों के तकदीर की लकीर है। 21 जन्म गारन्टी है और बाद में भी इतना दुख नहीं होगा। सारे कल्प का पौना हिस्सा तो सुख ही प्राप्त होता है। इस लास्ट जन्म में भी अति दुखी की लिस्ट में नहीं हो। तो कितने श्रेष्ठ तकदीरवान हुए! इसी श्रेष्ठ तकदीर को देख सदा हर्षित रहो।

24.3.82... .. सदा सुख की शैय्या पर सोई हुई आत्मा के लिए यह विकार भी छत्रछाया बन जाता है – दुश्मन बदल सेवाधारी बन जाते हैं। अपना चित्र देखा है ना! तो 'शेष शय्या' नहीं लेकिन 'सुख-शय्या'। सदा सुखी और शान्त की निशानी है – सदा हर्षित रहना। सुलझी हुई आत्मा का स्वरूप सदा हर्षित रहेगा। उलझी हुई आत्मा कभी हर्षित नहीं देखेंगे। उसका सदा खोया हुआ चेहरा दिखाई देगा और वह सब कुछ पाया हुआ चेहरा दिखाई देगा। जब कोई चीज़ खो जाती है तो उलझन की निशानी क्यों, क्या, कैसे ही होता है। तो रुहानी स्थिति में भी जो भी पवित्रता को खोता है, उसके अन्दर क्यों, क्या और कैसे की उलझन होती है। तो समझा कैसे चेक करना है? सुख-शांति के प्राप्ति स्वरूप के आधार पर मंसा पवित्रता को चेक करो।

6.4.82... .. दासपन की निशानी है – मन से, चेहरे से उदास होना। उदास होना निशानी है दासपन की। और अधिकारी अर्थात् स्वराज्यधारी की निशानी है – मन और तन से सदा हर्षित।

31.12.82... .. या नमस्ते करने आवे, वैसे नहीं। निमित्त शिक्षक का स्वरूप – सदा हर्षित, सदा मास्टर सर्वशक्तिवान – ऐसी सीट पर सदा सेट रहो। टीचर्स के रहने का स्थान ही 'ऊँची स्थिति' है। सेन्टर पर नहीं रहती हो लेकिन ऊँची स्टेज पर रहती हो। ऊँची स्टेज अर्थात् दिलतख्त पर माया आ नहीं सकती।

11.1.83... .. कुमारियाँ तो अपना भाग्य देख सदा हर्षित होती हैं। कुमारी लौकिक जीवन में भी ऊँची गई जाती है और ज्ञान में तो कुमारी है ही महान। लौकिक में भी श्रेष्ठ आत्मायें और पारलौकिक में भी श्रेष्ठ आत्मायें। ऐसे अपने को महान समझती हो?

13.1.83... .. अपने को ऐसे मास्टर सर्वशक्तिवान श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो ना। कमजोरी तो नहीं आती। बाप सर्वशक्तिवान हैं, तो बच्चों को बाप अपने से भी आगे रखते हैं। बाप ने कितना ऊँच बनाया है, क्या क्या दिया है – इसी कासिमरण करते-करते सदा हर्षित और शक्तिशाली रहेंगे।

21.12.83... .. सदा इसी स्मृति में रहो कि बाप को जानने वाली, बाप को पाने वाली कोटो में कोई जो गाई हुई आत्मायें हैं, वह हम हैं। इसी खुशी में रहो तो आपके यह चेहरे चलते फिरते सेवा-केन्द्र हो जायेंगे। जैसे सर्विस सेन्टर पर आकर बाप का परिचय लेते हैं वैसे आपके हर्षित चेहरे से बाप का परिचय मिलता रहेगा। बापदादा हर बच्चे को ऐसा ही योग्य समझते हैं। इतने सब सेवा-केन्द्र बैठे हैं। तो सदा ऐसे समझो, चलते फिरते खाते पीते हमको बाप की सेवा, अपनी चलन से व चेहरे से करनी है। तो सहज ही निरंतर योगी बन जायेंगे।

5.4.83... .. सेवाधारी सदा स्वयं का त्याग कर दूसरे की सेवा में हर्षित होते हैं। मातायें तो सेवा की अनुभवी हैं ना! अपनी नींद भी त्याग करेंगी और बच्चे को गोदी के झूले में झुलायेंगी। आप लोगों द्वारा जो वृद्धि को प्राप्त होंगे उन्हीं को भी तो हिस्सा दिलावेंगे ना।

14.4.83... आप बच्चों के मनन का चित्र भक्ति में भी दिखाया है। कैसे मनन करो वह चित्र याद है! विष्णु का चित्र नहीं देखा है? आराम से लेटे हुए हैं और मनन कर रहे हैं, सिमरण कर रहे हैं। सिमरण कर, मनन कर हर्षित हो रहे हैं। तो यह किसका चित्र है? शैया देखो कैसी है! सांप को शैया बना दिया अर्थात् विकार अधीन हो गये। उसके ऊपर सोया है। नीचे वाली चीज़ अधीन होती है, ऊपर मालिक होते हैं। मायाजीत बन गये तो निश्चित। माया से हार खाने की, युद्ध करने की कोई चिन्ता नहीं। तो निश्चित और मनन करके हर्षित हो रहे हैं। ऐसे अपने को देखो, मायाजीत बने हैं। कोई भी विकार वार न करे। रोज़ नई नई पाइंट स्मृति में रख मनन करो तो बड़ा मज़ा आयेगा, मौज में रहेंगे। क्योंकि बाप का दिया हुआ खजाना मनन करने से अपना अनुभव होता है। जैसे भोजन पहले अलग होता है, खाने वाला अलग होता है। लेकिन जब हजम कर लेते तो वही भोजन खून बन शक्ति के रूप में अपना बन जाता है। ऐसे ज्ञान भी मनन करने से अपना बन जाता, अपना खज़ाना है यह महसूसता आयेगी।

21.4.83... कई कहते हैं क्या रोज़ वही आत्मा, परमात्मा का ज्ञान सुनते रहें, लेकिन यह आत्मा परमात्मा का सूखा ज्ञान नहीं है। बहुत रमणीक ज्ञान है, सिर्फ़ रोज़ अपना नया-नया टाइटिल याद रखो – मैं आत्मा तो हूँ लेकिन कौन सी आत्मा हूँ? कभी आर्टिस्ट की आत्मा हूँ, कभी बिजनेसमैन की आत्मा हूँ... तो ऐसे रमणीकता से आगे बढ़ते रहो। बाप भी रमणीक है ना! देखो कभी धोबी बन जाता तो कभी विश्व का रचयिता, कभी ओबीडियन्ट सर्वेन्ट... तो जैसा बाप वैसे बच्चे... ऐसे ही इस रमणीक ज्ञान का सिमरण कर हर्षित रहो।

5.12.83... बापदादा भी बच्चों के सहज श्रेष्ठ सर्व प्राप्त को देख हर्षित होते हैं। आप सभी भी इतने हर्षित होते हो या कभी हर्षित और कभी माया के आकर्षित और माया के दुविधा में तो नहीं रहते हो! दुविधा दलदल बना देती है। अभी तो दलदल से निकल दिलतख्तनशीन हो गये हो ना! सोचो कहाँ दलदल और कहाँ दिलतख्त! क्या पसन्द है? चिल्लाना या तख्त पर चढ़के बैठना। पसन्द तो तख्त है फिर दलदल की ओर क्यों चले जाते हो। दलदल के समीप जाने से दूर से ही दलदल अपने तरफ़ खींच लेती है।

5.12.83... अपने को सदा हीरो पार्टधारी समझते हुए हर कर्म करो। जो हीरो पार्टधारी होते हैं उनको कितनी खुशी होती है, वह तो हुआ हद का पार्ट। आप सबका बेहद का पार्ट है। किसक साथ पार्ट बजाने वाले हैं! किसके सहयोगी हैं, किस सेवा के निमित्त हैं, यह स्मृति सदा रहे तो सदा हर्षित, सदा सम्पन्न, सदा डबल लाइट रहेंगे। हर कदम में उन्नति होती रहेगी। क्या थे और क्या बन गये! 'वाह मैं और वाह मेरा भाग्य!' सदा यही गीत खूब गाओ और औरों को भी गाना सिखाओ। 5 हज़ार वर्ष की लम्बी लकीर खिंच गई तो खुशी में नाचो।

12.12.83... प्रश्न:- सेवा का सहज साधन अथवा सर्व को आकर्षित करने का सहज साधन वा पुरुषार्थ कौनसा है? उत्तर:- हर्षितमुख चेहरा! जो सदा हर्षित रहता वह स्वतः ही सर्व को आकर्षित करता है। और सहज ही सेवा के निमित्त भी बन जाता है। हर्षितमुखता खुशी की निशानी है। खुशी का चेहरा देख स्वतः पूछेंगे क्या पाया, क्या मिला! तो सदा खुशी में रहो। क्या थे, क्या बन गये, इससे ही सेवा होती रहेगी।

27.12.83.. .. जैसा बाप वैसा बच्चा। जो बाप के गुण, जो बाप का कार्य वह बच्चों का। इसको कहा जाता है – ‘योगी जीवन’। ऐसे योगी, जो सदा एक लगन में मगन रहते हैं, वही सदा हर्षित रह सकते हैं। मन का हर्ष तन पर भी आता है। जब है ही सर्व प्राप्ति स्वरूप। जहाँ सर्व प्राप्ति है वहाँ हर्ष होगा ना। दुःख का नाम निशान नहीं। सदा सुख स्वरूप अर्थात् सदा हर्षित। ज़रा भी दुःख के संसार की आकर्षण नहीं। अगर दुःख के संसार में बुद्धि जाती है तो बुद्धि जाना – माना आकर्षण! जो सदा हर्षित रहता वह दुःखों की दुनिया तरफ आकर्षित नहीं हो सकता। अगर आकर्षित होता तो हर्षित नहीं। तो सदा के हर्षित। वर्सा ही सदा का है। यही विशेषता है। संगमजैसा बाप वैसा बच्चा। जो बाप के गुण, जो बाप का कार्य वह बच्चों का। इसको कहा जाता है – ‘योगी जीवन’। ऐसे योगी, जो सदा एक लगन में मगन रहते हैं, वही सदा हर्षित रह सकते हैं। मन का हर्ष तन पर भी आता है। जब है ही सर्व प्राप्ति स्वरूप। जहाँ सर्व प्राप्ति है वहाँ हर्ष होगा ना। दुःख का नाम निशान नहीं। सदा सुख स्वरूप अर्थात् सदा हर्षित। ज़रा भी दुःख के संसार की आकर्षण नहीं। अगर दुःख के संसार में बुद्धि जाती है तो बुद्धि जाना – माना आकर्षण! जो सदा हर्षित रहता वह दुःखों की दुनिया तरफ आकर्षित नहीं हो सकता। अगर आकर्षित होता तो हर्षित नहीं। तो सदा के हर्षित। वर्सा ही सदा का है। यही विशेषता है।

31.12.83... .. नये वर्ष की विशेष सौगात – बापदादा ‘वरदान माला’ दे रहे हैं। सेरीमनी बनाते हैं तो वरमाला डालते हैं। बापदादा सभी आशिकों को वरदान माला की सौगात दे रहे हैं। सदा सन्तुष्टता से सन्तुष्ट रहो और सन्तुष्ट करो। हर संकल्प में विशेषता हो, हर बोल और कर्म में विशेषता हो। ऐसे विशेषता सम्पन्न सदा रहो। सदा सरल स्वभाव, सरल बोल, सरलता सम्पन्न कर्म हों। ऐसे सरल स्वरूप रहे। सदा एक की मत पर, एक से सर्व सम्बन्ध, एक से सर्व प्राप्ति ऐसे एक द्वारा सदा एक रस रहने के सहज अभ्यासी रहो। सदा खुश रहो, खुशी का खज़ाना बाँटो। खुशी की लहर सर्व में फैलाओ। ऐस सदा खुशी की मुस्कराहट चेहरे पर चमकती रहे। ऐसे हर्षित मुख रहो। सदा याद में रहो। वृद्धि को पाओ। ऐसे वरदान माला सदा साथ रहे। समझा। यह है नये वर्ष की सौगात! अच्छा

4.4.84... .. दाता एक है, देता भी एक जैसा है। लेकिन बनाने वाले बनाने में नम्बरवार हो जाते। कोई अष्ट और ईष्ट देव बन जाते। कोई देव बन जाते। कोई देवों को देख-देख हर्षित होने वाले हो जाते। अपना चित्र देख लिया ना! अच्छा—.

26.4.84.. .. देख हर्षित होते रहो – वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य! यही बस यही याद करो कि जीवन में पाना था वह पा लिया। जो प्राप्ति चाहिए वह सब हो गई। सर्व प्राप्ति के भरपूर भण्डार हैं। जहाँ सदा भण्डार भरपूर हैं वहाँ दुःख-दर्द सब समाप्त हो जाते हैं। सदा अपने भाग्य को देख हर्षित होते रहो – वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य! यही सदा मन में गीत गाते रहो। कितना बड़ा आपका भाग्य है। बस यही याद करो कि जीवन में पाना था वह पा लिया। जो प्राप्ति

चाहिए वह सब हो गई। सर्व प्राप्ति के भरपूर भण्डार हैं। जहाँ सदा भण्डार भरपूर हैं वहाँ दुःख-दर्द सब समाप्त हो जाते हैं। सदा अपने भाग्य को सदा मन में गीत गाते रहो। कितना बड़ा आपका भाग्य है।

9.5.84... .. जब बाप साथ है तो कोई डर की बात नहीं। अच्छा है, कुमारी जीवन में बच गई यह बहुत बड़ा भाग्य है। रास्ते उल्टे पर जाकर फिर लौटना, यह भी समय वेस्ट हुआ ना! तो समय, शक्तियाँ सब बच गई। भटकने की मेहनत से छूट गई। कितना फ़ायदा हुआ। बस वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य! यह देखकर सदा हर्षित रहो। किसी भी कमज़ोरी से अपनी श्रेष्ठ सेवा से वंचित नहीं होना। जब बाप साथ है तो कोई डर की बात नहीं। अच्छा है, कुमारी जीवन में बच गई यह बहुत बड़ा भाग्य है। रास्ते उल्टे पर जाकर फिर लौटना, यह भी समय वेस्ट हुआ ना! तो समय, शक्तियाँ सब बच गई। भटकने की मेहनत से छूट गई। कितना फ़ायदा हुआ। बस वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य! यह देखकर सदा हर्षित रहो। किसी भी कमज़ोरी से अपनी श्रेष्ठ सेवा से वंचित नहीं होना।

11.5.84... .. सदा अपने विशेष पार्ट को देख हर्षित रहते हो? ऊँचे ते ऊँचे बाप के साथ पार्ट बजाने वाले विशेष पार्टधारी हो। विशेष पार्टधारी का हर कर्म स्वतः ही विशेष होगा क्योंकि स्मृति में है कि – मैं विशेष पार्टधारी हूँ। जैसे स्मृति वैसी स्थिति स्वतः बन जाती है।

3.12.84... .. कुमार जीवन श्रेष्ठ जीवन है, कुमार जीवन में बाप के बन गये ऐसी अपनी श्रेष्ठ तकदीर देख सदा हर्षित रहो और औरों को भी हर्षित रहने की विधि सुनाते रहो। सबसे निर्बन्धन कुमार और कुमारियाँ हैं।

14.1.85... .. मातायें सदा अपना श्रेष्ठ भाग्य देख हर्षित रहती हो ना। चरणों की दासी से सिर के ताज बन गई यह खुशी सदा रहती है? कभी खुशी का खजाना चोरी तो नहीं हो जाता? माया चोरी करने में होशियार है। अगर सदा बहादुर हैं, होशियार हैं तो माया कुछ नहीं कर सकती और ही दासी बन जायेगी, दुश्मन सेवाधारी बन जायेगी। तो ऐसे मायाजीत हो?

6.3.85... .. सदा अपने भाग्य को देख हर्षित रहो। कितना बड़ा भाग्य मिला है, घर बैठे भगवान मिल जाए इससे बड़ा भाग्य और क्या होगा! इसी भाग्य को स्मृति में रख हर्षित रहो। तो दुःख और अशान्ति सदा के लिए समाप्त हो जायेंगे। सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप बन जायेंगे। जिसका भाग्य स्वयं भगवान बनाये वह कितने श्रेष्ठ हुए। तो सदा अपने में नया उमंग, नया उत्साह अनुभव करते आगे बढ़ते चलो। क्योंकि संगमयुग पर हर दिन का नया उमंग, नया उत्साह है।

15.3.85... ..विदाई के समय दादी जानकी जी से बापदादा की मुलाकात देख-देख हर्षित होती रहती हो! सबसे ज़्यादा खुशी अनन्य बच्चों को है ना! जो सदा ही खुशियों के सागर में लहराते रहते हैं। सुख के सागर में, सर्व प्राप्तियों के सागर में लहराते ही रहते हैं, वह दूसरों को भी उसी सागर में लहराते हैं। सारा दिन क्या काम करती हो? जैसे कोई को सागर में नहाना नहीं आता है तो क्या करते? हाथ पकड़कर नहलाते हैं ना! यही काम करती

हो, सुख में लहराओ, खुशी में लहराओ...ऐसे करती रहती हो ना! बिज़ी रहने का कार्य अच्छा मिल गया है। कितना बिज़ी रहती हो? फुर्सत है? इसी में सदा बिज़ी हैं, तो दूसरे भी देख फ़ालो करते हैं। बस, याद और सेवा के सिवाए और कुछ दिखाई नहीं देता। आटोमेटिकली बुद्धि याद और सेवा में ही जाती है और कहाँ जा नहीं सकती।

21.3.85... .. कोई बहुत अच्छे तीव्र पुरुषार्थी भी हैं। नालेजफुल, सर्विसएबुल भी हैं। बापदादा, परिवार की नज़रों में भी हैं लेकिन जोड़ तोड़ होने वाली आत्मा सदा शक्तिशाली नहीं रहेगी। छोटी-छोटी बात पर उसको मेहनत करनी पड़ेगी। कभी सदा हल्के, हर्षित खुशी में नाचने वाले होंगे। लेकिन ऐसे सदा नज़र नहीं आयेंगे। होंगे महारथी की लिस्ट में लेकिन ऐसे संस्कार वाले कमज़ोर ज़रूर रहते हैं। इसका कारण क्या होता है? यह तोड़ने-जोड़ने के संस्कार उनको अन्दर से कमजोर कर देते हैं। बाहर से कोई बात नहीं होगी। बहुत अच्छे दिखाई देंगे। इसलिए यह संस्कार कभी नहीं बनाना। यह नहीं सोचना माया आ गई। चल तो रहे हैं। लेकिन ऐसे चलना, कभी तोड़ना कभी जुड़ना यह क्या हुआ? सदा जुटा रहे, सदा निर्विघ्न रहे, सदा हर्षित, सदा छत्रछाया में रहें वह, और यह जीवन में अन्तर है ना।

11.4.85... .. सिर्फ बोलना ही सर्विस नहीं होती लेकिन अपना चेहरा सदा हर्षित हो। रूहानी चेहरा भी सेवा करता है। लक्ष्य रखें उमंग- उत्साह से खुशी-खुशी से रूहानी खुशी की झलक दिखाते हुए आगे बढ़ें। सिर्फ जबरदस्ती कोई को नहीं करना है। प्रोग्राम बना है तो करना ही है, ऐसी कोई बात नहीं है, अपना उमंग-उत्साह है तो करे, अच्छा है।

15.1.86... .. स्नेही के हर कदम में, जिससे स्नेह है उसकी छाप देखने में आती है। जितना हर्षित मूर्त उतना आकर्षण मूर्त बन जाते हैं।

22.3.86... .. पवित्र आत्मायें सदा हर्षित रहने वाली आत्मायें हैं, यह सदा स्मृति में रखो। अनेक प्रकार की उलझनों से भटकने से दुख अशान्ति की जाल से निकल आये। क्योंकि सिर्फ एक दुख नहीं आता है। लेकिन एक दुख भी वंशावली के साथ आता है। तो उस जाल से निकल आये। ऐसे अपने को भाग्यवान समझते हो ना!

11.4.86... .. मुरलियाँ तो बहुत सुनी। अब मुरलीधर बन सदा नाचते और नचाते रहना है। मुरली से – साँप के विष को भी समाप्त कर लेते हैं। तो ऐसा मुरलीधर हो जो किसी का कितना भी कड़वा स्वभाव संस्कार हो – उसको भी वश कर दे अर्थात् उससे मुक्त कर नचा दे। हर्षित बना दे। अभी यह रिजल्ट देखेंगे कि कौन-कौन ऐसे योग्य मुरलीधर बनते हैं। मुरली से भी प्यार है, मुरलीधर से भी प्यार है लेकिन प्यार का सबूत है – जो मुरलीधर की शुभ आशा है, हर बच्चे प्रति वह प्रैक्टिकल में दिखाना। प्यार की निशानी है – जो कहा वह करके दिखाना। ऐसे मास्टर मुरलीधर हो ना!

23.1.87... .. अपने को सदा हर्षित रहने वाली श्रेष्ठ आत्मा अनुभव करते हो? हर्षितमुख, हर्षितचित्त। इसकी यादगार आपके यादगार चित्रों में भी दिखाते हैं। कोई भी देवी या देवता की मूर्ति बनायेंगे तो उसमें चेहरा जो दिखाते हैं, वह सदा हर्षित दिखाते हैं। अगर कोई सीरियस (गम्भीर) चेहरा होगा तो देवता का चित्र नहीं मानेंगे। तो हर्षितमुख रहने का इस समय का गुण आपके यादगार चित्रों में भी है। हर्षितमुख अर्थात् सदा सर्व प्राप्तियों से भरपूर। जो भरपूर होता है वही हर्षित रह सकता है। अगर कोई भी अप्राप्ति होगी तो हर्षित नहीं रहेंगे। कितनी भी हर्षित रहने की कोशिश करें, बाहर से हँसेंगे लेकिन दिल से नहीं। कोई बाहर से हँसते हैं तो मालूम पड़ जाता है – यह दिखावे का हँसना है, सच्च नहीं। तो आप सब दिल से सदा मुस्काराते रहो। कभी चेहरे पर दुःख की लहर न आये। किसी भी परिस्थिति में दुःख की लहर नहीं आनी चाहिए क्योंकि दुःख की दुनिया छोड़ दी, संगम की दुनिया में आ गये।

20.2.87... .. सेवा के विशेषता की और अनेक बातें सुनी भी हैं। सब बातों का सार है – निःस्वार्थ, निर्विकल्प स्थिति से सेवा करना सफलता का आधार है। इसी सेवा में ही स्वयं भी सन्तुष्ट और हर्षित रहते और दूसरे भी सन्तुष्ट रहते। सेवा के बिना संगठन नहीं होता। संगठन में भिन्न-भिन्न बातें, भिन्न-भिन्न विचार, भिन्न-भिन्न तरीके, साधन – यह होना ही है। लेकिन बातें आते भी, भिन्न-भिन्न साधन सुनते हुए भी स्वयं सदा अनेक को एक बाप की याद में मिलाने वाले, एकरस स्थिति वाले रहो। कभी भी अनेकता में मूँझो नहीं – अब क्या करें, बहुत विचार हो गये हैं, किसका मानें, किसका न मानें? अगर निःस्वार्थ, निर्विकल्प भाव से निर्णय करेंगे तो कभी किसी को कुछ व्यर्थ संकल्प नहीं आयेगा। क्योंकि सेवा के बिना भी रह नहीं सकते, याद के बिना भी रह नहीं सकते। इसलिए, सेवा को भी बढ़ाते चलो। स्वयं को भी स्नेह, सहयोग और निःस्वार्थ भाव में बढ़ाते चलो।

5.10.87... .. सदा अपने भाग्य को देख हर्षित होते स्वयं भी सदा हर्षित और दूसरों को भी हर्षित बनाते चलो। क्योंकि हर्षित-मुख स्वतः ही आकर्षितमूर्त्त होते हैं। जैसे स्थूल नदी अपने तरफ खींचती है ना, खींचकर यात्री जाते हैं। चाहे कितना भी कष्ट उठाना पड़े, फिर भी पावन होने का आकर्षण खींच लेता है। तो यह पावन बनाने के कार्य का यादगार यू.पी. में है। ऐसे ही हर्षित और आकर्षितमूर्त्त बनना है।

17.10.87... .. दुनिया दुःख में चिल्ला रही है और आप सुख के संसार में, सुख के झूले में झूल रहे हो। कितना अंतर है! दुनिया ढूँढ़ रही है और आप मिलन मना रहे हो। तो सदा अपनी सर्व प्राप्तियों को देख हर्षित रहो। क्या-क्या मिला है, उसकी लिस्ट निकालो तो बहुत लम्बी लिस्ट हो जायेगी। क्या-क्या मिला? तन में खुशी मिली, तो तन की खुशी तन्दरुस्ती है; मन में शान्ति मिली, तो शान्ति मन की विशेषता है और धन में इतनी शक्ति आई जो दाल-रोटी 36 प्रकार के समान अनुभव हो।

14.11.87... .. यह रूहानी महफिल विचित्र अलौकिक महफिल है जिसको रूहानी बाप जाने और रूहानी बच्चे जानें। यह रूहानी आकर्षण के आगे माया की अनेक प्रकार की आकर्षण तुच्छ लगती है, असार अनुभव होती

है। यह रूहानी आकर्षण सदा के लिए वर्तमान और भविष्य अनेक जन्मों के लिए हर्षित बनाने वाली है, अनेक प्रकार के दुःख-अशान्ति की लहरों से किनारा कराने वाली है।

6.1.88... कोई भी यात्रा पर जाते हैं तो क्या करते हैं? संगठन बनाते हैं ना। क्यों बनाते हैं? संगठन से, साथ से उमंग-उत्साह से आगे बढ़ते जाते। तो आप सभी भी रूहानी यात्रा पर सदा आगे बढ़ते रहना क्योंकि बाप का साथ, ब्राह्मण परिवार का साथ कितना बढ़िया साथ है! अगर कोई अच्छा साथी होता है तो कभी भी बोर नहीं होते, थकते नहीं। तो सदा आगे बढ़ने वाले सदा ही हर्षित रहते हैं, सदा खुशी में नाचते रहते हैं।

22.1.88... ब्रह्मा के आगे क्वेश्चन उठने की मार्जिन थी। क्या करना है, आगे क्या होना है, राइट कर रहा हूँ वा रांग कर रहा हूँ – यह संकल्प उठना सम्भव था लेकिन सम्भव को असम्भव बनाया। एक बल एक भरोसा – इसी आधार से निश्चयबुद्धि नम्बरवन विजयी बन गये। इसी समर्पणता के कारण बुद्धि सदा हल्की रही, बुद्धि पर बोझ नहीं रहा। मन निश्चिन्त रहा। चेहरे पर सदा ही बेफिकर बादशाह के चिन्ह स्पष्ट देखे। बच्चे और खाने के लिए आटा नहीं और टाइम पर बच्चों को खाना खिलाना है! तो सोचो, ऐसी हालत में कोई बेफिकर रह सकता है एक बजे बेल (घण्टी) बजना है और 11.00 बजे तक आटा नहीं, कौन बेफिकर रह सकता? ऐसी हालत में भी हर्षित, अचल रहा। यह बाप की ज़िम्मेवारी है, मेरी नहीं है, मैं बाप का तो बच्चे भी बाप के हैं, मैं निमित्त हूँ – ऐसा निश्चय और निश्चिन्त कौन रह सकता? मन-बुद्धि से समर्पित आत्मा।

3.2.88... बापदादा सदा बच्चों को सेवा में आगे बढ़ते, स्नेह के कारण खुश रहें। यह संकल्प कभी भी दिल के स्नेह में उत्पन्न नहीं हो सकता कि बच्चे क्यों सेवा में आगे जायें, निमित्त तो मैं हूँ, मैंने ही इनको निमित्त बनाया। कभी स्वप्न-मात्र भी यह भावना उत्पन्न नहीं हुई। इसको कहा जाता है – सच्चा स्नेह, निःस्वार्थ स्नेह, रूहानी स्नेह! सदा बच्चों को आगे निमित्त बनाने में हर्षित रहे। बच्चों ने किया या बाप ने किया, मैं-पन नहीं रहा। मेरा काम है, मेरी ड्यूटी है, मेरा अधिकार है, मेरी बुद्धि है, मेरा प्लैन है – नहीं। स्नेह यह मेरा-पन मिटा देता है। आपने किया सो मैंने किया, मैंने किया सो आपने किया - यह शुभ भावना वा शुभ कामना, इसको कहा जाता है – दिल का स्नेह।

11.11.89... जिसके संस्कार इज़ी रहने के होते हैं, उनको हर कार्य सहज अनुभव होने के कारण इज़ी रहते हैं। संस्कार टाइट हैं तो सरकमस्टांस भी टाइट हो जाते हैं, सम्बन्ध-सम्पर्क वाले भी टाइट व्यवहार करते हैं। टाइट अर्थात् खींचातान में रहने वाले। तो सभी ड्रामा के हर दृश्य को देख-देख हर्षित रहने वाले हो ना। वा कभी अच्छे-बुरे के आकर्षण में आ जाते हो? न अच्छे में, न बुरे में – किसी में आकर्षित नहीं होना है, सदैव हर्षित रहना है।

17.12.89... .. नालेजफुल वा त्रिकालदर्शी कभी घबरा नहीं सकते। सदा ही किसी भी परिस्थिति में मुस्कराते रहेंगे। हर्षित होंगे, परिस्थिति से आकर्षित नहीं होंगे। अगर कोई भी परिस्थिति में फेल होते हैं तो परिस्थिति की तरफ़ आकर्षित हो गये ना! जो हर्षित होगा वह साक्षी होकर खेल देखेगा, आकर्षित नहीं होगा। तो आप सब कौन हो? हर्षित रहने वाले या आकर्षित होने वाले? परिस्थितियाँ और ही महावीर बनाती हैं। क्योंकि परिस्थिति को जानते जाते हो ना! अनुभव की अथार्टी बढ़ती जायेगी। तो ऐसे महावीर हो या कभी-कभी कमज़ोरी का भी मजा ले लेते हो? एक बार भी कोई कमज़ोरी को धारण किया तो एक कमज़ोरी आना माना सब कमज़ोरियों का आना। एक भूत आया तो सभी भूत आ जायेंगे। चाहे विशेष रूप में कोई एक भूत हो लेकिन छिपे हुए सब भूत आते हैं। इसलिए अभी भूतों से मुक्त बनो।

25.12.89... .. बापदादा भी सर्व साकार रूप और आकार रूपधारी बच्चों को 'सदा हर्षित भव' की मुबारक दे रहे हैं। सदा दिलखुश मिठाई खाते रहो और प्राप्ति के गीत गाते रहो। ड्रामा अनुसार भारत वालों को विशेष भाग्य मिला हुआ है।

31.12.90... .. विजय का तिलक सदा मस्तक पर चमक रहा है। यही विजय का तिलक औरों को खुशी दिलायेगा। क्योंकि विजयी आत्मा का चेहरा सदा ही हर्षित रहता है। तो आपके हर्षित चेहरे को देखकर सब खुशी के पीछे आकर्षित होते हैं। क्योंकि दुनिया की आत्माएं खुशी को ढूँढ रही हैं और आपके चेहरों पर जब खुशी की झलक देखते तो खुद भी खुश होते। वो समझते हैं इन्हों को कुछ प्राप्ति हुई है। आगे चलकर आपके चेहरे खुशी की आकर्षण से और नजदीक लायेंगे।

किसी को सुनने का समय नहीं भी होगा तो सेकेण्ड में आपका चेहरा उन आत्माओं की सेवा करेगा। आप सभी भी प्यार और खुशी को देखकर ब्राह्मण बने ना। तो तपस्या वर्ष में ऐसी सेवा करना।

18.1.91... .. सदा अपने को भाग्य विधाता के भाग्यवान बच्चे हैं – ऐसा अनुभव करते हो? पद्मापद्म भाग्यवान हो या सौभाग्यवान हो? जिसका इतना श्रेष्ठ भाग्य है वह सदा हर्षित रहेंगे। क्योंकि भाग्यवान आत्मा को कोई अप्राप्ति है ही नहीं। तो जहाँ सर्व प्राप्तियाँ होंगी, वहाँ सदा हर्षित होंगे। कोई को अल्पकाल की लॉटरी भी मिलती है तो उसका चेहरा भी दिखाता है कि उसको कुछ मिला है। तो जिसको पद्मापद्म भाग्य प्राप्त हो जाए वह क्या रहेगा? सदा हर्षित। ऐसे हर्षित रहो जो कोई भी देखकर पूछे कि क्या मिला है? जितना-जितना पुरुषार्थ में आगे बढ़ते जायेंगे उतना आपको बोलने की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। आपका चेहरा बोलेगा कि इनको कुछ मिला है, क्योंकि चेहरा दर्पण होता है। जैसे दर्पण में जो चीज जैसी होती है, वैसी दिखाई देती है। तो आपका चेहरा दर्पण का काम करे।

11.12.91... .. रीयल्टी की निशानी है – सदा खुशी में नाचना। नैन चैन कहते हो ना , रायल्टी का अर्थ भी है चित्त से भी और नैन चैन से भी सदा हर्षित। सिर्फ बाहर से हर्षितमुख नहीं, लेकिन चित्त में भी हर्षित। हर्षित चित्त हर्षित मुख, दोनों हर्षित हों। कई बार ऐसे भी होता है कि अन्दर चित्त में खुशी नहीं होती लेकिन बाहरमुख में समय

प्रमाण खुशनुमा बन करके दिखाते हैं। इसको अल्प काल का हर्षितमुख कहेंगे, लेकिन हर्षित चित्त, हर्षितमुख अविनाशी हो। तो पवित्रता की रीयल्टी रॉयल्टी अर्थात् अविनाशी चित्त और मुख हर्षित हों। चेक करो – दूसरे को चेक करने नहीं लग जाना, अपने को चेक करना है। ऐसी रॉयल आत्मा बापदादा को और सर्व ब्राह्मण परिवार को अति प्यारी होती है।

रीयल प्यारी आत्मा की विशेषता क्या होती है? क्योंकि आजकल के रीति-रसम प्रमाण जो बहुत प्यारा लगता है तो प्यारे के तरफ न चाहते हुए भी आकर्षित हो जाते हैं। जिसको आप लोग अपनी भाषा में अटैचमेन्ट कहते हो। क्योंकि प्यारा है तो अटैचमेन्ट तो होगी ना। लेकिन रीयल और रॉयल प्यार की निशानी है – वो जितना ही प्यारा होगा उतना ही न्यारा भी होगा। इसलिए वह न स्वयं एक्स्ट्रा अटैचमेन्ट में आयेगा, न दूसरा उसकी अटैचमेन्ट में आयेगा। इसको कहा जाता है रीयल प्यार, सम्पूर्ण प्यार। वह हर्षित रहेगा, आकर्षित भी होगा परन्तु हृद की आकर्षण करने वाला नहीं। तो रीयल और रॉयल की निशानी क्या हुई? अति प्यारा और अति न्यारा।

18.1.92... .. हॉस्पिटल लगती है वा योग भवन लगता है? ऐसा आवाज होगा कि यह हॉस्पिटल नहीं है लेकिन योग केन्द्र है, हैप्पी हाउस है। ऐसे लौकिक में भी हैप्पी हाउस बनाते हैं। जो भी अन्दर जायेगा हँसता ही रहेगा। लेकिन ये मन की मुस्कराहट है। वह होता है थोड़े समय के लिए और यह है सदा काल के लिए। अच्छा। सदा हर्षित मूड में रहो। कुछ भी हो जाए अपनी मूड नहीं ऑफ

करना। कोई गाली भी दे, इनसल्ट भी करें लेकिन आप सदा हर्षित रहना।

31.12.92... .. इस वर्ष में न कोई कम्प्यूज होना और न कभी किसी बात से मूड चेंज करना। सदा हर कर्म में फालो ब्रह्मा बाप। ब्रह्मा बाप भी सदा हर्षित और गम्भीर—दोनों के बैलेन्स की एकरस स्थिति में रहे। तो फालो फादर।

18.1.93... .. अनगिनत, अखुट, अखण्ड खजाना जमा है ना! खजानों को देख सदा हर्षित रहते हो? कभी भी किसी भी परिस्थिति में दुःख की लहर तो नहीं आती है? स्वप्न में भी दुःख की लहर न हो। जब दुःख की लहर आती है तब खुशी कम होती है। उस समय बाप को सुख के सागर के स्वरूप से याद करो। जब बाप सुख का सागर है तो बच्चों में दुःख की लहर कैसे आ सकती! आप आत्माओं का अनादि, आदि स्वरूप भी सुख-स्वरूप है। जब परमधाम में हैं तो भी सुख-स्वरूप हैं और जब आदि देवता बने तो भी सुख-स्वरूप थे! तो अपने अनादि और आदि स्वरूप को स्मृति में रखो तो कभी भी दुःख की लहर नहीं आयेगी। अच्छा!

7.3.93... .. सभी के मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर नूंधी हुई है। क्योंकि भाग्यविधाता के बच्चे हैं। तो जिसका बाप भाग्यविधाता है, उसका कितना बड़ा भाग्य है! तो सदा अपने श्रेष्ठ भाग्य की लकीर को देख हर्षित रहते हो और सदा रहते रहना। ये भाग्य की लकीर सिर्फ एक जन्म के लिए नहीं है लेकिन अनेक जन्म ये भाग्य साथ रहेगा। भाग्य आपके साथ जायेगा ना। गारन्टी है ना। दुनिया वाले कहते हैं—हाथ खाली आये, हाथ खाली जायेंगे। लेकिन आप कहते हो— हम भाग्यविधाता के बच्चे भरकर जायेंगे, खाली नहीं जायेंगे। ये निश्चय है ना। भाग्य का अनुभव करते हो ना। सभी अनुभवी हैं। तो इसी अनुभव को सदा आगे बढ़ाते रहो। स्मृति रखना माना बढ़ाना।

9.12.93... .. अटल निश्चय तो अटल विजय होगी। विजय की भावी टल नहीं सकती। अटल है। तो ऐसे निश्चाबुद्धि सदा हर्षित रहेंगे, निश्चित रहेंगे। क्योंकि चिन्ता खुशी को खत्म करती है।

9.3.94... .. सदा खुश रहने की डांस करते रहो। कभी खुश, कभी उदास यह नहीं। जब उदास होते हो तो उस समय भी अपना एक फोटो निकालो। और जब खुश होते हो तो भी फोटो निकालो। फिर दोनों फोटो साथ रखो। फिर देखो अच्छा क्या है? मैं ये हूँ या वो हूँ? तो सदा हर्षित रहने का, खुश रहने का डांस करो। कुछ भी हो जाये, कोई कितना भी खुशी चुराने की कोशिश करे। क्योंकि माया किसी के द्वारा ही तो करायेगी ना। कुछ भी हो जाये, कितना भी कोई किसी भी प्रकार से खुशी कम करने या खुशी गुम करने का प्रयत्न करे लेकिन जब तक जीना है तब तक खुश रहना है। यह पक्का व्रत लिया है ना। क्या नहीं कर सकते हो, विल पॉवर है ना? तो जिसके पास विल पॉवर है वो क्या नहीं कर सकता अगर आप मास्टर सर्वशक्तिमान् नहीं कर सकेंगे तो और कौन करेगा!

23.12.94... .. सभी खुश हैं। खुशनसीब भी हैं और खुशमिज़ाज़ भी हैं। कि कभी सीरियस, कभी खुश मिज़ाज़? कभी शकल में अन्तर नहीं आना चाहिए। जब क्रोध या गुस्सा आता है तो चेहरा लालपीला होता है ना? सदा चेहरा हर्षितमुख हो। इसको कहते हैं खुशमिज़ाज़ रहना।

7.3.95.. शान्ति की शक्ति वाला सदा ही खुश मिज़ाज़ होगा। जितनी शान्ति उतनी खुशी उसके चेहरे से, चलन से अनुभव होगी। तो शान्ति की शक्ति की निशानी दिखाना। सदैव सबका चेहरा हर्षित हो। कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन खुशी को नहीं छोड़े। अपनी प्रापर्टी है ना। तो प्रापर्टी को कोई छोड़ता है क्या? तो शान्ति की शक्ति की निशानी है—सदा खुश रहना और खुशी बांटना। शान्ति की शक्ति से सहज मंसा सेवा कर सकते हैं। जितना शान्त रहते हैं उतनी मंसा सेवा बड़ी शक्तिशाली होगी।

6.4.95... .. अच्छा, डबल विदेशी क्या करेंगे? अभी थोड़े हो, सिकीलधे हो। तो डबल विदेशी सदा अपने चेहरे को, सूरत को चलता फिरता मुज़ियम बनायेंगे। आपके नयनों को कोई देखे तो नयनों द्वारा हर्षित रुहानी आकर्षित मूर्त का चित्र देखे। साधारण नयन नहीं देखे। दिव्य नयन। जिन दिव्य नयनों में सदा बाप बिन्दु दिखाई दे। तो आपके नयन चलताफिरता मुज़ियम बन जायें। आपका मस्तक आत्म साक्षात्कार कराये। आपके ओंठ सर्व को मुस्कराना सिखा दें। ऐसे चारों ओर चैतन्य मुज़ियम अपनी सेवा करते रहें। करने वाले हो ना? अच्छा है। उमंगउत्साह तो अच्छा है ही और सदा उमंगउत्साह में आगे बढ़ते रहेंगे।

10.3.96... .. सभी का सहयोग यह सहज ही आपको और सेवा को बढ़ा रहा है। और आप देख-देख हर्षा रही हो। आपका काम है देख-देख हर्षित होना। अभी यही काम रह गया है। उमंग-उत्साह बढ़ाना और हर्षित होना, मनोरंजन लगता है ना! मेहनत लगती है या मनोरंजन लगता है? सेवा भी एक खेल है। तो खेल में चाहे कोई गिरता है, कोई जीतता है लेकिन खेल में सदा खुशी होती है। तो यह सेवा भी क्या है? संगमयुग का खेल है। ऐसे है? और खेल देख-देख कर खुश होते रहते हैं। और औरों की भी खुशी बढ़ाते रहते हो। बस अभी आप लोगों का काम यही है। खुशी बढ़ाना, उमंग-उत्साह बढ़ाना और स्व-पुरुषार्थ बढ़ाना। आपको अभी यही खेल करना है। और औरों को खेल में अच्छे खिलाड़ी बनाना है।

3.4.97... .. हम ज्ञान और योग में आगे हैं और रहेंगे। बातों की परवाह नहीं करो। कभी भी हर्षितमुख चेहरा बदलना नहीं चाहिए। सदा मन, तन मुस्कराता रहे। समझा! कमाल करके दिखायेंगी? कभी भी मन मुरझाये नहीं, मुस्कराता रहे। हो सकता है?

बाप बच्चों को देख-देख सदा हर्षित होते हैं। बच्चे भी हर्षित होते हैं लेकिन कभी-कभी बीच में अपने भाग्य को इमर्ज करने के बजाए मर्ज कर देते हैं। जब बाप देखते हैं कि बच्चों के अन्दर अपने सौभाग्य का नशा, निश्चय मर्ज

हो जाता है तो क्या कहेंगे? ड्रामा। लेकिन बापदादा सभी बच्चों को सदा ही भाग्य के स्मृति स्वरूप देखने चाहते हैं। आप भी सभी चाहते यही हैं 'लेकिन'.. बीच में आ जाता है। किसी से भी पूछो तो सब बच्चे यही लक्ष्य रख करके चल रहे हैं कि मुझे बाप समान बनना ही है। लक्ष्य बहुत अच्छा है। जब लक्ष्य श्रेष्ठ है, बहुत अच्छा है फिर कभी इमर्ज रूप, कभी मर्ज रूप क्यों? कारण क्या? बापदादा से इतने अच्छे-अच्छे वायदे भी करते हैं, रूहरिहान भी करते हैं फिर भी लक्ष्य और लक्षण में अन्तर क्यों? तो बापदादा ने रिजल्ट में देखा कि कारण क्या है? वैसे तो आप सब जानते हैं, नई बात नहीं है फिर भी बापदादा रिवाइज कराते हैं।

14.12.97.. .. टीचर्स अर्थात् सदा अपने फीचर्स द्वारा हर आत्मा की सेवा करे। बोलने का टाइम नहीं हो, कोई हर्जा नहीं। एक सेकण्ड में अपने हर्षित दिल से, हर्षित मन से परमात्म स्नेह से (आत्मा का स्नेह नहीं) परमात्म स्नेह द्वारा, दृष्टि द्वारा उसको भी हर्षित बना दे। टीचर्स अगर कभी परेशान होते भी हो गलती से, होना नहीं चाहिए लेकिन गलती से हो भी जाते हो तो फौरन बापदादा से कनेक्शन जोड़कर, रूहरिहान करके उसी समय अपने को ठीक करो।

30.3.98.. .. जो आगे आगे काम के लिए बैठे हैं, कैबिन में भी बैठे हैं, तपस्या अच्छी करते हैं। एक बात में तो मार्क्स ले लेंगे, दिल से सेवा में तो मार्क्स ले लेंगे। यह भी अच्छा है, इस खाते में आपको एक्स्ट्रा मार्क्स मिलेंगी। दिल से करना। तंग होके नहीं करना, अरे क्या करें - यह तो तंग करके रखा है, ऐसे नहीं। कितना भी तंग करें लेकिन आप हर्षित रहना। प्यार से कहो आओ बहिन, आओ भाई, क्या चाहिए.... ठीक है ना! या नहीं-नहीं, अभी नहीं। भले चीज़ नहीं दो, चीज़ देने की नहीं है, नहीं दे सकते हैं कोई हर्जा नहीं, लेकिन मीठे बोल तो दे सकते हो ना। मीठे बोल भी आधी चीज़ मिलने का अनुभव करा देते हैं। अभी नहीं, अभी नहीं जाओ, जाओ ऐसे नहीं। हाँ जी। करेंगे, देखेंगे, देंगे। दिल तो ले लो, चीज़ तो भले नहीं दो और सन्तुष्ट करने का लक्ष्य होगा तो चीज़ भी आ जाती है। बापदादा ने देखा है अगर कोई भी स्टॉक वाले की दिल है कि मुझे यह करना ही है, पता नहीं कहाँ से चीज़ें ले आते हैं, कहाँ से स्टॉक भर जाता है। सिर्फ दिल हो। मधुबन वाले हैं बहुत होशियार। चीज़ लाने में भी होशियार हैं। होशियार तो हैं, तभी तो ड्युटी मिली है ना। अगर ड्रामा ने निमित्त बनाया है तो कोई न कोई विशेषता तो है जिस विशेषता ने मधुबन में निमित्त बनाया है। सिर्फ उस विशेषता को समय प्रति समय थोड़ा सा शान्त भाव, प्रेम भाव से निमित्त बनो। बाकी अथक तो हैं।

13.2.99.. .. दुनिया के लिए कुछ भी हो जाए आपको निर्भय और हर्षितमुख हो खेल देखना है। खेल में खून भी दिखाते हैं तो प्यार भी दिखाते हैं। लड़ाई भी दिखाते हैं तो अच्छी बातें भी दिखाते हैं। फिर खेल में भय होता है क्या? क्या होगा, क्या हुआ, क्या हुआ? यह सोचते हैं क्या? मजे से बैठकर देखते हैं। तो यह भी बेहद का खेल है। अगर जरा भी भय वा घबराहट होगी - क्या हो गया, क्या हो गया... ऐसा तो होना नहीं चाहिए, क्यों हो गया तो ऐसी स्थिति वाले को इफ़ेक्ट आयेगा। अच्छे में अच्छी स्थिति और गड़बड़ की स्थिति में खुद भी गड़बड़ में आ जायेंगे, हलचल में आ जायेंगे। इसलिए 99 हो या 2 हज़ार हो, आपको क्या है? होने दो खेल। मजे से देखो। घबराना नहीं। हाय यह क्या हो गया! संकल्प में भी नहीं आये। सब पूछते हैं 99 में क्या होगा? कुछ होगा, नहीं होगा। बापदादा कहते हैं आप लोगों ने ही प्रकृति को सेवा दी है कि खूब सफ़ाई करो, उसको लम्बा-लम्बा झाड़ू दिया है, सफ़ा करो। तो घबराते क्यों हो?

30.11.99... .. बापदादा तो सदा सर्विसएबुल रत्नों को देखते रहते हैं। ठीक है ना। शरीर का हिसाब है लेकिन 'सूली से काँटा' हो जाता है। परेशान नहीं होते। हिसाब-किताब चुक्ता होता है लेकिन परेशान नहीं होते, शान में रहते हैं। औरों को भी शान याद दिलाते हैं। मालिक हैं ना। शरीर को चलाने की रमज़ (युक्ति) सीख गये हैं। शरीर का भी आपसे प्यार है ना! महारथियों से सबका प्यार है। प्यार है ना। (दादी जी को) देखो कितना काम करती हैं? लेकिन सदा हर्षित। सीखते हो ना। कभी थकावट के चिह्न नहीं होते। यह है बाप समान की निशानी। ब्रह्मा बाबा महारथियों को, विशेष बच्ची को सब वरदान, शक्तियाँ और ज़िम्मेवारी सब देकर गये। आप लोगों के लिए बापदादा ने विशेष इन्हों को अथक बनने का वरदान दिया है। आप सब भी अथक बन विश्व को परिवर्तन कर रहे हैं और करते रहेंगे।

31.12.99... .. अमृतवेले से लेकर हर चलन को चेक करो - हमारी दृष्टि अलौकिक है? चेहरे का पोज़ सदा हर्षित है? एकरस, अलौकिक है वा समय प्रति समय बदलता रहता है? सिर्फ योग में बैठने के समय वा कोई विशेष सेवा के समय अलौकिक स्मृति वा वृत्ति रहती है व साधारण कार्य करते हुए भी चेहरा और चलन विशेष रहता है? कोई भी आपको देखे - कामकाज में बहुत बिज़ी हो, कोई हलचल की बात भी सामने हो लेकिन आपको अलौकिक समझते हैं? तो चेक करो कि बोल-चाल, चेहरा साधारण कार्य में भी न्यारा और प्यारा अनुभव होता है? कोई भी समय अचानक कोई भी आत्मा आपके सामने आ जाए तो आपके वायब्रेशन से, बोल-चाल से यह समझेंगे कि यह अलौकिक फ़रिश्ते हैं? क्योंकि आज का दिन संगम का दिन है, पुराना जा रहा है, नया आ रहा है। तो क्या नवीनता विश्व के आगे दिखाई दे? अन्दर याद रहता है वा समझते हैं, वह बात अलग है लेकिन स्थापना के समय को सोचो - कितना समय स्थापना का बीत गया! बीते हुए समय के प्रमाण बाकी कितना समय थोड़ा रहा हुआ है? तो क्या अनुभव होना चाहिए? बापदादा जानते हैं कि बहुत अच्छे-अच्छे पुरुषार्थी, पुरुषार्थ भी कर रहे हैं, उड़ भी रहे हैं लेकिन बापदादा इस 21वीं सदी में नवीनता देखने चाहते हैं। सब अच्छे हो, विशेष भी हो, महान भी हो लेकिन बाप की प्रत्यक्षता का आधार है - साधारण कार्य में रहते हुए भी फरिश्ते की चाल और हाल हो।

31.12.2006... .. सभी बच्चों ने बहुत-बहुत प्यार से नये वर्ष को मनाया। मनाया भी और साथ में बापदादा से वायदा भी किया कि संस्कार मिटायेंगे भी। तो मिटाना भी है और सभी को शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वायब्रेशन से मिलाना भी है। मिटाना, मिलाना और मनाना। सभी बातें हुई। अभी खूब सारा साल हर्षित रहना और सभी को हर्षित करना। मैं सन्तुष्ट आत्मा हूँ, सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना। यही मनाना है, यही बाप का प्यार है, यही दुआयें हैं। यही यादप्यार है। सभी को नमस्ते।

31.11.2007... .. सत्यता की शक्ति का आधार है सम्पूर्ण पवित्रता। मन-वचन-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क, स्वप्न में भी अपवित्रता का नाम निशान न हो। ऐसी पवित्रता का प्रत्यक्ष स्वरूप क्या दिखाई देता? ऐसी पवित्र आत्मा के चलन और चेहरे में स्पष्ट दिव्यता दिखाई देती है। उनके नयनों में रूहानी चमक, चेहरे में सदा हर्षितमुखता और चलन में हर कदम में बाप समान कर्मयोगी।

15.12.2007... तो बोलो, सदा अपने भाग्य को स्मृति में रखते हर्षित होते हो ना! होते हो? जो समझते हैं कि सदा हर्षित होते हैं, कभी-कभी वाले नहीं, जो सदा हर्षित रहते हैं वह हाथ उठाओ। सदा, सदा....। अण्डरलाइन

करना सदा। अभी टी.वी. में आपका फोटो आ रहा है। सदा वालों का फोटो आ रहा है। मुबारक हो। मातायें उठायें, शक्तियां उठायें, डबल फारेनर्स...। क्या शब्द याद रखेंगे? सदा। कभी-कभी वाले तो पीछे आने वाले हैं।

2.4.2008... सन्तुष्टता का वायुमण्डल औरों को भी यथा शक्ति सन्तुष्टता का वायुब्रेशन देता है। जो सन्तुष्ट रहता है उसकी निशानी सदा प्रसन्नचित दिखाई देता है। सदा चेहरा हर्षितमुख स्वतः ही रहता है। सन्तुष्ट आत्मा के सामने कोई भी परिस्थिति स्व स्थिति को हिला नहीं सकती। कितनी भी बड़ी परिस्थिति हो लेकिन सन्तुष्ट आत्मा के लिए कार्टून शो का मनोरंजन दिखाई देता है। इसी लिए वह परिस्थिति में परेशान नहीं होता और परिस्थिति उसके ऊपर वार नहीं कर सकती, हार जाती है। इसलिए अतीन्द्रिय सुखमय मनोरंजन की जीवन अनुभव करता है। मेहनत नहीं करनी पड़ती। मनोरंजन अनुभव होता है। तो हर एक अपने को चेक करे। चेक करना तो आता है ना! आता है? जिसको चेक करना आता है अपने को, दूसरे को नहीं अपने को चेक करना आता है, वह हाथ उठाओ। चेक करना आता है? अच्छा। मुबारक हो।

31.12.2009... सभी ने हैपी न्यू ईयर कहा, लेकिन हम आप सभी के लिए सदा हैपी है, आज की दुनिया के हिसाब से है पाँ न्यू ई यर किया लेकिन संगमयुग का हर दिन हमारा उत्सव है। सदा उत्सव रहता है क्योंकि उत्साह रहता है। संगमयुग का है पी संगमयुग है। तो आप सभी को बहुत-बहुत-बहुत परिवर्तन की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। जैसे नया वर्ष है वै से नये संस्कार, पुराने संस्कार को विदाई और नये संस्कार का आगमन इसी लिए सदा ही हर्षित है और सदा ही हर्षित रहेंगे, हमारे लिए आपके लिए हर वर्ष कल्याणकारी है, आगे बढ़ने बढ़ाने वाला है इसलिए सदा हैपी, हैपी, हैपी।

2.2.2011... दुनिया वाले तो देखकर पूछते हैं आपको क्या मिला है? और आप लोग उत्तर क्या देते हो? जो पाना था वह पा लिया। पा लिया है, हाथ उठाओ। पा लिया है, अच्छा। पा लिया है? फलक से कहते हो, कोई अप्राप्त वस्तु ही नहीं, है ना फखुर? और मिला कैसे? सिर्फ बाप को जाना, माना, अपना बनाया तो भाग्य मिल गया। इस भाग्य को जितना स्मृति में लाते रहेंगे उतना हर्षित होते रहेंगे। भाग्यवान आत्मा का चेहरा सदा हर्षित रहेगा। रहेगा नहीं रहता है। उनकी दृष्टि, उनकी वृत्ति और उनकी प्रवृत्ति सदा सन्तुष्ट आत्मा बन स्वयं भी सन्तुष्ट रहेगी और दूसरों को भी सन्तुष्ट बनायेगी। तो आप सबको सन्तुष्टता का नशा रहता है? क्योंकि सन्तुष्टता का आधार है सर्व प्राप्ति। अप्राप्ति असन्तुष्टता का आधार है। तो आप क्या अनुभव करते हो? अप्राप्त कोई वस्तु है कि सर्व प्राप्ति है? प्राप्ति का नशा है? है, सदा है या कभी-कभी है? वैसे तो यही कहते हो पा लिया जो पाना था। तो जहाँ सर्व प्राप्ति है वहाँ असन्तुष्टता का नाम नहीं है।

5.3.2012... आप सभी भी अपनेभाग्य की रेखायें देख हर्षित होते हो ना! दिल में यही गाते वाह मेरा भाग्य! हर एक का मस्तक उस दिव्य सितारे सेचमकता हुआ देख बापदादा भी खुश हो रहे हैं और यही दिल में गीत गाते वाह बच्चे वाह! बच्चों के दिल से क्या गीतसुन रहे हैं? वाह बाबा वाह! तो बच्चे भी वाह! बाप भी वाह! तो यह सारी सभा क्या हो गई? वाह! वाह! वाह! तो अपनेभाग्य को देख सदा ऐसे ही हर्षित रहो जैसे अभी सब हर्षित हो रहे हैं। यह भाग्य अब संगमयुग में ही मिलता है।

30.11.2012... बाबा कहते देवताओं समान सदा हर्षित रहो, तो इसका रिहर्सल मैं कर रही थी कि देवताओं की मुस्कराहट भावना वाली है, कैसे खुश होते हैं वह खुशी मैं भी ले लूँ। वो देवता देते नहीं हैं, देवताओं को देखके खुश होते हैं। बाबा से लेके अभी हम देने वाले हैं, कितने हम भाग्यवान हैं। सुख-शान्ति दाता के बच्चे हैं, यह रिहर्सल अपने आपको जान करके करने से साधारण नहीं होते हैं, कभी कैसे, कभी कैसे यह नहीं हो सकता

है। अन्दर ही अन्दर ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ते को कोई माँ बाप नहीं होता है। फरिश्ता ईश्वर का डायरेक्ट बच्चा है पर थोड़े हैं। सूक्ष्म है, बहुत हल्का है, बहुत स्वच्छ है, बहुत सच्चाई है, इससे उड़ने की ताकत मिलती है औरों को। ऐसे उड़ने वाले फरिश्तों को देख मानते हैं, नुमाशाम के टाइम फरिश्ते ऊपर घूम रहे हैं। उसमें स्थिति मेरी ऐसी हो, ऊपर घूमती रहूँ, नीचे बैठी न रहूँ। ऐसी स्थिति है! यह रिहर्सल कर रहे हो? मेरी भावना है अच्छी स्थिति हो, अकेले है तो भी ऐसे, संगठन में भी हैं तो भी ऐसे।

7. हिम्मत / साहस

15.2.69.....आगे तो बहुत ही खेल देखने हैं। इतनी हिम्मत है? जब हिम्मत रखेंगे तब बहुत देखेंगे। आगे बहुत कुछ देखना है। परन्तु कदम को सम्भाल-सम्भाल कर चलाना है। अगर सम्भल कर नहीं चलेंगे तो कहाँ खड्डा भी आ जायेगा। एक्सीडेंट भी हो पड़ेंगे।

17.4.69.....ऐसे कोई विरले हैं जो अपनी हिम्मत दिखाते हैं, कि इस परिस्थिति को पार करके ही दिखायेंगे। अर्जी डालते हैं, यह भी ठीक है लेकिन अर्जी के साथ-साथ जो शिक्षा मिलती है, उसको स्वरूप में लाते नहीं।

17.4.69.....घोड़ेसवार जो हैं – उन्हीं की हिम्मत उत्साह बहुत है, पुरुषार्थ में कदम भी बढ़ाते हैं। लेकिन गैलप करते-करते (फिसल जाते हैं) फिसलते भी नहीं, गिरते भी नहीं, थकते भी नहीं। अथक भी हैं, चलते भी बहुत अच्छे हैं लेकिन जो मार्ग की सीन सीनरियाँ हैं उनमें आकर्षित हो जाते हैं। अपने पुरुषार्थ को चलाते भी रहते हैं लेकिन देखने के संस्कार जाती हैं। यह क्या कर रहे हैं, यह कैसे करते हैं, तो हम भी करें। रीस करते हैं। तो घोड़े सवारों में देखने का आकर्षण ज्यादा है।

17.4.69.....जैसे आप लोग गृहस्थ व्यवहार में रहते हो और सर्विस में भी मददगार हो तो दोनों तरफ सम्भालने के लिए बीच में ठहरना पड़ेगा। दोनों के बीच की अवस्था में स्थित रहना है। संगम पर होंगे तो दोनों को ठीक करेंगे। तुम्हारा खान-पान, पहनना आदि सभी बीच का ही है। इस रीति जो जजमेन्ट करते हो तो बीच की स्थिति में स्थित होकर दोनों तरफ की जजमेन्ट कर फिर चलना है। कई बातों में दिखाई पड़ता है इस तरफ वा उस तरफ विशेष हो जाते हो। होना चाहिए बीच में। बीच की अवस्था है बीज। बिन्दी। जैसे बीज सूक्ष्म होता है वैसे बीच की स्थिति भी सूक्ष्म है। उस पर ही ठहरने की हिम्मत और तरीका चाहिए।

17.5.69.....आज कुमारियों की सर्विस की तिलक का दिन है। जैसे आप लोगों के म्यूजियम में ताजपोशी का चित्र दिखाया है ना लेकिन आप की सर्विस की तिलक के दिवस पर देखो कितनी बड़ी सभा इकट्ठी हुई है। इतनी खुशी होती है? लेकिन यह याद रखना जितने सभी के आगे तिलक लगा रहे हो, इतने सभी आप सभी को देखेंगे। सभी के बीच में तिलक लग रहा है। यह नहीं भूलना। इतना हिम्मतवान बनना है। इस तिलक की लाज रखनी है। तिलक की लाज माना ब्राह्मण कुल की लाज। ब्राह्मण कुल की मर्यादा क्या है, सुनाया ना। जो ऐसे पुरुषोत्तम बनने की हिम्मत वाले हैं वह तिलक लगा सकते हैं। यह तिलक साधारण नहीं है। वहाँ भी इतनी सारी सभा देखेंगी।

16.6.69.....प्रतिज्ञा यह करनी है – आज से हम झाटकू बन गये हैं फिर जिन्दा नहीं होंगे, पुरानी दुनिया में। हिम्मतवान को फिर मदद भी मिलती है। हिम्मत के कारण बापदादा का स्नेह रहता है।

16.7.69.....बापदादा तो इसलिए आये हैं कि आप सभी बच्चों का परिवर्तन समारोह है। तो परिवर्तन समारोह पर आये हुए हैं। भट्टी में किस लिए बैठे थै? परिवर्तन के लिए। तो आज परिवर्तन समारोह में मिल रहे हैं। परिवर्तन की उत्कंठा सभी में बहुत अच्छी है। उत्साह भी है, हिम्मत भी है।

19.7.69.....बापदादा को आप सभी प्रिय तो हो ही। क्योंकि बाप भी तुम बच्चों की मदद से कार्य करा रहे हैं। तो कार्य में मददगार होने वाले प्रिय तो रहते ही हैं। लेकिन मददगार के साथ हिम्मतवान कहाँ कम बनते हैं। यहाँ हिम्मत छोड़ देते हैं। अगर हिम्मत हो तो मदद जरूर मिलेगी। तो इसलिए मददगार के साथ कुछ हिम्मतवान भी बनो। छोटी-छोटी बातों में हिम्मतहीन नहीं बनना है। हिम्मतवान बनने से फिर आप सभी की जो इच्छा है, वह पूर्ण होगी। अभी हिम्मत की आवश्यकता है। हिम्मत कैसे आयेगी? हर समय, हर कदम पर, हर संकल्प में बलिहार होने से। जो बलिहार होता है उसमें हिम्मत ज्यादा होती है तो जितना-जितना अपने को बलिहार बनायेंगे उतना ही गले के हार में नज़दीक आयेंगे। अभी बलिहार होंगे फिर बनेंगे प्रभु के गले का हार। अगर बलिहार बनकर के ही कर्म करेंगे तो दूसरों को भी बलिहार बनायेंगे। जिसको वारिस कहा जाता है। अभी प्रजा बहुत बनती है। वारिस कम बनते हैं। जितना बहुत बनायेंगे उतना ही नज़दीक आयेंगे। तो अब वारिस बनाने का प्लान सोचो। अच्छा—

27.8.69.....जितनी हिम्मत है तो उतनी ही मदद भी बाप दे ही रहे हैं। हिम्मत से मदद मिलती है और मदद से ही पहाड़ उठता है। कलियुगी मिट्टी के पहाड़ को उठा-कर सतयुगी सोना बनाना है। कैसे बनाना है? यही गुंजाइश प्रश्न में भी भरी हुई है। तो आज थोड़े समय के लिए मुलाकात करने बाप को आना पड़ा।

15.9.69.....इस स्नेह की अग्नि में पड़ने से यह सब छूट जायेगा। तो अपना रंग-रूप सब बदलना है। इस लगन की अग्नि में पड़कर परिवर्तन लाने के लिए तैयार हो? जो चीज जल जाती है वो फिर खत्म हो जाती है। देखने में नहीं आती। ऐसे अपने को परिवर्तन में लाने की हिम्मत है? आप सबकी यादगार अब तक भी कायम है। आपकी यादगार का आधार किस बात पर है? जितनी-जितनी याद है उतनी-उतनी सबकी याद-गार बनी हुई है। अब तक भी कायम है। आपकी याद के आधार पर सबकी यादगार बनी हुई है। अगर याद कम है तो यादगार भी ऐसा ही होगा। अगर यादगार कायम रखने का प्रयत्न करना है तो पहले याद कायम रखो। फिर उस आधार पर यादगार बनना है।

28.9.69.....अब एक-एक स्थान से चमका हुआ रत्न फिर जाकर आप समान कैसे बनाते हैं वह अब देखेंगे। कभी भी हिम्मतहीन बोल नहीं बोलने चाहिए। पुरुषार्थहीन व हिम्मतहीन बनना – वह अब जमाना गया। अब तो मददगार बनना है और बनकर दिखाना है।

25.10.69.....इसलिये कहा था इस भट्टी में पक्का कर जाना अर्थात् पक्का वायदा करके जाना है। पहले तो वायदा करने लिये हिम्मत है कि हिम्मत धारण करेंगे? जो हिम्मतवान बच्चे हैं उनकी निशानी क्या है? वह कभी हार नहीं खाते। अगर आप सभी हिम्मतवान हैं तो जरूर आज से कभी हारेंगे नहीं। बहुत समय से जो विजयी बनते हैं वही विजय माला के मणके बनते हैं। अगर विजय माला में पिरोने चाहते हैं तो विजयी बनने का परिवर्तन लाना पड़ेगा। परिवर्तन में मुख्य-मुख्य बातें चेक करनी हैं। बहुत सहज है।

20.12.69.....जैसे शुरू में वायदा करने में कोई देरी नहीं की, कुछ सोचा नहीं। इस रीति से अब भी बापदादा वायदा लेने लिये आये हैं। यूं तो सारे ड्रामा में अनेक आत्माओं के बीच तुम आत्मायें ही हिम्मतवान प्रसिद्ध हुई हो। जो हिम्मत रख बापदादा के समीप रहे और स्नेह भी लिया। मदद ली भी और की भी।

20.12.69.....सभी से समझदार तो निकले जो फौरन ही सौदा कर लिया। सारी सृष्टि की आत्माओं के आगे हिम्मतवान भी हैं, समझदार भी हैं। इसलिए बापदादा कहते हैं सभी से समझदार बच्चों का यह संगठन है। हिम्मतवान भी हैं। और भल कितने भी हिम्मत रखें लेकिन यह हिम्मत तुरन्त दान महापुण्य की जो रखी, ऐसी हिम्मत अभी कोई रख नहीं सकता। नदियों में तो भल सभी नहाते हैं लेकिन आप लोगों ने सागर में नहाया है। सागर और नदियों में नहाना – फर्क तो पड़ता है ना। इसमें तो पास हो ही गई। अभी बाकी एक बात रह गई है पास होने की। उस एक बात में ऊपर ही मार्क्स है।

23.1.70.....15 दिन भी इस संगमाग के बहुत हैं। ऐसे मत समझना कि हम तो 15 दिन के बच्चे हैं लेकिन संगम का समा ही अभी बहुत कम है। इस कम के हिसाब से 15 दिन भी बहुत हैं, इसलिए अब ऐसे ही सोचना कि लास्ट वालों को फ़ास्ट होना है। बिछड़े हुए जो होते हैं वह आने से ही तीव्र पुरुषार्थ में लग जाते हैं। हिम्मत बच्चे रखते हैं, मदद बाप देते हैं।

26.1.70.....जब तक हिम्मत न रख पांव नहीं रखा है तो ऊंची मंजिल लगेगी। अगर पांव रखेंगे तो फिर लिफ्ट की तरह झट पहुंच जायेंगे। हिम्मत रखो तो चढ़ाई भी लिफ्ट बन जायेगी। तो हिम्मत का पांव रखो, कर सकते हो, सिर्फ़ लोक लाज का त्याग और हिम्मत की धारणा चाहिए। एक दो का सहयोग भी बड़ी लिफ्ट है। परिस्थितियाँ तो आयेंगी लेकिन अपनी स्थिति पावरफुल चाहिए। फिर जैसा समय वैसा तरीका भी टच होगा। अगर समय प्रमाण युक्ति नहीं आती है तो समझना चाहिए योगबल नहीं है। योगयुक्त है तो मदद भी जरूर मिलती है।

23.3.70.....आप लोगों को तिलक के बजाय और चीज़ देते हैं। औरों को तिलक लगाया। इस भट्टी को लगानी है चिन्दी। तिलक छोटा होता है, चिन्दी बड़ी होती है। बड़ेपन की निशानी चिन्दी है। तिलक तो छोटे भी लगाते हैं लेकिन चिन्दी बड़े लगाते हैं। जब से ज़िम्मेवारी अपने ऊपर रखने की हिम्मत रखते हैं तब से चिन्दी को धारण करते हैं। तो तिलक अच्छा वा चिन्दी अच्छी? आप सभी सर्व के शुभ चिन्तक हो, सर्विसएबल अर्थात् शुभचिन्तक। तो इस शुभ चिन्तक ग्रुप की निशानी चिन्दी है और नाम है शुभचिन्तक ग्रुप।

26.3.70.....महारथियों के मुख से कब शब्द भी नहीं निकलेगा। कब करेंगे वा अब करेंगे। कब शब्द शोभता नहीं है। कब शब्द ही कमज़ोरी सिद्ध करता है। एक होता करके ही दिखायेंगे, एक होता है हां करेंगे, सोचेंगे। हिम्मत है, लेकिन फ़ेथ नहीं। फ़ेथफुल के बोल ऐसे नहीं होते। फ़ेथ फुल का अर्थ ही है निश्चयबुद्धि। मन, वचन, कर्म हर बात में निश्चयबुद्धि। सिर्फ़ ज्ञान और बाप का परिचय, इतने तक निश्चयबुद्धि नहीं। लेकिन उनका संकल्प भी निश्चयबुद्धि, वाणी में भी निश्चय, कभी भी कोई बोल हिम्मतहीन का नहीं। उसको कहा जाता है महारथी। महारथी का अर्थ ही है महान्।

2.4.70.....चारों बल जब समान हों तब समझो सम्पूर्ण। (इस अवस्था में शरीर छूट जाये तो भविष्य रिज़ल्ट क्या होगी?) जो ऐसे पुरुषार्थी होते हैं फिर भी हिम्मतवान तो हैं ना। तो बापदादा की भी प्रतिज्ञा की हुई है बच्चों से, कि हिम्मते बच्चे मददे बाप। ऐसी हिम्मत रख चलने वाले अन्त तक इस ही हिम्मत में रहते रहेंगे तो ऐसे हिम्मतवान बच्चों को कुछ मदद मिल जाती है। सभी से बुद्धियोग हटाकर अन्त में एक की —ाद में रहने का जो

पुरुषार्थी है, उसे मदद मिलने के कारण सहज हो जाता है। स्कॉलरशिप मिलेगी वा नहीं वह फिर है अन्त तक हिम्मत रखने पर। जितना बहुत समय से हिम्मत में चलते रहते हैं वह बहुत समय का लिंक टूटा नहीं तो गेलप कर सकता है। अगर अभी भी कारणे अकारणे बहुत समय के हिम्मत का लिंक टूट जाता है तो फिर स्कॉलरशिप लेना मुश्किल है। अगर बहुत समय का

लिंक अन्त तक रहा तो एक्स्ट्रा हेल्प मिल सकती है।

5.4.70.....साहस अर्थात् हिम्मत। जो हिम्मत वाले होते हैं उनको मदद मिलती है। मदद मांगने से नहीं मिलती। हिम्मत रखनी पड़ती है। हिम्मत पूरी रखते हैं मदद बहुत मिलती है। हिम्मत है तो सर्व बातों में मदद है। सदैव हिम्मतवान बनना है फिर बापदादा, दैवी परिवार की मदद आपे ही मिलेगी।

28.5.70.....बापदादा भी हरेक का साहस देख रहे हैं। अब कोई बात का साहस रखा जाता है तो साहस के साथ और कुछ भी करना पड़ता है कई बातें सामना करने लिए आती हैं। साहस रखा और माया का सामना करना शुरू हो जाता है। इसलिए सामना करने के लिए हिम्मत भी पहले से ही अपने में रखनी है। यह सभी सामना करने के लिए तैयार हैं? कोई भी परीक्षा किस भी रूप में आये, परीक्षा को पास करने के लिए अगर हाई जम्प देने का

अभ्यास होगा तो कोई भी परीक्षा को पास कर लेंगे। तो यह हाई जम्प लगाने वालों का गुप है।

28.5.70.....प्रतिज्ञा को पूर्ण करने के लिए संग भी चाहिए और साथ-साथ अपनी हिम्मत भी। संग और हिम्मत दोनों के आधार से पार हो जायेंगे। ऐसा पक्का ठप्पा लगाना जो सिवाए वाया परमधाम, बैकुण्ठ और कहाँ न चली जायें।

6.8.70.....तिलक लगाना अर्थात् सदाकाल के लिए प्रतिज्ञा करना। यह टीका एक प्रतिज्ञा की निशानी है। सदैव हर बात में पास विद आनर बनेंगे। इस प्रतिज्ञा का यह तिलक है। इतनी हिम्मत है। पास नहीं बल्कि पास विद आनर। पास विद आनर और पास में क्या फर्क है? पास विद आनर अर्थात् मन में भी संकल्पों से सजा न खायें।

5.12.70.....जब हो ही हिम्मतवान तो यह क्या मुश्किल है। सदैव यह स्मृति रखना कि मैं विजयी माला की विजयी रत्न हूँ। इस स्मृति में रहने से फिर हार नहीं होगी।

21.1.71.....सरल पुरुषार्थी सब बातों में आलराउन्ड होगा। कोई भी बात की कमी दिखाई नहीं देगी। कोई भी बात में हिम्मत कम नहीं होगी। मुख से ऐसा बोल नहीं निकलेगा कि यह अभी नहीं कर सकते हैं। यह एक मुख अभ्यास प्रैक्टिकल में लाने से सब बातों में सैम्पुल बन सकते हैं। सर्व बातों में सैम्पुल बनने से पास विद् आनर बन सकते हैं।

1.3.71.....एक-एक माता जगत्माता बनकर जगत की आत्माओं के ऊपर तरस, स्नेह और कलाण की भावना रखो। इसलिए इस गुप को एक वायदा करना है। वायदा करने की हिम्मत है? कौनसा भी वायदा हो कि सुनने के बाद हिम्मत रखेंगे? सुनने के पहले हिम्मत है वा सुनने के बाद हिम्मत रखेंगे? क्या समझती हो? जो भी वायदा होगा उसकी हिम्मत है? अगर कोई कड़ा वायदा हो तो फिर सोचेंगी ना। हरेक को यह वायदा करना है कि समय-प्रति-समय मैं सर्विस में मददगार और साथ-साथ शक्ति-स्वरूप बन विघ्न-विनाशक बनकर ही प्रवृत्ति में रहेंगी। सहज वायदा है ना। विघ्नों के आने से चिल्लायेंगे नहीं, घबरायेंगे नहीं, लेकिन शक्ति बनकर सामना करेंगे। यह वायदा अपने आप से सदैव के लिए करके जाना है।

5.3.71.....एक होता है थोरी का पेपर, दूसरा होता है प्रैक्टिकल पेपर। थोरी में तो पास हो, अब प्रैक्टिकल पेपर में पास होना है। हिम्मत शक्तियां मदद दे सर्वशक्तिमान। यह तो सदैव याद है ना। अब सिर्फ रिटर्न करना है। इतनी जो मेहनत ली है उसका रिटर्न। यह सभी शेरनियां हैं! शेरनियां कभी किससे डरती नहीं हैं, निर्भय होती हैं।

19.4.71.....जैसे राजाओं की राजाई तो छूट गयी लेकिन पिरवी पर्श को नहीं छोड़ते। इसी रीति संस्कारों को कितना भी खत्म करते हैं लेकिन जेब-खर्च माफिक कुछ-न-कुछ किनारे रखते जरूर हैं। यह है मुख्य संस्कार। यहाँ भट्टी में जानते भी हैं और चलने की हिम्मत भी धारण करते हैं लेकिन फिर भी माया पिरवी पर्श की रीति से कहाँ-न-कहाँ किनारे में रह जाती है। समझा? तो इस भट्टी में सभी त्याग करके जाना।

20.5.71.....जब कोई ऐसी आत्मा हिम्मतहीन, निर्बल लेकिन इच्छुक होती है, चाहना होती है कि हम कुछ प्राप्ति करें। ऐसी आत्माओं के लिए ज्ञान-दाता बनने के साथ-साथ आप विशेष रूप से उस आत्मा को बल देने के लिए शुभ-भावना रखते हो वा शुभचिन्तक बनते हो। तो विधाता के साथ-साथ वरदाता भी बनते हो। एक्स्ट्रा बल अपनी तरफ से उनको वरदान के रूप में देते हो। तो वरदान भी देना होता और दाता भी बनना होता है।

30.5.71.....आज्ञा को पालन करने से बाप की जो प्रतिज्ञा है उससे सहज रीति अपने को आगे बढ़ा सकेंगे। क्योंकि फिर प्रतिज्ञा मदद का रूप बन जाती है। एक अपनी हिम्मत, दूसरी मदद – जब दोनों मिल जाते हैं तो सहज हो जाता है।

11.6.71.....निश्चय की विजय अवश्य है और हिम्मत रखने वालों की बापदादा और सर्व ईश्वरीय परिवार की आत्मायें मददगार रहती हैं। कितना भी कोई आपकी हिम्मत को हिलाने की कोशिश करे लेकिन प्रतिज्ञा जो की है उस प्रतिज्ञा की शक्ति से जरा भी पांव हिलाना नहीं। पाँव कौनसे? जिस द्वारा याद की यात्रा करते हो। चाहे सृष्टि को न हिलावे लेकिन आप सारे सृष्टि की आत्माओं से शक्तिशाली हैं।

29.6.71.....कोई भी कार्य में एक भी अपनी हिम्मत से पान का बीड़ा उठाता है तो दूसरे साथी बन जाते हैं।

4.7.71.....जितना-जितना शुद्ध संकल्प वा मनन की शक्ति से अपनी बुद्धि को बिज़ी रखते हो, वह जो शक्तियां जमा होती हैं, तो उनसे वह धीरे-धीरे खत्म हो जायेगा। बुद्धि में यह भरने से वह पहले वाला स्वयं ही निकल जायेगा। एक होता है पहले सारा निकाल कर फिर भरना, दूसरा होता है भरने से निकालना। अगर खाली करने की हिम्मत नहीं है तो दूसरा भरते जाने से पहला आपेही खत्म हो जायेगा। वह स्टेज आपेही बनती जायेगी। एक तरफ भरता जायेगा और दूसरी तरफ खाली होता जायेगा। फिर जो स्टेज चाहते हो वह नेचरल हो जायेगी। जब चाहो तब हो जायेगी।

18.7.71.....सच्चाई और सफाई वाले प्रभु-प्रिय भी हैं और लोक-प्रिय भी और अपने आपको भी प्रिय लगते हैं। सच्चाई-सफाई को सभी पसन्द करते हैं। रजिस्टर साफ रखना-यह भी सफाई हुई ना। और सच्ची दिल पर साहेब राजी हो जाता है अर्थात् हिम्मत और याद से मदद मिल जाती है। अच्छा।

19.7.71.....प्रवृत्ति में जो रोब रखते हो 'मैं रचयिता हूँ' वा व्यवहार का भी जो रोब रहता है, सम्बन्ध में भी मुख विघ्न रोब आता है। इसका त्याग करना है। सेवाधारी रोब नहीं दिखाते। इसलिए रोब का त्याग करना है। यह है मुख त्याग। हिम्मत तो है ना त्याग की। जो भी वायदे करते हो, एक-एक वायदे पर अविनाशी की छाप लगाओ।

19.7.71.....एक दो के शुभचिन्तक, सहयोगी बनते रहें तो माया की हिम्मत नहीं जो आपके घेराव के अन्दर आ सके। यह है सहयोग की शक्ति। यह संगठन है सहयोग की शक्ति का। यह संगठन के सहयोग की शक्ति का प्रत्यक्ष रूप दिखाना। अच्छा।

1.8.71.....अपने में 100% निश्चय-बुद्धि हैं तो उनकी कभी हार नहीं हो सकती। एक चाहिए हिम्मत; दूसरा, फिर हिम्मत के साथ-साथ उल्लास भी चाहिए। अगर हिम्मत और उल्लास नहीं, तो भी प्रैक्टिकल में शो नहीं हो सकता। इसलिए दोनों साथ-साथ चाहिए। एक अन्तर्मुखता और दूसरी बाहर से शो करने वाली हर्षितमुखता, वह अवस्था है? दोनों साथ-साथ चाहिए। इस रीति हिम्मत के साथ उल्लास भी चाहिए, जिससे दूर से ही मालूम हो कि इन्हों के पास कोई विशेष प्राप्ति है। जो प्राप्ति वाले होते हैं उनके हर चलन, नैन-चैन से वह उमंग-उत्साह दिखाई देता है। भक्ति-मार्ग में सिर्फ उत्साह दिलाने के लिए उत्सव मनाने का साधन बनाया है। खुशी में नाचते हैं ना। कोई की भी उदासी या उलझन आदि होती है, वह किनारे हो जाती है ना। तो हिम्मत के साथ उल्लास भी जरूर चाहिए।

19.8.71.....सदैव यह लक्ष्य रखो कि ट्रॉन्सफर होना है और ट्रॉन्सफर करना है। ऐसे नहीं कहना कि यह ट्रॉन्सफर हो तो मैं ट्रॉन्सफर हो जाऊं। नहीं। मुझे होना है और मुझे ही करना है। जो ऐसे हिम्मत रखने वाले बनते हैं, वही विश्व के महाराजन् बन सकते हैं।

31.11.71.....हिम्मत और उल्लास – यह दोनों ही अभी के रिजल्ट में मैजारिटी में दिखाई देते हैं। इसी हिम्मत और उल्लास को सदा के लिए अपनी वृत्ति बनाना। धरती नर्म भी है और फलीभूत भी है लेकिन अपनी फलीभूत धरती में बीती हुई पास्ट जीवन के विकर्म और विकर्म के कांटे बोन नहीं देना। कांटों को बाप के सामने समर्पण किया? सर्व कांटे जो अब तक अन्दर होने के कारण नुकसान करते रहते, वह अब बाप के सामने स्वाहा हुए। स्वाहा राख को भी कहते हैं। राख हुई चीज अथवा भस्म हुई चीज फिर कभी भी अपनी धरती में बोना नहीं अर्थात् स्मृति में नहीं लाना। स्वाहा अर्थात् नाम-निशान समाप्त।

1.11.71.....एक होती है अपने में हिम्मत, हिम्मत से सहयोगी बनाना। अगर हिम्मत नहीं है, तन में भी हिम्मत नहीं है, मन में भी नहीं है, धन में भी नहीं है; तो क्या करेंगे? ऐसा भी सदा योगी बन सकता है। कोई ऐसे होते हैं जो भले अपनी हिम्मत नहीं होती है लेकिन उल्लास होता है, हौंसला होता है। धन की शक्ति नहीं भी है, मन में कन्ट्रोलिंग पावर नहीं है, व्यर्थ संकल्प जास्ती चलते हैं; लेकिन जो कोई बात जीवन के अनुभव में उल्लास और हौंसला दिलाने वाली हो, उसी द्वारा औरों को हौंसला दिलाओ तो औरों को हिम्मत आने से आपको भी हिस्सा मिल जायेगा।

4.3.72.....हिम्मत और उल्लास सदा रहे। हिम्मत से सदा हर्षित रहेंगे। उल्लास से क्या होगा? उल्लास किसको खत्म करता है? आलस्य को। आलस्य भी विशेष विकार है। जो पुरुषार्थी पुरुषार्थ के मार्ग पर चल पड़ हैं उन्हों के सामने वर्तमान समय माया का वार इस आलस्य के रूप में भिन्न-भिन्न तरीके से आता है। तो इस आलस्य को खत्म करने के लिए सदा उल्लास में रहो। कमाई करने का जब किसको उल्लास होता है तो फिर आलस्य खत्म हो जाता है।

27.4.72.....अपने व्यर्थ संकल्प, विकल्प ही अपने को चियरफुल स्टेज से गिरा देते हैं, क्योंकि मर्यादा का उल्लंघन किया। अगर मर्यादा की लकीर के अन्दर सदा अपने को रखो तो यह रावण अर्थात् माया अथवा विघ्न

इसी मर्यादा की लकीर के अन्दर आने की हिम्मत नहीं रख सकते। कोई भी विघ्न अथवा तूफान, परेशानी वा उदासाई आती है तो समझना चाहिए – कहां-न-कहां मर्यादाओं की लकीर से अपनी बुद्धि रूपी पांव को निकाला है।

3.5.72.....पुरुषार्थी कब भी अपनी हिम्मत और उल्लास को छोड़ते नहीं हैं। हिम्मत, उल्लास सदा साथ है तो विजय सदैव है ही। हिम्मतहीन जब बनते हैं अथवा उल्लास के बजाय किसी-न-किसी प्रकार का आलस्य जब आता है तब ही हार होती है। और छोटी-सी गलती करने से लाफुल बनने के बजाए स्वयं ही ला-मेकर होते हुए ला को ब्रेक करने वाले बन जाते हैं। वह छोटी- सी गलती कौनसी है? एक मात्रा की सिर्फ गलती है। एक मात्रा के अन्तर से ला-मेकर के बजाए ला को ब्रेक करने वाले बन जाते हैं। ऐसे सदा सरेन्डर रहें तो सफलतामूर्त, विजयीमूर्त बन जाओगे।

3.5.72.....शक्तियों को अभी अपना संहारी रूप धारण करना चाहिए। जैसे दिखाया हुआ है – कोई भी आसुरी संस्कार शक्तियों का सामना नहीं कर सकता, आसुरी संस्कार वाले शक्तियों के सामने आंख उठाकर देख नहीं सकते। तो ऐसे संहारी रूप बनकर स्वयं में भी आसुरी संस्कारों का संहार करो और दूसरों के भी आसुरी संस्कार के संहार करने वाले संहारीमूर्त बनो। ऐसी हिम्मत है? माता रूप में भले रहम आ जाता, शक्ति रूप में रहम नहीं आता। माता बनकर पालना तो बहुत की और माता के आगे बच्चे लाडकोड करते भी हैं। शक्तियों के आगे किसकी हिम्मत नहीं जो अलबेलापन दिखा सके। अपने प्रति भी अब संहारी बनो। ऐसी स्टेज बनाओ जो आसुरी संस्कार संकल्प में भी ठहर न सकें। इसको कहते हैं – एक ही नजर से असुर संहारनी।

17.5.72.....अगर कोई दुश्मन वार कर लेता है तो ज़रूर किले की मजबूती की कमी है। यह तो संगठन रूपी किला है, इसकी मजबूती के लिए तीन बातों की आवश्यकता है। अगर तीनों बातें मजबूत हैं तो इस किले के अन्दर कोई भी रूप से कभी भी कोई दुश्मन वार नहीं कर सकेंगे। दुश्मन प्रवेश भी नहीं कर सकते, हिम्मत नहीं हो सकती। वह तीन बातें कौनसी हैं, जिससे मजबूत हो सकते हैं? एक – स्नेह; दूसरा – स्वच्छता और तीसरा है रूहानियत यह तीनों बातें अगर मजबूत हैं तो कब कोई का वार नहीं होगा।

16.6.72.....असलियत को भूलने से ही आसुरी संस्कार आते हैं। लौकिक रूप में भी, जो पावरफुल बहुत होता है उसके आगे जाने की कोई हिम्मत नहीं रखते। आप अगर आलमाइटी अथार्टी की पोजीशन पर ठहरो तो यह आसुरी संस्कार वा व्यर्थ संस्कारों की हिम्मत हो सकती है क्या आपके सामने आने की? अपनी पोजीशन से क्यों उतरते हो? संगमयुग का असली संस्कार है जो सदा नॉलेज देता और लेता रहता है उसको सदा ज्ञान स्मृति में रहेगा और सदा हर्षित रहेगा। ब्राह्मण जीवन के विशेष संस्कार ही हर्षितपने के हैं।

12.7.72.....जैसे कमल पुष्प कीचड़ में रहते हुए न्यारा रहता है, वैसे अति तमोप्रधान, तमोगुणी वागुण्डल में होते हुए भी अपनी स्थिति सदा सतोप्रधान रहे – इतनी हिम्मत समझ कर हाथ उठाया ना? फिर ऐसे तो नहीं कहेंगे कि यह बात ऐसे हुई, इसलिए अवस्था नीचे-ऊपर हुई? चाहे प्रकृति द्वारा, चाहे लौकिक सम्बन्ध द्वारा, चाहे दैवी परिवार द्वारा कोई भी परीक्षा आवे वा कोई भी परिस्थिति सामने आवे उसमें भी अपने आपको अचल, अटल बना सकेंगे ना। इतनी हिम्मत समझते हो ना? परीक्षाएं बहुत आनी हैं।

19.7.72.....वर्तमान समय के पुरुषार्थ में कारण शब्द समाप्त हो जाना चाहिए। कारण क्या चीज है? अभी तो आगे बढ़ते जा रहे हो ना। जब सृष्टि के परिवर्तन, प्रकृति के परिवर्तन की जिम्मेवारी को उठाने की हिम्मत रखने वाले हो, चैलेंज करने वाले हो; तो कारण फिर क्या चीज है? कारण की रचना कहां से होती है? कारण का बीज

क्या होता है? किस-ना-किस प्रकार के चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे सम्पर्क वा सम्बन्ध में आने की कमजोरी होती है। इस कमजोरी से ही कारण पैदा होता है। तो रचना ही व्यर्थ है ना। कमजोरी की रचना क्या होगी? जैसा बीज वैसा फल।

6.8.72.....जब बाप अविनाशी है और प्राप्तियां भी अविनाशी हैं; तो अविनाशी प्राप्ति द्वारा जो अपनी स्टेज बना रहे हो वह भी अविनाशी हो। इतनी हिम्मत अपने में समझते हो कि अपनी शुभ वृत्ति द्वारा प्रवृत्ति को, परिस्थिति को, प्रकृति को बदल सकते हो?

6.8.72.....ऐसा प्रैक्टिकल पेपर देना है जो सभी महसूस करें कि इनमें तो बहुत परिवर्तन है। हिम्मत रखने से मदद स्वतः ही मिलती है। हिम्मत में कुछ जरा-सा भी कमी होती है तब मदद में भी कमी पड़ती है। कई समझते हैं मदद मिलेगी तो करके दिखावेंगे। लेकिन मदद मिलेगी ही हिम्मत रखने वालों को। पहले हिम्मते बच्चे, फिर मददे बाप है। हिम्मत धारण करो तो आपकी एक गुणा हिम्मत बाप की सौ गुणा मदद। अगर एक भी कदम ना उठावें तो बाप भी 100 कदम ना उठावेंगे। जो करेगा वो पावेगा। हिम्मत रखना अर्थात् करना।

17.5.73.....हर-एक अपनी हिम्मत के अनुसार वह प्लान-बुद्धि में रखे कि आज के दिन में क्या प्रैक्टिकल में लायेंगे और कितनी परसेन्टेज तक इस बात को पुरुषार्थ में लायेंगे? अपनी दिनचर्या के साथ यह सैट करो और फिर रात को यह चेक करो कि अपनी सैट की हुई प्वाइन्ट (Point) को कहाँ तक प्रैक्टिकल में और कितनी परसेन्टेज तक धारण कर सके? यदि नहीं कर सके तो उसका कारण? और किया तो किस-किस विशेष युक्ति से अपने में उन्नति का अनुभव किया? यह दोनों रिजल्ट सामने लानी चाहिये और अगर देखते हो कि जो आज का लक्ष्य रखा था उस में उतनी सफलता नहीं हुई वा जितना प्लान बनाया उतना प्रैक्टिकल नहीं हो पाया तो उसको छोड़ नहीं देना चाहिये।

23.6.73.....फास्ट पुरुषार्थ की विधि है – प्रतिज्ञा, प्रतिज्ञा से अपने को प्रख्यात करो। बाप को प्रख्यात करो अर्थात् प्रतिज्ञा से प्रत्यक्षता करो। यह मुश्किल है क्या? हिम्मत और उल्लास और नशा और निशाना अगर सदा साथ रखेंगे तो अनेक कल्प के समान फुल पास हुए ही पड़े हैं।

15.4.74.....अगर तूफान को तूफान समझा तो हलचल होगी और तोहफा समझा व अनुभव किया तो उससे उल्लास और हिम्मत अधिक बढ़ेगी। यह है चढ़ती कला की निशानी।

15.4.74.....योग-अग्नि को तेज़ करो तो रास्ता क्लियर हो जायेगा। मिली हुई हिम्मत और उल्लास के प्वाइन्ट्स बुद्धि में दौड़ाओ तो रास्ता क्लियर हो जायेगा। अब की रिजल्ट में ऐसे आधा ही चल रहे हैं। इसलिए इसको आगे बढ़ाओ। यह रिजल्ट क्या पुरुषोत्तम आत्माओं को अच्छी लगती है? इसलिये न पुरुषार्थ की गति में अंगद बनो, न माया से हार खाने के लिये अंगद बनो, बल्कि विजयी बनने के लिए अंगद बनना है।

16.5.74.....जबकि बाप-दादा एक कदम के पीछे, लाखों कदम स्वयं भी सहयोगी बनकर हिम्मत और उल्लास बढ़ाते हैं, फिर मुश्किल क्यों? जबकि दुनिया कि सर्व मुश्किलताओं को आप स्वयं ही मिटाने वाले हो, मुश्किल बात सहज अनुभव कराने वाले हो, ऐसे अनुभवी मूर्त के लिए कोई भी बात मुश्किल है, ऐसा सोच भी नहीं सकते।

23.5.74.....अगर कोई भी हद की प्राप्ति की आकर्षण, संकल्प में भी छूने की हिम्मत रखती है, तो इसको क्या कहेंगे? क्या ऐसे को वैष्णव कहेंगे? जैसे आजकल के नामधारी वैष्णव, अनेक प्रकार की परहेज़ करते

हैं—कई व्यक्तियों और कई प्रकार की वस्तुओं से, अपने को छूने नहीं देते हैं। अगर अकारणों कोई छू लेते हैं, तो वह पाप समझते हैं। आप, जैसा नाम वैसा काम करने वाले, जैसा संकल्प वैसा स्वरूप बनने वाले सच्चे वैष्णव हो, ऐसे सच्चे वैष्णवों को क्या कोई छू सकने का साहस कर सकता है? अगर छू लेते हैं, तो छोटेमोटे पाप बनते जाते हैं। ऐसे सूक्ष्म पाप, आत्मा को ऊँच स्टेज पर जाने से रोकने के निमित्त बन जाते हैं। क्योंकि पाप अर्थात् बोझा; वह फरिश्ता बनने नहीं देते; बीज रूप स्थिति व वानप्रस्थ स्थिति में स्थित नहीं होने देते।

26.6.74.....जैसे कोई लौकिक रीति में भी जब कोई अथॉरिटी वाला होता है, तो उनके आगे कोई भी सामना करने की हिम्मत नहीं रखते हैं और अगर कोई अपनी अथॉरिटी को यूज करने के बजाय हर समय लूज (loose) रहता है, तो साधारण आदमी भी सामना करने के लिए अथवा डिस्टर्ब करने के लिए, विघ्न डालने के लिए लूज रहते हैं। तो यहाँ भी अपनी अथॉरिटीज को, प्राप्त हुई सर्व-शक्तियों को, वरदानों को यूज करने के बजाय लूज रहते हो। इसलिए हर समय, माया को सामना करने की हिम्मत रहती है। मन्सा में, वाचा में, कर्मणा में, सम्बन्ध में और सम्पत्ति में सब में इन्टरफियर करने की हिम्मत रखती है। किसी भी बात में छोड़ती नहीं, क्योंकि अपनी पोज़ीशन से नीचे आकर साधारण बन जाते हो।

4.7.74.....बाप-दादा को भी रहम पड़ता है कि सभी को अभी से सम्पूर्ण बना देवे। लेकिन रचयिता भी मर्यादाओं व ईश्वरीय नियमों में बँधा हुआ है। बाप भी मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं कर सकते। 'जो करेगा, वह पावेगा', यह मर्यादा बाप को पूर्ण करनी पड़ती है। हाँ इतनी मार्जिन है कि जो एक का सौ गुणा दे देते हैं। हिम्मत करने पर मदद कर सकते हैं, बाकी और कुछ नहीं कर सकते हैं।

18.7.74.....मधुबन निवासियों को और सब आत्माओं को विशेष व्रत लेना चाहिए। कौन-सा? व्रत यही लेना है कि हम सब एक मत, एक ही श्रेष्ठ वृत्ति, एक ही रूहानी दृष्टि और एकरस अवस्था में एक-दो के सहयोगी बन, शुभ चिन्तक बन, शुभ भावना और शुभ कामना रखते हुए और अनेक संस्कार होते हुए भी, एक बाप-समान सतोप्रधान संस्कार और स्व के भाव में रहने वाला, स्वभाव बनाने का किला मजबूत बनावेंगे—यह है व्रत। क्या स्वयं के प्रति व सर्व-आत्माओं के प्रति, यह व्रत लेने की हिम्मत है? स्वयं के प्रति तो प्रवृत्ति में रहने वाले और वातावरण में रहने वाले भी करते हैं। मधुबन निवासियों में, न सिर्फ स्वयं के प्रति, साथ ही संगठन के प्रति भी व्रत लेने की हिम्मत चाहिए। यही मधुबन वरदान भूमि की विशेषता है।

18.7.74.....यह अव्यक्त पार्ट भी विशेष नयों के लिये है और पुरानों को तो, अब बाप के समान बन, नई आत्माओं के हिम्मत और उल्लास को बढ़ाना है। जैसे बाप-दादा ने, बच्चों को अपने से भी आगे रखते हुए, अपने से भी ऊँच बनाया, ऐसे ही पुरानों का कार्य है नयों को अपने से भी आगे बढ़ाने का सबूत दिखाना व सर्व-शिक्षाओं को साकार स्वरूप में दिखाना है। पालना का प्रैक्टिकल रूप रिटर्न रूप में देना है।

13.9.74.....दिन प्रतिदिन आपके पास जो आत्मायें आयेगी वह अति निर्बल स्टेज वाली ही आवेंगी। जैसे पहले गुप में आप लोग निकले तो पहले गुप की शक्ति, हिम्मत और दूसरे गुप की शक्ति, हिम्मत और तीसरे गुप की शक्ति और हिम्मत में अन्तर दिखाई देता है ना। ऐसे ही फिर नई-नई आत्माएं जो अब निकल रही हैं उनकी शक्ति और हिम्मत में भी अन्तर दिखाई देता है। तन से भी और मन से भी हर गुप में अन्तर दिखाई देता जाता है। यह तो सबका अनुभव है ना? हिसाब से सोचो कि अब जो लास्ट की आत्मायें आवेंगी, वह क्या होंगी? अति निर्बल होंगी ना? तो, ऐसी निर्बल आत्माओं को सिर्फ ज्ञान दे दिया, उन्हें कोर्स करा दिया व योग में बैठा दिया, वे

इससे आगे नहीं बढ़ेगी। अब तो निमित्त बनी हुई आत्माओं को, अपनी प्राप्त की हुई शक्तियों के आधार से ही निर्बल आत्माओं को सहयोग देते हुए, आगे बढ़ाना पड़ेगा। इसके लिये अभी से ही अपने में सर्वशक्तियों का स्टॉक जमा करो।

15.9.74.....पहले आप लोग भाषण आदि करती थीं और कोर्स कराती थीं। अभी चेयरमैन के रूप में थोड़ा बोलती हो, कोर्स आदि आपके जो साथी हैं, वह कराते हैं। अभी इस समय, कोई को आकर्षण करना, हिम्मत और उल्लास में लाना, यह सर्विस रह गई है, तो फर्क आ जाता है ना? इससे भी आगे बढ़ कर यह अनुभव होगा जैसे कि आकाशवाणी हो रही है। कहेंगे यह कोई अवतार हैं—और यह कोई साधारण शरीरधारी नहीं हैं। अवतार प्रगट हुए है। जैसे कि साक्षात्कार में अनुभव करते-करते देवी प्रगट हुई है। महावाक्य बोले और प्रायःलोप। अभी की स्टेज व पुरुषार्थ का लक्ष्य यह होना है।

16.1.75.....कई समझते हैं कि बाप तो अव्यक्त हो गया, व्यक्त में सामना करने वाले तो हम ही हैं। लेकिन आप भी अव्यक्त हो जाओ अर्थात् कोई भी सामने आये तो व्यक्त भाव की बात उन्हें दिखाई न दे या करने की हिम्मत न हो। औरों के भी व्यक्त भाव को मिटाने वाले अव्यक्त फरिश्ते बन जाओ। ऐसी अव्यक्त-स्थिति व वायुमण्डल अर्थात् पाण्डवों का किला बनाओ तो यह हलचल समाप्त हो जायेगी।

4.2.75.....नॉलेजफुल का रिजल्ट है – प्लैनिंग, पॉवरफुल की रिजल्ट है – प्रैक्टिकल। नॉलेजफुल का रिजल्ट है – संकल्प और पॉवरफुल का रिजल्ट है – स्वरूप में आना। दोनों की समीपता और समानता ही दोनों का समान रूप बनना अर्थात् सम्पूर्ण बनना। योग में और सेवा में जितना समय स्वयं को बिजी रखोगे तो ऑटोमेटिकली कर्जदार को आने की हिम्मत व फुर्सत नहीं मिलेगी।

10.2.75.....समय प्रमाण जैसे समय की गति तीव्र होती जा रही है, ऐसी सेवा की रिजल्ट प्रत्यक्ष फल बनी बनाई निमित्त बनने वाली आत्माएँ सहज ही निकल सकती हैं। सिर्फ लक्ष्य, हिम्मत और परख चाहिए।

18.9.75.....एक तो है चक्रधारी, दूसरे हैं बोझदारी। ऐसे बोझ वाली आत्मायें डबल लाइटधारी कैसे बनेंगी? इसलिये उनकी बार-बार एक ही आवाज निकलती है, कि अनुभव नहीं होता। सुनते भी रहते, चलते भी रहते लेकिन प्राप्ति की मंजिल नजर नहीं आती है। बड़ा मुश्किल है – ऐसी आवाज बाप सुने और ऐसे बच्चों को देखे तो बाप क्या करेंगे? मुस्करायेंगे और क्या करेंगे? फिर भी रहमदिल बाप के सम्बन्ध के कारण बार-बार हिम्मत और उल्लास दिलाते रहते हैं कि तुम ही बच्चों ने अनेक बार विजय प्राप्त की है – हिम्मत आपकी, मदद बाप की। फिर भी चलते चलो। रुको नहीं। कल्प पहले मुआफिक फिर से विजयी बन जाओ।

18.9.75.....भले कितने भी निर्बल हो – लेकिन एक सेकेण्ड की याद इतना तो कर सकते हैं? ऐसी निर्बल आत्माओं को एक सेकेण्ड की याद रखने की हिम्मत के रिटर्न (बदले, उत्तर) में बाप हजार गुना मददगार बनेंगे।

31.10.75.....सन्तुष्टता ही श्रेष्ठता व महानता है। प्रजा भी इस आधार से बनेगी। सन्तुष्ट हुई आत्मायें उनको राजा मानेंगी। कोई-न-कोई सेवा सहयोग द्वारा प्राप्त कराई हो – स्नेह की, सहयोग की, हिम्मत-उल्लास की और शक्ति दिलाने की प्राप्ति कराई हो तो महारथी और अगर सन्तुष्टता न कराई है तो नाम के महारथी हैं, वे काम के नहीं। बड़े भाई-बहन तो माता-पिता समान होते हैं। माता-पिता सबको सन्तुष्ट करते हैं। तो महारथी को यह अटेंशन पहले देना है। इसके लिए स्वयं को परिवर्तन करना पड़े। परन्तु यह सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट जरूर लेना है। यह चेकिंग करो कि – “कितनी आत्मायें मेरे से सन्तुष्ट हैं? मुझे क्या करना है जो मेरे से सब सन्तुष्ट रहें?”

1.2.76.....दूसरे प्रकार के परवाने, शमा की लाइट और माइट को देखते हुए उसकी तरफ आकर्षित ज़रूर होते हैं, समीप जाना चाहते हैं, समान बनना चाहते हैं, लेकिन देह-भान की स्मृति व देह के सम्बन्ध की स्मृति, देह के वैभवों की स्मृति, देह-भान के वश तमोगुणी संस्कारों की स्मृति समीप जाने का साहस व हिम्मत धारण करने नहीं देती है। इन भिन्न-भिन्न स्मृतियों के चक्कर में समय गँवा देते हैं!

6.2.76.....लेफ्ट हैण्ड सहयोगी सदा रहते हैं, लेकिन स्वच्छता के साथ-साथ अस्वच्छता अर्थात् संकल्प, वाणी और कर्म में कभी-कभी कुछ-न-कुछ अशुद्धि भी रह जाती है अर्थात् सम्पूर्ण स्वच्छ नहीं। पुरुषार्थ की गति में भी तीव्रता कम रहती है। करेंगे, सोचेंगे, लेकिन लेफ्ट अर्थात् लेट करेंगे। साथ देंगे, कार्य करेंगे, लेकिन पूरी जिम्मेदारी उठाने की हिम्मत नहीं रखेंगे। सदा उल्लास, हिम्मत रखेंगे, लेकिन निराधार नहीं होंगे। उनकी स्टेज (Stage) बहुत समय वकील अर्थात् लॉयर (Lawyer) की होती है। कायदे ज्यादा सोचेंगे लेकिन फायदा कम पायेंगे। स्वयं, स्वयं के जस्टिस (Justice) नहीं बन सकेंगे।

28.1.77.....सम्पूर्ण पवित्रता की परिभाषा जानते हो? संकल्प व स्वप्न में भी अपवित्रता का अंशमात्र भी न हो? ऐसी श्रेष्ठ धारणा करने वाले ही सच्चे ब्राह्मण कहलाते हैं, इसी धारणा के लिए ही गायन है 'प्राण जाएँ पर धर्म न जाएँ।' ऐसी हिम्मत, ऐसा दृढ़ निश्चय करने वाले अपने को समझते हो? किसी भी प्रकार की परिस्थिति में अपने धर्म अर्थात् धारणा के प्रति कुछ त्याग करना पड़े, सहन करना पड़े, सामना करना पड़े, साहस रखना पड़े तो खुशी-खुशी से करेंगे? पीछे हटेंगे नहीं? घबरायेंगे नहीं?

30.4.77.....मेरापन खत्म तो 'देही अभिमानी' स्वतः बन गए। अगर बाप की स्मृति थोड़ी भी किनारे हो जाती तो माया आती। सदा कम्बाइन्ड रहो तो माया की हिम्मत नहीं देहभान में लाने की। सदा बाप के सिवाए और कुछ सूझे ही नहीं।

3.5.77.....कोई अपने में, बाप के डायरेक्ट साथ और सहयोग लेने की हिम्मत न देख, राह पर चलने वाले साथियों को ही पंडा बनाते अर्थात् उन द्वारा ही साथ और सहयोग की प्राप्ति समझते हैं। बाप के बजाए कोई आत्मा को सहारा समझ लेते हैं, इसलिए बाप से किनारा हो जाता है। तिनके को अपना सहारा समझने कारण, बार-बार तुफानों में हिलते और गिरते रहते हैं। और सदैव किनारा दूर अनुभव करते हैं।

3.5.77.....कई आत्माएं बहुत अच्छे हुल्लास, उमंग, हिम्मत और बाप के सहयोग से बहुत आगे मंजिल के समीप तक पहुँच जाती हैं, लेकिन 63 जन्मों के हिसाब यहाँ ही चुक्ती होने हैं। अपने पिछले संस्कार, स्वभाव बाहर इमर्ज (Emerge) ही, सदा के लिए समाप्त हो रहे हैं, उस कर्मों की गुह्य गति को न जान घबरा जाते हैं – क्या लास्ट तक यही चलेगा? अब तक भी यह टक्कर क्यों होता? इन व्यर्थ संकल्पों की उलझन के कारण प्यार नहीं कर पाते।

5.5.77.....'वरदानी' बच्चे, स्वयं के जमा किए हुए खज़ानों को अर्थात् स्वयं की शक्ति, स्वयं के गुण द्वारा, स्वयं के ज्ञान खज़ाने द्वारा, निर्बल आत्माओं को वरदान द्वारा, हिम्मत, हुल्लास की शक्ति और खुशी का खज़ाना, अपने सहयोग की शक्ति से देकर, उन कमज़ोर को शक्तिशाली बना देते हैं।

16.5.77.....भगवान को साथ बनाओ तो हर मुश्किल सहज हो जाएगी। हिम्मतवान बनो तो मदद मिल ही जायेगी। सी फादर करो। फॉलो फादर करो तो सदा सहज उमंग उल्लास जीवन में अनुभव करेंगे। रास्ते चलते कोई व्यक्ति वा वैभव को आधार नहीं बनाओ। जो आधार ही स्वयं विनाशी है, वह अविनाशी प्राप्ति क्या करा

सकता। 'एक बल एक भरोसा' इस पाठ को सदा पक्का रखो, तो बीच भँवर से सहज निकल जायेंगे। और मंजिल को सदा समीप अनुभव करेंगे।

2.6.77.....निमित्त बनी हुई आत्माएं जो पर्दे के अन्दर हैं, वह स्टेज पर आने की हिम्मत दिखायेगी तब तो नया मोड़ होगा। सारा समय पूर्वज की पोजीशन पर स्थित हो, स्वयं को तना समझ सर्व शाखाओं को शक्तियों का जल दो। नहीं तो सूखी पड़ी हुई हैं, उन्होंको फिर फिर से ताजा बनाओ। अच्छा।

10.6.77.....जिनमें ज्ञान नहीं, वे मांगते हैं – “शक्ति दो, मदद दो”। मदद मिलने का रास्ता – ‘हिम्मत।’ ‘हिम्मते बच्चे मददे बाप’। मांगने से मदद देनेवाला बाप नहीं। हिम्मत रखो तो मदद लाख गुणा मिलेगी। एक करना और लाख पाना – इस हिसाब को तो जानते हो न? तो हिम्मत कभी नहीं छोड़नी चाहिए। हिम्मत को छोड़ा अर्थात् प्रॉपर्टी को छोड़ा, प्रॉपर्टी को छोड़ा अर्थात् बाप को छोड़ा। क्या भी हो जाए, कैसी भी परिस्थिति आ जाए, हिम्मत नहीं छोड़नी चाहिए। हिम्मत छोड़ी तो श्वास छोड़ी। ‘हिम्मत ही इस मरजीवा जीवन का श्वास है। श्वास ही चला जाए तो क्या रह गया? हिम्मत है तो मूर्छित से सुरजीत हो जाएगा।’ साइंस की वृद्धि का कारण भी ‘हिम्मत’ है। हिम्मत के आधार से चन्द्रमा तक पहुँच जाते, दिन को रात और रात को दिन बना देते। हिम्मत रख कर चलने वाले को सहज वरदान प्राप्त हो जाता है, मुश्किल भी सहज हो जाती है, असम्भव बात भी सम्भव हो जाती है।..

14.2.78.....जो भी सम्पर्क में आवें उन्हें बाप का परिचय देते चलो तो कोई न कोई निकल आएगा। हिम्मत नहीं हारना कि कोई निकलता नहीं, निकलेंगे।

29.11.78.....ब्रह्माकुमारी वह जो विश्व के कल्याण के निमित्त बने। बेहद विश्व के कल्याणकारी न कि हद के। लगन में कमी है तो विघ्न अपना काम करेगा। अगर आग तेज़ है तो किचड़ा भस्म हो जाएगा। लगन है तो विघ्न नहीं रह सकता, कर्मयोग से कर्म भोग भी परिवर्तन हो जाता, परिवर्तन करना अपनी

1.12.78.....प्रजा अर्थात् सदा हर बात में अधीनपन के संस्कार । उसको कितना भी अधिकारी-पन की स्टेज का तख्त दो लेकिन तख्तनशीन बन नहीं सकते। सदा निर्बल और कमज़ोर आत्मा दिखाई देंगे। स्वयं की हिम्मत नहीं होगी लेकिन दूसरे की हिम्मत और सहयोग से कार्य सफल कर सकते। सहयोग और चीज़ है और हिम्मत बढ़ाने के लिए सहयोग और चीज़ है। हिम्मत देंगे तो कर सकेंगे। यह अधिकारीपन की निशानी नहीं है। हिम्मत रखने से सहयोग के पात्र स्वतः ही बनेंगे। का काम है।

14.12.78.....अपने जीवन की भविष्य श्रेष्ठ मंजिल स्पष्ट दिखाई नहीं देती। आगे क्या होगा यह क्वेश्चन मार्क का पेपर सामने आ जाता है जिसके कारण तीव्रगति वा तीव्र पुरुषार्थ बदल पुरुषार्थ के रूप में हो जाता है। आई हुई रुकावट को मिटाने की वा पत्थर को पार करने की हिम्मत कम हो जाती है इसलिए चलते-चलते थक जाते हैं। कोई थक जाते, कोई दिलशिकस्त हो जाते अर्थात् अपने से नाउम्मीद हो जाते हैं।

14.12.78.....कल्याणकारी बाप और कल्याणकारी समय का हर सेकेण्ड लाभ उठाओ। सारे कल्प में ऐसे सम्पत्तिवान, भाग्यवान दिन, भाग्य विधाता के संग के दिन फिर नहीं आने वाले हैं। विनाश के समय भी यह प्राप्ति का समय याद करेंगे इसलिए ड्रामा अनुसार कल्याण अर्थ जो ड्रामा का दृश्य चल रहा है उसको त्रिकालदर्शी बन हिम्मत और उल्लास वाली समर्थ आत्मायें बन स्वयं भी समर्थ रहो और विश्व को भी समर्थ बनाओ। पत्थर तोड़ने में थको मत, स्वयं के तूफान में हिलो मत, अचल बनो।

21.12.78.....सदा हिम्मत और हुल्लास एकरस रहता है? जब एकरस स्थिति होगी तो हिम्मत और हुल्लास भी सदा एकरस होगा, नीचे ऊपर नहीं। कभी बहुत, कभी कम उसका कारण क्या है? सर्व प्राप्ति का अनुभव सदा

सामने वा स्मृति में नहीं रहता। आज अल्पकाल की प्राप्ति भी हिम्मत और हुल्लास में लाती है तो यह तो सदाकाल की और सर्व प्राप्ति—इसका परिणाम क्या होगा? बाप द्वारा जन्म से ही जो प्राप्ति हुई है उन सबकी लिस्ट सामने रखो। जब प्राप्ति अटल, अचल है तो हिम्मत और हुल्लास भी अचल होना चाहिए।

1.1.79.....अब पुरुषार्थ करने वाली आत्माएं जो अन्तिम अति कमजोर आत्माएं हैं, ऐसी कमजोर आत्माओं में पुरुषार्थ करने की भी हिम्मत नहीं है ऐसी आत्माओं को स्वयं की शक्तियों द्वारा समर्थ बनाकर प्राप्ति कराओ। इसलिए ज्ञान मूर्त से ज़्यादा अभी वरदानी मूर्त का पार्ट चाहिए। सुनने की शक्ति भी नहीं है। चलने की हिम्मत नहीं है सिर्फ एक प्यास है कि कुछ मिल जाए – ऐसी अनेक आत्माएं विश्व में भटक रही हैं – चलने के पांव अर्थात् हिम्मत भी आपको देनी पड़ेगी। तो हिम्मत का स्टाक जमा है! अमृत कलश सम्पन्न है! अखुट है! अखण्ड है! क्यू लगावें? स्वयं की क्यू समाप्त की है – अगर स्वयं की क्यू में बिजी होंगे तो अन्य आत्माओं को सम्पन्न कैसे बनावेंगे! इसलिए इस वर्ष में अपनी क्यू को समाप्त करो।

4.1.79.....जैसे आजकल शारीरिक रोग हार्टफेल का ज्यादा है वैसे आध्यात्मिक उन्नति में दिलशिकस्त का रोग ज़्यादा है। ऐसी दिलशिकस्त आत्माओं को प्रैक्टिकल परिवर्तन द्वारा ही अर्थात् आंखों देखी वस्तु द्वारा ही हिम्मत वा शक्ति आ सकती है।

16.1.79.....एक तरफ पकड़ते हैं दूसरे तरफ पुकारते हैं – छोड़ो तो छूटे – यह एक सेकेण्ड की हिम्मत अनेक जन्मों के लिए अनेक प्रकार के बोझ से छुड़ा देगी।

3.2.79.....संगमयुग की विशेषता वा वरदान क्या है! बाप का कर्तव्य असम्भव को भी सम्भव करने का है, तुम आत्मा आदिकाल की राजवंशी हो, अब ब्रह्मावंशी हो, मास्टर सर्वशक्तिवान हो, इस प्रकार की महिमा करेंगे – जिससे वह आत्मा गुणों को सुनते हुए स्मृति और समर्थी में आये और कमजोरी को वा बुराई को मिटाने की हिम्मत में आये।

28.11.79.....जो समझदार परिवार होते हैं, स्नेही परिवार होते हैं वह क्या करते हैं, एक दूसरे की कमजोरी की बात समाकर एक-दूसरे के सहयोगी बनकर बाहर अपना नाम बाला करते हैं। अगर कोई परिवार में गरीब होता है तो उसको मदद देकर के भरपूर कर देते हैं। यह भी परिवार है। अगर कोई संस्कार के वश हैं, तो क्या करना चाहिए। सहयोग देकर, हिम्मत बढ़ाकर के हुल्लास में लाते हुए उसको अपना साथी बनाना चाहिए फिर देखो अनेक होते भी एक हो जायेंगे। यह करना मुश्किल है क्या? जब वरदानी मूर्त हो तो वरदानी कभी किसी की कमजोरी नहीं देखते।

28.11.79.....एक दो को सहयोगी बनाकर मायाजीत क वायब्रेशन्स फैलाओ अब ऐसा किला मज़बूत करो। इतना किला पक्का हो जो माया की हिम्मत ही न रहे। अगर किसी में आये भी तो उसे दूर से भगा दो।

10.12.79.....पुरुषार्थ का भी आलस्य होता है और स्थूल कर्म में भी आलस्य होता है। पुरुषार्थ में दिलशिकस्त होते हैं तो आलस्य आ जाता है। क्या करें, इतना ही हो सकता है, ज्यादा नहीं हो सकता। हिम्मत नहीं है, चल तो रहे हैं, कर तो रहे हैं। पुरुषार्थ की थकावट भी आलस्य की निशानी है। आलस्य वाले जल्दी थकते हैं, उमंग वाले अथक होते हैं। तो टीचर्स अर्थात् न स्वयं पुरुषार्थ में थकने वाली न औरों को पुरुषार्थ में थकने दें। तो ऑलराउन्डर भी हों और अलर्ट भी हों।

4.1.80.....रूलिंग पावर वाले के पास माया आ नहीं सकती। माया जहाँ देखती है कार्यकर्ता सब होशियार हैं, अटेन्शन में है तो वहाँ हिम्मत नहीं रख सकती। रूलिंग पावर कहाँ तक है – उसकी चेकिंग करो और अगर पावर नहीं है तो उसका कारण क्या है? कारण को निवारण के रूप में परिवर्तित करो।

14.1.80.....अभी जो आते हैं वह 7 दिन के कोर्स से, अपनी हिम्मत से चलने वाले कम हैं, लास्ट पूर है ना। लास्ट पूर में ताकत नहीं होती। इसलिए अभी की आत्माओं को स्वयं के शक्तियों के सहयोग द्वारा आगे बढ़ाने का समय है। आपके भेंट में अभी की आत्मायें टू लेट हो गई, क्योंकि लास्ट पूर हो गया इसलिए स्वयं का हुल्लास देकर उनको चलाना है। आपको महादानी, वरदानी बनना पड़े।

23.1.80.....अभी निर्विघ्न वायुमण्डल बनाओ जिसमें कोई भी आत्मा की हिम्मत न हो विघ्न रूप बनने की। विघ्न आया उसको हटाया, यह भी टाइम वेस्ट हुआ। तो अब किले को मज़बूत बनाओ। आपस में स्नेही सहयोगी बनकर चलो तो सभी फालो करेंगे। स्वयं जो करेंगे वैसे सब फालो करेंगे।

20.1.81.....सभी का एक ही वरदान है जो बिना मेहनत के, बिना सोचे समझे हुए बाप ने कैसी भी कमज़ोर आत्मा को हिम्मतहीन आत्मा को अपना स्वीकार कर लिया। जो है जैसा है मेरा है। यह सेकेण्ड में वर्से के अधिकारी बनाने की लाटरी कहो, भाग्य कहो, वरदान कहो, बाप ने स्वयं दिया। स्मृति के स्वीच को ऑन कर दिया कि तू मेरा है। सोचा नहीं था कि ऐसा भाग्य भी मिल सकता है।

20.1.81.....इस वर्ष स्वयं शक्तियों द्वारा, स्वयं के गुणों द्वारा निर्बल आत्माओं को बाप के समीप लाओ। वर्तमान समय मैजारिटी में शुभ इच्छा उत्पन्न हो रही है कि आध्यात्मिक शक्ति जो कुछ कर सकती है वह और कोई कर नहीं सकता। लेकिन आध्यात्मिकता की ओर चलने के लिए अपने को हिम्मतहीन समझते। तो इच्छा रूपी एक टाँग अब प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे रही है। लेकिन उन्हें अपनी शक्ति से हिम्मत की दूसरी टाँग दो। तब बाप के समीप चल करके आ सकेंगे। अभी तो समीप आने में भी हिम्मतहीन हैं। पहले तो अपने वरदानों से हिम्मत में लाओ। उल्लास में लाओ कि आप भी बन सकते हो। तब निर्बल आत्माएँ आपके सहयोग से वर्से के अधिकारी बन सकेंगी। लंगडों को चलाना है। तब आप वरदानी मूर्तों का बार-बार शुक्रिया मानेंगे। कुछ भक्त बनेंगे, कुछ प्रजा बनेंगे और कोई फिर लास्ट सो फास्ट भी होंगे। तो समझा इस वर्ष क्या करना है?

15.3.81.....आजकल की साइन्स भी सब साधनों को बहुत सूक्ष्म कर रही है ना। अति छोटा और अति पावरफुल। सूक्ष्मवतन तो हैं ही पावरफुल वतन। इतनी बिन्दी के अन्दर आप सब देख सकते हो।। विस्तार करो तो बहुत बड़ा देखेंगे, छोटा करो तो बिल्कुल बिन्दी। फिर भी बच्चों की मेहनत और हिम्मत के ऊपर बापदादा भी न्योछावर हो जाते हैं। क्योंकि भले कैसे भी बच्चे हैं लेकिन एक बार जब बाबा कहा तो न्योछावर हो ही गये।

19.3.81.....कुमारियों को देख करके बापदादा बहुत खुश होते हैं। क्योंकि कुमार और कुमारियाँ त्याग कर तपस्वी आकर बने हैं। बच्चों के त्याग की हिम्मत देख, तपस्या का उमंग देख बापदादा खुश होते हैं। बाप की महिमा तो भक्त करते हैं लेकिन बच्चों की महिमा बाप करते हैं।

29.3.81.....बापदादा के सामने जाकर बैठ जाओ तो कनेक्शन जोड़ने के लिए बापदादा आपके सहयोगी बन जायेंगे। अगर एक दो सेकेण्ड अनुभव न भी हो तो कनफ्यूज न हो जाओ। थोड़ा सा जो टूटा हुआ कनेक्शन है उसको जोड़ने में एक सेकेण्ड वा मिनट लग भी जाता है तो हिम्मत नहीं हारो। निश्चय ही फाउन्डेशन को हिलाओ नहीं। और ही निश्चय को परिपक्व करो। बाबा मेरा, मैं बाबा का – इसी आधार से निश्चय की फाउन्डेशन को और ही पक्का करो।

5.4.81...इस वर्ष विशेष सहनशीलता का गुण हरेक को धारण करना है – संगठन में अगर कोई एक के लिए कुछ बोलता भी है तो दूसरा चुप रहे तो बोलने वाला कब तक बोलेगा? आखिर तो चुप ही हो जायेगा। सिर्फ उसमें 10 बारी सुनने की हिम्मत चाहिए। दूसरे को बदलने के लिए थोड़ा तो सहन करना पड़ेगा। इसमें सहनशक्ति बहुत चाहिए। दो बारी में ही दिलशिकस्त नहीं हो जाओ। 10-12 बार तो सुनकर सहन करो। बाप ने भी कितने बच्चों के संस्कारों को बदला। ब्रह्मा, जो इतनी बड़ी फर्स्ट अथार्टी है उसने भी छोटे-छोटे बच्चों से सुना, अज्ञानियों से भी सुना, इनसल्ट सहन की ना! ब्रह्मा बाप की भी इनसल्ट करते थे, तो आप कौन हो! जब बाप ने सब कुछ सहन कर परिवर्तन किया तो फालो फादर। सिर्फ हिम्मत की बात है, सब सहज हो जायेगा। सिर्फ थोड़ा पहले लगता है – कैसे होगा, कहाँ तक सहन करेंगे? हिम्मत न हारो तो अभी-अभी हो जाए। जब भविष्य पर छोड़ते हो कि कहाँ तक होगा... तभी संकल्प कमज़ोर होते हैं। कहाँ तक होगा यह नहीं सोचो, संकल्प में दृढ़ता लाओ। भविष्य पर छोड़ने से वर्तमान कम- ज़ोर हो जाता है।

15.4.81.....सेवा करना अर्थात् खुशी का मेवा खाना, यह ताजा फल है। डॉ0 भी कमज़ोर को कहते हैं – ताजा फल खाओ। यहाँ ताजा फल खाओ तो आत्मा शक्तिशाली बन जायेगी। सदा सेवा की हिम्मत रखने वाले, विश्व परिवर्तन करने की हिम्मत रखने वाले, अपने को फर्स्ट लाने की हिम्मत रखने वाले, ऐसे सदा हिम्मत रख औरों को भी निर्बल से बलवान बनाओ। बापदादा हिम्मत रखने वाले बच्चों को सदा मुबा-रक देते हैं।

31.12.81.....जैसे स्थूल में निर्बल आत्माओं को साइन्स के साधनों से बलवान बना देते हैं। लंगड़े को चलाने की शक्ति दे देते हैं। इसी प्रकार हरेक कमज़ोर को शक्ति के साधन दे देते हैं। ऐसे आप सभी भी, चाहे ब्राह्मण परिवार में, चाहे विश्व की आत्माओं में हर आत्मा को, निर्बल को बल देने वाले महाबलवान बनो। जैसे वह लोग नारा लगाते हैं— गरीबी हटाओ, वैसे आप निर्बलता को हटाओ। “हिम्मत और मद” निमित्त बन बाप से दिलाओ। तो इस वर्ष का विशेष नारा कौन-सा हुआ? “निर्बलता हटाओ”। तब ही जो सलोगन मिला सदा उत्साह दिलाने का, वह प्रैक्टिकल में ला सकेंगे। समझा, नये वर्ष में क्या करना है?

8.1.82.....भारतवासियों को तो एक ही पर्दे को जानना होता है लेकिन विदेशी बच्चे दोनों पर्दे के अन्दर जानने वाले हैं। हिम्मत वाले भी बहुत हैं, असम्भव को सम्भव भी किया है। जो क्रिश्चियन या अन्य धर्म वाले समझते हैं कि हमारे धर्म वाले ब्राह्मण कैसे बन सकते, असम्भव है। तो असम्भव को सम्भव किया है, जानने में भी होशियार, मानने में भी होशियार हैं। दोनों में नम्बर वन हो।

7.3.82.....संगमयुग है ही मेला। तो सदा मिलते ही रहेंगे। एक दिन भी बाप और बच्चों का मिलन न हो वा एक- एक सेकण्ड भी मिलन न हो ऐसा हो नहीं सकता। ऐसा अनुभव तो करते हो ना? सदा बाप के साथ-साथ कम्बाइन्ड हो ना? कम्बाइन्ड रूप से अलग करने की कोई को भी हिम्मत नहीं। किसी की भी ताकत नहीं।

17.3.82.....वरदान लेना तो सहज है लेकिन देने वाले को इतना प्राप्ति स्वरूप की स्टेज पर स्थित रहना पड़े। लेने वालों के लिए वरदान एक गोल्डन लाटरी है क्योंकि लास्ट में वे ही आत्मायें आयेंगी जो बिल्कुल कमज़ोर होंगी। समय कम और कमज़ोर ज्यादा। इसलिए लेने की भी हिम्मत नहीं होगी। जैसे किसका हार्ट बहुत कमज़ोर हो और आप कितनी भी बढ़िया चीज़ दो लेकिन वह ले नहीं सकता। समझते भी हैं कि बढ़िया चीज़ है लेकिन ले नहीं सकते। ऐसे लास्ट आत्मायें सब बातों में कमज़ोर होंगी इसलिए वरदानी का पार्ट ज़्यादा चलेगा। जो स्वयं के प्रति सम्पन्न हो चुके, ऐसी सम्पन्न आत्मायें ही वरदानी बन सकती हैं। सम्पन्न बनना यह है वरदानी स्टेज।

22.3.82.....पालना द्वारा आत्मा योग्य बन जाती है। छोटा सा बच्चा भी पालना द्वारा अपनी जीवन की मंजिल को पहुँचने के लिए हिम्मतवान बन जाता है। ऐसे रूहानी पालना द्वारा आत्मा निर्बल से शक्ति स्वरूप बन जाती है। अपनी मंजिल की ओर तीव्रगति से पहुँचने की हिम्मतवान बन जाती है।

3.4.82.....कभी भी अपने को साधारण नहीं समझो। किसके बन गये और क्या बन गये? इसी स्मृति के आसन पर सदा स्थित रहो। इस आसन पर विराजमान होंगे तो कभी भी माया नहीं आ सकती। हिम्मत नहीं रख सकती। आत्मा का आसन स्वमान का आसन है, उस पर बैठने वाले सहज ही मायाजीत हो जाते हैं।

13.4.82.....सम्पूर्ण त्यागी बनने के लिए दो प्रकार के विघ्न आगे बढ़ने नहीं देते। वह कौन से? एक – तो सदा हिम्मत नहीं रख सकते अर्थात् विघ्नों का सामना करने की शक्ति कम है। दूसरा – अलबेलेपन का स्वरूप आराम पसन्द बन चलना। पढ़ाई, याद, धारणा और सेवा सब सबजेक्ट में कर रहे हैं, चल रहे हैं, पढ़ रहे हैं लेकिन आराम से! सम्पूर्ण परिवर्तन करने के लिए शस्त्रधारी शक्ति-स्वरूप की कमी हो जाती है। स्नेही हैं लेकिन शक्ति स्वरूप नहीं। मास्टर सर्वशक्तिवान स्वरूप में स्थित नहीं हो सकते हैं। इसलिए महात्यागी नहीं बन सकते हैं। यह है त्यागी आत्मायें।

13.4.82.....त्यागी जो हैं वह लौकिक प्रवृत्ति से पार हो गये लेकिन देह की प्रवृत्ति अर्थात् अपने आपको ही चलाने और बनाने में व्यस्त रहना वा देह भान की नेचर के वशीभूत रहना और उसी नेचर के कारण ही बार-बार

हिम्मतहीन बन जाते हैं। जो स्वयं भी वर्णन करते कि समझते भी हैं, चाहते भी हैं लेकिन मेरी नेचर है। यह भी देह भान की, देह की प्रवृत्ति है। जिसमें शक्ति स्वरूप हो इस प्रवृत्ति से भी निवृत्त हो जाएँ – वह नहीं कर पाते।

18.4.82.....कई ब्राह्मण आत्मायें शक्ति स्वरूप बन, महावीर बन सदा विजयी आत्मा बनने में वा इतनी हिम्मत रखने में स्वयं को कमजोर भी समझती हैं लेकिन एक विशेषता के कारण विशेष आत्माओं की लिस्ट में आ गई हैं। कौन-सी विशेषता? सिर्फ बाप अच्छा लगता है, श्रेष्ठ जीवन अच्छा लगता है।

26.4.82.....बाप का दिलतख्त इतना बेहद का बड़ा है जो सारे विश्व की आत्माएं भी समा सकती हैं इतना विराट स्वरूप है लेकिन बैठने की हिम्मत रखने वाले कितने बनते हैं! क्योंकि दिलतख्तनशीन बनने के लिए दिल का सौदा करना पड़ता है। इसलिए बाप का नाम 'दिलवाला' पड़ा है।

26.4.82.....भटकी हुई दिल देना और दिलाराम बाप के दिलतख्त पर आराम से अधिकार पाना। फिर भी सौदा करने की हिम्मत नहीं। जानते भी हैं, कहते भी हैं लेकिन फिर भी हिम्मतहीन भाग्य पा नहीं सकते। है तो सस्ता सौदा ना, या मुश्किल लगता है? कहने में सब कहते कि सस्ता है। जब करने लगते हैं तो मुश्किल बना देते हैं। वास्तव में तो देना, देना नहीं है। लोहा दे करके हीरा लेना, तो यह देना हुआ वा लेना हुआ? तो लेने की भी हिम्मत नहीं है क्या? इसलिए कहा कि बेहद का बाप देता सबको एक जैसा है लेकिन लेने वाले खुला चांस होते भी नम्बरवार बन जाते हैं।

2.5.82.....जैसे कोई की जीवन कहानी विशेष प्रेरणा दिलाती है, उत्साह बढ़ाती है, हिम्मत बढ़ाती है, जीवन के रास्ते को स्पष्ट अनुभव कराती है, ऐसे आप हर विशेष आत्मा की जीवन कहानी अर्थात् जीवन का हर कर्म अनेक आत्माओं को ऐसे अनुभव करावे।

13.1.83.....हिम्मत रखकर, निर्भय होकर आगे बढ़ते रहे हो इसलिए मदद मिलती रही है। हिम्मत की विशेषता से सर्व का सहयोग मिल जाता है। इसी एक विशेषता से अनेक विशेषताएँ स्वतः आती जाती हैं। एक कदम आगे रखा और अनेक कदम सहयोग के अधिकारी बने इसलिए इसी विशेषता का औरों को भी दान और वरदान देते आगे बढ़ाते रहो।

26.1.83.....संकल्प की सिद्धि तो फिर भी हो रही हैना। थोड़ी मेहनत करनी पड़ती है क्योंकि अपना राज्य तो है नहीं। जितनी औरों के आगे प्राबलम आती है उतना यहाँ नहीं। यहाँ प्राबलम तो खेल हो गई है फिर भी समय पर बहुत सहयोग मिलता रहा है – क्योंकि हिम्मत रखी है। जहाँ हिम्मत है वहाँ सहयोग प्राप्त हो ही जाता है। अपने मन मे कोई हलचल नहीं होनी चाहिए। मन सदैव हल्का रहने से सर्व के पास भी आपके लिए हल्कापन रहेगा।

18.2.83.....सदा उमंग और उत्साह में रहने वाली आत्माओं को, एक बल एक भरोसे में रहने वाले बच्चों को, हिम्मते बच्चे मददे बाप का सदा ही अनुभव होता रहता है। “होना ही है” यह है हिम्मत। इसी हिम्मे से मदद के पात्र स्वतः ही बन जाते हैं। और इसी हिम्मत के संकल्प के आगे माया हिम्मतहीन बन जाती है। पता नहीं, होगा या नहीं होगा, मैं कर सकूंगा या नहीं, – यह संकल्प करना, माया का आह्वान करना है। जब आह्वान किया तो माया क्यों नहीं आयेगी? यह संकल्प आना अर्थात् माया को रास्ता देना। जब आप रास्ता ही खोल देते हो तो क्यों नहीं आयेगी? आधाकल्प की प्रीत रखने वाली रास्ता मिलते कैसे नहीं आयेगी? इसलिए सदा उमंग उत्साह में रहने वाली हिम्मतवान आत्मा बनो।

24.2.83.....बापदादा के पास चाहे पीछे आने वाले हों, चाहे किस भी देश के हों, चाहे किस भी धर्म के हों, किस भी मान्यता के हो लेकिन सबके लिए एक ही फुल अधिकार है। बाप एक है तो हक भी एक जैसा है। सिर्फ हिम्मत और लगन की बात है। कभी भी हिम्मतहीन नहीं बनना। चाहे कोई कितना भी दिलशिकस्त बनाए, कहे – पता नहीं आपको क्या हुआ है, कहाँ चले गये हो लेकिन आप उनकी बातों में नहीं आना। पक्का जान पहचान कर सौदा किया है ना! हम बाप के, बाप हमारा! बाप हर बच्चे को अधिकारी आत्मा समझते हैं। जितना जो ले उसके लिए कोई रुकावट नहीं। अभी कोई सीट्स बुक नहीं हुई है। अभी सब सीट खाली हैं। सीटी बजी ही नहीं है। इसलिए हिम्मत रखते रहेंगे तो बाप भी पद्मगुणा मदद देते रहेंगे।

27.3.83.....सभी ने अपने तकदीर की लकीर ऐसी खींच ली है या कभी-कभी हिम्मत नहीं होती। सदा उमंग उत्साह में उड़ने वाली, कुछ भी हो लेकिन अपनी हिम्मत नहीं छोड़ना। दूसरे की कमजोरी देखकर स्वयं दिलशिकस्त नहीं होना।

30.3.83.....तो डबल पावन विशेष आत्माओं का हीरो पार्ट मधुबन स्टेज पर चलता हुआ देख बापदादा भी अति हर्षित होते हैं। क्या क्या प्लैन बनाते हो, क्या क्या संकल्प करते हो, कौन सी हलचल में भी आते हो, यह हिम्मत और हलचल दोनों ही खेल देख रहे थे। हिम्मत भी बहुत अच्छी रखते हो। उमंग उल्लास भी बहुत आता है लेकिन साथ-साथ थोड़ा सा, हाँ वा ना का मिक्स संकल्प भी रहता है। बापदादा हँसी का खेल देख रहे थे।

14.4.83.....बहुत काल की कमी अन्त में धोखा दे देगी। अगर कोई भी कमी की रस्सी रह जायेगी तो उड़ नहीं सकेंगे। तो सब रस्सियों को चेक करो। बस बुलावा आये, समय की सीटी बजे और चल पड़ें। हिम्मते बच्चे मददे बाप! जहाँ बाप की मदद है वहाँ कोई मुश्किल कार्य नहीं। हुआ ही पड़ा है।

30.4.83.....ब्राह्मण तो बन ही गये और शूद्र जीवन भी पसन्द नहीं और ब्राह्मण जीवन में विधि पूर्वक चलने की हिम्मत नहीं इसलिए मज़बूरी मज़धार में आ गये। ऐसे मज़बूरी वा डर के मारे चलते ही रहते। ऐसे कभी-कभी अपने श्रेष्ठ जीवन का अनुभव भी करते हैं इसलिए इस जीवन को छोड़ भी नहीं सकते। ऐसे को कहेंगे चौथे नम्बर

का पूज्य आत्मा। तो उन्हीं की पूजा कभी-कभी और डर के मारे मज़बूरी भक्त बन निभाना है, इसी प्रमाण चलती रहती।

10.11.83.....दिलशिकस्त नहीं हो लेकिन सदा खुशी के झूले में झूलते रहो तो सदा ही सफलता आपके सामने आयेगी। सफलता मिलेगी या नहीं यह सोचना भी नहीं पड़ेगा। लेकिन सफलता स्वयं ही आपके सामने आयेगी। प्रकृति सफलता का हार स्वयं ही पहनायेगी। परिस्थिति बदलकर विजय का हार हो जायेगी। इसीलिए बहुत हिम्मत वाले हैं, उमंग वाले हैं, उत्साह में रहने वाले हैं, यह बीच-बीच में थोड़ा-सा होता भी है तो उसको सोचो नहीं।

14.1.84.....जिस समय कोई भी बच्चा ज़रा भी उलझन में आता वा माया के विघ्नों के वश हो जाता, कमज़ोर हो जाता उस समय वतन में बापदादा के सामने उन बच्चों का चेहरा कैसा दिखाई देता है, मालूम है? मिक्की माउस के खेल की तरह। कभी माया के बोझ से मोटे बन जाते। कभी पुरुषार्थ के हिम्मतहीन छोटे बन जाते। मिक्की माउस भी कोई छोटा, कोई मोटा होता है ना। मिक्की माउस तो नहीं बनेंगे ना।

22.1.84.....बापदादा बच्चों के उमंग उत्साह को देख और आगे उमंग-उत्साह बढ़ाने का सहयोग देते हैं। एक कदम बच्चों का, पद्म कदम बाप के। जहाँ हिम्मत है वहाँ उल्लास की प्राप्ति स्वतः होती है। हिम्मत है तो बाप की मदद है, इसलिए बेपरवाह बादशाह हो सेवा करते चलो। सफलता मिलती रहेगी।

9.3.84.....संकल्प बहुत अच्छे हिम्मत और दृढ़ता से करते हैं। संकल्प रूपी बीज शक्तिशाली है लेकिन धारणा की धरनी, ज्ञान का गंगाजल और याद की धूप कहो वा गर्मी कहो, बार-बार स्व अटेंशन की रेख देख, इसमें कहाँ-कहाँ अलबेले बन जाते हैं। एक भी बात में कमी होने से संकल्प रूपी बीज सदा फल नहीं देता है।

9.3.84.....बाप की याद शक्तिशाली आत्मा बना देती है। शक्तिशाली आत्मा के लिए मेहनत भी मुहब्बत में बदल जाती है। जितना ज्ञान का खज़ाना दूसरों को देते हैं उतना वृद्धि होती है। हिम्मत और उल्लास द्वारा सदा उन्नति को पाते आगे बढ़ते चलो। अच्छा—

10.4.84.....कुमार अर्थात् हिम्मत वाले। जो चाहो वह कर सकते हैं। इसलिए बापदादा सदा साधनों द्वारा सिद्धि को प्राप्त करने की राय देते हैं। कुमार अर्थात् निरन्तर योगी। क्योंकि कुमारों का संसार ही एक बाप है। जब बाप ही संसार है तो संसार के सिवाए बुद्धि और कहाँ जायेगी। जब एक ही हो गया तो एक की ही याद रहेगी ना!

26.11.84.....“आज बच्चों के मिलन स्नेह को देख रहे हैं। एक बल एक भरो – इसी छत्रछाया के नीचे मिलन के उमंग उत्साह से ज़रा भी हलचल, लगन को हिला न सकी। रुकावट, थकावट बदलकर स्नेह का सहज रास्ता अनुभव कर पहुँच गये हैं। इसको कहा जाता है – ‘हिम्मते बच्चे मददे बाप।’ जहाँ हिम्मत है वहाँ हुल्लास

भी है। हिम्मत नहीं तो हुल्लास भी नहीं। ऐसे सदा हिम्मत हुल्लास में रहने वाले बच्चे एकरस स्थिति द्वारा नम्बरवन ले लेते हैं। कैसे भी कड़े ते कड़ी परिस्थिति हो लेकिन हिम्मत और हुल्लास के पंखों द्वारा सेकण्ड में उड़ती कला की ऊँची स्थिति से हर बड़ी और कड़ी परिस्थिति – छोटी और सहज अनुभव होगी।

28.11.84.....जब एक बल एक भरोसा है तो 'हिम्मत बच्चों की, मदद बाप की'। कैसा भी कड़ा बन्धन है लेकिन हिम्मत के आधार पर वह कड़ा बन्धन भी सहज छूट जाता है। जैसे दिखाते हैं – जेल के ताले भी खुल गये तो आपके बन्धन भी खुल जायेंगे। तो ऐसे बनो। अगर थोड़ा सा भी बन्धन है तो उसको योग अग्नि से भस्म कर दो। भस्म हो जायेगा तो नाम-निशान गुम। तोड़ने से फिर भी गाँठ लगा सकते। इसलिए तोड़ो नहीं लेकिन भस्म करो तो सदा के लिए मुक्त हो जायेंगी।

3.12.84.....सदा हिम्मत और हुल्लास के पंखों से उड़ने वाले हो ना! उमंग-उत्साह के पंख सदा स्वयं को भी उड़ाते और दूसरों को भी उड़ाने का मार्ग बताते हैं। यह दोनों ही पंख सदा ही साथ रहें। एक पंख भी ढीला होगा तो ऊँचा उड़ नहीं सकेंगे। इसलिए यह दोनों ही आवश्यक हैं। हिम्मत भी, उमंग हुल्लास भी। हिम्मत ऐसी चीज़ है जो असम्भव को सम्भव कर सकती है। हिम्मत मुश्किल को सहज बनाने वाली है। नीचे से ऊँचा उड़ाने वाली है। तो सदा ऐसे उड़ने वाले अनुभवी आत्मायें हो ना!

5.12.84.....विदेश में भी बच्चे हिम्मत अच्छी रख रहे हैं। वह खुद भी आपस में हंसते रहते हैं कि माइक हमारा पहुँचा, आवाज़ भी हुआ लेकिन थोड़ी आवाज़ वाला आया। बड़ी आवाज़ वाला नहीं। फिर भी इतने तक तो पहुँच गये हैं। हिम्मत तो अच्छी करते हैं। अच्छा –

10.12.84.....श्रेष्ठ परिवर्तन में वा श्रेष्ठ कर्म करने में कोई भी अपना स्वभाव-संस्कार विघ्न डालता है वा जितना चाहते हैं, जितना सोचते हैं उतना नहीं कर पाते हैं, और यही बोल निकलते वा संकल्प मन में चलते कि न चाहते भी पता नहीं क्यों हो जाता है। पता नहीं क्या हो जाता है? वा स्वयं की चाहना श्रेष्ठ होते, हिम्मत हुल्लास होते भी परवश अनुभव करते हैं, कहते हैं ऐसा करना तो नहीं था, सोचा नहीं था लेकिन हो गया। इसको कहा जाता है स्वयं के पुराने स्वभाव-संस्कार के परवश।

12.12.84.....जैसे स्थूल वृक्ष जब पूरा विस्तार को प्राप्त कर लेता, जड़जड़ीभूत अवस्था तक पहुँच जाता है तो फलदायक नहीं बन सकता है। लेकिन छाया देने वाला बन जाता है। ऐसे भक्ति का वृक्ष भी दिल खुश करने की छाया ज़रूर दे रहा है। गुरु कर लिया, मुक्ति मिल जायेगी। तीर्थयात्रा दान-पुण्य किया, प्राप्ति हो जायेगी। यह दिल खुश करने के दिलासे की छाया अभी रह गई है। “अभी नहीं तो कभी मिल जायेगा!” इसी छाया में बिचारे भोले भक्त आराम कर रहे हैं लेकिन फल नहीं है। इसलिए सबके आत्म-निर्वाह के खाते खाली हैं। तो ऐसे समय पर आप भरपूर आत्माओं का फर्ज है अपने जमा किये हुए हिस्से से ऐसी आत्माओं को हिम्मत हुल्लास दिलाना।

17.12.84.....अभी अपने समर्थ स्वरूप द्वारा औरों को समर्थ बनाने का समय है। स्व के व्यर्थ को समाप्त करो। हिम्मत है ना? महाराष्ट्र वाले आये हैं तो हिम्मत भी महान है ना।

16.1.85.....बाप मजबूत बनाते, फिर भी बच्चे मजबूर हो जाते हैं। हिम्मत की टाँगें भी देते हैं, पंख भी देते हैं, साथ-साथ भी उड़ाते फिर भी नीचे ऊपर नीचे ऊपर क्यों होते हैं। मौजों के युग में भी मूँझते रहते हैं। इसको कहते हैं – पुरानी आदत से मजबूर!

18.1.85.....प्रत्यक्षता के उमंग-उत्साह वाले बच्चों को बापदादा अपने राइट हैण्ड रूप से स्नेह की हैंडशेक कर रहे हैं। सदा मुरब्बी बच्चे सो बाप समान बन उमंग की हिम्मत से पदमगुणा बाप दादा की मदद के पात्र हैं ही हैं। सुपात्र अर्थात् पात्र हैं।

18.1.85.....राज्य अधिकारी बनना है तो स्नेह के साथ पढ़ाई की शक्ति अर्थात् ज्ञान की शक्ति, सेवा की शक्ति, यह भी आवश्यक है। इसलिए हिम्मत करो। बाप मददगार है ही। स्नेह की रिटर्न में सहयोग मिलना ही है। थोड़ी सी हिम्मत से, अटेंशन से राज्य अधिकारी बन सकते हो।

28.1.85.....मानसिक शक्ति अर्थात् शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, इस श्रेष्ठ भावना द्वारा किसी भी आत्मा के संशय बुद्धि को भावनात्मक बुद्धि बना सकते हैं। इस श्रेष्ठ भावना से किसी भी आत्मा का व्यर्थ भाव परिवर्तन कर समर्थ भाव बना सकते हैं। श्रेष्ठ भाव द्वारा किसी भी आत्मा के स्वभाव को भी बदल सकते हैं। श्रेष्ठ भावना की शक्ति द्वारा आत्मा को भावना के फल की अनुभूति करा सकते हैं। श्रेष्ठ भावना द्वारा भगवान के समीप ला सकते हैं। श्रेष्ठ भावना किसी आत्मा के भाग्य की रेखा बदल सकती है। श्रेष्ठ भावना हिम्मतहीन आत्मा को हिम्मतवान बना देती है। इसी श्रेष्ठ भावना की विधि प्रमाण मंसा सेवा किसी भी आत्मा की कर सकते हो।

28.1.85.....सदा स्व परिवर्तन, स्व के श्रेष्ठ कर्म द्वारा औरों को श्रेष्ठ कर्म की प्रेरणा देने वाले हो। यह भी करें, तब मैं करूँगी, कुछ यह करें कुछ मैं करूँ वा थोड़ा तो यह भी करें, इस भावना से परे। मैं करूँगी या करूँगा और आवश्यक करेंगे। कमजोर है, नहीं कर सकता है, फिर भी रहम की भावना, सदा सहयोग की भावना, हिम्मत बढ़ाने की भावना हो। इसको कहा जाता है – मंसा सेवाधारी।

27.2.85.....जिस प्युरिटी की बात को अननैचुरल जीवन समझते रहे, उसी प्युरिटी को अपनाने के लिए इम्युरिटी को त्याग करने के लिए हिम्मत से, दृढ़ संकल्प से, बाप के स्नेह से, याद की यात्रा द्वारा शान्ति की प्राप्ति के आधार से, पढ़ाई और परिवार के संग के आधार से अपने जीवन में धारण कर ली है।

27.2.85.....‘निमित्त भाव’ ही सफलता का साधन है। इस स्मृति रूपी चाबी को सदा साथ रखना। दूर होते भी सभी हिम्मतवान बच्चे हैं। सभी को बापदादा – “हिम्मते बच्चे मददे बाप” के टाइटिल से याद प्यार देते हैं।

9.3.85.....“आज बापदादा सभी बच्चों के पुरुषार्थ की लगन को देख रहे थे। हर एक बच्चा अपने-अपने हिम्मत-उल्लास से आगे बढ़ते जा रहे हैं। हिम्मत भी सबमें हैं, उमंग-उल्लास भी सबमें हैं। हर एक के अन्दर एक ही श्रेष्ठ संकल्प भी है कि हमें बापदादा के समीप रत्न, नूरे रतन, दिल तख्तनशीन दिलाराम के प्यारे बनना ही है। लक्ष्य भी सभी का सम्पन्न बनने का है। सभी बच्चों के दिल का आवाज़ एक ही है कि स्नेह की रिटर्न में हमें ‘समान और सम्पन्न’ बनना है। और इसी लक्ष्य प्रमाण आगे बढ़ने में सफल भी हो रहे हैं।

11.4.85.....फंक्शन करो, रैली करो.. बी.आई.पीज, आई पीज सर्विस करो, सब कुछ करो लेकिन दुआओं वाली सेवा करो। (दुआयें लेने का साधन क्या है?) ‘हाँ जी’ का पाठ पक्का हो। कभी भी किसी को ना ना करके हिम्मतहीन नहीं बनाओ। मानो अगर कोई रांग भी हो तो उसको सीधा रांग नहीं कहो। पहले उसे दिलासा दो, हिम्मत दिलाओ। पहले से ही ना ना कहेंगे तो उसकी जो थोड़ी भी हिम्मत होगी वह खत्म हो जायेगी। रांग तो हो भी सकता है लेकिन रांग को रांग कहेंगे तो वह अपने को रांग कभी नहीं समझेगा। इसलिए पहले उसे हाँ कहो, हिम्मत बढ़ाओ फिर वह स्वयं जजमेन्ट कर लेगा। रिगार्ड दो। यह विधि सिर्फ अपना लो। रांग भी हो तो पहले अच्छा कहो, पहले उसको हिम्मत आये। कोई गिरा हुआ हो तो क्या उसको और धक्का देंगे या उठायेंगे... उसे सहारा देकर पहले खड़ा करो। इसको कहते हैं – ‘उदारता’।

25.11.85.....वियजी सदा दूसरे की भी हिम्मत बढ़ायेगा। नीचा दिखाने की कोशिश नहीं करेगा। क्योंकि विजयी रत्न बाप समान ‘मास्टर सहारे दाता’ है। नीचे से ऊँचा उठाने वाला है।

14.12.85.....विश्व के मालिक वा देह के मालिकपन की अभ्यासी आत्माओं की यह भी विशेषता अनुभव में आयेगी कि वह जिसके भी सम्पर्क में आयेंगे उसको उस विशेष आत्मा से दातापन की अनुभूति होगी। यह किसी के संकल्प में भी नहीं आ सकता कि यह लेने वाले हैं। उस आत्मा से सुख की, दातापन की वा शान्ति, प्रेम, आनन्द, खुशी, सहयोग, हिम्मत, उत्साह, उमंग – किसी न किसी विशेषता के दातापन की अनुभूति होगी। सदा विशाल बुद्धि और विशाल दिल, जिसको आप बड़ी दिल वाले कहते हो – ऐसी अनुभूति होगी।

1.1.86.....इस वर्ष प्रभावशाली बनने की विशेषता दिखाओ। आपस में ब्राह्मण आत्मायें जब सम्पर्क में आते हो तो सदा हर एक के प्रति मन की भावना स्नेह सहयोग और कल्याण की प्रभावशाली हो। हर बोल किसी को हिम्मत हुल्लास देने के प्रभावशाली हों। व्यर्थ नहीं हो।

1.1.86.....जैसे आजकल सूर्य की शक्ति जमा कर कई कार्य सफल करते हैं ना। यह भी संकल्प की शक्ति इकट्ठी की हुई, उससे औरों को भी बल भर सकते हो। कार्य सफल कर सकते हो। वह साफ कहते हैं – हमारे में हिम्मत नहीं है। तो उन्हें हिम्मत देनी है। वाणी से भी हिम्मत आती है लेकिन सदाकाल की नहीं। वाणी के साथ-साथ श्रेष्ठ संकल्प की सूक्ष्म शक्ति ज़्यादा कार्य करती है। जितना जो सूक्ष्म चीज़ होती है वह ज़्यादा सफलता

दिखाती है। वाणी से संकल्प सूक्ष्म हैं ना। तो आज इसी की आवश्यकता है। यह संकल्प शक्ति बहुत सूक्ष्म है। जैसे इन्जेक्शन के द्वारा ब्लड में शक्ति भर देते हैं ना। ऐसे संकल्प एक इन्जेक्शन का काम करता है। जो अन्दर वृत्ति में संकल्प द्वारा संकल्प में शक्ति आ जाती है। अभी यह सेवा बहुत आवश्यक है।

1.1.86.....सेवाधारी स्वतः ही सेवा का मेवा खाने वाली आत्मा बन जाते हैं। क्योंकि सेवा का प्रत्यक्षफल अभी मिलता है। अच्छी हिम्मत रखी है। हिम्मत वाली आत्माओं पर बापदादा की मदद का हाथ सदा है। इसी मदद से आगे बढ़ रही हो और बढ़ती रहना। यही बाप की मदद का हाथ सदा के लिए आशीर्वाद बन जाता है।

8.1.86.....वातावरण ऐसा साइलेन्स का हो जो सुनने वालों को भी बोलने की हलचल की हिम्मत न हो। हर एक ब्राह्मण यह लक्ष्य रखे कि जितना समय प्रोग्राम चलता है उतना समय जैसे ट्राफिक ब्रेक का रिकार्ड बजता है तो सभी एक ही साइलेन्स का वायुमण्डल बनाते हैं – ऐसे इस बारी इस हाल में आदि से अन्त तक हरेक ब्राह्मण को लक्ष्य हो कि मुझे वायुमण्डल को पावरफुल बनाने के लिए मुख के भाषण नहीं लेकिन शान्ति का भाषण करना है। मैं भी एक स्पीकर हूँ, बंधा हुआ हूँ। शान्ति की भाषा भी कम नहीं है। यह ब्राह्मणों का वातावरण औरों को भी उसी अनुभूति में लाता है। जहाँ तक हो सके और कारोबार समाप्त कर सभा के समय सब ब्राह्मणों को वायुमण्डल बनाने का सहयोग देना ही है।

वातावरण ऐसा साइलेन्स का हो जो सुनने वालों को भी बोलने की हलचल की हिम्मत न हो।

18.1.86... .. त्याग ही भाग्य है। तो भाग्य के आगे यह क्या त्याग है! आफर करने वालों को आफरीन मिल जाती है। तो सभी बहादुर हो! बदली माना बदली। कोई को भी कर सकते हैं। हिम्मत है तो क्या बड़ी बात है। अच्छा तो इस वर्ष यह नवीनता करेंगे।

हर एक ने यथा योग्य स्नेह का रिटर्न सेवा में दिखाया। एक लगन से एक बाप को प्रत्यक्ष करने की हिम्मत प्रत्यक्ष रूप में दिखाई। अपना-अपना कार्य उमंग उत्साह से सम्पन्न किया। यह कार्य के खुशी की मुबारक बापदादा दे रहे हैं।

सदा हिम्मत और उमंग के पंखों से उड़ते रहो और दूसरों को उड़ाते रहो। हिम्मत है उमंग उत्साह नहीं तो भी सफलता नहीं। उमंग है हिम्मत नहीं तो भी सफलता नहीं। दोनों साथ रहें तो उड़ती कला है। इसलिए सदा हिम्मत और उमंग के पंखों से उड़ते रहो। अच्छा।

18.2.86... .. समस्यायें समाधान के रूप में परिवर्तन हो जायेंगी। समाधान स्वरूप श्रेष्ठ आत्माओं के पास समस्या आने की हिम्मत नहीं रख सकती।

जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, समस्या ले जाने वाला भी समस्या भूल जाता था। क्या लेकर आया और क्या ले करके गया! यह अनुभव किया ना! समस्या की बातें बोलने की हिम्मत नहीं रही। क्यों कि सम्पूर्ण स्थिति के आगे बचपन का खेल अनुभव करते थे। इसलिए समाप्त हो जाती थी।

यह तो विशेषता है जो बाप का बनते ही दूसरों को बनाने में लग जाते हैं। हिम्मत अच्छी रखते हैं और हिम्मत के कारण ही यह गिफ्ट है जो सेवाकेन्द्र वृद्धि को पाते रहते हैं। क्वालिटी भी बढ़ाओ और क्वाण्टिटी भी बढ़ाओ। दोनों का बेलेन्स हो।

27.2.86... .. जब हिम्मत रखते हैं तो मदद भी मिलती है। एवररेडी ज़रूर रहना चाहिए। और जब समय ऐसा आयेगा तो फिर आर्डर तो करना ही होगा। बाप द्वारा आर्डर होना ही हैं। कब करेंगे वह डेट नहीं बतायेंगे। डेट बतावें फिर तो सब नम्बर वन पास हो जाएँ। यहाँ डेट का ही 'अचानक' एक ही क्वेश्चन आयेगा! एवररेडी हो ना। कहें यहाँ ही बैठ जाओ तो बाल-बच्चे घर आदि याद

4.3.86... .. सभी एक दो से सेवा में उमंग उत्साह से आगे बढ़ रहे हैं। हिम्मत से मदद भी बाप की मिल जाती है। नाउम्मीद में भी उम्मीदों के दीपक जग जाते हैं। दुनिया वाले सोचते हैं यह होना तो असम्भव है। बहुत मुश्किल है। और लगन निर्विघ्न बनाकर उड़ते पंछी के समान उड़ाते पहुँचा देती है।

हिम्मत उमंग के पंख जब लग जाते हैं तो जहाँ भी उड़ना चाहें उड़ सकते हैं। बच्चों की हिम्मत पर बापदादा सदा बच्चों की महिमा करते हैं। हिम्मत रखने से एक से दूसरा दीपक जगते माला तो बन गई है ना।

अगर बुरे को बुरा कह देते तो आग में तेल डालते हो। इसीलिए बहुत अच्छा, बहुत अच्छा कह करके पीछे उसको कोई भी बात दो तो उसमें सुनने की, धारण करने की हिम्मत आ जाती है। इसलिए सुना रहे थे कि 'बहुत अच्छा, बहुत अच्छा' यही बधाइयाँ हैं। जैसे बापदादा भी कभी किसको डायरेक्ट रांग नहीं कहेगा, मुरली में सुना देगा – राइट क्या है, रांग क्या है। लेकिन अगर कोई सीधा आकर पूछेगा भी कि मैं रांग हूँ? तो कहेगा नहीं तुम तो बहुत राइट हो क्योंकि उसमें उस समय हिम्मत नहीं होती है। जैसे पेशेन्ट जा भी रहा होता है, आखरी साँस होता है तो भी डाक्टर से अगर पूछेगा कि मैं जा रहा हूँ तो कभी नहीं कहेगा हाँ, जा रहे हो। क्योंकि उस टाइम हिम्मत नहीं होती। किसकी दिल कमजोर हो और आप अगर उसको ऐसी बात कह दो, वह तो हार्टफेल हो ही जायेगा। अर्थात् पुरुषार्थ में परिवर्तन करने की शक्ति नहीं आयेगी। तो संगमयुग है ही बधाइयों से वृद्धि को पाने का युग। यह बधाइयाँ ही श्रेष्ठ पालना हैं। इसीलिए आपके इस बधाइयों की पालना का यादगार जब भी कोई देवी देवता का दिन मनाते हैं तो उसको बड़ा दिन कह देते हैं जो भी उत्सव होंगे उसको बड़ा दिन कहेंगे। क्योंकि आपकी बड़ी दिल है तो उन्होंने बड़ा दिन कह दिया है। तो एक दो को बधाइयाँ देना यह बड़ी दिल है। समझा – ऐसे नहीं कि रांग को रांग समझायेंगे नहीं, लेकिन थोड़ा धैर्य रखो, इशारा तो देना पड़ेगा लेकिन टाइम तो देखो

ना। वह मर रहा है और उसको कहो मर जाओ, मर जाओ...। तो टाइम देखो, उसकी हिम्मत देखो। उसकी हिम्मत देखो। बहुत अच्छा, 'बहुत अच्छा' कहने से हिम्मत आ जाती है। लेकिन दिल से कहो, ऐसे नहीं बाहर से कहो तो वह समझे कि मेरे को ऐसे ही कह रहे हैं। यह भावना की बात है। दिल का भाव 'रहम' का हो तो उसके दिल को रहम का भाव लगेगा। इसीलिए सदा बधाइयाँ देते रहो।

जहाँ पवित्रता, सुख शान्ति की शक्ति है वहाँ स्वप्न में भी दुख अशान्ति की लहर आ नहीं सकती। शक्तिशाली आत्माओं के आगे यह दुख और अशान्ति हिम्मत नहीं रख सकती आगे आने की। पवित्र आत्मायें सदा हर्षित रहने वाली आत्मायें हैं, यह सदा स्मृति में रखो।

जहाँ बाप के अनन्य रत्न पहुँचते हैं तो रत्न, रत्नों को ही निकालते हैं। हिम्मत रख सेवा में लगन से आगे बढ़ रहे हैं। तो मेहनत का फल श्रेष्ठ ही मिलेगा। अपने परिवार को इकट्ठा करना है। परिवार का बिछुड़ा हुआ परिवार में पहुँच जाता है तो कितना खुश होते और दिल से शुक्रिया गाते।

31.12.86.....बापदादा सभी बच्चों के सेवा की उमंग-उत्साह को देख खुश होते हैं। जो सभी ने तन, मन, धन, समय, स्नेह और हिम्मत से सेवा में लगाया, उसकी बापदादा पद्मगुणा बधाई दे रहे हैं। चाहे इस समय सम्मुख हैं, चाहे आकार रूप में सम्मुख हैं लेकिन बापदादा सभी बच्चों को सेवा में लगन से मग्न रहने की मुबारक दे रहे हैं। सहयोगी बने, सहयोगी बनाया। तो सहयोगी बनने की भी और सहयोगी बनाने की भी डबल मुबारक।

21.1.87.....बापदादा हर बच्चे को गोल्डन चांस देते हैं कि जितना जिसको खज़ाना लेना है, वह खुली दिल से ले लो। दाता के पास कमी नहीं है, लेने वाले के हिम्मत वा पुरुषार्थ पर आधार है। ऐसा कोई बाप सारे कल्प में नहीं है जो इतने बच्चे हों और हर एक भाग्यवान हो!

20.2.87.....आत्माओं को परिचय मिला, आत्माओं को सन्देश मिला – यह खुशी है। भटकी हुई आत्माओं को ठिकाने का पता तो पड़ गया ना। तो बहुत अच्छी संगठन रूप में सेवा के निमित्त बने। तो बच्चे भी खुश हैं, बाप भी खुश हैं। बापदादा बच्चों की हिम्मत भी सदा देखते रहते हैं। हिम्मत से आगे बढ़ रहे हैं और सदा आगे बढ़ते रहेंगे।

1.10.87.....सेवाभाव वाले बच्चे सदा स्वयं भी आगे बढ़ते और दूसरों को भी आगे बढ़ाते हैं। सदा उड़ती कला का अनुभव करते हैं। अच्छी हिम्मत वाले हैं। जहाँ हिम्मत है वहाँ बापदादा भी हर समय कार्य में मददगार हैं।

2.11.87.....कोई बच्चे स्व-परिवर्तन बहुत सहज और शीघ्र कर लेते और कोई अभी-अभी परिवर्तन का संकल्प करेंगे लेकिन स्वयं के संस्कार वा माया और प्रकृति द्वारा आने वाली परिस्थितियाँ वा ब्राह्मण परिवार द्वारा चुक्तु होने वाले हिसाब-किताब श्रेष्ठ परिवर्तन के उमंग को कमजोर कर देते हैं और कई बच्चे परिवर्तन करने की

हिम्मत में कमजोर हैं। जहाँ हिम्मत नहीं, वहाँ उमंग-उत्साह नहीं। और स्व-परिवर्तन के बिना विश्व-परिवर्तन के कार्य में दिल-पसन्द सफलता नहीं होती।

10.11.87.....ये जो बेहद की विश्व-सेवा प्लान बनाया है, इस प्लान को सहज सफल बनाने का आधार भी 'शुभ-चिन्तक स्थिति' है। वैराइटी प्रकार की आत्माएं सम्बन्ध-सम्पर्क में आयेंगी। ऐसी आत्माओं के प्रति शुभ-चिन्तक बनना अर्थात् उन आत्माओं को हिम्मत के पंख देना है। क्योंकि सर्व आत्माएं चिन्ता की चिता पर रहने के कारण अपने हिम्मत, उमंग, उत्साह के पंख कमजोर कर चुकी हैं।

10.11.87.....दिलशिकस्त आत्माओं को, चिन्ता की चिता पर बैठी हुई आत्माओं को आपकी शुभ-चिन्तक-शक्ति दिलशिकस्त से दिलखुश कर देगी। जैसे, डूबे हुए मनुष्य को तिनके का सहारा भी दिल खुश कर देता है, हिम्मत में ले आता है। तो आपकी शुभ-चिन्तक स्थिति उन्हीं को सहारा अनुभव होगी, जलती हुई आत्माओं को शीतल जल की अनुभूति होगी।

10.11.87.....सर्व को जो प्राप्ति होती है – खुशी की, सहारे की, हिम्मत के पंखों की, उमंग-उत्साह की - यह प्राप्ति की दुआयें, आशीर्वादों किसको अधिकारी बच्चे बना देती हैं और कोई भक्त आत्मा बन जाते हैं। इसलिये अनेक जन्म के पूज्य बन जाते हैं। शुभ-चिन्तक अर्थात् बहुतकाल की पूज्य आत्माएं।

22.11.87.....आदि से अब तक हर एक ब्राह्मण आत्मा हिम्मत के आधार से बापदादा की मदद के पात्र बनी है और 'हिम्मते बच्चे मदद दे बाप' के वरदान प्रमाण पुरुषार्थ में नम्बरवार आगे बढ़ते रहे हैं। बच्चों की एक कदम की हिम्मत और बाप की पद्म कदमों की मदद हर एक बच्चे को प्राप्त होती है। क्योंकि यह बापदादा का वायदा कहो, वर्सा कहो सब बच्चों के प्रति है और इसी श्रेष्ठ सहज प्राप्ति के कारण ही 63 जन्मों की निर्बल आत्मायें बलवान बन आगे बढ़ती जा रही है। ब्राह्मण जन्म लेते ही पहली हिम्मत कौनसी धारण की? पहली हिम्मत - जो असम्भव को सम्भव करके दिखाया, पवित्रता के विशेषता की धारणा की। हिम्मत से दृढ़ संकल्प किया कि हमें पवित्र बनना ही है और बाप ने पद्मगुणा मदद दी कि आप आत्मायें अनादि-आदि पवित्र थी, अनेक बार पवित्र बनी हैं और बनती रहेंगी। नई बात नहीं है। अनेक बार की श्रेष्ठ स्थिति को फिर से सिर्फ रिपीट कर रहे हो।

22.11.87.....बहुत समय मदद भी है लेकिन कहाँ-कहाँ अलबेलेपन के कारण मदद के विधि को अपने समय पर भूल जाते हैं और हिम्मत रखने के बजाए अलबेलाई के कारण अभिमान में आ जाते हैं कि हम तो सदा पात्र हैं ही, बाप हमें मदद न करेंगे तो किसको करेंगे, बाप बांधा हुआ है। इस अभिमान के कारण हिम्मत द्वारा मदद की विधि को भूल जाते हैं। अलबेलेपन का अभिमान और स्वयं पर अटेन्शन देने का अभिमान मदद से वंचित कर देता है।

22.11.87.....ब्रह्मा बाप को देखा, अन्तिम सम्पूर्ण कर्मातीत स्थिति तक स्वयं पर, सेवा पर, बेहद की वैराग्य वृत्ति पर, स्टूडेंट लाइफ की रीति से अटेन्शन देकर निमित्त बन कर दिखाया। इसलिए आदि से अन्त तक हिम्मत में रहे, हिम्मत दिलाने के निमित्त बने। तो बाप के नम्बरवन मदद के पात्र बन नम्बरवन प्राप्ति को प्राप्त हुए। भविष्य निश्चित होते भी अलबेले नहीं रहे। सदा अपने तीव्र पुरुषार्थ के अनुभव बच्चों के आगे अन्त तक सुनाते रहे। मदद के सागर में ऐसे समा गये जो अब भी बाप समान हर बच्चे को अव्यक्त रूप से भी मददगार हैं। इसको कहते हैं – एक कदम की हिम्मत और पद्मगुणा मदद के पात्र बनना।

22.11.87.....हिम्मते बच्चे मददे खुदा - इस राज को भूल जाते हैं। यह एक ड्रामा की गुह्य कर्मों की गति है। हिम्मते बच्चे मदद दे खुदा, अगर यह विधि विधान में नहीं होती तो सभी विश्व के पहले राजा बन जाते। एक ही समय पर सभी तख्त पर बैठेंगे क्या? नम्बरवार बनने का विधान इस विधि के कारण ही बनता है। नहीं तो, सभी बाप को उल्हना देवें कि ब्रह्मा को ही क्यों पहला नम्बर बनाया, हमें भी तो बना सकते? इसलिए यह ईश्वरीय विधान ड्रामा अनुसार बना हुआ है। निमित्त मात्र यह विधान नूँधा हुआ है कि एक कदम हिम्मत का और पद्म कदम मदद का। मदद का सागर होते हुए भी यह विधान की विधि ड्रामा अनुसार नूँधी हुई है। तो जितना चाहे हिम्मत रखो और मदद लो।

22.11.87.....हिम्मत तो बहुत अच्छी रखी है। यहाँ तक पहुँचने की भी हिम्मत रखते हो तब तो पहुँचते हो ना। बाप के बने हो तो भी हिम्मत रखी है, तब बने हो। सदा हिम्मत की विधि से मदद के पात्र बन चलना और कभी-कभी विधि से सिद्धि प्राप्त करना - इसमें अन्तर हो जाता है। सदा हर कदम में हिम्मत से मदद के पात्र बन नम्बरवन बनने के लक्ष्य को प्राप्त करो।

14.12.87.....एक सेकण्ड की हिम्मत और अनेक वर्षों के समान मेहनत की मदद के रूप में सदा सहयोगी बनते हैं। क्योंकि जानते हैं कि अनेक जन्मों की भटकी हुई निर्बल आत्मायें हैं, थकी हुई हैं। इसलिए इतने तक सहयोग देते हैं, मददगार बनते हैं।

23.12.87.....मग्न अवस्था वाले अपने अनुभव के आधार से औरों को निर्विघ्न बनाने के एगज़ाम्पल बनते हैं क्योंकि कमजोर आत्मायें उन्हीं के अनुभव को देख स्वयं भी हिम्मत रखती हैं, उत्साह में आती हैं - हम भी ऐसे बन सकते हैं।

22.1.88.....वाणी द्वारा हिम्मत दिलाने वाले, नाउम्मीद को उम्मीद में लाने वाले, निर्बल आत्मा को उड़ती कला की विधि से उड़ाने वाले, सेवा के योग्य बनाने वाले, हर बोल अनमोल, मधुर, युक्तियुक्त थे। ऐसे ही कर्म में बच्चों के साथ हर कर्म में साथी बन कर्मयोगी बनाया।

22.1.88..... ब्रह्मा बाप ने पहला कदम हिम्मत का कौन-सा उठाया जिस कदम से ही पद्मापद्म भाग्यवान् आदि से अनुभव किया? पहला कदम हिम्मत का – सब बात में समर्पणता। सब कुछ समर्पण किया। कुछ सोचा नहीं कि क्या होगा, कैसे होगा।

26.1.88.....आप बापदादा बच्चों की विशेषताओं को देख रहे थे। हर एक बच्चे की विशेषता अपनी-अपनी है। कोई बाप की और सर्व ब्राह्मण आत्माओं की विशेषताओं को जान स्वयं में सर्व विशेषतायें धारण कर श्रेष्ठ अर्थात् विशेष आत्मा बन गये हैं और कोई विशेषताओं को जान और देखकर खुश होते हैं लेकिन अपने में सर्व विशेषतायें धारण करने की हिम्मत नहीं है और कोई हर आत्मा में या ब्राह्मण परिवार में विशेषता होते हुए भी विशेषता के महत्व से नहीं देखते, एक दो को साधारण रूप से देखते हैं।

20.2.88.....बापदादा बच्चों की सेवा पर बहुत खुश हैं, हिम्मत पर बलिहार जाते हैं, लेकिन जो सेवा – याद में, उन्नति में थोड़ा भी रुकावट करने के निमित्त होती है, तो ऐसी सेवा के समय को कम करना चाहिए।

20.2.88.....लौकिक कार्य करते सेवा में आगे बढ़ना - यह भी हिम्मत का काम है। ऐसे हिम्मत वाले बच्चों को बापदादा सदा हर कार्य में मददगार हैं। जितना हिम्मत उतना पद्मगुणा बाप मददगार है ही। लेकिन दोनों पार्ट बजाते उन्नति को प्राप्त कर रहे हो - यह देख बापदादा सदा बच्चों पर हर्षित होते हैं

11.8.88.....जब कोई बड़ा कार्य किया जाता है तो पहले, जैसे स्थूल में देखा है कोई भी बोझ उठायेंगे तो क्या करते हैं? सभी मिलकर उंगली देते हैं और एक दो को हिम्मत- उल्लास बढ़ाने के बोल बोलते हैं। देखा है ना!

7.11.89.....मधुबन निवासी सेवाधारी भी सेवा के हिम्मत की मदद देने वाले हैं। इसलिए जैसे बाप के लिए गाया हुआ है—“हिम्मते बच्चे मददे बाप”, इसी रीति से जो भी सेवा चलती है, सीजन चलती है—तो मधुबन निवासी भी हिम्मत के स्तम्भ बनते हैं और मधुबन वालों की हिम्मत से आप सबको रहने, खाने, सोने, नहाने की मदद मिलती है। इसलिए बापदादा सभी मधुबन निवासी बच्चों को हिम्मत की मुबारक दे रहे हैं। अच्छा।

15.11.89.....वर्तमान समय अनेक आत्मायें उपकार के लिए इच्छुक हैं। स्व-उपकार करने की इच्छा है लेकिन हिम्मत और शक्ति नहीं है। ऐसी निर्बल आत्माओं का उपकार करने वाले आप पर-उपकारी बच्चे निमित्त हो।

27.11.89..... जैसे – अभी भी कई बच्चे अनुभव करते हैं कि कई कार्यों में मेरी हिम्मत वा योग्यता इतनी नहीं थी लेकिन बापदादा की एक्स्ट्रा मदद से यह कार्य सहज ही सफल हो गया वा यह विघ्न समाप्त हो गया।

1.12.89.....बापदादा को टीचर्स की हिम्मत पर खुशी होती है। हिम्मत रख सेवा के निमित्त तो बन गये हैं ना। लेकिन अभी सदा यह स्लोगन याद रखो- “हिम्मते टीचर, समान शिक्षक बाप”। यह कभी नहीं भूलना। तो स्वतः ही समान बनने वाला लक्ष्य – “बापदादा” आपके सामने रहेगा अर्थात् साथ रहेगा।

5.12.89.....पहले भी सुनाया था - स्व से अप्रसन्न रहने के मुख्य दो कारण होते हैं दिलशिकस्त होना और दूसरा कारण होता है दूसरों की विशेषता को वा भाग्य को वा पार्ट को देख ईर्ष्या उत्पन्न होना। हिम्मत कम होती है, ईर्ष्या ज़्यादा होती है।

25.12.89.....चाहे कोई स्वयं निर्विघ्न हो लेकिन अगर सेन्टर पर बार-बार विघ्न आते हैं तो उसमें भी समय देना पड़ता है। वायुमण्डल बदल जाता है। तो क्यों नहीं ऐसा पावरफुल वातावरण बनाओ जो विघ्न सदा कमजोर रहें और आप सर्वशक्तिवान रहो – ऐसी हिम्मत है? देखना, तारीख याद रखना।

7.3.90.....बापदादा सदा कहते हैं टीचर्स अर्थात् सदा स्वयं हिम्मत में रहने वाली और दूसरों को हिम्मत देने के निमित्त बनने वाली। नहीं तो टीचर बनी क्यों? टीचर माना ही स्टूडेंट के निमित्त हैं। कमजोर को हिम्मत दे आगे बढ़ाने की सेवा के निमित्त हो। सफल टीचर की पहली निशानी यह होगी – वह कभी हिम्मतहीन नहीं बनेंगी। जो खुद हिम्मत में रहता है वह दूसरे को भी हिम्मत जरूर देता है। खुद में ही हिम्मत कम होगी तो दूसरे को भी नहीं दे सकेंगे। अच्छा!

19.3.90.....बातें बहुत छोटी-छोटी होती है लेकिन उस समय कमजोर होने के कारण बड़ी लगती है। जैसे शरीर की कमजोरी वाले को एक पानी का गिलास भी मुश्किल लगता है और जो हिम्मत वाला है उसको दो बाल्टी उठाना खेल लगता है। ऐसे ही छोटी-सी बात बड़ी अनुभव करने लगते हैं। तो उमंग-उत्साह के पंख सदा उड़ाते रहते हैं। रोज अमृतवेले अपने सामने सारा दिन किस स्मृति से उमंग-उत्साह में रहें – वह वैराइटी उमंग-उत्साह भी प्वाइंट्स इमर्ज करो।

13.12.90.....चाहे कोई स्वयं निर्विघ्न हो लेकिन अगर सेन्टर पर बार-बार विघ्न आते हैं तो उसमें भी समय देना पड़ता है। वायुमण्डल बदल जाता है। तो क्यों नहीं ऐसा पावरफुल वातावरण बनाओ जो विघ्न सदा कमजोर रहें और आप सर्वशक्तिवान रहो – ऐसी हिम्मत है? देखना, तारीख याद रखना।

13.12.90..... जो भी चारों ओर के बच्चे आये हुए हैं सब बच्चों को बापदादा साकार रूप में देखने से हर्षित हो रहे हैं। हिम्मत रखी है और मदद बाप की सदा है ही। इसलिए सदैव हिम्मत से मदद के अधिकार को अनुभव करते सहज उड़ते चला।

18.1.91.....बापदादा ने अनादि-आदि देश की स्मृति दिलाई। देश की स्मृति से वापस घर जाने की समर्थी आ गई, अपने राज्य में राज्य अधिकारी बनने की हिम्मत आ गई और वर्तमान संगमयुगी ब्राह्मण संसार में खुशियों के जीवन जीने की कला स्मृति में आ गई।

18.1.91.....दूसरी बात आपको निश्चय है कि हमारी विजय हुई ही पड़ी है। इसलिए कोई बड़ी बात नहीं है। जिसके पास सर्वशक्तियों का खजाना है तो जिस भी शक्ति को ऑर्डर करेंगे वह शक्ति मददगार बनेगी। सिर्फ ऑर्डर करने वाला हिम्मत वाला चाहिए।

25.2.91.....बापदादा सदैव डबल विदेशी बच्चों को देख खुश होते हैं क्योंकि हिम्मत से बाप की मदद के पात्र बन अनेक प्रकार की माया के बान्डेज और अनेक प्रकार के रीति, रिवाज और रस्म के बाउन्ड्रीज़ को पार करके पहुँच गये हैं। यह हिम्मत भी कम नहीं है। हिम्मत सभी ने अच्छी रखी है। चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं, दोनों बैठे हैं। बहुत पुराने से पुराने भी हैं और इस कल्प के नये भी हैं। दोनों की हिम्मत अच्छी है। इस हिम्मत में तो सभी नम्बरवन हो फिर नम्बर किस बात में है? डबल विदेशी विशेष पुरुषार्थ करते हैं और रूहरिहान में भी कहते हैं – 108 की माला में जरूर आयेंगे।

25.2.91.....हिम्मत में सब पास हो लेकिन हिम्मत के रिटर्न में जो बाप और ब्राह्मण परिवार द्वारा मदद मिलती है, उस मदद को प्राप्त कर कार्य में लगाना और समय पर मदद का यूज़ करना, जिस समय जो मदद अर्थात् शक्ति चाहिए उसी शक्ति द्वारा समय पर काम लेना, यह निर्णय शक्ति और कार्य में लगाने की कार्य शक्ति इसमें अन्तर हो जाता है। सर्वशक्तिवान बाप द्वारा सर्व शक्तियों का वर्सा सभी को मिलता है।

3.4.91.....इस तपस्या वर्ष में लगन की अग्नि द्वारा सर्व व्यर्थ संकल्प, समय और संस्कारों को समाप्त कर समर्थ- सम्पन्न बनने का जो दृढ़ संकल्प किया है, उनको अपनी हिम्मत और बाप की मदद से पूरा करना ही है और होना ही है। इसके लिए सदा बाप को अपने कम्पेनियन के रूप में साथ रखना और कम्पनी तीव्र पुरुषार्थी फालो फादर ब्राह्मण आत्माओं की करनी है। इसमें ही सहज सफलता अनुभव करते रहेंगे।

10.4.91.....बापदादा महावीर बच्चों की हिम्मत और उमंग-उल्लास देख पद्मगुणा से भी ज्यादा हर्षित होते हैं। हिम्मत रखी है, संगठन सदा स्नेह के सूत्र में रहा है इसलिए इसकी सफलता है।

13.2.92.....लव में लीन रहने वाले लवलीन हैं। तो जो लव में लीन आत्मायें हैं ऐसे लवलीन आत्माओं के आगे किसी के भी समीप आने की, सामना करने की हिम्मत नहीं है। क्योंकि आप लीन हो, किसी का आकर्षण आपको आकर्षित नहीं कर सकता।

जहाँ परमात्म हिम्मत है, कोई आत्मा की हिम्मत नहीं है। तो जहाँ परमात्म हिम्मत है, मदद है, वहाँ निमित्त बनी आत्मा में हिम्मत आही जाती है। और ऐसे साथ का अनुभव करने वाले मदद के अनुभव करने वाले के सदा संकल्प क्या रहते हैं - नथिंग न्यु, विजय हुई पड़ी है, सफलता है ही है। यह है सच्चे प्रेमी की अनुभूती।

2.3.92.....कोई भी संकल्प वा कर्म करते हो तो समर्थ स्थिति में स्थित हो समर्थों से करो। कमजोर संकल्प मिक्स नहीं करो। यह श्रेष्ठ संकल्प रखो कि हिम्मत हमारी, अटेन्शन हमारा और मदद बाप की है ही है। इस विधि से प्रतिज्ञा प्रैक्टिकल में लाने में बहुत सहज अनुभव करेंगे।

15.4.92.....इस वर्ष में ऐसे कोई रजिस्टर में सूक्ष्म दाग भी नहीं आने चाहिए। तब बाप कहेगा कि हाँ बाप से प्यार है, नहीं तो समझते हैं कि यह बाप को भी खुश करते हैं, अपने को भी खुश करते हैं। व्यर्थ समाचार बिल्कुल समाप्त होने चाहिए। यह एक हॉबी बहुत बढ़ती जा रही है। और यही तपस्या का विघ्न है। हर एक समझे कि इस हॉबी को स्वयं में समाप्त करने की मैं जिम्मेवारी लूँ। समझा! दूसरे कर रहे थे, तो मैंने भी कर लिया, चार बोल रहे थे तो मैंने भी एक शब्द बोल दिया। तो क्या यह राईट है? इस शौक को खत्म करने की हिम्मत है? यह अभी नया

फैशन निकला है ब्राह्मणा कुल में। लेकिन है उल्टा फैशन। तो इसका समाप्ति समारोह करने की हिम्मत है? जो कहते हैं कोशिश करेंगे, ट्राई ट्राई करने वाले हाथ उठाओ।

3.11.92.....बिजी रहना ही सहज पुरुषार्थ है। मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। बार-बार माया आवे और भगाओ—तो मेहनत होती है, युद्ध होती है। बिजी रहने वाले युद्ध से छूट जाते हैं। बिजी रहेंगे तो माया की हिम्मत नहीं होगी आने की। और जितना अपने को बिजी रखेंगे उतना ही आपकी वृत्ति से वायुमण्डल परिवर्तन होता रहेगा।

12.11.92.....आदि से अब तक जीवन में आगे बढ़ने का आधार जो है, वो है आपकी हिम्मत। गाया हुआ है—“हिम्मते बच्चे मददे बाप”। तो हर क्षेत्र में हिम्मत ने आपको सहारा दिया है, इसलिए हिम्मत के कारण बेफिक्र होकर आगे बढ़े हो। तो इसी विशेषता को सदा साथ रखना।

10.12.92.....अभी भी विश्व में हलचल है और यह हलचल तो समय प्रति समय बढ़नी ही है। आप आत्माओं का फर्ज है—ऐसे समय पर आत्माओं में विशेष शान्ति की, सहन शक्ति की हिम्मत भरना, लाइट-हाउस बन सर्व को शान्ति की लाइट देना। समझा, क्या करना

है? अभी अपनी जिम्मेवारी वा फर्ज-अदाई और तीव्र गति से पालन करो जिससे आत्माओं को रूहानी शक्ति की राहत मिले, जलते हुए दुःख की अग्नि में शीतल जल भरने का अनुभव करें। यह फर्ज-अदाई कर सकते हो? दूर से भी कर सकते या जब सामने आयेंगे तब करेंगे? कर तो रहे हो लेकिन अभी और जैसे हलचल तेज होती जाती है, तो आपकी सेवा भी और तेज हो।

10.12.92.....वर्तमान समय अशान्त आत्माओं को शान्ति देना—यही सभी का विशेष कार्य है। रहमदिल बाप के बच्चों को सर्व आत्माओं के प्रति रहम आता है ना। रहमदिल क्या करता है? रहम का अर्थ ही है—किसी भी प्रकार की हिम्मत देना, निर्बल आत्मा को बल देना।

20.12.92.....जब नाम है विघ्न-विनाशक, तो जब विघ्न आयेगा तब तो विनाश करेंगे ना। तो ऐसे कभी नहीं सोचना कि हमारे पास यह विघ्न क्यों आता है? विघ्न आना ही है और हमें विजयी बनना है। तो विघ्न-विनाशक आत्मा कभी विघ्न से न घबराती है, न हार खाती है। ऐसी हिम्मत है? क्योंकि जितनी हिम्मत रखते हैं, एक गुणा बच्चों की हिम्मत और हजार गुणा बाप की मदद।

7.3.93.....सदा ये स्मृति में रखो कि—है ही एक बाप, दूसरा कुछ है ही नहीं। अगर वन बाप है तो विन जरूर है। सहज योगी हो ना। मास्टर सर्वशक्तिवान के आगे माया की हिम्मत नहीं जो वार कर सके। और ही माया सरेन्डर होगी, वार नहीं करेगी।

25.11.93.....ज्ञान और योग के साथ हिम्मत और उमंग-उत्साह। अगर हिम्मत है तो हिम्मत से जो चाहे, जैसे चाहे वैसे कर सकते हैं। इसलिये गाया हुआ भी है हिम्मते बच्चे मददे बाप। तो हिम्मत और उमंग-उत्साह रहता है? क्योंकि किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए उमंग उत्साह बहुत जरूरी है।

16.12.93.....ब्राह्मण अर्थात् खुशनसीब, सदा खुश रहने वाले। किसी की हिम्मत नहीं जो ब्राह्मण आत्मा की खुशी कम कर सके। माया हो या माया का बाप हो लेकिन खुशी नहीं गायब कर सके। (माया का बाप कौन?) रावण को माया का बाप कह दो। तो खुशी कम हो नहीं सकती।

23.12.94.....डबल विदेशी अपने को चलाने की हिम्मत और औरों को भी चलाने की हिम्मत अच्छी रखते हैं। और हिम्मत के कारण ही विदेश में सेवा में आगे बढ़ते हैं। तो विशेष हिम्मत और मदद दोनों के पात्र

आत्मायें हैं। देखो, लन्दन वालों ने भी हिम्मत करके मुजियम ले लिया ना! चाबी मिल गई ना! स्वर्ग की चाबी के पहले सेवा की चाबी मिल गई। अच्छी कमाल की। सबकी नजर जाती है कि आखिर भी ये राजयोगी हैं क्या?

31.12.94.....बापदादा कहते हैं इस वर्ष की विशेष दृढ़ प्रतिज्ञा स्वयं से करो। प्रतिज्ञा का अर्थ ही है – कि शरीर चला जाये लेकिन जो प्रतिज्ञा की है, वह प्रतिज्ञा नहीं जाये। तो प्रतिज्ञा करने की इतनी हिम्मत है? करेंगे? डरेंगे तो नहीं? तो यही प्रतिज्ञा स्वयं से करो कि “ कभी भी किसी की कमजोरी वा कमी को नहीं देखेंगे। किसी की कमजोरी कमी को नहीं सुनेंगे, नहीं बोलेंगे।” न सुनेंगे, न बोलेंगे, न देखेंगे – तो ये वर्ष क्या हो जायेगा? ये वर्ष हो जायेगा शुभ भावना गुण स्वरूप वर्ष।

31.12.94.....जब प्रकृति को बदल सकते हो तो मनुष्यात्माओं को नहीं बदल सकते हो? और उसमें भी ब्राह्मण आत्मायें हैं, उनको नहीं बदल सकते हो? जब सबके प्रति शुभ भावना होगी तो ‘कारण’ शब्द समाप्त होकर ‘निवारण’ शब्द ही दिखाई देगा। इस कारण से ये हुआ, इस कारण हुआ.....। नहीं, कारण को निवारण में परिवर्तन करो। हिम्मत है?

26.2.95.....फिर भी बापदादा मुबारक देते हैं जो वायुमण्डल कैसा भी हो अचलअडोलअविनाशी रत्न हैं। एकएक रत्न अमूल हैं। और जगह सेवा करना सहज है लेकिन यहाँ सेवा डबल गुप्त रूप में करना पड़ता है। फिर भी हिम्मत वाले हैं। हिम्मत छोड़ने वाले नहीं। अचलअडोल आत्मायें हैं। इसलिये बापदादा हिम्मतवान बच्चों को पद्मगुणा मदद की मुबारक देते हैं। अच्छा। करेबियन में फाउण्डेशन तो अच्छा पड़ा। अभी कितने सेन्टर हो गो करेबियन में। (10-12) फिर भी हिम्मत अच्छी रखी है। भक्ति के विस्तार में ज्ञानी तू आत्मा बनाना इसमें हिम्मत अच्छी रखी है और ब्राह्मण भी अच्छे वृद्धि को पा रहे हैं।

18.1.96.....जब हिसाब-किताब आ गया, दर्द आ गया तो हिसाब-किताब आ गया ना, लेकिन दिलशिकस्त से बीमारी को बढ़ा देते हो। इसलिए हिम्मत वाले बनो तो बाप भी मददगार बनेंगे। ऐसे नहीं, रो रहे हैं—हाय क्या करूँ, क्या करूँ और फिर सोचो कि बाबा की तो मदद है ही नहीं। मदद उसको मिलती है जो हिम्मत रखते हैं। पहले बच्चे की हिम्मत फिर बाप की मदद है। तो हिम्मत तो हार ली और सोचने लगते हो कि बाप की मदद तो मिली नहीं, बाबा भी टाइम पर तो करता ही नहीं है!

22.3.96.....जैसे 10 वर्ष हिम्मत रख बाप के साथ और हाथ के आधार पर 10 वर्ष मजबूत रहे हो, ऐसे सदा ही हिम्मत को साथी बनाकर रखना। हिम्मत को नहीं छोड़ना। जहाँ हिम्मत है – वहाँ बाप है ही है। तो बापदादा को खुशी है कि डबल विदेशी भिन्न-भिन्न प्रकार के आकर्षण के स्थान पर रहते हुए भिन्न धर्म और भिन्न प्रकार की कल्चर होते हुए भी ब्राह्मण कल्चर में चलते रहे हैं, यह बहुत हिम्मत का सैम्पल दिखाया है। आपके सैम्पल को देख अनेक आत्मायें लाभ उठायेंगी। इसलिए हिम्मत की भी मुबारक और हिम्मत द्वारा सेवा की भी मुबारक।

31.12.96.....जो पहले हिम्मत का पांव आगे करते हैं, फिर बाप मदद का दूसरा पांव उठाने में सम्पूर्ण मदद करते हैं। हिम्मत का पांव उठाओ नहीं और सिर्फ कहो बाबा आप कर लो, बाबा आप कर लो। तो बापदादा भी कहेगा देखेंगे, पहले पांव तो रखो। एक पांव भी नहीं रखेंगे तो कैसे होगा! इसलिए इस वर्ष में हर समय यह चेक करो कि हिम्मत के पांव मजबूत हैं? बाप को कहने के पहले यह चेक करो। हिम्मत का पांव बढ़ाया और मदद नहीं मिले, यह असम्भव है। सिर्फ थोड़ा सा हिम्मत का पांव बढ़ाओ, इसीलिए गाया हुआ है पहला शब्द क्या आता है? हिम्मते बच्चे मददे बाप ,इसको उल्टा नहीं करो – मददे बाप और फिर हिम्मत बच्चों की। बाप तो मुस्कराते

रहते हैं, वाह मेरे लाड़ले बच्चे वाह! निश्चय से हिम्मत का पांव जरा भी आगे करेंगे तो बाप पदमगुणा मदद के लिए हर एक बच्चे के लिए हर समय तैयार है।

6.3.97.....आपकी हिम्मत और बाप की मदद। हिम्मत कम नहीं करना फिर देखो बाप की मदद मिलती है या नहीं। सभी को अनुभव भी है कि हिम्मत रखने से बाप की मदद समय पर मिलती है और मिलनी ही है, गैरन्टी है। हिम्मत आपकी मदद बाप की। तो संकल्प क्या हुआ? चेहरे देख रहे हैं – हिम्मत है या नहीं है! हिम्मत वाले तो हो, क्योंकि अगर हिम्मत नहीं होती तो बाप के बनते नहीं। बन गये – इससे सिद्ध होता है कि हिम्मत है। सिर्फ छोटी सी बात करते हो कि समय पर हिम्मत को थोड़ा सा भूल जाते हो। जब कुछ हो जाता है ना तो पीछे हिम्मत वा मदद याद आती है। समय पर सब शक्तियां, समय प्रमाण यूज करना इसको कहा जाता है ज्ञानी तू आत्मा, योगी तू आत्मा।

31.12.98.....बापदादा बच्चों के नव वर्ष के उमंग-उत्साह को देख हर्षित हो रहे हैं। मैजारिटी बच्चे चाहे दूर बैठे हैं, चाहे समीप बैठे हैं सभी के मन में यही उमंग- उत्साह है कि इस वर्ष में नवीनता करके ही दिखायेंगे। चाहे स्व के परिवर्तन में, चाहे सेवा की सफलता में, चाहे हर आत्मा को शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा परिवर्तित करने में उमंग भी अच्छा है, उत्साह भी बहुत अच्छा है। साथ-साथ हिम्मत भी यथा शक्ति है। बापदादा ऐसे हिम्मत वाले बच्चों को एक संकल्प के पीछे पदमगुणा मदद अवश्य देते हैं। इसलिए हिम्मत से सदा आगे बढ़ते चलो। कभी भी स्व प्रति वा अन्य आत्माओं के प्रति हिम्मत को कम नहीं करना क्योंकि यह नवयुग है ही हिम्मत रखने से उड़ने का युग, वरदानी युग, पुरुषोत्तम युग, डायरेक्ट विधाता द्वारा सर्व शक्तियाँ वर्से में सहज प्राप्त होने का युग, इसलिए इस युग के महत्त्व को सदा स्मृति में रखो। कोई भी कार्य आरम्भ करते हो चाहे स्व-पुरुषार्थ, चाहे विश्व-सेवा, सदा हिम्मत और बापदादा की मदद द्वारा निश्चय है ही कि स्व-पुरुषार्थ में वा सेवा में सफलता हुई पड़ी है।

15.3.99.....मैजारिटी तो उमंग-उत्साह में हैं बाकी जिन्होंने कोशिश में हाथ उठाया, वह भी राइट हैं। लेकिन बापदादा कहते हैं हिम्मत रखने से, दृढ़ संकल्प करने से सब अच्छा हो जाता है। मास्टर सर्वशक्तिवान बन अगर संकल्प करो तो क्या नहीं कर सकते हो। जब विश्व को परिवर्तन कर सकते हो तो क्या अपने को नहीं कर सकते हो! इसीलिए जिन्होंने हाँ की है उनको बापदादा यही कहते हैं कि सदा यह संकल्प अमृतवेले इमर्ज करना कि हमें निर्विघ्न रहना ही है और कोशिश वाले सदा अमृतवेले योग के बाद यह दृढ़ संकल्प रिवाइज करो कि हिम्मते बच्चे मददे बाप है।

30.11.99.....हिम्मत नहीं हारो, दिलशिकस्त कभी नहीं हो। हिम्मत से बाप की मदद मिलती रहेगी। बाप मदद के लिए बंधा हुआ है लेकिन हिम्मतहीन का मददगार नहीं है। आप सोचेंगे कि बाप की मदद तो मिली नहीं, लेकिन पहले यह सोचो हिम्मत है? हिम्मत बच्चे की मदद बाप की। आधा शब्द नहीं पकड़ो, बाप की मदद तो चाहिए ना! लेकिन हिम्मत रखी? दिलशिकस्त न होकर हिम्मत रखते चलो तो मदद गुप्त मिलती रहेगी। तो बोलो कौन हो? बिजनेसमैन सभी बोलो कौन हो? बेफिक्र बादशाह हो? यह याद रखना। हिम्मत कभी नहीं छोड़ना, कुछ भी हो जाए मदद मिलेगी। लेकिन आधा नहीं याद करना। पूरा याद रखना।

3.3.2000.....डबल विदेशियों को बापदादा सदा मैजारिटी को हिम्मत में और साफ दिल में आगे रखते हैं। कुछ भी हो जाता लेकिन हिम्मत रख आगे बढ़ रहे हैं और बढ़ते रहेंगे।

20.2.2001.....बापदादा को खुशी है क्योंकि बच्चे में एक विशेषता है। वह विशेषता है - हिम्मत। कोई भी कार्य करते हो तो हिम्मत से करते हो। और हिम्मत से स्वतः ही मदद मिलती है। हिम्मत कभी नहीं हारना चाहिए।

हिम्मत परमात्मा के मदद के भी पात्र बना देती है। (मिसेज नायडू) यह भी हिम्मत वाली है, कम नहीं है। इसलिए थोड़ी बहुत खिट-खिट होते भी सफलता मिलती है, क्यों? दृढ़ता की चाबी आपके पास है। जहाँ दृढ़ता है वहाँ सफलता है ही है। होगी या नहीं होगी का क्वेश्चन नहीं, है। बाकी वायुमण्डल के अनुसार थोड़ी बहुत बातें तो आनी ही हैं। लेकिन उन बातों को हिम्मत से साइडसीन समझके चलते रहो।

5.3.2001.....बेहद की स्थिति से सेवा में भी रूहानियत की सेवा बढ़ाओ। अपनी जमा सर्व शक्तियों से शुभ संकल्प द्वारा कमजोर आत्माओं को मन में प्रसन्नता और सन्तुष्टता का सहयोग दो। किसी की कमजोरी को मन में न रख उसको हिम्मत-उमंग-उत्साह बढ़ाओ।

31.12.2003.....आजकल के लोग एक तरफ स्व प्राप्ति के लिए इच्छुक भी हैं, लेकिन हिम्मतहीन हैं। हिम्मत नहीं है। सुनने चाहते भी हैं, लेकिन बनने की हिम्मत नहीं है। ऐसी आत्माओं को परिवर्तन करने के लिए पहले तो आत्माओं को हिम्मत के पंख लगाओ। हिम्मत के पंख का आधार है अनुभव। अनुभव कराओ। अनुभव ऐसी चीज़ है, जरा सा अंचली मिलने के बाद अनुभव किया तो अनुभव के पंख कहो, या अनुभव के पांव कहो उससे हिम्मत में आगे बढ़ सकेंगे। इसके लिए विशेष इस वर्ष निरन्तर अखण्ड महादानी बनना पड़े, अखण्ड।

31.12.2006.....बापदादा को खुशी है कि हिम्मत वाले बच्चे हैं। चतुराई से जवाब देने वाले बच्चे हैं। क्यों? क्योंकि जानते हैं कि एक कदम हमारी हिम्मत का और हजारों कदम बाप की मदद का तो मिलना ही है। अधिकारी हो। हजार कदम मदद के अधिकारी हो। सिर्फ हिम्मत को माया हिलाने की कोशिश करती है। बापदादा देखते हैं कि हिम्मत अच्छी रखते हैं, बापदादा दिल से मुबारक भी देते हैं लेकिन हिम्मत रखते फिर साथ में अपने अन्दर ही व्यर्थ संकल्प उत्पन्न कर लेते, कर तो रहे हैं, होना तो चाहिए, करेंगे तो जरूर, पता नहीं.... पता नहीं का संकल्प आना यह हिम्मत को कमजोर कर देता है। तो तो आ जाता है ना, करते तो हैं, करना तो है.. आगे उड़ना तो है..। यह हिम्मत को हिला देते हैं। तो नहीं सोचो, करना ही है। क्यों नहीं होगा! जब बाप साथ है, तो बाप के साथ में तो-तो नहीं आ सकता।

3.3.2007.....अगर हिम्मत और उमंग उत्साह के दोनों पंख यथार्थ हैं तो एक सेकण्ड में स्टार्ट हो सकता है। स्टार्ट करने की चाबी क्या है? मेरा बाबा। मेरा बाबा कहो तो मन जहाँ पहुंचना चाहे वहाँ पहुंच सकता है। दोनों पंख ठीक होने चाहिए। हिम्मत कभी नहीं छोड़नी है। क्यों? बापदादा का वायदा है, वरदान है, एक कदम हिम्मत का आपका और हजार कदम मदद बाप की। चाहे कैसा भी कड़ा संस्कार हो, हिम्मत कभी नहीं हारो। कारण? सर्वशक्तिवान बाप मददगार है और कम्बाइण्ड है, सदा हाज़िर है। आप हिम्मत से सर्वशक्तिवान कम्बाइण्ड बाप के ऊपर अधिकार रखो और दृढ़ रहो, होना ही है, बाप मेरा, मैं बाप की हूँ, यह हिम्मत नहीं भूलो। तो क्या होगा? जो कैसे करूं, यह संकल्प उठता है वह कैसे शब्द बदल ऐसे हो जायेगा। कैसे करूं, क्या करूं, नहीं। ऐसे हुआ ही पड़ा है। सोचते हो, करते तो हैं, होगा, होना तो चाहिए, बाप मदद तो देगा...।

9.3.2009.....किसी भी बात का, चाहे ज्ञान के हिसाब से परमात्म ज्ञान है, यह अनुभव हो, योग द्वारा अपने में शक्तियों की अनुभूति हो, हिम्मत आवे, कोई भी बात की समस्याओं को हल करने की हिम्मत आवे और धारणा की हिम्मत आवे, नहीं तो धारणा सुन करके घबरा जाता है। पहले प्राप्ति सुनाओ, प्राप्ति क्या होती है प्राप्तियों की आकर्षण से सभी शुरूकर देते हैं।

11.2.2010.....जो बाप को हिम्मत से संकल्प कर सकते हैं, करेंगे और बाप से गिफ्ट लेंगे। गिफ्ट में दो और गिफ्ट लो। अगर क्रोध पर जीत हो गई तो औरों पर भी करने की हिम्मत आयेगी। तो कौन समझता है कि हम यह गिफ्ट देकर और बाप से गिफ्ट लेंगे? वह हाथ उठाओ। अच्छा, झण्डा हिला रहे हैं। कुमारियां भी, देखना। बापदादा को बच्चों की हिम्मत देख बहुत अच्छा लग रहा है। आप सीन देख रहे हो ना! फोटो निकालो फिर हाथ उठाओ। हाँ फोटो निकालो सभी का। बापदादा इस हिम्मत पर आपको रोज़ अमृतवेले जब मिलन मनाते हो उस समय विशेष अनुभवी आत्मा सहज बनने की बधाई देंगे।

2.2.2011.....बाबा का वरदान है कि जो हिम्मत रखेगा उसको बाप की मदद भी मिलेगी और हिम्मत से जितना भी आगे बढ़ने चाहो वह चांस है क्योंकि टूलेट का बोर्ड नहीं लगा है। याद में रहो और जो प्राप्त हुआ है उससे औरों की सेवा करो। जितनी सेवा करेंगे उतनी दुआयें मिलेंगी और वह दुआयें आपको आगे बढ़ाती रहेंगी। सन्देश देते जाओ बाकी हर एक की तकदीर। लेकिन आप सन्देश दे दो। पुण्य अपना जमा करते रहो। तो पुण्य आपको आगे बढ़ाता रहेगा। अच्छा है।

2.2.2012.....बाकी बापदादा खुश है। हिम्मत नहीं छोड़ते हैं, हिम्मत रखते हैं और एक दो को भी हिम्मत देके चला रहे हैं और बाप भी मदद करते हैं। तो विदेश वाले नहीं लेकिन अपना जो देश है परमधाम, उसके अच्छे अनुभव करके बस समय को समीप करना है, इसमें पान का बीड़ा उठाओ। पहले हम करके दिखायेंगे। निमित्त बनके दिखायेंगे। अच्छा है। बापदादा खुश तो है, तो नहीं खुश है।

8. होलिएस्ट / ऑनेस्ट

25.6.77... .. बाप दादा सभी बच्चों की विशेष दो बातें देख रहे हैं। हरेक आत्मा यथा योग्य तथा यथा शक्ति ऑनेस्ट (Honest; ईमानदार) और होलिएस्ट (Holiest; परमपूज्य) कहाँ तक बने हैं। हरेक पुरुषार्थी आत्मा बाप के सम्बन्ध में ऑनेस्ट अर्थात् बाप से ईमानदार, सच्ची दिल वाले बनने का लक्ष्य रख चल रहे हैं, लेकिन ऑनेस्ट बनने में भी नम्बरवार हैं। जितना ऑनेस्ट होगा उतना ही होलिएस्ट होगा। होलिएस्ट बनने की मुख्य बात है – ‘बाप से सच्चा बनना।’ सिर्फ ब्रह्मचर्य धारण करना यह प्यूरिटी की हाइएस्ट स्टेज (Highest stage; सर्वोच्च स्थिति) नहीं है; लेकिन प्यूरिटी अर्थात् रीयल्टी अर्थात् सच्चाई। ऐसे सच्ची दिल वाले दिलवाला बाप के दिलतख्त नशीन हैं और दिलतख्त नशीन बच्चे ही राज्य राज्यतख्त नशीन होते हैं।

5.12.94... ..हॉस्टल की कुमारियाँ हो या हाइएस्ट, होलिएस्ट कुमारियाँ हो? हाइएस्ट भी हो, होलिएस्ट भी। ऊंचे ते ऊंचे भी हो और महान् पवित्र आत्मायें भी हो। क्योंकि कुमारी जीवन का अर्थ ही है महान् पवित्र। इसीलिये कुमारियों को पूजते हैं। और कुमारी से माता बनी तो सबके पांव छूने पड़ेंगे। अगर बहु बनकर घर में आई तो क्या करेंगे? सबके पांव छुयेंगे और कुमारियों के पांव पूजे जाते हैं। तो कुमारी जीवन अर्थात् महान् पवित्र जीवन।

15.3.2014... .. जानते हो क्योंकि बापदादा को होलिएस्ट बच्चे बहुत होलिएस्ट बाप हर बच्चे को अति स्नेह से होली की मुबारक दे रहे हैं। सर्व बच्चे होलिएस्ट बाप के होली बच्चे हैं। आज के दिन हर एक बच्चा अपने होली बनने की, होली बनाने की स्थिति को जानते हैं। बाप भी एक-एक बच्चे को कहाँ तक मन्सा-वाचा-कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क में होली बने हो, पवित्र बने हो, वह बाप भी जानते आप भी प्यारे हैं।

ऑनेस्ट

25.6.77... .. बापदादा सभी बच्चों की विशेष दो बातें देख रहे हैं। हरेक आत्मा यथा योग्य तथा यथा शक्ति ऑनेस्ट (Honest; ईमानदार) और होलियेस्ट (Holiest; परमपूज्य) कहाँ तक बने हैं। हरेक पुरुषार्थी आत्मा बाप के सम्बन्ध में ऑनेस्ट अर्थात् बाप से ईमानदार, सच्ची दिल वाले बनने का लक्ष्य रख चल रहे हैं, लेकिन ऑनेस्ट बनने में भी नम्बरवार हैं। (i) जितना ऑनेस्ट होगा उतना ही होलीएस्ट होगा। होलीएस्ट बनने की मुख्य बात है – ‘बाप से सच्चा बनना।’ सिर्फ ब्रह्मचर्य धारण करना यह प्यूरिटी की हाइएस्ट स्टेज (Highest stage; सर्वोच्च स्थिति) नहीं है; लेकिन प्यूरिटी अर्थात् रीयल्टी अर्थात् सच्चाई। ऐसे सच्ची दिल वाले दिलवाला बाप के दिलतख्त नशीन हैं और दिलतख्त नशीन बच्चे ही राज्य राज्यतख्त नशीन होते हैं। (ii) ऑनेस्ट अर्थात् ईमानदार उसको कहा जाता है जो बाप के प्राप्त खजानों को बाप के डायरेक्शन बिना किसी भी कार्य में नहीं लगावे। अगर मनमत और परमत प्रमाण समय को, वाणी को, कर्म को, श्वास को वा संकल्प को परमत वा संगदोष में व्यर्थ तरफ गंवाते, स्व-चिन्तन की बजाए परचिन्तन करते हैं, स्वमान की बजाए किसी भी प्रकार के अभिमान में आ जाते हैं, इसी प्रकार से ‘श्रीमत’ के विरुद्ध अर्थात् श्रीमत के बदले मनमत के आधार पर चलते हैं, उसको ऑनेस्ट वा ईमानदार नहीं कहेंगे। यह सब खजाने बाप-दादा ने विश्व-कल्याण के सेवा अर्थ दिए हैं, तो जिस कार्य के अर्थ दिए हैं उस कार्य के बजाए अगर अन्य कार्य में लगाते हैं, तो यह अमानत में ख्यानत करना है। इसलिए सबसे बड़ी ते बड़ी प्यूरिटी की स्टेज है – ‘ऑनेस्ट बनना।’ हरेक अपने आपसे पूछो कि हम कहाँ तक ऑनेस्ट बने हैं। (iii) ऑनेस्ट का तीसरा लक्षण है – सदा सर्व प्रति शुभ भावना व सदा श्रेष्ठ कामना होगी? (iv) ऑनेस्ट अर्थात् सदा संकल्प और बोल वा कर्म द्वारा सदा निमित्त और निर्माण होंगे। (v) ऑनेस्ट अर्थात् हर कदम में समर्थ स्थिति का अनुभव हो। सदा हर संकल्प में ‘बाप का साथ और सहयोग के हाथ’ का अनुभव हो। (vi) ऑनेस्ट अर्थात् हर कदम में चढ़ती कला का अनुभव हो। (vii) ऑनेस्ट अर्थात् जैसे बाप – जो है, जैसा है बाप बच्चों के आगे प्रत्यक्ष हैं; वैसे बच्चे जो हैं, जैसे हैं वैसे ही बाप के आगे स्वयं को प्रत्यक्ष करें। ऐसे नहीं कि बाप तो सब कुछ जानता है, लेकिन बाप के आगे स्वयं को प्रत्यक्ष करना सबसे बड़े ते बड़ा ‘सहज चढ़ती कला’ का साधन है। अनेक प्रकार के बुद्धि के ऊपर बोझ समाप्त करने की सरल युक्ति है। वा स्वयं को स्पष्ट करना अर्थात् पुरुषार्थ का मार्ग स्पष्ट होना है। स्वयं को स्पष्टता से श्रेष्ठ बनाना है। लेकिन करते क्या हो? कुछ बताते कुछ छिपाते हैं। और बताते भी हैं तो कोई सैलवेशन (Salvation; सहूलियत) के प्राप्ति के स्वार्थ के आधार पर। चतुराई से अपना केस सज-धज कर मनमत और परमत के प्लान अच्छी तरह से बनाकर, बाप के आगे वा निमित्त बनी हुई आत्माओं के आगे पेश करते हैं। भोलानाथ बाप समझ और निमित्त बनी हुई आत्माओं को भी भोला समझ चतुराई से अपने आपको सच्चा सिद्ध करने से रिजल्ट क्या होती है? बाप-दादा वा निमित्त बनी हुई आत्माएं जानते हुए भी खुश करने के अर्थ अल्पकाल के लिए, ‘हाँ जी’ का पाठ तो पढ़ लेंगे। क्योंकि जानते हैं कि हर आत्मा की सहन शक्ति, सामना करने की शक्ति कहां तक है। इस राज को जानते हुए नाराज़ नहीं होंगे। उनको और ही आगे बढ़ाने की युक्ति देंगे। राजी भी करेंगे, लेकिन राज से राजी करना और दिल से राजी करना – फर्क होता है। बनने चतुर चाहते हैं, लेकिन भोले बन जाते हैं। कैसे जो थोड़े में राजी हो जाते हैं। हार को जीत समझ लेते हैं। है जन्म-जन्म की हार, लेकिन अल्पकाल की प्राप्ति में राजी हो अपने आपको सयाना,

होशियार समझ विजयी मान बैठते हैं। बाप को ऐसे बच्चों के ऊपर रहम भी पड़ता है कि समझदारी के पर्दे के अन्दर अपने ऊपर सदा काल के अकल्याण के निमित्त बन रहे हैं। फिर भी बाप-दादा क्या कहेंगे? श्रेष्ठ पुरुषार्थ की भावी नहीं है। (viii) ऑनेस्ट अर्थात् किसी भी बातों के आधार पर फाउन्डेशन न हो। हरेक बात के अनुभव के आधार पर, प्राप्ति के आधार पर फाउन्डेशन हो। बात बदली और फाउन्डेशन बदला, निश्चय से संशय में आ गया। और क्यों, कैसे के क्वेश्चन में आ गया, उसको प्राप्ति के आधार पर अनुभव नहीं कहेंगे। ऐसा कमज़ोर फाउन्डेशन छोटी सी बात प्योरिटी ही हाइएस्ट स्टेज है – रीयल्टी अर्थात् सच्चाई। में हलचल पैदा कर लेता है। जैसे आजकल की एक रमणीक बात बाप के आगे क्या रखते हैं कि 1977 तक पवित्र रहना था, अब तो ज्यादा समय पवित्र रहना मुश्किल है। इसलिए बाप के ऊपर बात रखते हुए खुद को निर्दोष बनाकर खुदा को दोषी बना देते हैं। लेकिन पवित्रता ब्राह्मणों का निजी संस्कार है। हद के संस्कार नहीं है। हद की पवित्रता अर्थात् एक जन्म तक की पवित्रता हद का संन्यास है। बेहद के संन्यासियों को जन्म-जन्मान्तर के लिए अपवित्रता का संन्यास है। बाप-दादा ने पवित्रता के लिए कब समय की सीमा दी थी क्या? सलोगन (Slogan) में भी यह लिखते हो कि बाप से सदा काल के लिए पवित्रता सुख-शान्ति का वर्सा लो। समय के आधार पर पवित्र रहना, इसको कौन-सी पवित्रता की स्टेज कहेंगे? इससे सिद्ध है कि स्वयं का अनुभव और प्राप्ति के आधार पर फाउन्डेशन नहीं हैं। तो ऑनेस्ट बच्चों के यह लक्षण नहीं हैं। 'ऑनेस्ट अर्थात् सदा होलीएस्ट।' समझा, ऑनेस्ट किसको कहा जाता है? अच्छा।

18.12.91... .. तपस्वी आत्मा अर्थात् सदा ऑनेस्ट आत्मा। ऑनेस्टी ही तपस्वी की विशेषता है। ऑनेस्ट आत्मा अर्थात् हर कर्म में, श्रीमत में चलने में आनेस्ट होगी। ऑनेस्ट अर्थात् वफादार और इमानदार। श्रीमत पर चलने के ऑनेस्ट अर्थात् वफादार। ऑनेस्ट आत्मा स्वतः ही हर कदम श्रीमत के इशारे प्रमाण उठाती है। उनका हर कदम आटोमेटिक श्रीमत के इशारे पर ही चलता है। जैसे साइन्स की शक्ति द्वारा कई चीजें इशारे से आटोमेटिक चलती हैं, चलाना नहीं

पड़ता, चाहे लाइट द्वारा, चाहे वायब्रेशन द्वारा स्विच ऑन किया और चलता रहता है। लेकिन साइन्स की शक्ति विनाशी होने के कारण अल्पकाल के लिए चलती है। अविनाशी बाप के साइलेन्स की शक्ति द्वारा इस ब्राह्मण जीवन में सदा और स्वतः ही सहज चलते रहते हैं। ब्राह्मण जन्म मिलते ही दिव्य बुद्धि में बापदादा ने श्रीमत भर दी। ऑनेस्ट आत्मा उसी श्रीमत के इशारे से नेचुरल सहज चलती रहती है। तो ऑनेस्ट की पहली निशानी – हर सेकण्ड हर कदम श्री मत पर एक्यूरेट चलना। चलते सभी हैं लेकिन चलने में भी अनेक प्रकार की भिन्नता हो जाती है। कोई सहज और तीव्रगति से चलते हैं। क्योंकि उस आत्मा को श्रीमत स्पष्ट सदा स्मृति में रहने के कारण समर्थ है। यह है नम्बरवन ऑनेस्टी। नम्बरवन आत्मा को सोचना नहीं पड़ता कि यह श्रीमत है या नहीं, यह राइट है या रांग है, क्योंकि स्पष्ट है। दूसरी आत्माओं को स्पष्ट न होने के कारण कई बार सोचना पड़ता है। इसलिए तीव्र गति से मध्यम गति हो जाती है। साथ2 कोई सोचता है, कोई थकता है। चलते सभी हैं लेकिन सोचने और थकने वाले सेकेण्ड नम्बर हो जाते हैं। थकते क्यों हैं? चलते-चलते श्रीमत के इशारों में मनमत परमत मिक्स कर देते हैं, इसलिए स्पष्ट और सीधे रास्ते से भटक टेढ़े बांके रास्ते में चले जाते हैं। रिजल्ट में फिर भी वापस लौटना ही पड़ता है। क्योंकि मंज़िल का रास्ता एक ही स्पष्ट सीधा और सहज है। सीधे को टेढ़ा बना देते हैं। तो आप सोचो टेढ़ा चलने वाला कहाँ तक चलेगा, किस स्पीड से चलेगा? और परिणाम क्या होगा? थकना और निराश होकर

लौटना। इसलिए सेकेण्ड नम्बर हो जाता है। अनेक सेकेण्ड गँवाया, अनेक श्वास गँवाया, सर्व शक्तियाँ गँवाया, इसलिए सेकेण्ड नम्बर हो गया। सिर्फ इसमें नहीं खुश हो जाना कि हम तो चल रहे हैं। लेकिन अपनी चाल और गति दोनों को चेक करो। तो समझा, ऑनेस्टी किसको कहा जाता है? ऑनेस्ट आत्मा की और निशानी है – वह कभी किसी भी खज़ाने को वेस्ट नहीं करेगा। सिर्फ स्थूल धन वा खज़ाने की बात नहीं है लेकिन और भी अनेक खज़ाने आपको मिले हैं। ऑनेस्ट संगमयुग के समय के खज़ाने को एक सेकेण्ड भी वेस्ट नहीं करेगा। क्योंकि संगमयुग का एक सेकेण्ड, वर्ष से भी ज्यादा है। जैसे गरीब आत्मा का स्थूल धन आठ आना आठ सौ के बराबर है। क्योंकि आठ आने में सच्चे दिल की भावना आठ सौ से ज्यादा है। ऐसे संगमयुग का समय एक सेकेण्ड इतना बड़ा है। क्योंकि एक सेकेण्ड में पद्यों जितना जमा होता है। सेकेण्ड गँवाया अर्थात् पद्यों जितनी कमाई का समय गँवाया। ऐसे ही संकल्प का खज़ाना, ज्ञान धन का खज़ाना, सर्व शक्तियों, सर्व गुणों का खज़ाना वेस्ट नहीं करेंगे। अगर सर्व शक्तियों, सर्व गुणों व ज्ञान को स्व-प्रति वा सेवाप्रति काम में नहीं लगाया तो इसको भी वेस्ट कहा जायेगा। दाता ने दिया और लेने वाले ने धारण नहीं किया, तो वेस्ट हुआ ना! झो ऑनेस्ट होता है वह सिर्फ धन को प्राप्त कर रख नहीं देता। ऑनेस्ट की निशानी है खज़ाने को बढ़ाना। बढ़ाने का साधन ही है कार्य में लगाना। अगर ज्ञान-धन को भी समय प्रमाण सर्व आत्माओं के प्रति या स्व की उन्नति के प्रति यूज नहीं करते हो तो खज़ाना कभी भी बढ़ेगा नहीं। ऑनेस्ट मैनेजर या डायरेक्टर उसको ही कहा जाता है जो कोई भी कार्य में प्रॉफिट करके दिखाये। प्रगति करके दिखाये। ऐसे ही संकल्प के खज़ाने को, गुणों को, शक्तियों को कार्य में लगाकर प्रॉफिट करने वाले हैं या वेस्ट करने वाले हैं? आनेस्ट की निशानी है – वेस्ट नहीं करना, प्रॉफिट करना। अपना तन, मन और स्थूल धन – यह तीनों ही बाप का दिया हुआ खज़ाना है। आप सबने तन, मन, धन वा वस्तु, जो भी थी वो अर्पण कर दी। संकल्प किया कि सब कुछ तेरा, ऐसा नहीं थोड़ा धन मेरा थोड़ा बाप का, थोड़ा धन किनारे रखें, जेबखर्च रखा है, थोड़ा आईवेल के लिए किनारे करके रखा है। आईवेल के लिए किनारे कर रखना यह समझदारी है। जितना ही मेरा होगा उतना ही जहाँ मेरा होता वहाँ बहुत बातें हेराफेरी होती हैं। क्योंकि उसको छिपाना पड़ता है ना! भक्ति मार्ग वाले भी समझते हैं- ये मेरे मेरे का फेरा है। इसलिए जब सब कुछ तेरा कह दिया तो कोई भी तन, मन या धन, वस्तु, सिर्फ धन नहीं लेकिन वस्तु भी धन है। वस्तु बनती किससे है? धन से ही बनती है ना, तो कोई भी वस्तु, कोई भी स्थूल धन, कोई भी मन से संकल्प और तन से व्यर्थ कर्म करना या व्यर्थ समय गँवाना तन द्वारा, यह भी वेस्ट में गिना जायेगा। तो ऑनेस्ट तन को भी व्यर्थ के तरफ नहीं लगाते। संकल्प को भी वेस्ट में नहीं लगाते। जहाँ भी रहते हो, चाहे प्रवृत्ति वाले हैं, चाहे सेन्टर वाले हैं, चाहे मधुबन वाले हैं, सबका तन-मन-धन बाप का है वा प्रवृत्ति वाले समझते हैं कि हम समर्पण तो है नहीं तो मेरा ही है। नहीं। यह तो बाप की अमानत है। तो ऑनेस्टी अर्थात् अमानत में कभी भी ख्यानत नहीं करें। वेस्ट करना अर्थात् अमानत में ख्यानत करना। ऑनेस्ट की निशानी वह अमानत में कभी भी ख्यानत कर नहीं सकता। छोटी सी वस्तु को भी वेस्ट नहीं करेगा। कई बार अपने बुद्धि के अलबेलेपन के कारण वा शरीर द्वारा कार्य में अलबेलेपन के कारण छोटी-छोटी वस्तु वेस्ट भी हो जाती है। फिर यह सोचते हैं कि मैंने यह जानबूझ कर नहीं किया, तो हो गया अर्थात् अलबेलापन। चाहे बुद्धि का हो, चाहे शरीर के मेहनत का अलबेलापन हो, दोनों प्रकार का अलबेलापन वेस्ट कर देता है। तो वेस्ट नहीं करना है। एक से दस गुना बढ़ाना है, न कि वेस्ट करना है। जिसको बापदादा सदा एक सलोगन में कहते हैं – कम खर्चा बाला नशीन। ये है बढ़ाना और वो है गँवाना। ऑनेस्ट अर्थात् तन मन और धन को सदा सफल करने वाला। यह है ऑनेस्ट आत्मा की निशानी। तो तपस्वी अर्थात् यह सब ऑनेस्टी की

विशेषतायें हर कर्म में प्रयोग में आवे। ऐसे नहीं कि समाया हुआ तो सब हैं, जानते भी सब हैं। लेकिन नहीं, तपस्या, योग का अर्थ ही है प्रयोग में लाना। अगर इन विशेषताओं को प्रयोग में नहीं लाते तो प्रयोगी नहीं, तो योगी भी नहीं। यह सब खज़ाने बापदादा ने प्रयोग करने के लिए दिये हैं। और जितना प्रयोगी बनेंगे, तो प्रयोगी की निशानी है प्रगति। अगर प्रगति नहीं होती है तो प्रयोगी नहीं।

कई आत्मायें ऐसे अपने अन्दर समझती भी हैं कि न आगे बढ़ रहे हैं, न पीछे हट रहे हैं। जैसे हैं, वैसे ही हैं। और कई ऐसे भी कहते हैं कि शुरु में बहुत अच्छे थे, बहुत नशा था अभी नशा कम हो गया है। तो प्रगति हुई या क्या हुआ? उड़ती कला हुई या ठहरती कला हुई तो प्रयोगी बनो। ऑनेस्टी का अर्थ ही है प्रगति करने वाला प्रयोगी। ऐसे प्रयोगी बने हो या अन्दर समाकर रखते हो-खज़ाना अन्दर ही रहे? ऐसे ऑनेस्ट हो? जो ऑनेस्ट होता है उसके ऊपर बाप का, परिवार का स्वतः ही दिल का प्यार और विश्वास होता है। विश्वास के कारण फुल अधिकार उसको दे देते हैं। ऑनेस्ट आत्मा को स्वतः ही बाप का वा परिवार का प्यार अनुभव होगा। बड़ों का, चाहे छोटों का, चाहे समान वालों का, विश्वासपात्र अनुभव होगा। ऐसे प्यार के पात्र वा विश्वास के पात्र कहाँ तक बने हैं? यह भी चेक करो। ऐसे चलाओ नहीं कि इसके कारण मेरे में विश्वास नहीं है, तो मैं विश्वासपात्र कैसे बनूँ, अपने को पात्र बनाओ। कई बार ऐसे कहते हैं कि मैं तो अच्छा हूँ लेकिन मेरे में विश्वास नहीं है। फिर उसके कारण लम्बे चौड़े सुनाते हैं। वह तो अनेक कारण बताते भी हैं और कई कारण बनते भी हैं। लेकिन ऑनेस्टी दिल की, दिमाग की भी ऑनेस्टी चाहिए। नहीं तो दिमाग से नीचे ऊपर बहुत करते हैं। तो दिल की भी ऑनेस्टी दिमाग की भी ऑनेस्टी। अगर सब प्रकार की ऑनेस्टी है तो ऑनेस्टी अविश्वास वाले को आज नहीं तो कल विश्वास में ला ही लेगी। जैसे कहावत है सत्य की नांव डूबती नहीं है लेकिन डगमग होती है। तो विश्वास की नांव सत्यता है, ऑनेस्टी है तो डगमग होगी लेकिन अविश्वासपात्र बनना अर्थात् डूबेगी नहीं। इसलिए सत्यता की हिम्मत से विश्वासपात्र बन सकते हो। पहले सुनाया था ना कि सत्य को सिद्ध नहीं किया जाता है। सत्य स्वयं में ही सिद्ध है। सिद्ध नहीं करो लेकिन सिद्ध स्वरूप बन जाओ। तो समय के गति के प्रमाण अभी तपस्या के कदम को सहज और तीव्र गति से आगे बढ़ाओ। समझा- तपस्या वर्ष में क्या करना है? अभी भी कुछ समय तो पड़ा है। इन सब विधियों को स्वयं में धारण कर सिद्धि स्वरूप बनो।

3.4.94... .. आज बापदादा सीधा हाथ उठाने की ड्रिल करा रहे हैं। डॉक्टर्स भी कहते हैं ना ड्रिल करो। सर्व अफिका निवासी बच्चों प्रति विशेष ाही वरदान है कि 'सदा सर्व प्रासपर्टी और सदा हर संकल्प, बोल और कर्म में सहज ऑनेस्टी भव, प्रासपर्टी भव और त्रि-स्वरूप से सहज ऑनेस्टी भव'।

9. ज़िम्मेवारी

23.03.70... बड़ेपन की निशानी चिन्दी है। तिलक तो छोटे भी लगाते हैं लेकिन चिन्दी बड़े लगाते हैं। जब से ज़िम्मेवारी अपने ऊपर रखने की हिम्मत रखते हैं तब से चिन्दी को धारण करते हैं। तो तिलक अच्छा वा चिन्दी अच्छी? आप सभी सर्व के शुभ चिन्तक हो, सर्विसएबल अर्थात् शुभचिन्तक। तो इस शुभ चिन्तक गुप की निशानी चिन्दी है और नाम है शुभचिन्तक गुप।

26.03.70...ज़िम्मेवारी तो हरेक अपनी समझते ही हैं। हरेक को अपनी सर्विस होते हुए भी – यज्ञ की ज़िम्मेवारी भी अपने सेन्टर की ज़िम्मेवारी के समान ही समझना है। खुद आफ़र करना है।

02.04.70...साकार रूप में सर्विस की ज़िम्मेवारी सभी से ज्यादा थी। बच्चों में उनसे कितनी कम है। बच्चों को सिर्फ़ सर्विस की ड्यूटी है। लेकिन साकार रूप में तो सभी ड्यूटी थी। संकल्पों का सागर था। रेसपोन्सिबिलिटी के संकल्पों में थे फिर भी सागर की लहरों में देखते थे वा सागर के तले में देखते थे? बच्चों को लहरों में लहराना आता है लेकिन तले में जाना नहीं आता। उनका सहज साधन पहले सुनाया कि प्रैक्टिस करो। अभी-अभी आवाज़ में आये, फिर मास्टर सर्वशक्तिमान बन अभी-अभी आवाज़ से परे। अभी-अभी का अभ्यास करो।

26-1-71 जो आधारमूर्त होते हैं उनके ऊपर ही सारी ज़िम्मेवारी रहती है। अभी आपके एक-एक कदम के पीछे अनेकों के कदम उठाने की ज़िम्मेवारी है। सर्व के उद्धारमूर्त बनने कारण सर्व आत्माओं की जो आशीर्वाद मिलती है तो फिर हल्कापन भी आ जाता है, मदद भी मिलती है। जिस कारण ज़िम्मेवारी हल्की हो जाती है। बड़ा कार्य होते हुए भी ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कोई करा रहा है। यह ज़िम्मेवारी और ही थकावट मिटाने वाली है। फ्री रहना मन को भाता ही नहीं है। ज़िम्मेवारी अवस्था को बनाने में बहुत मदद करती है। जितनी बड़ी ज़िम्मेवारी उतना बड़ा ताज।

10. खुशी

17.5.69... पर-अधीन हर बात में मन्सा, वाचा, कर्मणा दुःख की प्राप्ति में रहते और जो अधिकारी हैं वह अधिकार के नशे और खुशी में रहते हैं। और खुशी के कारण सुखों की सम्पत्ति उन्हों के गले में माला के रूप में पिरोई हुए होती है।

23.1.70... खुशी सदैव अविनाशी रहे। वह कैसे रहेगी? जैसे दीपक होता है वह सदैव जगा रहे इसके लिये ध्यान रखते हैं। घृत और बत्ती इन दो चीज़ का ख्याल रखना पड़ता है। तो यहाँ भी खुशी का दीपक सदैव जगा रहे इसके लिये दो बातें ध्यान में रखनी है। ज्ञान घृत और योग है बत्ती। अगर यह दोनों ही ठीक हैं तो खुशी का दीपक अविनाशी रहेगा। कभी बुझेगा नहीं।

23.1.70... जितना कोई बड़े परिवार का होता है उतनी उसको खुशी रहती है। सारी दुनिया में हम थोड़ों को इतना बड़ा परिवार मिलता है। तो यह निश्चय और नशा होना चाहिए। हरेक को यह नशा होना चाहिए कि कोठों में से कोई हम गायन में आने वाली आत्माएं हैं। कभी सोचा था क्या कि ऐसा क्यों शब्द की क्यू समाप्त करो तो नौछावर होने वालों की क्यू लगे। सौभाग प्राप्त हो सकता है?

जैसे दीपक होता है वह सदैव जगा रहे इसके लिये ध्यान रखते हैं। घृत और बत्ती इन दो चीज़ का ख्याल रखना पड़ता है। तो यहाँ भी खुशी का दीपक सदैव जगा रहे इसके लिये दो बातें ध्यान में रखनी है। ज्ञान घृत और योग है बत्ती। अगर यह दोनों ही ठीक हैं तो खुशी का दीपक अविनाशी रहेगा। कभी बुझेगा नहीं।

26.1.70... वह स्मृति आती है कि हम ही कल्प पहले थे। अभी भी फिर से हम ही निमित्त बनेंगे। जिसको यह नशा रहता है उनके चेहरे में खुशी और जोति रूप देखने में आता है। उनके चेहरे में अलौकिक अव्यक्ति चमक रहती है। उनके नयनों से, मुख से सदैव खुशी ही खुशी देखेंगे। देखने वाला भी अपना दुःख भूल जाये। जब कोई दुःखी आत्मा होती है तो अपने को खुशी में लाने लिये खुशी के साधन बनाती है ना। तो दर्पण में चेहरा देखने में आये। तुम्हारे चेहरे से सर्विस हो। न बोलते हुए आपका मुख सर्विस करे।

5.3.70... जिस बाप की अनेक भक्त वन्दना करते हैं, वह स्वयं आकर कहते हैं बन्दे मातरम्। इस खुमारी की निशानी क्या होगी? उनके नयन, उनके मुखड़े, उनकी चलन, बोल आदि से खुशी झलकती रहेगी। जिस खुशी को देख कईयों के दुःख मिट जायेंगे। ऐसी मातायें जिनको बापदादा स्वयं वन्दना करते हैं, उनकी निशानी है खुशी। चेहरा ही अनेक आत्माओं को हर्षायेगा। अज्ञानी लोग सवेरे उठ कोई ऐसी शक्ल देखते हैं तो कहते हैं सवेरे उनकी शक्ल देखी तब यह प्रभाव पड़ा। तो शक्ल का प्रभाव पड़ता है। तो आप बच्चों का हर्षित चेहरा देख सभी के अन्दर हर्ष आ जायेगा। ऐसा होने वाला है।

21.1.71... सारी सृष्टि की आत्माओं की भेंट में कितनी आत्माओं को यह भाग्य प्राप्त हुआ है। तो कितनी खुशी होनी चाहिए। खुशी तो नयनों में, मस्तक में, होठों में झलकती रहनी चाहिए। जो है ही खुशी के खजाने का मालिक, उसके बालक हो। तो खजाने के अधिकारी तो हो ना।

15.4.71... वाचा के दानी बनने वाले को विशेष प्राप्ति एक तो खुशी रहती है, क्योंकि धन को देख हर्षित होता है ना। और दूसरा वह कभी भी असंतुष्ट नहीं होंगे। क्योंकि खजाना भरपूर होने के कारण, कोई अप्राप्त वस्तु न होने के कारण सदैव सन्तुष्ट और हर्षित रहेंगे।

जिसको जो बोलेंगे उनको वह लग जायेगा। उनके बोल प्रभावशाली होते हैं। वाणी का दान करने से वाणी में बहुत गुण आ जाते हैं। अवस्था में सहज ही अपनी ऊंची वृत्ति से प्रवृत्ति की परिस्थितियों को चेंज करो। खुशी की प्राप्ति होगी। प्राप्ति करने का पुरुषार्थ नहीं करेंगे लेकिन स्वतः ही प्राप्त होगी। जैसे कोई खान से चीज निकलती है तो अखुट होती है ना। ऐसे ही अन्दर से खुशी स्वतः ही निकलती रहेगी। यह वरदान के रूप में प्राप्त होता है। खुशी के लिए पुरुषार्थ नहीं किया। पुरुषार्थ तो वाणी द्वारा दान करने का किया। प्राप्ति खुशी की हुई।

6.5.71... .. जब बाप की बड़ाई करेंगे तो लड़ाई से थकेंगे नहीं, लेकिन बाप के गुण गाते खुशी में रहने से लड़ाई भी एक खेल मिसल दिखाई पड़ेगी। खेल में हर्ष होता है ना। तो जो लड़ाई को खेल समझते, ऐसी स्थिति में रहने वालों की निशानी क्या होगी? हर्ष। सदा हर्षित रहने वाले को माया कभी भी किसी भी रूप से आकर्षित नहीं कर सकती। तो माया की आकर्षण से बचने के लिए एक तो सदैव अपनी शान में रहो, दूसरा माया को खेल समझ सदैव खेल में हर्षित रहो।

6.5.71... .. त्याग का सदैव भाग्य बनता है। जो त्याग करता है उसको भाग्य स्वतः ही प्राप्त हो जाता है। इसलिए यह जो बड़े से बड़ा त्याग करते हैं उन्हीं का बड़े से बड़ा भाग्य जमा हो जाता है। इसलिए खुशी से जाना चाहिए सर्विस पर।

30.5.71... .. बाप की प्रापर्टी को अपनी प्रापर्टी बनाने का साधन कौनसा है? वा बाप की प्रापर्टी बाप की ही रहने दे? (कोई-कोई ने अपना विचार बताया) जिनकी दिल सच्ची थी उन पर साहेब राजी हुआ, तब तो प्रापर्टी दी। प्रापर्टी तो दे दी, अब उनको सिर्फ अपना बनाने की बात है। सर्विस वा दान भी तब कर सकेंगे जब प्रापर्टी को अपना बनाया होगा। जितना प्रापर्टी होगी उतना नशे से दान कर सकेंगे वा दूसरे की सर्विस कर सकेंगे। लेकिन बात है पहले अपना कैसे बनायें? अपना बन गया फिर दूसरे को देने से बढ़ता जाता है। यह हुई पीछे की बात। लेकिन पहले अपना कैसे बनायेंगे? जितना-जितना जो खज़ाना मिलता है उसके ऊपर मनन करने से अन्दर समाता है। जो मनन करने वाले होंगे उन्हीं के बोलने में भी विल-पावर होगी। किसके बोलने में शक्ति का अनुभव होता है, क्यों? सुनते तो सभी इक्ठे हैं। प्रापर्टी तो सभी को एक जैसी एक ही समय इक्ठ्ठी मिलती है। जो मनन करके उस दी हुई प्रापर्टी को अपना बनाते हैं, उसको क्या होता है? कहावत है ना – ‘अपनी घोट तो नशा चढ़े’। अभी सिर्फ रिपीट करने का अभ्यास है। मनन करने का अभ्यास कम है। जितना-जितना मनन करेंगे अर्थात् प्रापर्टी को अपना बनायेंगे तो नशा होगा। उस नशे से किसको भी सुनायेंगे, तो उनको भी नशा रहेगा।

3.6.71... .. एक साक्षीपन की शक्ति, दूसरा बाप के साथी बनने की खुशी की खुराक। तो बताओ फिर क्या बन जायेंगी? निरोगी।

8.6.71... .. चाहे लौकिक जीवन, चाहे अलौकिक जीवन—दोनों में तीन चीजों की आव- श्यकता है। वह कौनसी? एक चाहिए खुराक, दूसरा खुशी और तीसरा खज़ाना। यह तीनों बातें आवश्यक हैं। खज़ाने के बिना कुछ नहीं होता, खुशी के बिना भी जीवन नहीं और खुराक भी आवश्यक है। तो यह तीनों चीजें यहाँ भी जितना बार खज़ाने को वर्णन करते हैं वा मनन में लाते हैं इतनी खुशी ज़रूर होती है। और खज़ाने को मनन करने से मग्न अवस्था आटोमेटिकली होती है। खुशी भी मिल जाती है, खुराक भी मिलती है और खज़ाने की स्मृति भी आ जाती है। तीनों ही बातें स्मृति में हैं। इस जीवन को श्रेष्ठ जीवन कहा जाता है।

25.6.71... .. बीच-बीच में अपने आपको नशा चढ़ाने का खास अटेंशन रखना चाहिए। इसको ही बैटरी चार्ज कहते हैं। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे सच-सच वृक्ष सारा इमर्ज रूप में है और हम साक्षी होकर इस वृक्ष को देख रहे हैं। यह भी नशा बहुत खुशी दिलाता है, शक्ति दिलाता है।

28.7.71... .. सेवाधारी हो और देवता बन अपनी रुचि, उमंग से अपने को बिज़ी रखकर देखो तो कभी माया नहीं आवेगी। खुशी रहेगी। खुशी के कारण माया साहस नहीं रखती सामना करने का। तो बिज़ी रखने की प्रैक्टिस करो।

28.7.71... .. कुछ भी हो जाये, तो भी उसको खेल समझकर समाप्त करना। खेल समझने से खुशी होती है। बुद्धि रूपी पांव देह रूपी धरती से ऊंचा है। यह खुशी की निशानी है। जितना-जितना देह के भान की तरफ से बुद्धि ऊपर होगी उतना वह अपने को फरिश्ता महसूस करेगा।

20.8.71... .. अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति, उसमें शान्ति और खुशी समाई हुई है। दो शब्दों में डबल प्राप्ति – बाप और वर्सा। इसमें नालेज भी आ जाती है तो अतीन्द्रिय सुख भी आ जाता और रूहानी खुशी भी आ जाती। रूहानी शक्ति भी आ जाती है। तो यह है डबल प्राप्ति।

27.2.72... .. सदा होली मनाने वाले सदा बाप के साथ मिलन मनाते रहते हैं। सदा अतीन्द्रिय सुख में वा अविनाशी खुशी में झूमते और झूलते रहते हैं। ऐसे ही स्थिति में स्थित रहने वाले होली हंस हो?

जैसे साकार रूप में यह निश्चा हर कर्म में देखा कि अपने भविष्य यादगार को देखते हुए सदा यह खुमारी और खुशी थी कि यह मैं ही तो हूँ, ऐसे ही आप सभी को यादगार चित्र देखते हुए वा चरित्र सुनते हुए वा गुणों का गायन सुनते हुए यह खुमारी और खुशी रहती है कि यह मैं ही तो हूँ? यह सदा स्मृति में रहना चाहिए कि अभी-अभी हम प्रत्यक्ष रूप में पार्ट बजा रहे हैं और अभी-अभी अपने पार्ट का यादगार भी देख रहे हैं।

स्मृति समर्थी को लाती है और समर्थी में आने से ही कार्य सफल होते हैं। अथवा जो सुनाया -- खुशी, मस्ती, नशा वा निशाना सभी हो जाता है। यह सभी बातें गायब होने कारण निर्बलता है। विस्मृति के कारण असमर्थी। तो स्मृति से समर्थी आने से सभी सिद्धि प्राप्त हो जाती हैं अर्थात् सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

15.3.72... .. मनन के बाद उस खजाने से जो खुशी प्राप्त होती है, उस खुशी में स्थित रहने का अभ्यास नहीं किया तो व्यर्थ चला गया ना। जैसे भोजन किया, हजम करने की शक्ति नहीं तो व्यर्थ जाता है ना।

10.5.72... .. अपनी सर्विस को छोड़ दूसरों की सर्विस में लग जाने से समय और संकल्प जादा खर्च कर लेते हो। इस कारण जो जमा होना चाहिए वह नहीं कर पाते। जमा न होने के कारण वह नशा, वह खुशी नहीं रहती। अभी-अभी कमाया और अभी-अभी खाया; तो वह अल्पकाल का हो जाता है। जमा रहता है वह सदा साथ रहता है। तो अब जमा करना भी सीखो।

कमाया और बांट दिया; तो अपने में शक्ति नहीं रहती। सिर्फ खुशी होती है – जो मिला सो बांटा। दान करने की खुशी रहती है लेकिन उसको स्वयं में समाने की शक्ति नहीं रहती। खुशी के साथ शक्ति भी चाहिए। शक्ति न होने कारण निर्विघ्न नहीं हो सकते, विघ्नों को पार नहीं कर सकते।

24.5.72... अगर बार-बार भूलने के संस्कार धारण करते रहेंगे तो स्मृतिस्वरूप का जो नशा वा खुशी प्राप्त होनी चाहिए वह कब करेंगे? स्मृति-स्वरूप का सुख वा स्मृति-स्वरूप की खुशी का अनुभव क्यों नहीं होता है? उसका मुख्य कारण क्या है? अभी तक सर्व रूपों से नष्टोमोहा नहीं हुए हो। नष्टोमोहा हैं तो फिर भले कितनी भी कोशिश करो लेकिन स्मृतिस्वरूप में आ जाएंगे।

जैसे कोई को मालूम पड़ जाता है कि मंजिल अभी सिर्फ इतनी थोड़ी-सी दूर है, मंजिल पर पहुंचने की खुशी में सभी बात भूल जाते हैं। यह जो चलते-चलते पुरुषार्थ में थकावट वा छोटी-छोटी उलझनों में फंसकर आलस्य में आ जाते हो, उन सभी को मिटाने के लिए अपने सामने स्पष्ट समय और समय के साथ-साथ अपनी प्राप्ति को रखो तो आलस्य वा थकावट मिट जायेगी।

अगर कोई ना कोई संगदोष वा कोई कर्मेन्द्रिय के वशीभूत हो अपनी शक्ति खो लेते हो तो जो बेगमपुर का नशा वा खुशी प्राप्त है वह स्वतः ही खो जाती है।

31.5.72... .. आज की पुरानी दुनिया में अगर कोई छोटे-मोटे मर्तबे वाले का भी कोई साथी अच्छा होता है तो भी अपनी खुमारी में और खुशी में रहते हैं। समझते हैं – हमारा बैकबोन पावरफुल है। इसलिए खुमारी और खुशी में रहते हैं। आप लोगों का बैकबोन कौन है! जिनका सर्वशक्तवान् बैकबोन है तो कितनी खुमारी और खुशी होनी चाहिए! कब खुशी की लहर खत्म हो सकती है? सागर में कब लहरें खत्म होती हैं क्या? नदी में लहर उठती नहीं। सागर में तो लहरें उठती रहती हैं। तो मास्टर सागर हो ना। फिर ईश्वरीय खुमारी वा ईश्वरीय खुशी की लहर कब खत्म हो सकती है? खत्म तब होती है जब सागर से सम्बन्ध टूट जाता है; अर्थात् साथ और हाथ छोड़ देते हो तब खुशी की लहर समा जाती है।

11.7.72... .. मेला होता है खुशी मनाने के लिये। अगर मेले में कोई बच्चा माँ-बाप से बिछुड़ जाये वा हाथ-साथ छोड़ दे तो उसको क्या प्राप्ति होगी? खुशी के बजाय और ही अशान्त हो जावेंगे। तो ऐसे अपने आप को देखो कि मेले में सदा खुशी की प्राप्ति कर रहा हूँ, सदा मिलन में रहता हूँ? जो सदा मिलन में रहेगा उसकी निशानी क्या होगी? उनकी विशेषता क्या होगी? अतीन्द्रिय सुख में रहने वाले वा सदा मिलन मनाने वाले की निशानी क्या होगी? उनकी विशेषता क्या होगी? जो सदैव मिलन में मग्न होगा वह कब भी कोई विघ्न में नहीं होगा। मिलन विघ्न को हटा देता है। वह विघ्न-विनाशक होगा। मिलन को ही लगन कहते हैं।

19.9.72... .. वह समय दूर नहीं जबकि जागेंगे, तड़पेंगे, रोयेंगे, पश्चाताप करेंगे लेकिन फिर भी पा न सकेंगे। बताओ, उस समय आपको अपने ऊपर कितना नाज़ होगा कि हम तो पहले से ही पहचान कर अधिकारी बन गये हैं! ऐसी खुशी में रहना चाहिए। क्या मिला है, कौन मिला है और फिर क्या-क्या होने वाला है! यह सभी जानते हुए सदैव अतिइन्द्रिय सुख में झूमते रहना है।

4.5.73... .. हम बालक सो मालिक हैं, अभी इस प्रकृति के मालिक हैं और फिर विश्व का मालिक बनना है अर्थात् जितना बालकपन याद रहेगा उतना मालिक-पन का नशा रहेगा, खुशी रहेगी, और इस मस्ती में मग्न रहेंगे। अगर किसी भी समय प्रकृति के आधीन हो जाते हैं तो उसका कारण क्या है? अपनी मास्टर सर्वशक्तवान् की स्टेज को भूल जाते हैं। अपने अधिकार को सदैव सामने नहीं रखते हैं। अधिकारी कभी किसी के आधीन नहीं होते।

8.5.73... .. जब औरों को भी देने के निमित्त बनते हो, उस समय अगर यह स्मृति में नहीं रहता कि बाप का खजाना दे रहे हैं तो उन आत्माओं को श्रेष्ठ सम्बन्ध में जोड़ नहीं सकते हो। क्या ऐसी स्मृति में रहते हुए हर कर्म करते हो? नशा भी रहे अपने श्रेष्ठ स्वमान का। उनके साथ-साथ और क्या रहता है? (खुशी)। जितना बुद्धि में नशा होगा, उतनी ही कर्म में नम्रता-इस नशे की निशानी यह है। नशा भी ऊँचा होगा लेकिन कर्म में नम्रता रहेगी। नयनों में सदैव नम्रता होगी। इसलिए इस नशे में कभी नुकसान नहीं होता है।

25.5.73... जैसे सेवा करने के लिये स्टेज, स्पीच तैयार करते हो तो विश्व सेवा के लिये अपनी स्थिति की स्टेज तैयार करनी है। सूरत के बीच जो कर्मेन्द्रियाँ हैं, उन द्वारा बाप के चरित्र और बाप के कर्त्तव्य का साक्षात्कार कराना है। नयनों द्वारा नज़र से निहाल कर सको, मस्तिष्क द्वारा सभी के स्वरूप का स्पष्ट साक्षात्कार कराओ, होठों पर रूहानी मुस्कराहट से अविनाशी खुशी का अनुभव कराओ।

8.7.73... सीट पर सैट होकर वैरायटी ड्रामा की स्मृति रखते हुए, अगर एक-एक पार्टधारी का हर पार्ट देखो तो सदैव हर्षित रहेंगे। मुख से वाह- वाह निकलेगी। वाह! मीठा ड्रामा! यह क्या हुआ, क्यों हुआ यह नहीं निकलेगा बल्कि वाह-वाह शब्द मुख से निकलेंगे अर्थात् सदा खुशी में झूमते रहेंगे। सदा अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान् अनुभव करेंगे। क्या ऐसे स्वयं को प्रैक्टिकल में अनुभव करते हो?

मेले से बाहर निकल जाते हो तो परेशान हो जाते हो और जब हाथ छोड़ देते हैं तो भी परेशान हो। ऐसे ही तुम यहाँ भी बाप का हाथ छोड़ देते हो। 'हाथ छोड़ देना' क्या इसका अर्थ समझते हो? बाप का स्थूल हाथ तो है नहीं। 'श्रीमत' है हाथ और 'बुद्धि-योग' है साथ। तो मेले में जब हाथ और साथ दोनों ही छोड़ देते हो अर्थात् बाप से किनारा कर देते हो तब भी परेशान होते हो। हाथ और साथ अगर न छोड़ो तो सदा खुशी में रहेंगे इसलिए अब सदैव मेला और खेला समझकर ही अपने पार्ट और दूसरे के पार्ट को देखो। यह तो सहज बात है और कॉमन अर्थात् पुरानी बात है। पुरानी बात को निरन्तर बनाया है या कभी-कभी भूल जाते हो और या कभी समय पर याद करते हो? यह इसलिए बतलाया कि यदि वह दो शब्द भी निरन्तर याद रखो तो निरन्तर खुशी में और निरन्तर शक्ति स्वरूप में रह सकते हो।

15.9.74... साकार स्वरूप के नशे की प्वाइन्ट्स तो बहुत हैं कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, मैं ब्राह्मण हूँ और मैं शक्ति हूँ। इस स्मृति से तो आपको नशे और खुशी का अनुभव होगा। लेकिन जब तक इस अव्यक्त स्वरूप में, लाइट के कार्ब में स्वयं को अनुभव न किया है, तब तक औरों पुरषार्थ ऐसा करो जिसे देख अन्य आत्माएं भी फॉलो करें। 102 को आपका साक्षात्कार नहीं हो सकेगा। क्योंकि जो दैवी स्वरूप का साक्षात्कार भक्तों को होगा, वह लाइट रूप की कार्ब में चलते-फिरते रहने से ही होगा।

2.2.75... एक वत्स की ओर देखते हुए बाबा बोले :- दिन-प्रतिदिन थोड़े समय में सफलता ज्यादा दिखाई दे रही है, यही आगे बढ़ने की निशानी है। सहज भी हो और साथ-साथ मेहनत कम और फल ज्यादा – इस स्टेज के समीप जा रहे हो न? जितना निशाना समीप दिखाई देता है, उतना नशा ऑटोमेटिकली होता है। नशा अर्थात् खुशी! यह है प्रत्यक्ष फल। तो अब प्रत्यक्ष फल का समय है। भविष्य फल नहीं, प्रत्यक्ष फल!

4.2.75... स्थूल धन का नशा और खुशी चेहरे पर चमकती हुई दिखाई देती है लेकिन होती वह अल्पकाल की ही है परन्तु ज्ञान-चातक के चेहरे पर खुशी की झलक सदा स्पष्ट दिखाई देती है।

9.2.75... सदैव यह सोचना चाहिए कि मिली हुई गॉडली लॉटरी अगर पूरी काम में नहीं लगायेंगे तो खुशी व शक्ति का अनुभव कैसे करेंगे? कितना भी किसी के पास धन हो लेकिन सुख की प्राप्ति तब होगी जब उसको यूज (प्रयोग) करेंगे। यूज न करें तो देखते हुए सिर्फ खुशी ही होगी, लेकिन उससे जो सुख की प्राप्ति होनी चाहिए वह अनुभव नहीं कर सकेंगे। लॉटरी तो मिली लेकिन उसको यूज करना अर्थात् जीवन में लाना – उसके बिना सुख का, आनन्द का व विजयी बनने की खुशी का अनुभव नहीं कर सकेंगे।

29.9.75... वाह रे – मैं!" का नशा याद है? वह दिन, वह झलक और फलक स्मृति में आती है? वह नशे के दिन अलौकिक थे। ऐसे नशे के दिन स्मृति में आते ही नशा चढ़ जाता है – इतना नशा इतनी खुशी जो स्थूल पाँव

भी चलते-फिरते नैचुरल डान्स करते हैं – प्रोग्राम से डान्स नहीं। मन में भी नाच और तन भी नैचुरल नाचता रहे। यह नैचुरल डान्स तो निरन्तर हो सकता है? आँखों का देखना, हाथों का हिलना और पाँव का चलना सब खुशी में नैचुरल डान्स करते हैं। उनको फरिश्तों का डान्स कहते हैं – ऐसे नैचुरल डान्स चलता रहता है?

22.9.75... .. “मैं कौन हूँ” इस एक शब्द के उत्तर में सारा ज्ञान समाया हुआ है। यह एक शब्द ही खुशी के खजाने सर्व, शक्तियों के खजाने, ज्ञान धन के खजाने, श्वास और समय के खजाने की चाबी है। चाबी तो मिल गई है न? जिस दिन आपका जन्म हुआ तो सर्व ब्राह्मणों को बर्थ डे पर गिफ्ट (जन्म दिन की सौगात) मिलती है ना? तो यह बर्थ डे की गिफ्ट जो बाप ने दी है, उसको सदा यूज (काम में लाना) करते रहो। तो सर्व खजानों से सम्पन्न सदा के लिये बन सकते हो। ऐसे सर्व खजानों से सम्पन्न आत्मा के दिल के खुशी की उमंगों में हर समय कौन-सा आवाज निकलता है? मुख का आवाज नहीं, लेकिन दिल का आवाज क्या निकलता है? जो शुरू में ब्रह्मा बाप के दिल का आवाज था – कौन-सा? ‘वाह रे मैं!’ जैसे औरों की वाह-वाह की जाती है ना – वैसे वाह रे मैं! यह स्वमान के शब्द हैं, न कि देह-अभिमान के।

1.10.75... .. जब सुनने में इतनी खुशी होती है तो स्वरूप बनने में कितनी खुशी होगी? इस समय सभी हर्षित मुख हो – ऐसे ही सदा हर्षित मुख रहो तो स्वयं का भी समये बचायेंगे और निमित्त बनी हुई आत्माओं का भी समय बचा लेंगे। अभी तक गिरने और चढ़ने में, स्वयं को सम्भालने में व बुद्धि को ठिकाने लगाने में 25% समय जो इसमें जाता है तो यह समय बच जायेगा और वह कमाई में जमा हो जायेगा। अब बचत करना सीखो।

3.10.75... .. ऐसे बेगमपुर के बादशाह, जिन्हों का नाम लेने से ही अनेक आत्माओं के अल्पकाल के लिए दुःख दूर हो जाते हैं, जिनके चित्रों को देखते चरित्रों का गायन करते हैं और दुःखी आत्मा खुशी का अनुभव करने लगती हैं, ऐसे चैतन्य आप स्वयं बेगमपुर के बादशाह हो? अपने खजानों को जानते हो? सर्व खजानों को स्मृति में रखते हुए सदा हर्षित अर्थात् सदा प्रकृति और पाँच विकारों के आक्रमण से परे। इसी खुशी के खजानों से सम्पन्न-स्वरूप “एक बाप दूसरा न कोई” – ऐसा अनुभव करते हो?

7.1.75... .. अपने आप से पूछो कि ऋषि बना हूँ? ऐसे निश्चय बुद्धि वैराग्य के साथ-साथ अधिकार की खुशी में भी रहेंगे तो राज-ऋषि बनने के लिए जितना ही राज्य का नशा उतना ही बेहद के वैराग्य के नजारे, दोनों ही साथ-साथ अनुभव होंगे।

13.10.75... .. जैसे उस फर्स्ट आत्मा को नशा और खुशी होगी वैसे साथ रहने वाली आत्माओं को भी वैसा ही नशा और खुशी होगी। जो अभी बाप-समान बनते हैं उन्हों को वहाँ भी समान नशा होगा। तो सर्व-स्वरूप से साथ रहना – यह भी विशेष पार्ट है। बाल, युवा और वानप्रस्थ सब अवस्थाओं में साथ। इसका आधार यहाँ के जीवन के आदि, मध्य और अन्त तक साथ निभाने का है। मज़ा तो इसमें है ना? जो फर्स्ट में साथ रहते हैं, वह फिर 84 जन्मों में ही, भक्ति काल में अल्पकाल के राजे बनने में व कोई भी पार्ट बजाने में भी कोई-न-कोई साथ का सम्बन्ध कायम करते रहेंगे। भक्ति भी साथ-साथ शुरू करेंगे। चढ़ेंगे भी साथ, पर गिरेंगे भी साथ। तो अभी का साथ निभाने का आधार सारे कल्प के साथ का आधार बन जाता है।

26.10.75... .. अगर अब भी बाप से छुपावेंगे व अपने को सच्चा सिद्ध करके चलाने की कोशिश करेंगे तो अभी चलाना अर्थात् अन्त में और अब भी अपने मन में चिल्लाते रहेंगे – क्या करूँ, खुशी नहीं होती, सफलता नहीं होती, सर्व-प्राप्तियों की अनुभूति नहीं होती। ऐसे अब भी चिल्लायेगे और अन्त में ‘हाय मेरा भाग्य’ कह

चिल्लायेगे। तो अब का चलाना अर्थात् बार-बार चिल्लाना। अगर अभी बात को चलाते हो तो अपने जन्म-जन्मान्तर के श्रेष्ठ तकदीर को जलाते हो। इसलिये इस विशेष बात पर विशेष अटेंशन रखो।

27.10.75... .. आज बाप-दादा बेहद की फुलवारी को विशेष रूप से देख रहे थे कि हर एक फूल के अन्दर रूप, रंग और कितनी खुशबू है। रूप अर्थात् साकारी स्वरूप में नैन और चैन में अर्थात् चेहरे में ब्राह्मण-पन का व फरिश्ते-पन का, श्रेष्ठ पार्टधारी आत्मा की स्मृति का नशा और खुशी प्रत्यक्ष रूप में कितनी दिखाई देती है? रंग अर्थात् निरन्तर बाप के संग का रंग अर्थात् सदा साथी बनने का रंग कितना चढ़ा हुआ है? खुशबू अर्थात् सदा रूहानी वृत्ति और दृष्टि कहाँ तक अपनायी है? हर-एक में यह तीन विशेषताये देखीं।

कुछ समय के बाद बाप की नजर में रहने वालों के ऊपर माया के रॉयल रूप की नजर लगने के कारण रूप-रंग बदल जाता है। कदमों की तीव्र गति यथार्थ मार्ग के बजाय व्यर्थ मार्ग पर तीव्र गति से चल पड़ते हैं। फरिश्तेपन के नशे के बजाय और ईश्वरीय खुशी के बजाय अनेक प्रकार के नशे जो कि विनाशी नशे हैं, साथ-साथ साधनों के आधार पर जो प्राप्त हुई खुशी और नशे हैं – उनमें मस्त हो जाते हैं। सदा बाप के संग के रंग के बजाय अर्थात् एक बाप का सहारा लेने के बजाय समय-प्रति-समय जिन आत्माओं से अल्पकाल का सहारा मिलता है उन आत्माओं को ही साकारी सहारा बना देते हैं। अर्थात् संग के रंग में रंग जाते हैं।

आदि के बाद फिर जब मध्य में आते हैं तो पुरुषार्थ से, अपनी सेवा से, खुशी और उमंग से संतुष्ट नहीं रहते। अपने आप से क्वेश्चन करते रहते हैं कि – “पहले ऐसा था अभी ऐसा क्यों, पहले जैसा उमंग कहाँ चला गया? पहले वाली खुशी गायब क्यों हो गई? चढ़ती कला के बजाय रुकावट क्यों हो गई? जबकि ज्ञान गुह्य हो रहा है, समय समीप आ रहा है, सेवा के साधन भी बहुत प्राप्त हो रहे हैं और फिर भी पहले जैसा अनुभव क्यों नहीं होता?” मैजॉरिटी का यह अनुभव देखा। अब इसका कारण क्या? कारण यह है – जब सेवा में और ब्राह्मण परिवार के सम्पर्क में व सेवा द्वारा जो प्रत्यक्ष फल प्राप्त होता है उसमें चलते-चलते कोई हद की पोजीशन (Position) में आ जाते हैं, कोई हमशरीक सर्विस-साथियों व सम्पर्क में आने वाले अपने साथियों का ऑपोजीशन करने में लग जाते हैं, कोई स्थूल सेलवेशन लेने में लग जाते हैं अर्थात् सेलवेशन के आधार पर सेवा और पुरुषार्थ करते हैं, कोई क्वेश्चन और करेक्शन करने लग जाते हैं और फिर कोई दूसरे की कोटेशन (उदाहरण) देने लग पड़ते हैं अर्थात् दूसरे के दृष्टान्त से अपना सिद्धान्त बनाने लग जाते हैं। इन पाँच में से कोई-न-कोई उल्टा मार्ग अपना लेते हैं। बाप ने कहा कि सदा तपस्वी बनकर के अपने ईश्वरीय ब्राह्मणपन के, सर्वस्व त्यागी के पोजीशन में स्थित रहो। लेकिन हद की पोजीशन कि – “मैं सबसे ज्यादा सर्विसएबल हूँ, प्लैनिंग-बुद्धि हूँ, इनवेन्टर हूँ, धन का सहयोगी हूँ, दिन-रात तन लगाने वाला हूँ अर्थात् हार्ड-वर्कर हूँ या इन्चार्ज हूँ।” – इस प्रकार के हद के नाम, मान और शान के उन उल्टे पोजीशन को पकड़ लेते हैं। अर्थात् यथार्थ मंजिल से व्यर्थ मार्ग पर तीव्र गति से चल पड़ते हैं। तपस्वी बन ब्राह्मणपन तथा सर्वस्व त्यागी की पोजीशन में रहो।

6.12.75... .. सदा ऐसी खुशी में रहो कि आपकी खुशी को देखते हुए देखने वालों के गम के बादल व दुःख की घटायें समाप्त हो जायें और वे सुख के झूले में झूलने लग जाएं।

जो सर्विसएबल नॉलेजफुल ज्यादा, पाँवरफुल कम थे उनकी स्थिति यह रहती है कि पा लिया है, मिल रहा है और निश्चय है कि पा ही लेंगे। खुशी के झूले में झूलते हैं लेकिन बीच-बीच में झूले को तेज झुलाने के लिए कोई आधार की आवश्यकता है। वह आधार क्या है? कोई अन्य द्वारा की हुई सर्विस प्रति हिम्मत, उल्लास दिलाने वाला हो

अर्थात् 'बहुत अच्छा' और 'बहुत अच्छा' करने वाला हो। नहीं तो खुशी का झूला झूलते-झूलते रुक जाता है। तो रुके हुए को चलाना चाहिए। पहली स्टेज वालों का ऑटोमेटिक झूला है।

18.6.76... .. जैसे पुराने बच्चों को डबल इन्जन की लिफ्ट मिली, वैसे नये बच्चों को गुप्त मदद की प्राप्ति के अनुभव की, खुशी के खजाने की विशेष लिफ्ट, बाप-दादा गिफ्ट में दे रहे हैं।

22.1.76... ..सदा अपने को सेवा की स्टेज पर समझो। इसी द्वारा ही परिवर्तन होगा। जो भी कुछ स्वयं में कमजोरी महसूस होती है वह सब इस सेवा के कार्य में निरन्तर रहने से सेवा के फलस्वरूप अन्य आत्माओं के दिल से आशीर्वाद की प्राप्ति या गुणगान होता है; उस प्राप्ति के आधार से खुशी और उसके आधार से और बिज़ी रहने से वह कमी समाप्त हो जायेगी। तो परिवर्तन होने का साधन यही है जिसको ही एक-दूसरे में अटेन्शन खिंचवाते प्रैक्टिकल में लाना है।

27.1.76... .. जैसे बच्चों को बाप द्वारा वर्सा प्राप्त होते हर्ष होता है अर्थात् खुशी होती है, वैसे ही बाप-दादा को भी 'लास्ट सो फास्ट' पुरुषार्थियों को तीव्र पुरुषार्थ की लगन में मग्न देख हर्ष होता है। फास्ट पुरुषार्थ करने वालों की सूरत और सीरत बाप-समान सदा रूहानी नज़र आती है। सिवाय रूहानियत के अन्य कोई भी संकल्प व स्मृति नहीं रहती, अर्थात् बाप द्वारा प्राप्त हुई सर्व शक्तियाँ स्वरूप में दिखाई देती हैं। उनकी हर नज़र में हर आत्मा को 'नज़र से निहाल' करने की रूहानियत दिखाई देगी।

चाहे शरीर का कर्मभोग सूली से कितना भी बड़े रूप में हो लेकिन सदा अपने को साक्षी समझने से कर्मभोग के वश नहीं होंगे। हर कर्मभोग सूली से कांटे-समान अनुभव होगा। भविष्य जन्म-जन्मान्तर कर्मभोग से मुक्त होने की खुशी इस कर्मभोग को चुक्ता करने के लिये औषधि का रूप बन जाती है। खुशी दवाई की खुराक बन जाती है। सदा हर्षित रहने वाला मन, वाणी और कर्म से सर्व आत्माओं को सदा खुशी का दान देता रहेगा। किसी भी आत्मा के प्रति बाप-समान दुःख-हर्ता, सुख-कर्ता, सदा बेगमपुर का बादशाह अनुभव करेगा। बादशाह अर्थात् दाता। ऐसे हर्षितमुख रहने वाली आत्मा के हर संकल्प के वायब्रेशन्स् द्वारा, एक सेकेण्ड की रूहानी नज़र द्वारा, एक सेकेण्ड के सम्पर्क द्वारा, मुख के एक बोल द्वारा दुःखी व गम में रहने वाली आत्मा अपने को सुखी व खुशी का अनुभव करेगी। उसका कर्तव्य होगा – सुख देना और सुख लेना। जैसे प्रजा अपने योग्य राजा को देख खुश हो जाती है, ऐसे एवर हेल्दी, वेल्दी और हैप्पी आत्मा को देख कैसी भी दुःखी आत्मा सुख का अनुभव करेगी। अप्राप्त आत्मा दाता को देख प्राप्ति की खुशी में झूमने लगेगी। ऐसे अपने को अनुभव करते हो? देने वाले दाता के बच्चे, बाप-समान दाता हो या भक्त के समान लेने वाले हो या लेना और देना साथ-साथ चलता है? लेना है ही देने के लिये, खजाना है बाँटने के लिये और विश्व-कल्याण के लिये। हर सेकेण्ड लेने के साथ-साथ देने वाले दाता भी बनो, तब ही विश्व-कल्याणकारी कहला सकेंगे।

28.1.76... ..लक्की सितारे की वाणी में महान् बनाने वाले बाप की महिमा दिल से स्वतः ही निकलती रहेगी और उनके रूप में खुशी की झलक विशेष दिखाई देगी। उनका विशेष प्लैन – सदा बाप का नाम बाला कर, रिटर्न करने का अर्थात् बाप का हर कार्य अपने जीवन द्वारा प्रत्यक्ष करने का होगा। सदा बाप के स्नेही रहने वाले और बाप के स्नेही बनाने वाले होंगे। सदैव यही स्लोगन स्मृति और वाणी में होगा कि वाह बाबा और वाह तकदीर! ऐसे अपने को लक्की सितारे समझते हो?

10.1.77... .. अपने कल्प पहले की खुशी में सदा नाचने का चित्र जिसको रास-लीला का चित्र कहते हैं – हर गोपी वा गोप सदा गोपीवल्लभ के साथ रास करते हुए दिखाते हैं, यह खुशी में नाचने का यादगार चित्र है। आप के प्रैक्टिकल चरित्र का चित्र बना है। ऐसा प्रैक्टिकल चरित्रवान चित्र सदा देखने में आता है? ऐसे अनुभव करते हो कि यह मेरा ही चित्र है? इसको कहा जाता है 'तकदीर की तस्वीर'। रोज़ अपनी तकदीर की तस्वीर को देखते हुए हर कर्म करेंगे तो मेहनत से मुक्त हो बर्थ-राईट की खुशी का अनुभव करेंगे।

सदा वाह मेरा भाग्य! और वाह भाग्य विधाता!! इस सूक्ष्म मन की आवाज़ को सुनते रहो। नाचने के साथ जैसे साज चाहिए ना, तो यह अनादि मन का आवाज़ सुनते रहो और खुशी में नाचते रहो।

16.1.77... .. टीचर्स को तो विशेष खुशी होनी चाहिए क्योंकि टीचर्स को लिफ्ट है – एक बाप और सेवा में रहने की और कोई वातावरण नहीं है। तो इस लिफ्ट का लाभ उठाना चाहिए ना? तो सदा हर्षित हो ना? सदा हर्षित कौन रहता है? जो कहाँ भी आकर्षित न हो। अगर किसी भी तरफ चाहे प्रकृति, चाहे आत्माओं, चाहे आत्माओं के गुणों की तरफ आकर्षित होते हो तो हर्षित नहीं रह सकेंगे। सर्व आकर्षण से परे, सिवाए एक बाप के, ऐसी आत्मा ही सदा हर्षित रह सकती है।

11.7.77... .. जब खुशियों के सागर बाप के बने, तो कितनी खुशी होनी चाहिए! अप्राप्ति क्या है, जो खुशी गायब होती है? जहाँ प्राप्ति होती है, वहाँ खुशी होती है। अल्पकाल की प्राप्ति वाले भी खुश होते हैं। तो सदाकाल की प्राप्ति वालों को सदा खुश रहना चाहिए। कभी-कभी खुशी में रहेंगे तो अन्तर क्या हुआ? 'ज्ञानी अर्थात् सदा खुश।' अज्ञानी अर्थात् कभी-कभी खुश। तो सदा खुश रहने का दृढ़ संकल्प करके जाना।

23.1.77... .. माताओं का मर्तबा कोई कम नहीं है, ऐसी माताएं जिनका शिवबाबा के साथ पार्ट है। इतना नशा है? इतनी खुशी है? इस स्टेज पर रहो तो खुशी में उड़ते रहेंगे। परियाँ सदा उड़ती रहती हैं। तो ऐसे संगमयुग की परियाँ जो बाप के साथ-साथ अव्यक्त वतन, मूलवतन में उड़ती रहती हैं। उड़ना माना ध्यान में जाना नहीं, लेकिन बुद्धि के विमान में सदा उड़ते रहो।

28.1.77... .. संकल्प व स्वप्न में भी अपवित्रता का अंशमात्र भी न हो? ऐसी श्रेष्ठ धारणा करने वाले ही सच्चे ब्राह्मण कहलाते हैं, इसी धारणा के लिए ही गायन है 'प्राण जाएँ पर धर्म न जाएँ।' ऐसी हिम्मत, ऐसा दृढ़ निश्चय करने वाले अपने को समझते हो? किसी भी प्रकार की परिस्थिति में अपने धर्म अर्थात् धारणा के प्रति कुछ त्याग करना पड़े, सहन करना पड़े, सामना करना पड़े, साहस रखना पड़े तो खुशी-खुशी से करेंगे? पीछे हटेंगे नहीं? घबरायेंगे नहीं?

31.1.77... .. बाप-दादा हर बच्चे को बेहद का मालिक बनाता है। बेहद की मालिकपन में बेहद की खुशी रहती है। अपने खुशी के खजाने को जानते हो ना? बाप बच्चों के भाग्य की रेखाएं देखते हुए हर्षित होते हैं कि श्रेष्ठ भाग्य बनाने वाले कोटों में कोई-कोई आत्माएं हैं।

2.2.77... .. बाप-दादा को विशेष खुशी होती है। क्यों, जानते हो? आप समान शिक्षक हो ना। जैसे बाप विश्व का शिक्षक, सेवक है वैसे टीचर भी शिक्षक और सेवक हैं। तो समानता वालों को देखकर खुशी होती है। शिक्षक की स्थिति में तो समान हो। बिना सेवा के और कोई बात आकर्षित न करे। दिन-रात सेवा में लगी रहो।

6.2.77... ..श्रीमत में मनमत या परमत मिक्स होती है तो सेवा से जो प्राप्ति होनी चाहिए वो नहीं होती। खुशी, सफलता, शक्ति का अनुभव भी नहीं होगा, श्रीमत की रिजल्ट है सफलता अर्थात् सर्व प्राप्ति।

शक्ति और खुशी प्राप्त करने का आधार है – श्रेष्ठ कर्म। श्रेष्ठ कर्म तभी होते हैं जब कर्म और योग दोनों साथ-साथ हो। सदैव चेक करो कि कर्म करते भी योगी हैं। कर्म करते योग भूलता तो नहीं? जैसे आत्मा और शरीर साथ-साथ है, अलग हो जाए तो मुर्दा बन जाते। वैसे अगर कर्म के साथ योग नहीं तो वो कर्म बेकार हो जाते।

23.4.77... .. ज्ञान का खज़ाना समय की पहचान के कारण अब नहीं तो कब नहीं दे सकते। अब देंगे तो भविष्य में अनेक जन्म प्राप्त होगा। इस आधार पर समय के महत्व के कारण सदा विश्व-सेवाधारी बनने से सेवा का प्रत्यक्ष फल खुशी का खज़ाना अखुट बन जाता

26.4.77... ..अभी जो पाना है, वह अभी ही पाना है। पा लेंगे, नहीं। सारा दिन खुशी में ऐसे खोये हुए रहो जो माया देख भी न सके। दूर से ही भाग जाए। जैसे आजकल की बिजली की शक्ति ऐसा करेन्ट लगाती जो मनुष्य नजदीक से दूर जाकर पड़ता। शॉक आता है ना। ऐसे ईश्वरीय शक्ति माया को दूर फेंक दे। ऐसी करेन्ट होनी चाहिए। लेकिन करेन्ट किसमें होगी? जिसका कनेक्शन ठीक होगा। अगर कनेक्शन ठीक नहीं तो करेन्ट नहीं आयेंगी। कनेक्शन (सम्बन्ध) शब्द का अर्थ यह नहीं, जिस समय याद में बैठते उस समय कनेक्शन जुट जाता, लेकिन चलते-फिरते हर सेकेण्ड कनेक्शन जुटा हुआ हो। ऐसा अटूट कनेक्शन है जो करेन्ट आये? पाण्डवों का टाईटिल है – 'विजयी'। कल्प-कल्प के विजयी हैं, यह पक्का है। यादगार देखकर खुशी होती है ना।

मायाजीत बच्चों को देख बाप-दादा को भी खुशी होती है। जो बार-बार चढ़ते और गिरते रहते तो बाप भी देख रहम दिल होने कारण विशेष उन आत्माओं को रहम की दृष्टि से देखते कि यह कब मायाजीत बन जाए।

28.4.77... .. भाग्य का आधार सर्व प्राप्ति हैं। सर्व प्राप्तियों की निशानी है 'अविनाशी खुशी।' सदा भाग्यवान सदा खुश होगा। भाग्य कम तो खुशी भी कम, खुशी कम अर्थात् सदा भाग्यवान नहीं। तो समझा? सदा सुहागिन और सदा भागिन अर्थात् भाग्यवान की निशानियां क्या हैं? अब तो सब बातें सामने रखते हुए स्वयं को चेक करो कि मैं कौन हूँ?

30.4.77... .. कर्मयोग का फल है, सहजयोग और खुशी जो कुछ करता उसका प्रत्यक्षफल यहाँ ही पद्मगुणा मिलता है। दुनिया में जो कुछ करते हैं खुशी के लिए। यह बेहद की अविनाशी खुशी है। मन के खुश रहने से शरीर की व्याधी भी 'सूली से कांटा' हो जाती है। ज्यादा सोचना नहीं; सोचने से निर्णय शक्ति कम हो जाती है। पेपर आना माना परिपक्व होना। घबराना नहीं। पेपर्स फाउन्डेशन (नींव) को पक्का करते। फाउन्डेशन को कूटते हैं – वह कूटना नहीं लेकिन मजबूत करना है।

3.5.77... ..श्रीमत में अगर मनमत मिक्स योद्धा अर्थात् मरना और मारना; सदा विजयी बनना। करते तो ऐसे मिक्स करने वालों को सज़ा मिलती। सज़ा बाप नहीं देता, लेकिन स्वयं, स्वयं को सज़ा के भागी बना देते हैं। खुशी, शक्ति गायब हो जाना ही सज़ा है ना।

5.5.77 .. 'वरदानी' बच्चे, स्वयं के जमा किए हुए खज़ानों को अर्थात् स्वयं की शक्ति, स्वयं के गुण द्वारा, स्वयं के ज्ञान खज़ाने द्वारा, निर्बल आत्माओं को वरदान द्वारा, हिम्मत, हुल्लास की शक्ति और खुशी का खज़ाना, अपने सहयोग की शक्ति से देकर, उन कमज़ोर को शक्तिशाली बना देते हैं।

जो बाप के सदा साथी हैं वह सदा निर्विघ्न होगा और जो निर्विघ्न होगा वह सदा खुश रहेगा। विघ्न खुशी को गायब करते हैं। अगर मास्टर सर्वशक्तिवान भी विघ्नों से परेशान हों, तो दूसरे बिचारे क्या होंगे! तो मास्टर सर्वशक्तिवान कभी भी परेशान नहीं हो सकते।

11.5.77. .. शुभ चिन्तन का खजाना, जो बाप देते हैं, उस खजाने का बार-बार सुमिरन करना अर्थात् यूज (Use) करना। यूज करने से खुशी होगी। शुभ चिन्तन में रहना भी मनन है। मनन से जो खुशी रूपी मक्खन निकलेगा, वह जीवन को शक्तिशाली बना देगा।

14.5.77. .. स्वमान में स्थित हो, निर्मान बन, सम्मान देना है। यह देना ही लेना बन जाता है। सम्मान देना अर्थात् उस आत्म को उमंग उल्लास में लाकर आगे करना है। अल्प काल का पुण्य, अल्प काल की वस्तु देने से होता है, वा अल्प काल के सहयोग देने से होता है। लेकिन यह सदा काल का उमंग उत्साह अर्थात् खुशी का खजाना वा स्वयं के सहयोग का, आत्मा को सदा के लिए पुण्यात्मा बना देता है। इसलिए यह बड़े ते बड़ा पुण्य हो जाता है। इच्छा है लेकिन प्राप्ति नहीं। जिज्ञासु है, बच्चा नहीं। बच्चा अर्थात् अधिकारी, जिज्ञासु अर्थात् इच्छा रखने वाले। प्राप्त हो – यह इच्छा नहीं, लेकिन प्राप्त है – इस अधिकार की खुशी में रहने वाले। सदा इस अति इन्द्रिय सुख में रहो।

प्रश्न:- कौन सा भोजन आत्मा को सदा शक्तिशाली बना देगा? मान के त्याग में सर्व के माननीय बनने का भाग्य प्राप्त होता है। उत्तर:- खुशी का। कहते हैं ना खुशी जैसी खुराक नहीं। खुशी में रहने वाला शक्तिशाली होगा। ड्रामा की ढाल को अच्छी तरह से कार्य में लाने से सदा खुश रहेंगे, मुरझायेंगे नहीं। अगर सदा ड्रामा ही स्मृति रहे तो कभी भी मुरझा नहीं सकते। सदा खुशी बुद्धि तक, नालेज के रूप में नहीं। कोई भी दृश्य हो अपना कल्याण निकाल लेना चाहिए। तो सदा खुश रहेंगे।

19.5.77... .. ब्राह्मण जीवन है ही खुशी। अगर खुशी नहीं तो कुछ भी नहीं। सदैव अटेंशन रखो, रास्ता जान लो कि किस रास्ते से खजाना लूट जाता है। उस रास्ते को बन्द करो फिर सदा शक्तिशाली अनुभव करेंगे। खजाने को सम्भालना सीखो। सम्भालने का आधार है – ‘अटेंशन।’ तो सदा खुश रहने का अपने से वचन लो। दूसरे के आगे वचन लेने से टेम्पेरी (Temporary; अस्थायी) टाईम रहता। लेकिन स्वयं अपने आप से वचन लो कि कुछ भी हो जाए लेकिन प्रतिज्ञा को कभी नहीं तोड़ेंगे। बाप मिला, वर्सा मिला बाकी क्या रहा? इतनी श्रेष्ठ प्राप्ति वाला कितना नशे में रहेगा? सदा मायाजीत अर्थात् सदा हर्षित। स्वयं और दूसरों की सेवा का बैलेन्स हो तो मेहनत कम और सफलता ज्यादा होगी। अनुभवी मूर्त्त सर्व प्राप्ति-स्वरूप होते हैं।

21.5.77... .. शक्तियों का या गोपिकाओं का यादगार है, ‘खुशी में नाचना।’ पांव में घुंघरु डालकर नाचते हुए दिखाते हैं। जो सदा खुशी में रहते उनके लिए कहते – खुशी में नाच रहा है। नाचते हैं तो पांव ऊपर रखते हैं। ऐसे ही जो खुशी में नाचने वाले होंगे उनकी बुद्धि ऊपर रहेगी। देह की दुनिया व देहधारियों में नहीं, लेकिन आत्माओं की दुनिया में, आत्मिक स्थिति में होंगे। ऐसे खुशी में नाचते रहो। सदा खुशी किसको रहेगी? जो अपने को गोपिका समझेंगे। गोपिका का अर्थ है – जिसकी लगन सदा गोपी वल्लभ के साथ हो। अपने को गृहस्थी माता नहीं लेकिन ‘गोपिका’ समझो, गृहस्थी शब्द ही अच्छा नहीं लगता। गोपिकाओं का नाम लेते ही सब खुश हो जाते हैं। जब नाम लेने से दूसरे खुश हो जाते तो स्वयं गोपिकाएं कितना खुश होंगी! साक्षी होकर सर्व आत्माओं का अपना-अपना पार्ट देखना है।

27.5.77... .. यह सभा देखते हुए भी बाप-दादा को बार-बार सामने विदेशी नज़र आते हैं। विशेष याद के आकर्षण का बहुत फुलफोर्स से मीठी-मीठी बातें करते हैं। हरेक अपने मन के उमंग का संकल्प बाप के आगे ऐसे रख रहे हैं, जैसे सम्मुख बातें की जाती हैं, विदेश में रहने वालों को इतनी खुशी क्यों है? इसका कारण क्या है?

क्योंकि नई-नई फुलवाड़ी समझती हैं कि हम पीछे आने वाले जब तक कोई विशेष कार्य नहीं करेंगे तो हाई जम्प (High jump; ऊँची छलांग) देकर आगे कैसे बढ़ेंगे।? उन्होंनेको यह लगन है हम कुछ विशेष करके दिखावें। जो न हुआ है वह करके दिखावें। इस कारण इस नशे में रात-दिन तन-धन कुछ दिखाई नहीं देता है। लक्ष्य अच्छा रखा है।

29.5.77... .. जैसे कोई अच्छा कर्म किया जाता तो उसकी स्वतः अन्दर से खुशी होती है। बुरा काम किया जाता तो अन्दर से मन जरूर खाता है – चाहे बाहर से बोले नहीं। मनमत पर चलने वाले के मन में हलचल होगी। श्रीमत पर चलने वाला सदा हल्का और खुश होगा। इससे परख सकते हो कि श्रीमत पर हूँ या मनमत पर हूँ? – यह थर्मामीटर है। जब भी मन में हलचल हो, जरा सी खुशी का परसेन्टेज (Percentage) कम हो तो चेक करो – जरूर कोई श्रीमत की अवज्ञा होगी। सदा चैकिंग और चेन्ज। चैकिंग का अर्थ है चेन्ज करना। चैकिंग और चेन्ज यह दोनों ही शक्तियाँ चाहिए। मगर दोनों में से एक की भी कमी है तो संतुष्ट नहीं रह सकते। न स्वयं संतुष्ट रहेंगे न औरों को संतुष्ट कर सकेंगे। ‘चेन्ज होने की शक्ति तब आएगी जब सहनशक्ति होगी। बुद्धि की लाइन क्लीयर होने से परख शक्ति आएगी।’ अच्छा। चेन्ज होने की शक्ति तब आयेगी जब सहन-शक्ति होगी।

31.5.77... .. जो अच्छा पार्ट बजाते तो देखने वाले वंस मोर (Once more; एक बार और) करते। तो सर्व का संतुष्ट रहना अर्थात् वंस मोर करना। सिर्फ स्वयं से संतुष्ट रहना बड़ी बात नहीं लेकिन ‘स्वयं संतुष्ट रहकर दूसरों को भी संतुष्ट करना’ – यह है पूरा सलोगन। वह तब हो सकता जब देही अभिमानी होकर विशेष पार्ट बजाओ। ऐसा पार्ट बजाने में मजा आएगा, खुशी भी होगी।

2.6.77... .. अपनी ड्यूटी सदा स्मृति में रहनी चाहिए कि मैं विश्व कल्याण की इन्चार्ज हूँ। इन्चार्ज अपनी ड्यूटी को नहीं भूलता। लौकिक रीति में भी कोई ड्यूटी वाला अपनी ड्यूटी को अच्छी तरह न सम्भाले तो उसको क्या करते हैं (निकाल देते हैं) यहाँ किसी को भी निकाला नहीं जाता लेकिन स्वतः ही निकल जाता। वहाँ तनखाह कट कर देंगे, या वार्निंग देंगे निकाल भी, लेकिन यहाँ अगर अपनी ड्यूटी ठीक नहीं बजाते तो ड्रामानुसार प्राप्ति की तनखाह कट ही जाती है, खुशी कम हो जाती, शक्ति कम हो जाती। स्वतः ही अनुभव करते – नामालूम खुशी कम क्यों हो गयी? कारण क्या होता? किसी न किसी प्रकार से अपनी ड्यूटी यथार्थ रीति बजाते नहीं। कुछ मिस जरूर करते। तो ड्यूटी पर अच्छी तरह से लगे हुए हो? विश्व कल्याण के सिवाए और कोई संकल्प चले, यह हो नहीं सकता। अगर चलता है तो ड्यूटी पूरी हुई है क्या? तो अपनी ड्यूटी पर सदा कायम रहते हो? कि हद की जिम्मेवारी निभाते इस अलौकिक जिम्मेवारी को भूल जाते हो? सदा यह निश्चय रहे कि मैं विश्वकल्याणकारी हूँ, जितना निश्चय उतना नशा। जो ड्यूटी पर एक्यूरेट रहता है उसको सभी ईमानदार की नज़र से देखते हैं। फेथफुल की नज़र से देखते हैं ना। बाप भी समझते हैं, जो एक्यूरेट अपनी सेवा में रहते हैं वही बाप के फेथफुल हैं।।

7.6.77... .. स्थापना के कार्य में जो आदि रत्न हैं, उन्हें ‘आदि रत्न’ का नशा है? यह नशा भी सदा स्मृति रहे कि – “मैं सदा निश्चय बुद्धि विजयी रत्न हूँ”। खुशी दिलाता है। जिस भाग्य को आज स्वप्न में भी देखने की इच्छा रखते, वह भाग्य अपने प्रैक्टिकल जीवन बिताकर अनुभव किया। आप लोगों ने चेतन्य में अनुभव किया अभी सब चरित्र सुनने वाले हैं; तो यह कम भाग्य है क्या? और किसी भी प्रकार का भाग्य अभी भी प्राप्त कर सकते, लेकिन यह भाग्य प्राप्त नहीं कर सकते। ऐसा भाग्य तो कोटों में कोऊ, कोई में कोई प्राप्त होता है। अगर

आदि में आने वाले और कुछ भी याद न करें, सिर्फ भाग्य का सुमिरण करते रहें कि कल्प-कल्प का नूधा हुआ हमारा पार्ट है तो भी सदा खुश रहेंगे। ब्राह्मणों की विशेषता है खुशी। खुशी नहीं तो ब्राह्मण नहीं।

10.6.77.. .. बाप आते ही, सर्व अधिकारी बना देते। जब आने से ही सब दे देते तो मांगने की क्या आवश्यकता? बिन मांगे मिल जाए तो मांगने की जरूरत ही क्या? मांगने से खुशी नहीं होती। जिनमें ज्ञान नहीं, वे मांगते हैं – “शक्ति दो, मदद दो”। मदद मिलने का रास्ता – ‘हिम्मत।’ ‘हिम्मते बच्चे मददे बाप’। मांगने से मदद देनेवाला बाप नहीं। हिम्मत रखो तो मदद लाख गुणा मिलेगी।

12.6.77.. .. विजयी आत्माओं को सदा विजय की खुशी होगी। विजय वालों को दुःख की लहर नहीं होगी। दुःख होता है हार में। विजयी रत्न सदा खुश अर्थात् हर्षित रहते हैं।

22.6.77.. .. सदैव अपने को परमधाम निवासी वा पार्ट बजाने लिए मधुबन निवासी समझो। मधुबन निवासी समझने से नशा वा खुशी रहती है। मधुबन में कितनी भी लकलीफ में हो, फिर भी यहाँ रहना पसन्द करते। घर में भल डनलप के गद्दे हो फिर भी यहाँ अच्छा लगता। क्योंकि मधुबन निवासी बनने से ऑटोमेटिकली सहज और निरन्तर योगी बन जाते। मधुबन की महिमा भी है। मधुबन और मधुबन की मुरली मशहूर है। इसलिए मधुबन में आना सब पसन्द करते हैं। तो सदैव अपने को मधुबन निवासी समझकर चलना। तो सहज योगी की स्थिति रहेगी। मधुबन याद आने से स्थिति सदा खुश हो जाएगी।

30.6.77.. .. जो किसी भी आधार पर परिवर्तन होता है, उसको जन्म-जन्म प्रालब्ध भी किसी आधार पर ही रहेगी। उसका कमाई का खाता जिस बात में जितनों का आधार लेते हैं वह शेयर्स (Shares; हिस्से) में बंट जाता है। स्वयं का खाता जमा नहीं होता। इसलिए जमा होने की शक्ति और खुशी से सदा वंचित रहते हैं। इसलिए सदा लक्ष्य रखो कि स्वयं को परिवर्तन होना है।

महादानी बनना अर्थात् स्वयं को मालामाल करना, दूसरों को दान ही देना है। जितनी आत्माओं को सुख वा शक्ति का वा ज्ञान का दान देते हो, उतनी आत्माओं की प्राप्ति की आवाज़ या सुक्रिया जो निकलता, वह आपके लिए आशीर्वाद का रूप हो जाता। उनकी आशीर्वाद आपको आगे बढ़ाती रहेगी। इतनी आत्माओं की आशीर्वाद मिलने से अपार खुशी रहेगी। इसलिए चारों ही सब्जेक्ट में महादानी बनने के लिए अमृतवेले अपना प्रोग्राम बनाओ। एक भी सब्जेक्ट में कम न होना चाहिए।

7.1.78.. .. जितनी आप लोगों को बाप के पाने की व अपने परिवार को पाने की खुशी है, उससे ज़्यादा बाप को खुशी है। क्योंकि बाप जानते हैं कि बच्चे ही घर का श्रृंगार हैं। जैसे श्रृंगार के बिना कोई भी व्यक्ति या स्थान अच्छा नहीं लगता ऐसे ही बाप को भी बच्चों के श्रृंगार के बिना अच्छा नहीं लगता।

सदैव यही खुशी के गीत गाते रहो कि जो पाना था, वह पा लिया। इस खुशी में रहने से किसी भी प्रकार की उलझन व उदासी आ नहीं सकती अर्थात् मायाप्रूफ हो जायेंगे। ऐसे मायाप्रूफ बन जाओ जो आपका एग्ज़ाम्पल बाप-दादा सभी को दिखावें।

मास्टर सर्वशक्तिवान अर्थात् विजयी रत्न। माया अन्दर से बिल्कुल ही शक्तिहीन है, उसका बाहर का रूप देख घबराओ नहीं, उसको ज़िन्दा समझ मूर्च्छित न हो जाओ, माया मूर्च्छित हुई पड़ी है। लेकिन कभी-कभी मूर्च्छित को देखकर भी मूर्च्छित हो जाते हैं। अब उसे खुशी-खुशी विदाई दो। नालेजफुल की स्टेज पर रहो तो कभी घोखा नहीं खा सकते।

13.1.78... जैसे बीज अपने हाथ में है तो वृक्ष तो है ही ना। जिसको ढूँढते थे उसको पा लिया। घर बैठे भगवान मिला। तो कितनी खुशी होनी चाहिए। भगवान ने मुझे अपना बनाया, इसी खुशी में रहो तो कहीं भी आँख नहीं डूबेगी। सामने देखते भी नज़र नहीं जायेगी। बाप मिला सब कुछ मिला यही सबसे बड़ी खुशी है, इसी खुशी में मन से नाचते रहो। इससे बड़ी खुशी की बात है ही क्या? इसलिए गायन है अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोप-गोपियों से पूछो।

सदा अपने को खुशानसीब समझते हो? सारे विश्व के अन्दर सबसे श्रेष्ठ नसीब अर्थात् तकदीर हमारी है, ऐसा निश्चय रहता है। हमारे जैसा खुशानसीब और कोई हो नहीं सकता। बाप ने स्वयं आकर अपना बनाया। इस भाग्य का वर्णन करते सदा खुशी में नाचते रहो। उन्हीं का नसीब क्या है? अभी-अभी सुख होगा, अभी-अभी दुःख होगा, लेकिन आपका नसीब अविनाशी है। सदा ऐसे आनन्द स्वरूप नसीब वाले हो। जो स्वप्न में भी नहीं था वह प्राप्ति हो गई, बाप मिला सब-कुछ मिला। इसी खुशी में रहो तो सदा समर्थी स्वरूप रहेंगे।

बाप द्वारा सदा खुश रहने का साधन मिला हुआ है ना। कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन अपने पास साधन हैं तो सदा खुश रहेंगे। सिर्फ बाप को याद करने का साधन ही बहुत बड़ा है। बाबा कहना और खुशी प्राप्त होना। ऐसा साधन सदा यूज करते रहो। बाबा शब्द याद करना अर्थात् स्विच (Switch) ऑन (On) होना। जैसे स्विच ऑन करने से सेकेण्ड में अन्धकार भाग जाता है। ऐसे ही बाबा मधुबन में आना अर्थात् कमाई की खान इकट्ठा करना। कहना अर्थात् अन्धकार या दुःख-अशान्ति, उलझन, उदासी, टेन्शन सबकी सेकेण्ड में समाप्ति हो जाती है, ऐसा मन्त्र बाप ने दिया है। एक शब्द का तो मन्त्र है। सिर्फ बाबा। कैसा भी समय हो यह मन्त्र एक सेकेण्ड में पार कर लेने वाला है। सिर्फ इस मंत्र को विधिपूर्वक समय पर कार्य में लगाओ। यह एक शब्द का मन्त्र वण्डरफुल (Wonderful) जादू करने वाला है। इस एक शब्द के मन्त्र द्वारा जो चाहो वह ले सकते हो। चाहे सुख-शान्ति, चाहे शक्ति आनन्द जो चाहो सब प्राप्ति कराने वाला मंत्र है इसलिए जादू मंत्र कहते हैं।

16.2.78... एवर हैप्पी अर्थात् सदा खुश। कैसा भी दुःख की लहर उत्पन्न करने वाला वातावरण हो, नीरस वातावरण हो, अप्राप्ति का अनुभव कराने वाला वातावरण हो, ऐसे वातावरण में भी सदा खुश रहेंगे और अपनी खुशी की झलक से दुःख और उदासी के वातावरण को ऐसे परिवर्तन करें जैसे सूर्य अन्धकार को परिवर्तन कर देता है। अन्धकार के बीच रोशनी करना, अशान्ति के अन्दर शान्ति लाना, नीरस वातावरण में खुशी की झलक लाना इसको कहा जाता है एवर हैप्पी। ऐसी सेवा की आवश्यकता अभी है न कि भविष्य में।

जैसे अभी खुशी में नाच रहे हो वैसे सदा खुशी में नाचते रहो। कोई भी परिस्थिति आये तो परिस्थिति के ऊपर भी नाचते रहो। जैसे चित्र दिखाते हैं सर्प के ऊपर भी नाच रहे हैं। यह जड़ चित्र आप सबका यादगार है। जिस समय भी कोई परिस्थिति आये तो यह चित्र याद रखना तो परिस्थिति रूपी सांप पर भी डान्स करने वाले हैं। यही सांप आपके गले में सफलता की माला डालेंगे।

14.11.78... जैसे ताजमहल में गाइड्स कितने रमणीक ढंग से ताजमहल की हिस्ट्री सुनाते हैं ऐसे चरित्र सुनाओ तो उन्हें सहज ही याद रहेगी और उस सेवा का फल आपको मिल जायेगा। जो भी आवे उसको खुशी-खुशी से, उमंग से, लगन से, महत्व में स्थित हो करके अगर महत्व सुनाओ तो बहुत अधिक फल ले सकते हो – ऐसी सेवा करने से बहुत खुशी रहेगी। तो सेवा भी रही, याद भी रही और प्राप्ति भी रही और क्या चाहिए? ऐसे लकी हो मधुबन निवासी।

29.11.78... आज से सदा सन्तुष्ट और प्रसन्नता का विशेष वरदान स्वयं भी लो और औरों को भी दो। ऐसे ही बाप की वा अपने आपकी प्रशन्सा कर सकेंगे। प्रशन्सा का सदा प्रसन्न रहो और सदा सर्व को प्रसन्न करो। श्रेष्ठ साधन भी हर ब्राह्मण की प्रसन्नता है। कोई भी कार्य की प्रशन्सा सर्व की प्रसन्नता पर आधार रखती है। इस यज्ञ की अन्तिम आहूति सर्व ब्राह्मणों की सदा प्रसन्नता। प्रत्यक्षता अर्थात् प्रशन्सा का आवाज़ गूँजेगा अर्थात् विजय का झण्डा लहरायेगा। समझा अब क्या करना है। सदा प्रसन्न रहो और सदा सर्व को प्रसन्न करो।

कुमारों का चित्र सदा बाप के साथ रहने का दिखाया है, तुम्हीं से खेलूं, तुम्हीं से खाऊं - यह चित्र देखा है सखे रूप से। सखा अर्थात् साथ। तो कुमारों को सखा रूप से साखी रूप दिखाया है, ग्वालबाल के रूप में दिखाया है ना। तो अपने को सदा बाप के साथी समझकर तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से बैठूं... सभी कुमार युगल मूर्त ही चलते हो। युगल हो या अकेले हो? कभी अकेले का संकल्प नहीं करना। साथी को सदा साथ रखो तो सदा खुश रहेंगे और दिन-रात खुशी में नाचते अपना और दूसरों का भविष्य बनायेंगे। अकेला कब न समझना - अकेला समझा और माया आई। कुमारों की यही कम्पलेन है कि हम अकेले हैं। यह साथ तो दुःख सुख का साथी है। वह साथ तो माथा खराब कर देता। तो युगल हो ना! प्रवृत्ति वाले नहीं हो, सुख की प्रवृत्ति मिल जाए और क्या चाहिए। हमारे जैसा साथी किसी को मिल नहीं सकता। साथी को साथ रखना - साथ रखेंगे तो मन सदा मनोरंजन में रहेगा।

3.12.78... स्वयं का परिवर्तन ही अन्य का परिवर्तन है। इसमें पहले मैं, ऐसा सोचो - इस मरजीवा बनने में ही मज़ा है। इसी को ही महाबली कहा जाता है। घबराओ नहीं। खुशी से मरो- यह मरना तो जीना ही है, यही सच्चा जीवदान है।

चलता-फिरता चैतन्य आकर्षक करने वाला बोर्ड “खुशी का चेहरा” - जो भाग्यशाली होते हैं वह सदा खुश आबाद होते हैं। जो भी देखे तो खुशी का खज़ाना देखते हुए खज़ाने के तरफ आकर्षित हो जाये, वैसे भी देखो कोई अमूल्य चीज़ रखी होगी तो न चाहते भी सब आकर्षित होते हैं, तो जिन्हों के पास खुशी का खज़ाना है, तो उसके पीछे तो स्वतः ही सर्व आकर्षित होंगे। खुशी का चेहरा चलता-फिरता चैतन्य आकर्षित करने वाला बोर्ड है। जहाँ जायेगा बाप का परिचय देगा। खुशी का चेहरा देखेंगे तो बनाने वाले की याद ज़रूर आयेगी जब एक बोर्ड इतनों को परिचय देता आप इतने चैतन्य बोर्ड कितनों को परिचय देते होंगे - इतने आकर्षण करने वाले बोर्ड तैयार हो जाएं तो और भी जगह बड़ी करनी पड़ेगी

अपने को ऐसे श्रेष्ठ श्रृंगार समझकर सदा खुशनसीब रहते हो? ऐसा नसीब या ऐसी तकदीर सारे कल्प में भी किसी की नहीं हो सकती। नसीबवान तो सदा खुशी में नाचते रहेंगे। बाप-दादा को जितनी खुशी होती है उससे ज्यादा बच्चों का होनी चाहिए, भटकते हुए को ठिकाना मिल जाए या प्यासे की प्यास बुझ जाये तो वह खुशी में नाचेगा ना। ऐसी खुशी में रहो जो कोई उदास आपको देखे तो वह भी खुश हो जाए, उसकी उदासी मिट जाए।

5.12.78... सदा अपने भाग्य का सिमरण करते खुशी में रहते हो? वाह मेरा भाग्य! यह गीत सदा मन में बजता रहता है ? वाह बाप, वाह ड्रामा और वाह मेरा पार्ट - सदा इसी स्मृति में हर कार्य करते ऐसे अनुभव होता है -- जैसे कर्म करते हुए भी कर्म के बन्धन से मुक्त, सदा जीवन मुक्त है। सतयुग की जीवनमुक्ति का वर्सा तो प्राप्त होगा ही लेकिन अभी के जीवनबन्ध से जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव सतयुग से भी ज़्यादा है। तो अभी भी अपने ज्ञान और योग की शक्ति से जीवनमुक्त अवस्था का अनुभव करते पुरुषार्थ को मनोरंजन समझो।

7.12.78... कोई भी साथी समय पर वा सदा नहीं पहुँच सकता लेकिन बाप-दादा सदा और सेकेण्ड में पहुँच सकते। यह जन्म-जन्म का साथ है, भविष्य में भी बाप का तो साथ रहेगा ना। शिव बाप साक्षी हो जायेंगे और ब्रह्मा

बाप साथी हो जायेंगे। अभी दोनों साथी हैं। ऐसे अनुभव करने वाले सदा खुश रहते हैं, जो पाना था वह पा लिया तो खुशी होगी ना - पा लिया हैबाकी है बाप समान स्वयं को बनाना, इसमें नम्बरवार हैं।

स्वप्न भी सुख स्वरूप हो क्योंकि सुख का सागर अपने समीप सम्बन्ध में आ गये, तो सदा सुख में, खुशी में रहो कभी रोना नहीं। सतयुग में आपकी प्रजा रोयेगी क्या? तो होवनहार राजा क्यों रोते। शक्तियाँ तो एक सैम्पल हैं अगर सैम्पल रोने वाला होगा तो और सौदा कैसे करेंगे – इसलिए कभी नहीं रोना, न आंखों से रोना न मन से।

10.12.78... .. जिस भाग्य के लिये कल्प पहले की यादगार में भी अब तक एक सेकेण्ड का समीप रहना भी महान समझते हैं – तो जो प्रैक्टिकल में हैं उन्हीं की खुशी, उन्हीं का भाग्य कितना श्रेष्ठ है। श्रेष्ठता को सामने रखने से व्यर्थ बातें समाप्त हो जाती हैं।

12.12.78... .. जो पद्मापद्म भाग्यशाली आत्मायें हैं वह सदा खुशी के झूले में झूलती हैं, उनके बुद्धि रूपी पाँव नीचे नहीं आते। जो लाडले सिकीलधे बच्चे होते हैं वह सदा गोदी में रहते हैं, नीचे पाँव नहीं रखते - गलीचे पर रखते हैं। आप पद्मापद्म भाग्यशाली सिकीलधे बच्चों का भी बुद्धि रूपी पाँव सदा देहभान या देह की दुनिया की स्मृति से ऊपर रहना चाहिए।

परोपकारी अर्थात् सदैव विशेष रूप से अपनी मन्सा अर्थात् संकल्प शक्ति द्वारा, वाणी की शक्ति द्वारा, अपने संग के रंग के द्वारा, सम्बन्ध के स्नेह द्वारा, खुशी के अखुट खज़ाने द्वारा अखण्ड दान करता रहेगा। कोई भी आत्मा सम्पर्क में आवे तो खुशी के खज़ाने से सम्पन्न होके जाए। ऐसे अखण्ड दानी होंगे।

8.1.79... .. जो यहाँ अतिइन्द्रिय सुख के झुले में बाप के साथ-साथ सदा झूलते हैं वह वहाँ भी झूले में साथ झूलेगे। जो यहाँ अनेक प्राप्तियों की खुशी में नाचते हैं वह वहाँ भी साथसाथ रास करेंगे।

12.1.79... ..आप सबके पास सिर्फ अब के लिए नहीं लेकिन अनेक जन्मों के लिए भी जमा है – वह कौन-सा खज़ाना मिला है? सबसे बड़े से बड़ा खज़ाना है खुशी का खज़ाना। इसी खुशी के लिए लोग तड़फते हैं। और आप सब सदा खुशी में नाचने वाले हो। आप सबके यादगार चित्र में भी खुशी का पोज़ दिखाया हुआ है – अपना चित्र याद है ना! अमृतवेले से लेकर इस खुशी के खज़ाने को यूज करो – सोचो – वा अपने आप से बातें करो – आँख खुलते कौन सामने आता है! पहले-पहले संकल्प में किससे मिलन होता है – विश्व के रचता, सर्व खजानों के दाता, सर्व वरदानों के दात बीज से मिलन होता है। जिसमें सारा वृक्ष समाया हुआ दूसरा खुशी का खज़ाना, इतनी सिकीलधे श्रेष्ठ आत्मायें हो जो स्वयं भगवान आपको पढ़ाने के लिए परमधाम से आते हैं। लण्डन वा अमेरिका से नहीं आते हैं – इस लोक से भी पार जहाँ तक साइन्स वाले स्वप्न में भी पहुँच नहीं सकते ऐसे परमधाम से स्पेशल आपके पढ़ाने के लिए आते हैं। और फिर पढ़ाने की फी नहीं लेते। और ही पढ़ाई की प्रालबध स्वर्ग का स्वराज्य स्वयं नहीं लेते, आपको देते हैं। तो इससे बड़ी खुशी और क्या होती है। इस स्मृति से खज़ाने को यूज करो – इससे आगे चलो। कार्य करते हुए कर्मयोगी का पार्ट बजाते कर्मयोगी अर्थात् सदा बाप के साथ रहते हुए हर कार्य करने वाला कर्मयोगी के समय भी चाहे कोई भी कर्म कर रहे हो। लौकिक वा अलौकिक लेकिन आलमाइटी अथार्टी आपका साथी अर्थात् फ्रैन्ड बनकर हर समय साथ निभाते हैं। ऐसा फ्रैन्ड फिर कभी मिल नहीं सकता। कभी फ्रैन्डशिप निभाते हैं – कभी कम्बाइन्ड युगल रूप निभाते हैं – ऐसा कम्बाइन्ड स्वरूप विचित्र युगल रूप जो सदा आपको कहते हैं – सारा बोझ हमें दे दो – और तुम सदा हल्के रहो – जहाँ भी कोई मुश्किल कार्य आये तो वह मुझे अर्पण कर दो तो मुश्किल सहज हो जावेगा। ऐसे कर्मयोग के पार्ट में सदा साथी पन के खज़ाने को वा

सदा साथ के खुशी को यूज करो – और आगे चलो – जब कार्य से खाली हो जाओ तो सबसे बड़े ते बड़ा मनोरंजन का धन प्राप्त है – अगर आपको सैर करने की रुचि है वा देखने की रुचि है, पढ़ने की रुचि है, श्रृंगार की रुचि है, डान्स की रुचि है, रूह-रूहाण करने की रुचि है जो भी रुचि हो वह सब मनोरंजन के साधन आप के साथ हैं। देखने चाहते हो तो स्वर्ग को देखो – संगमयुग की श्रेष्ठता को देखो। अपने और बाप के कर्तव्य की अलौकिक कहानी का ड्रामा देखो। सैर करना चाहते हो तो तीन लोकों का सैर करो। श्रृंगार करना चाहते हो तो हर गुण के विस्तार से स्वयं को सजा लो। ड्रामा देखने चाहते हो तो पांच हजार वर्ष का ड्रामा देखो। हिस्ट्री पढ़ने चाहते हो तो अपने 84 जन्मों की हिस्ट्री देखो। रूह-रूहाण करना चाहते हो तो रूह बन रूहों के रचता से रूह-रूहाण करो। और क्या चाहिए। इन सब साधनों से सदा अपने को खुश रखो अर्थात् खजाने को यूज करो। भोजन बनाते हो, भोजन बनाने के समय पहले भोग लगाना है अर्थात् प्यारे ते प्यारे बाप को स्वीकार कराना है – इस स्मृति से भोजन बनाओ कि किसको खिलाना है! आजकल की दुनिया में अगर कोई प्राईमिनिस्टर वा प्रेजीडेन्ट आपके पास खाने आते हैं कितनी खुशी होती है लेकिन बाप के आगे यह सब क्या है! तो सदा बाप आपके साथ भोजन खाते हैं – भक्त बिचारे बार-बार घण्टियाँ बजा-बजा कर थक जाते हैं, बुलाते-बुलाते भूल भी जाते हैं – लेकिन बच्चों के साथ बाप का वायदा है सदा साथ रहेंगे। तुम्हीं से खावें, तुम्हीं से बैठें, तो इससे बड़ी खुशी और क्या चाहिए – तो भोजन के समय भी तुम्हीं से खाऊं यह सलोगन याद रखो – ऐसे खुशी के खजाने को यूज करो। और आगे चलो। अभी दिन का अन्त समय आ गया – अर्थात् रात का समय आया – अब रात को क्या करेंगे? सोने के पहले सारे दिन के समाचार की लेन-देन चाहे कम्बाइन्ड रूप में करो – चाहे बाप के रूप में करो – एक दिन का समाचार दो और दूसरे दिन का श्रेष्ठ संकल्प और कर्म की प्रेरण लो – सब समाचार की लेन-देन करना अर्थात् हल्के बन जाना। जैसे रात को हल्की ड्रेस से सोते हैं ना – ऐसे बुद्धि को हल्का करना अर्थात् हल्की ड्रेस पहनना है – ऐसे तैयार हो साथ में सो जाओ – अकेले नहीं सोओ – अकेले होंगे तो माया चान्स लेगी, इसलिए सदा साथ रहो। अकेले रहने से डर भी लगता है, निर्भय भी हो जावेंगे। आप निर्भय रहेंगे ओर माया डराएगी। तो ऐसे सदा साथ के खुशी के खजाने को सारी रात के लिए यूज करो। अब बताओ सारे दिन में श्रेष्ठ खुशी के खजाने प्राप्त होते हुए भी श्रेष्ठ आत्मा कभी उदास हो सकती है! वा अन्य कोई मनोरंजन के तरह वा अल्पकाल के खजानों की तरफ आकर्षित हो सकती है! ऐसी श्रेष्ठ अर्थात् सम्पन्न आत्मायें हैं। आपके नाम से भी जब अनेक भक्त अल्पकाल की खुशी में आ जाते हैं। आपके जड़ चित्रों को देख खुशी में नाचने लगते हैं। ऐसे खुशानसीब आप सब को खजाने बहुत मिले हैं, अब सिर्फ यूज करो अर्थात् चाबी लगाओ। चाबी होते हुए भी समय पर नहीं मिलती है – समय पर खो जाती है इसलिए सदा सामने रखो अर्थात् सदा स्मृति में रखो। बार-बार स्वरूप स्मृति को रिफ्रेश करो। खजाना क्या और चाबी क्या! हर कर्म में जैसे सुनाया वैसे प्रैकिकल में लाओ – अर्थात् स्मृति को स्वरूप में लाओ। समझा – क्या करना है। अच्छा

जिसके सर्व सम्बन्ध एक बाप के साथ होंगे उसको और सब सम्बन्ध निमित्तमात्र अनुभव होंगे। वह सदा खुशी में नाचने वाले होंगे। कभी भी थकावट का अनुभव नहीं करेंगे बाप समान स्टेज वाले सदा अथक होंगे, थकेंगे नहीं। सदा बाप और सेवा इसी लगन में मगन होंगे।

16.1.79... सभी सदा संगमयुग के श्रेष्ठ भाग्य को सुमिरण कर हर्षित् रहते हो? संगमयुग का भाग्य और कोई भी युग में पा नहीं सकते। संगमयुग का एक-एक सेकेण्ड अति भाग्यशाली है। एक सेकेण्ड कई जन्मों का भाग्य बनाने के निमित्त बनता है। तो ऐसे श्रेष्ठ भाग्य को सदा याद रखते, अन्दर में भाग्य को देख करके सदा खुशी में

नाचते रहो। वाह मेरा भाग्य – ऐसे अन्दर की खुशी बाहर दिखाई देती है दूसरे भी देखने वाले अनुभव करें कि इन्हों को कुछ मिला है, कुछ पाया है। ऐसे सदा खुश रहो। सदा अटेन्शन रखो तो माया खुशी का खज़ाना छीन नहीं सकती।

30.1.79... .. ओम मण्डली सारे वर्ल्ड में रिचेस्ट है, मालामाल है, सब भूख मर सकते हैं लेकिन बाप के बच्चे भूखे नहीं मर सकते। क्योंकि 'अमरभव' का वरदान मिला हुआ है। जो वरदानी हैं वह सदा मालामाल हैं तो ऐसा नशा और खुशी सदा कायम रहे, कभी-कभी नहीं। अमरभव अर्थात् निरन्तर सदा खुशी में बाप के साथ समानता की रास खेलते रहो। बाप के साथ रास भी वही खेलेंगे जो समान होंगे। सदा समानता ही रास है तो ऐसे रास खेलते हो? जो यहाँ सदा बाप के समान रहते हैं वा खुशी में नाचते रहते हैं वही फिर भविष्य में भी साथ-साथ रास करेंगे। ब्रह्मा बाप के साथ पार्ट बजाना, तो बाप समान होंगे तब तो पार्ट बजायेंगे ना।

12.11.79... .. टीचर्स हैं बाप की फ्रैन्डस। जब दो फ्रैन्डस आपस में मिलते हैं तो कितने खुश होते हैं तो टीचर्स हैं सबसे समीप फ्रैन्डस। तो खुशी होगी ना? फ्रैन्डस बनते ही तब हैं जब समान होते हैं। तो समान हो ना?

14.11.79.. टीचर्स हैं बाप की फ्रैन्डस। जब दो फ्रैन्डस आपस में मिलते हैं तो कितने खुश होते हैं तो टीचर्स हैं सबसे समीप फ्रैन्डस। तो खुशी होगी ना? फ्रैन्डस बनते ही तब हैं जब समान होते हैं। तो समान हो ना? .

खुशी गुम होने का कारण चलते-चलते करते क्या हो! दो लड्डू हाथ में उठाने की कोशिश करते हो। लेने के लिए तो तैयार हो जाते हो लेकिन छोड़ने वाली चीज़ भी फिर ले लेते हो। इसलिए विस्तार में जाने से सार को छोड़ देते हो। बीच में से बीज खिसक जाता है, यह मालूम नहीं पड़ता इसलिए फिर खाली हो जाते हो और मेहनत करते हो अपने को भरपूर करने की, लेकिन बीज छूट जाने के कारण प्रत्यक्षफल की प्राप्ति हो नहीं पाती है इसलिए थक जाते हो। भविष्य के दिलासे से अपने को चलाते रहते हो। प्रत्यक्षफल की बजाय भविष्य फल के उम्मीदवार बनकर चलते हो, इसलिए खुशी की झलक सदा नज़र नहीं आती। मेहनत की रेखायें ज़्यादा नज़र आती हैं, प्राप्ति की रेखायें कम नज़र आती हैं। त्याग की महसूसता ज्यादा होती है भाग्य की महसूसता कम होती है। अब क्या करना है? वर्तमान समय में जो आपके सम्पर्क में आते हैं, वे लोग भी समय प्रति समय अब भी यह बोल बोलते हैं कि आप लोगों का त्याग बहुत बड़ा है लेकिन अब यह बोल व्यक्त कहें कि आप लोगों का भाग्य बहुत बड़ा है। त्याग उनको दिखाई देता है लेकिन भाग्य अभी तक दिखाई नहीं देता है। भाग्य अभी गुप्त है। त्याग की महिमा बहुत करते हैं, इतनी ही भाग्य की महिमा करें तो सेकेण्ड में स्वयं का भी भाग्य खुल जायेगा। त्याग देख करके सोच में पड़ जाते हैं। भाग्य देखकर स्वयं भी भाग्यशाली बन जावेंगे। अब समझा, क्या चेन्ज करना है?

अमरनाथ में आपका ही यादगार है। एक-एक बच्चे की कितनी महिमा करें। जितनी आप सबने द्वापर से बाप की महिमा गाई है उतनी बाप अभी आप बच्चों की गाते हैं। रोज़ नया टाइटिल देते हैं तो महिमा हुई ना। बहुत-बहुत लकी हो। जिन माताओं को दुनिया वालों ने ठुकराया उन्हें बाप ने ठाकुर बना दिया। तो माताओं को तो बहुत खुशी होनी चाहिए। खुशी-खुशी में चलने से थकावट फील नहीं होगी।

माताओं को देख कर बहुत खुशी होती है। मातायें गिरीं तो चरणों तक, चढ़ती हैं तो एकदम सिर का ताज। बहुत गिरा हुआ बहुत ऊंचा चढ़ जाए तो खुशी होगी ना। माताओं के लिए तो है ही एक खुशी का झूला। सदा उसी झूले में झूलते रहो। माताओं को बाप द्वारा विशेष आगे जाने की लिफ्ट मिली है। थोड़ा-सा पुरुषार्थी अपना और हज़ार गुणा मदद बाप की। एक कदम आपका और हज़ार कदम बाप के। माताओं को सदा विशेष खुशी होनी चाहिए

कि क्या से क्या बन गई। ना-उम्मीद से सर्व उम्मीदों वाली जीवन बन गई, पास्ट की जीवन में क्या थे अब क्या बन गये। दुनिया भटक रही है और आप ठिकाने पर, तो खुशी होनी चाहिए ना?

सदा इसी नशे में रहो हम कल्प पहले वाली गोपियाँ हैं। बाप मिला गोया सब-कुछ मिला। कोई अप्राप्त वस्तु है ही नहीं। बाप के साथ सदा खुशी में नाचती रहो, दुःख का नाम-निशान भी खत्म।

माताओं को देख करके बाप को भी खुशी होती है। जिन्हें दुनिया ने ना उम्मीदवार बनाया, बाप ने उन्हें ही सिर का ताज बना दिया। उन्होंने पुरानी जुत्ती समझा और बाप ने सिर का ताज बनाया तो कितनी खुशी होनी चाहिए। पाण्डवों का भी सदा सहयोगी और सदा साथ रहने का गायन है। यादगार में देखो गोपी वल्लभ के साथ ग्वाल-बाल दिखाये हैं। हर कार्य में सहयोग और सदा साथ रहने वाले हो ना? सभी याद और सेवा दोनों में तत्पर रहो। सेवा से भविष्य प्रारब्ध बनेगी और याद से वर्तमान खुशी में रहेंगे। कोई अप्राप्त वस्तु ही नहीं। सदा तृप्त।

19.12.79... .. भक्तिमार्ग में कीर्तन करते हैं तो भी कितना खुश होते हैं। तो आप सभी भी बाप द्वारा की गई महिमा के गीत सदा गाते रहो। पहले हम क्या थे और बाप ने क्या बना दिया, उसी का सुमिरण करते सदा हर्षित रहो। इसी सुमिरण में समर्थी समाई हुई है।

सितारा कहा ही उसको जाता है जो सदा जगमगाता रहे। जो बाप द्वारा शक्तियाँ व ज्ञान का खज़ाना मिला है उसमें जगमगाते रहो। ऐसे हो? बादलों में छिपने वाले तो नहीं हो? सदा अपनी चमक से विश्व को रोशन करने वाले हो ना? खुशी-खुशी से पुरानी दुनिया से किनारा कर लिया है। अब पुरानी दुनिया के निवासी नहीं हो, संगम युगी निवासी हो।

24.12.79... .. सभी किशमिश जैसे मीठे-मीठे बच्चों को नये साल की नई उमंगें और नये खुशी की तरंगों से भरपूर खुशी की मुबारक हो। सारा वर्ष ऐसे सदा साथ का अनुभव करेंगे। क्या क्रिसमस का दिन सदा के लिए बाप के साथ कम्बाइन्ड रहने का वरदान लिए हुए लाया है? कम्बाइन्ड भव। जैसे आज के दिन दो-दो मिलकर डान्स करते हो ना, वैसे सारा वर्ष बाप और आप खुशी में नाचते रहेंगे। सर्वशक्तियों की पैकेट बाप-दादा सौगात दे रहे हैं। मास्टर सर्वशक्तिवान बन सदा माया जीत रहने की बड़े-से-बड़ी सौगात है।

7.1.80... .. संगमयुगी सर्व ब्राह्मण बेगमपुर के बादशाह हैं। सतयुगी बादशाही इस संगमयुग की बेगमपुर की बादशाही के आगे कुछ भी नहीं है। वर्तमान समय की प्राप्ति का नशा, खुशी, सतयुग की बादशाही से पद्मगुणा श्रेष्ठ हैं।

14.1.80... .. डॉक्टर्स तो बहुत सेवा कर सकते हैं – क्यों? क्योंकि पेशेन्ट उस समय बिल्कुल भिखारी के रूप में आते हैं। अगर उस समय डाक्टर उन्हें झूठी दवाई भी दे देते, पानी भी दे देते तो भी भावना के कारण वह ठीक हो जाते हैं। उन्हें खुशी की खुराक मिल जाती, जिससे वह ठीक हो जाते, दवाई से ठीक नहीं होते, खुशी से ठीक हो जाते। तो डॉक्टर्स के पास भिखारी के रूप में आते हैं, दो घड़ी के लिए भी दर्द मिटाओ, उन्हें आप उस समय क्या भी सुनाओ तो सुनने के लिए तैयार हो जाते हैं। तो जैसे इन्जेक्शन लगाकर सेकेण्ड में उसके दर्द की सुधबुध भुला देते हो, ऐसे ज्ञान का इन्जेक्शन भी लगाओ जो पुराने संस्कारों की सुधबुध भूल जाएँ।

21.1.80... .. जैसे स्थूल गीत भी आपको जगाता है ना। यह अविनाशी गीत गाते रहो। “पाना था सो पा लिया” और प्राप्ति की खुशी में नाचते रहो। गाते रहो, नाचते रहो तो घुटके और झुटके खत्म हो जायेंगे। ऐसे डबल प्रूफ प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करेंगे।

ज्ञान का, शक्तियों का खज़ाना मिला ना। तो अधिकार साथ में रहता है, ना कि बैंक में रहता है? बैंक में रखेंगे तो खुशी नहीं होगी। बैंक में रखना अर्थात् यूज़ न करना, किनारे रखना। जितना यूज़ करेंगे उतना खुशी बढ़ेगी। इस खज़ाने को साथ में रखने से कोई भी खतरा नहीं है, जब महादानी वरदानी बनना है तो लॉकर में कैसे रखेंगे। इसलिए रोज़ अपने मिले हुए खज़ानों को देखो और यूज़ करो – स्व के प्रति भी, औरों के प्रति भी।

अब दिलशिकस्त नहीं होना, दिलखुश रहना तो आपकी खुशी सबको स्वतः ही आकर्षित करेगी।

25.1.80... .. जो बाप के बने वह अमूल्य रतन हो गये। सारे विश्व के अन्दर सर्वश्रेष्ठ आत्मा हो गये। इतनी खुशी रहती है? जैसे शरीर का आक्वूपेशन सदा याद रहता है वैसे आत्मा का आक्वूपेशन भी कभी भूलना न चाहिए। संगमयुग का श्रेष्ठ भाग्य ही है – बाप के अमूल्य रतन बनना।

30.1.80... .. इस संगमयुग पर भाग्य बनाने की नॉलेज रूपी चाबी मिलती है। चाबी लगाओ और जितना भाग्य बनाना चाहो उतना भाग्य का खज़ाना ले लो। सभी चाबी लगाने में तो होशियार हो ना। चाबी मिली और मालामाल बन गये। जितना मालामाल बनते जाते हैं उतना स्वतः ही खुशी रहती है। तो सभी ऐसे अनुभव करते हो कि जैसे कोई झरने से पानी निकलता रहता है वैसे खुशी का झरना सदा बहता ही रहे – अखुट और अविनाशी।

6.2.80... .. ऐसे ही बाप-दादा द्वारा प्राप्त हुई सर्व प्राप्तियों के, गुणों के सदा गीत गाते रहो। बाप की महिमा व आपकी महिमा के कितने गीत हैं इस गीत में साज़ भी ऑटोमेटिकली चलते हैं। जितना-जितना गुणों की महिमा के गीत गायेंगे तो खुशी के साज़ साथ-साथ स्वतः बजते रहेंगे।

9.2.80... .. त्याग वालों को भाग्य नैचुरल खुशी के रूप में और हल्केपन की अनुभूति के रूप में उसी समय ही प्राप्त होता रहता है।

7.3.81... .. सदैव सवेरे उठते ही अपने फरिश्ते स्वरूप की स्मृति में रहो और खुशी में नाचते रहो तो कोई भी बात सामने आयेगी उसे खुशी-खुशी से क्रास कर लेंगे। जैसे दिखाते हैं देवियों ने असुरों पर डाँस किया। तो फरिश्ते स्वरूप की स्थिति में रहने से आसुरी बातों पर खुशी की डाँस करते रहेंगे। फरिश्ते बन फरिश्तों की दुनिया में चले जायेंगे। फरिश्तों की दुनिया सदा स्मृति में रहेगी।

फिरयाद में उलझन होती है खुश नहीं। तो बाप से खुशी का खज़ाना लेना है, उलझन नहीं। उलझन तो लौकिक बाप का खज़ाना था अब वह तो खत्म हो गया। लौकिक सम्बन्ध खत्म तो फिरयाद भी खत्म। अलौकिक बाप अलौकिक वर्सा।

19.3.81... .. प्रश्न:– कौन सा मंत्र भक्ति में बहुत ही प्रसिद्ध है, जिसकी स्मृति में रहो तो खुशी के झूले में झूलते रहेंगे? उत्तर:– भक्ति में “हम सो, सो हम” का मंत्र बहुत प्रसिद्ध है, अभी आप बच्चे ‘हम सो’ का राज़ प्रैक्टिकल में अनुभव कर रहे हो। यह मंत्र हमारे लिए है, हम ब्राह्मण सो देवता बनेंगे। हम ही सो देवता थे, सो देवता हम ब्राह्मण बने हैं। यह अभी पता चला। अब देवताओं के चित्र देखकर बुद्धि में आता – यह हमारे ही चित्र हैं। यही वन्डर है! इसी स्मृति में रहो तो खुशी के झूले में झूलते रहेंगे

21.3.81... .. जब होली अर्थात् पास्ट इज पास्ट कर बाप के होलिए तब खुशी की पिचकारी लगाते हो। पिचकारी से रंग डालते हैं ना! तो आपकी पिचकारी से कितनी धारायें निकलती हैं? आजकल एक ही पिचकारी से भिन्न-भिन्न रंग भी डालते हैं। वह रंग लगने के बाद बेरंगी हो जाते हैं। इसलिए उन्हें वस्त्र वा अपनी सूरत ठीक करना पड़ता है। और आपका रंग इतना श्रेष्ठ और प्रिय है। जो जिसको भी लगाओ वह यही कहेगा कि और लगाओ। सदा लगाओ। आपकी खुशी की पिचकारी मनुष्य को कितना परिवर्तन कर देव आत्मा मना देती है। एक धारा –

“मैं एक श्रेष्ठ आत्मा हूँ”, यह खुशी की धारा है। मैं विश्व के मालिक का बालक हूँ। मैं सृष्टि के आदि मध्य अन्त का नालेजफुल हूँ। ऊंचे ते ऊंचे बाप के साथ श्रेष्ठ मंच पर मेरा हीरो पार्ट है। इसी प्रकार कितनी खुशी की पाइंटस की धारायें आपकी पिचकारी में हैं। एक तो यह खुशी की पिचकारी एक-दो को लगाते हो ना। दूसरी सर्व प्राप्तियों के धाराओं की पिचकारी। जैसे अतीन्द्रिय सुख। आत्मा और परमात्मा के मिलन का रूहानी प्रेम। ऐसे और भी सोचो। यह तो कामन है। तीसरी पिचकारी, सर्व शक्तियों की पिचकारी। इन विदेशियों ने पिचकारी कब देखी है? जैसे गुलाबाशी होती है उसमें कितने सुराख होते हैं। ऐसे पिचकारी दूर से लगाई जाती है जो फोर्स से दूर-दूर तक जाती है। ज्ञान की अलौकिक पिचका-रियाँ तो देखी हैं ना। अच्छा – चौथी पिचकारी ज्ञान की मूल पाइंटस। ऐसे पिचकारियों से होली खेलने से देव आत्मा बन जाते हो।

गृहस्थी माना मोहमाया के जाल में फँसा हुआ, ट्रस्टी माना सदा हल्का बन खुशी में उड़ने वाला।

13.4.81... .. जैसे प्रेजीडेन्ट है वह कोई भी काम करते यह नहीं भूलता कि मैं प्रेजीडेन्ट हूँ। तो आप भी सदा अपनी पोजीशन याद रखो। इससे सदा खुशी रहेगी, नशा रहेगा। सदा खुमारी चढ़ी रहे। हम ही देवता बनेंगे, अभी भी ब्राह्मण चोटी हैं, ब्राह्मण तो देवताओं से भी ऊंच है। इस नशे को माया कितना भी तोड़ने की कोशिश करे लेकिन तोड़ न सके।

यह खुशी सदा रखो कि जो सुनते थे, वर्णन करते थे, कोटों में कोई, कोई में भी कोई आत्मा, वह हम ही है। इतनी खुशी है? सदा इसी खुशी में नाचते रहो – वाह मेरा भाग्य!

15.4.81... .. अभी-अभी सेवा की, अभी-अभी खुशियों का भण्डारा भरपूर हुआ। एक आत्मा की भी सेवा करेंगे तो कितना दिन उसकी खुशी का प्रभाव रहता है क्योंकि वह आत्मा जन्म-जन्म के लिए दुःख से छूट गई। जन्म-जन्म का भविष्य बनाया तो आपको भी उसकी खुशी होगी। ऐसे सभी के अनेक जन्म सुधारने वाले, मास्टर भाग्य विधाता हो।

बापदादा का सदा एक सलोगन याद रखना कि “सदा खुश रहना है और सर्व को सदाखुश करना है। चारों ओर अब खुशी के बाजे बजाओ। क्योंकि हो ही खुशनशीब आत्मायें।”

सेवा करना अर्थात् खुशी का मेवा खाना, यह ताजा फल है।

20.10.81... .. सदा खुशी के ख़ज़ानों से खेलने वाले हो ना? खुशी भी एक ख़ज़ाना है जिस ख़ज़ाने द्वारा अनेक आत्माओं को माला-माल बना सकते हो। आजकल विशेष इसी ख़ज़ाने की आवश्यकता है। और सब हैं लेकिन खुशी नहीं। आप सबको तो खुशियों की खान मिल गयी है। अनगिनत ख़ज़ाना मिल गया है। खुशी के ख़ज़ाने में भी वैराइटी है ना! कभी किस बात की खुशी, कभी किस बात की खुशी। कभी बालक पन की खुशी तो कभी मालिकपन की खुशी। कितने प्रकार के खुशी के ख़ज़ाने मिले हैं! वो वर्णन करते हुए औरों को भी मालामाल बना सकते हो। तो इन ख़ज़ानों को सदा कायम रखो। और सदा ख़ज़ानों के मालिक बनो।

6.10.81... .. “संगमयुग पर सबसे बड़े ते बड़ा ख़ज़ाना कौन सा मिलता है? खुशी का। खुशी का ख़ज़ाना सदा सम्पन्न रहे ऐसे नहीं कभी थोड़ी खुशी, कभी बहुत खुशी। जब अविनाशी अखुट बेहद का ख़ज़ाना है तो कभी कम, कभी जास्ती, यह नहीं। सदा ख़ज़ाने की प्राप्ति में एकरस रहो। खुशी में रहते हैं, यह सिर्फ नहीं, लेकिन एकरस और निरन्तर रहते हैं। नम्बर इस आधार पर बनेंगे। सिर्फ निरन्तर हैं, एकरस नहीं तो भी सेकेण्ड नम्बर हो गए। लेकिन निरन्तर और एकरस दोनों ही है तो नम्बरवन हो गये। अगर किसी झमेले में आ जाते हो तो फिर

खुशी का झूला ढीला हो जाता है, तेज नहीं, रुक-रुककर झूलेंगे। इसलिए सदा खुशी के झुले में झुलो। संगमयुग अनुभव का युग है, यही विशेषता है, इस युग की विशेषता का लाभ उठाओ।“

3.11.81... .. सूर्यवंशी की निशानी – सदा खुशी की रास करने वाले। सदा अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलने वाले।

29.12.81... .. आप लोग तो बहुत-बहुत भाग्यवान आत्मायें हो जो विनाश के पहले अपना अधिकार पा लिया। और सब चिल्लायेगे, हाय हमने कुछ नहीं पाया, और आप बापदादा के साथ दिलतख्त नशीन होकर उन्हों को वरदान देंगे। तो कितने भाग्यवान हो। सदा ही खुश रहते हो ना? सदा इसी मस्ती में झूमते हुए सभी पेशन्ट को भी सदा खुशी के झूले में झुलाओ। फिर आपको ही भगवान का ही अवतार मानने लग जायेंगे लेकिन आप फिर इशारा करेंगे यथार्थ की तरफ। जब ऐसे भावना में आवें तब इशारा कर सकेंगे ना! तो सभी ऐसे तैयार हो ना? सभी डाक्टर का बहुत अच्छा ग्रुप है।

4.1.82... .. किसी भी प्रकार का विघ्न व समस्या अभी खेल के समान अनुभव होनी चाहिए। वार नहीं है, खेल है! तो खेल समझने से खुशी-खुशी पार कर लेंगे और वार समझने से घबरायेंगे भी और हलचल में भी आ जायेंगे। ड्रामा में पार्टधारी होने के कारण कोई भी सीन सामने आती है तो ड्रामा के हिसाब से सब खेल है, यह स्मृति रहे तो एकरस रहेंगे, हलचल नहीं होगी।

10.1.82... .. सबके मुख से वा मन से यही आवाज़ निकले, कि यह वही हैं। ऐसे अनुभव करें – बस, इन्हों से मिले तो बाप से मिले। जो कुछ मिला है, इन्हों द्वारा ही मिला है। यही मास्टर हैं, गाइड हैं, एंजिल हैं, मैसेन्जर हैं। बस यही हैं, यही हैं, और वही हैं – यह धुन सबके अन्दर लग जाए। इन्हीं दो शब्दों की धुन हो – “यही हैं और वही हैं”। मिल गये-मिल गये...यह खुशी की तालियाँ बजायें। ऐसे अनुभव कराओ। ऐसी अनुभूति कराने के लिए विशेष अष्ट शक्ति स्वरूप, अलंकारी शक्ति स्वरूप चाहिए। लेकिन शक्ति स्वरूप भी माँ के स्वरूप में चाहिए।

20.1.82... .. कर्मयोगी बनना अर्थात् भिन्न-भिन्न प्रकार की खुशी में नाचते चलो।

सदा बाप के साथ खुशी में नाचते रहेंगे तो तीसरा कोई डिस्टर्ब कर नहीं सकता। दो के बीच में कोई आ नहीं सकता। तो मायाजीत तो हो ही गये ना! न सुनना, न बोलना, न माया का आना। तो प्रीत की रीति क्या हुई? – गाना और नाचना।

गीत गाओ और खुशियों में नाचो। खुशियों में नाचते-नाचते हर कर्म करो। जैसे स्थूल डांस में भी सारे शरीर की डांस हो जाती है। ड्रिल हो जाती है। भिन्न-भिन्न पोज से डांस करते हो। वैसे खुशी के डांस में भिन्न-भिन्न कर्मों के पोज करते। कभी हाथ से कोई कर्म करते, कभी पाँव से करते हो तो यह काम नहीं करते हो लेकिन भिन्न-भिन्न डांस के पोज करते हो। कभी हाथ की डांस करते हो, कभी पाँव को नचाते हो। तो कर्मयोगी बनना अर्थात् भिन्न-भिन्न प्रकार की खुशी में नाचते चलो।

30.1.82... .. जैसे शरीर से भी बहुत गाते और नाचते हैं और थक जाते हैं तो जल्दी ही नींद आ जाती है, ऐसे यह रूहानी गीत गाते, खुशी में नाचते-नाचते सोयेंगे और खो जायेंगे। तो समझा – सारा दिन क्या करना है?

17.3.82... .. वरदाता कहो, विधाता कहो, भाग्यदाता कहो, ऐसे बाप द्वारा आप श्रेष्ठ आत्माओं को कितने टाइटल मिले हुए हैं! दुनिया में कितने भी बड़े-बड़े टाइटल हों लेकिन आप श्रेष्ठ आत्माओं के एक टाइटिल के आगे वह अनेक टाइटिल्स भी कुछ नहीं हैं। ऐसी खुशी रहती है?

वरदाता कहो, विधाता कहो, भाग्यदाता कहो, ऐसे बाप द्वारा आप श्रेष्ठ आत्माओं को कितने टाइल मिले हुए हैं! दुनिया में कितने भी बड़े-बड़े टाइल हों लेकिन आप श्रेष्ठ आत्माओं के एक टाइल के आगे वह अनेक टाइल्स भी कुछ नहीं हैं। ऐसी खुशी रहती है?

19.3.82.. .. ब्राह्मणों का कर्तव्य है – खुशी का दान कर महादानी बनना– सबसे बड़े से बड़ा खज़ाना, खुशी का खज़ाना है, जो खज़ाना अपने पास होता है उसे दान किया जाता है। आप खुशी के खज़ाने का दान करते रहो। जिसको खुशी देंगे वह बार-बार आपको धन्यवाद देगा। दुखी आत्माओं को खुशी का दान दे दिया तो आपके गुण गायेंगे। महादानी बनो, खुशी के खज़ाने बांटो। अपने हमजिन्स को जगाओ। रास्ता दिखाओ। सेवा के बिना ब्राह्मण जीवन नहीं। सेवा नहीं तो खुशी नहीं। इसलिए सेवा में तत्पर रहो। रोज़ किसी न किसी को दान ज़रूर करो। दान करने के बिना नींद ही नहीं आनी चाहिए।

6.4.82.. .. सदा इसी स्मृति में रहो कि हम ‘महान बाप के बच्चे महान हैं।’ इससे ही जितना श्रेष्ठ भाग्य बनाने चाहो बना सकते हो। संगमयुग को यही वरदान है। सदा बाप द्वारा मिले हुए खज़ानों से खेलते रहो। कितने अखुट खज़ाने मिले हैं, गिनती कर सकते हो! तो सदा ज्ञान रत्नों से, खुशी के खज़ाने से शक्तियों के खज़ाने से खेलते रहो। सदा मुख से रतन निकलें, मन में ज्ञान का मनन चलता रहे। ऐसे धारणा स्वरूप रहो। महान समय है, महान आत्मा हूँ – यही सदा याद रखो।

30.4.82.. .. इस वर्ष– हरेक आत्मा प्रति विशेष अनुभवी मूर्त बन विशेष अनुभवों की खान बन, अनुभवी मूर्त बनाने का महादान करो। जिससे हर आत्मा अनुभव के आधार पर ‘अंगद’ समान बन जाए। चल रहे हैं, कर रहे हैं, सुन रहे हैं, -सुना रहे हैं, नहीं। लेकिन अनुभवों का खज़ाना पा लिया – ऐसे गीत गाते खुशी के झूले में झूलते रहें।

13.6.82.. .. “आज बच्चों के संगठन और स्नेह, सहयोग, परिवर्तन का दृढ़ संकल्प, इस खुशबू को लेने के लिए आये हैं। बच्चों की खुशी में बापदादा की खुशी है। सदा यह अविनाशी खुशी और अविनाशी खुशबू बच्चों के साथ रहे – ऐसा ही अविनाशी संकल्प किया है ना! शुरू-शुरू में आदि स्थापना के समय एक दो को क्या लिखते थे और कहते थे – वह याद है? क्या शब्द बोलते थे? – “प्रिय निज आत्मा”। यही आत्म-अभिमानि बनने और बनाने का सहज साधन रहा।

28.12.82.. .. अपने आप में निश्चय, बाप में निश्चय और ड्रामा की हर सीन को देखते हुए उसमें भी पूरा निश्चय। सदा इसी निश्चय के आधार पर आगे बढ़ते चलो। अपनी जो भी विशेषतायें हैं, उनको सामने रखो, कमजोरियों को नहीं, तो अपने आप में फेथ रहेगा। कमजोरी की बात को ज्यादा नहीं सोचना तो फिर खुशी में आगे बढ़ते जायेंगे। बाप का हाथ लिया तो बाप का हाथ पकड़ने वाले सदा आगे बढ़ते हैं, यह निश्चय रखो।

31.12.82.. .. सभी अपने को विशेष आत्मा समझते हो? किस स्थान पर पहुँचे हो? सोचो कि ऐसा भाग्य विश्व में कितनी आत्माओं का होगा जो सम्मुख मिलन मनायें? इससे बड़ा भाग्य और क्या चाहिए? सदा अपने इसी भाग्य को स्मृति में रखो तो आपके भाग्य की प्राप्ति की खुशी को देख और आपके समीप आयेंगे। और अपना भाग्य बनायेंगे। सदा खुश रहो। बाप के बच्चे बने तो वर्षों में क्या मिला? खुशी मिली ना! तो इस वर्षों को सदा साथ रखना, छोड़कर नहीं जाना। खुशी के खज़ानों के मालिक बन गये। तो सदा खुशी में उड़ते रहना।

6.1.83... .. बाप से सर्व सम्बन्धों के रस का नशा साकार रूप में चलते फिरते अनुभव हो। यह नशा और खुशी निरंतर सहज योगी बना देती है।

9.1.83... .. सदैव खुशी में नाचते रहो तो शरीर भी ठीक हो जायेगा। मन की खुशी से शरीर को भी चलाओ तो दोनो एक्सरसाइज हो जायेगी। खुशी है 'दुआ' और एक्सरसाइज है 'दवाई'। तो दुआ और दवा दोनों होने से सहज हो जायेगा।(एक बच्चे ने कहा रात्रि को नींद नहीं आती है।) सोने के पहले योग में बैठो तो फिर नींद आ जायेगी। योग में बैठने समय बापदादा के गुणों के गीत गाओ। तो खुशी से दर्द भी भूल जायेगा। खुशी के बिना सिर्फ यह प्रयत्न करते हो कि मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ, तो इस मेहनत के कारण दर्द भी फील होता है। खुशी में रहो तो दर्द भी भूल जायेगा।

सोचने में टाइम वेस्ट जाता और खुशी भी गायब हो जाती। और शरीर पर भी असर आता है, उसके कारण फिर सोच चलता है। इसलिए तन और मन दोनों को सदा खुश रखने के लिए – सोचो कम। अगर सोचना ही है तो ज्ञान रत्नों को सोचो।व्यर्थ संकल्प की भेंट में समर्थ संकल्प हर बात का होता है। मानों अपनी स्थिति वा योग के लिये व्यर्थ संकल्प चलता है कि मेरा पार्ट तो इतना दिखाई नहीं देता, योग लगता नहीं। अशरीरी होते नहीं। यह है – व्यर्थ संकल्प। उनकी भेंट में समर्थ संकल्प करो – याद तो मेरा स्वधर्म है। बच्चे का धर्म ही है बाप को याद करना। क्यों नहीं होगा, ज़रूर होगा। मैं योगी नहीं तो और कौन बनेगा! मैं ही कल्प-कल्प का सहजयोगी हूँ। तो व्यर्थ के बजाए इस प्रकार के समर्थ संकल्प चलाओ। मेरा शरीर चल नहीं सकता, यह व्यर्थ संकल्प नहीं चलाओ। इसके बजाए समर्थ संकल्प यह है कि – इसी अन्तिम जन्म में बाप ने हमको अपना बनाया है। कमाल है, बलिहारी इस अन्तिम शरीर की। जो इस पुराने शरीर द्वारा जन्म-जन्म का वर्सा ले लिया। दिलशिकस्त के संकल्प नहीं करो। लेकिन खुशी के संकल्प करो। वाह मेरा पुराना शरीर! जिसने बाप से मिलाने के निमित्त बनाया! वाह वाह कर चलाओ। जैसे घोड़े को प्यार से, हाथ से चलाते हैं तो घोड़ा बहुत अच्छा चलता है अगर घोड़े को बार-बार चाबुक लगायेंगे तो और ही तंग करेगा। यह शरीर भी आपका है। इनको बार-बार ऐसे नहीं कहो कि यह पुराना, बेकार शरीर है। यह कहना जैसे चाबुक लगाते हो। खुशी-खुशी से इसकी बलिहारी गाते आगे चलाते रहो। फिर यह पुराना शरीर कब डिस्टर्ब नहीं करेगा। बहुत सहयोग देगा।

एक बात सभी को समझनी चाहिए कि ब्राह्मण आत्माओं द्वारा यहाँ ही हिसाब-किताब चुक्ती होना है। धर्मराजपुरी से बचने के लिए ब्राह्मण कहाँ न कहाँ निमित्त बन जाते हैं। तो घबराओ नहीं कि यह ब्राह्मण परिवार में क्या होता है। ब्राह्मणों का हिसाब-किताब ब्राह्मणों द्वारा ही चुक्ती होना है। तो यह चुक्ती हो रहा है इसी खुशी में रहो। हिसाब-किताब चुक्ती हुआ और तरक्की ही तरक्की हुई। अभी एक वायदा करो – कि छोटी-छोटी बात में कन्फ्यूज नहीं होंगे, प्रॉब्लम नहीं बनेंगे लेकिन प्रॉब्लम को हल करने वाले बनेंगे। समझा।

सदा खुश रहेंगे, सदा उड़ती कला में रहेंगे, सदा सर्व खज़ानों से सम्पन्न रहेंगे। ऐसे वरदान लेने वाली आत्मायें सहजयोगी स्वतः हो जाती हैं। आज खुशी का दिन है! सबसे अधिक खुशी किसको है, बाप को है या बच्चों को है? (बच्चों को है) बापदादा को यह खुशी है कि ऐसा कोई बाप सारे वर्ल्ड में नहीं होगा जिसका हरेक बच्चा श्रेष्ठ हो। बापदादा एक-एक बच्चे की अगर विशेषता का वर्णन करें तो कई वर्ष बीत जाएँ। हरेक बच्चे की महिमा के बड़े-बड़े शास्त्र बन जाएँ। विशेष आत्मा हो – ऐसा निश्चय हो तो सदा मायाजीत स्वतः हो जायेंगे।

माताओं के साथ – माताओं के लिए तो बहुत खुशी की बात हैं – क्योंकि बाप आया ही है माताओं के लिए। गऊपाल बनकर गऊ माताओं के लिए आये हैं। इसी का तो यादगार गाया हुआ है। जिसको किसी ने भी योग्य

नहीं समझा लेकिन बाप ने योग्य आपको ही समझा – इसी खुशी में सदा उड़ते चलो। कोई दुःख की लहर आ नहीं सकती। क्योंकि सुख के सागर के बच्चे बन गये। सुख के सागर में समाने वालों को कभी दुःख की लहर नहीं आ सकती है – ऐसे सुख स्वरूप।

21.2.83... .. सबसे बड़े ते बड़ा वरदान है सदा अपने को बाप द्वारा बाप के साथ का अनुभव करना। सदा बाप की याद में अर्थात् सदा साथ में रहना। तो सदा ही खुश रहेंगे, कभी भी कोई भी बात संकल्प में आये तो बाप के साथ में सब समाप्त हो जायेगा और खुशी में डूबते रहेंगे। तो सदा खुश रहने का यह तरीका याद रखना और दूसरों को भी बताते रहना। दूसरों को भी खुशी में रहने का साधन देना। तो आपको सभी आत्मायें खुशी का देवता मानेंगी। क्योंकि विश्व में आज सबसे ज्यादा खुशी की आवश्यकता है। वह आप देते जाना। अपना टाइटिल याद रखना कि मैं खुशी का देवता हूँ!

27.3.83... .. बापदादा को तो कुमारियाँ देख करके खुशी होती है। लोगों के पास कुमारी आती है तो दुख होता है। और बापदादा के पास जितनी कुमारियाँ आवें उतना ज्यादा से ज्यादा खुशी मनाते हैं। क्योंकि बापदादा जानते हैं कि हर कुमारी विश्वकल्याणकारी, महादानी, वरदानी है। तो समझा, कुमारी जीवन का महत्व कितना है!

30.3.83... .. मन की शक्ति का दर्पण चेहरा अर्थात् मुखड़ा है। कितना भी आप कहो कि हम खुशी में नाचते हैं लेकिन चेहरा उदास देख कोई नहीं मानेगा। खोया-खोया हुआ चेहरा और पाया हुआ चेहरा इसका अन्तर तो जानते हो ना। “पा लिया” इसी खुशी की चमक चेहरे से दिखाई दे। खुशक चेहरा नहीं दिखाई दे, खुशी का चेहरा दिखाई दे।

7.4.83... .. ब्राह्मण बच्चे अपनी बीमारी की दवाई स्वयं ही कर सकते हैं। खुशी की खुराक सेकण्ड में असर करने वाली दवाई है। जैसे वह लोग पॉवरफुल इन्जेक्शन लगा देते हैं तो चेन्ज हो जाते। ऐसे ब्राह्मण स्वयं ही स्वयं को खुशी की गोली दे देते हैं वा खुशी का इन्जेक्शन लगा देते हैं। यह तो स्टॉक हरेक के पास है ना! नॉलेज के आधार पर शरीर को चलाना है।

11.4.83... .. संगम पर बाप ने सबसे बड़ा खजाना कौन सा दिया है? खुशी का! कितने प्रकार की खुशी का खजाना प्राप्त है! अगर खुशी की वैरायटी पाइंटस निकालो तो कितने प्रकार की होंगी! संगमयुग पर सबसे बड़े ते बड़ी सौगात, खजाना पिकनिक का सामान...सब खुशी है। रोज़ अमृतवेले खुशी की एक पाइंट सोचो...तो सारा दिन खुशी में रहेंगे।

19.4.83... .. अब तो मरजीवा हो गये, विशेष आत्मायें बन गये। यही खुशी है ना। जलती हुई चिता से अमर हो गये, यह कोई कम बात है! पहले सुनते थे भगवान मुर्दे को भी जिंदा करता है, लेकिन कैसे करता यह नहीं समझते थे। अभी समझते हो हम ही जिंदा हो गये तो सदा नशे और खुशी में रहो।

24.4.83... .. सदा खुशी के झूले में झूलने वाले हो ना। कितना बढ़िया झूला बापदादा से प्राप्त हुआ है। यह झूला कभी टूट तो नहीं जाता? याद और सेवा की दोनों रस्सियाँ टाइट हैं तो झूला सदा ही एकरस रहता है। नहीं तो एक रस्सी ढीली, एक टाइट तो झूला हिलता रहेगा। झूला हिलेगा तो झूलने वाला गिरेगा। अगर दोनों रस्सियाँ मज़बूत हैं तो झूलने में मनोरंजन होगा। अगर गिरे तो मनोरंजन के बजाए दुःख हो जायेगा। तो याद और सेवा दोनों रस्सियाँ समान रहें, फिर देखो ब्राह्मण जीवन का कितना आनन्द अनुभव करते हो। सर्वशक्ति- वान बाप का साथ है, खुशियों का झूला है और चाहिए ही क्या!

15.5.93.. ..पुण्य-आत्मा सदा अपने हर बोल द्वारा औरों को खुशी में, बाप के स्नेह में अतीन्द्रिय सुख में रूहानी आनन्दमय जीवन का अनुभव करायेंगे। उनका हर बोल खुशी की खुराक होगी, पुण्य आत्मा का हर कर्म सर्व आत्माओं के प्रति सदा सहयोग के प्राप्ति कराने वाला होगा।

17.5.83... .. एक गीत भी है ना मौजें ही मौजें... उठो, चलो, सेवा करो, सोओ सब मौज में। खूब नाचो, गाओ, खुशी में रहो। सेवा भी खुशी-खुशी से नाचते-नाचते करो। ऐसे नहीं लुढ़ते लमते गिरते चढ़ते करो। संगम पर सर्व सम्बन्ध की मौजें हैं। तो खूब मौज मनाओ। सदा मौजों के ही नज़ारों में रहो। अच्छा!

19.5.83... .. बच्चों को बाप अपने से भी आगे रखते हैं। डबल पूजा आपकी है, डबल राज्य आप करते हो। इतना नशा और इतनी खुशी सदा रहे – ‘वाह रे मैं श्रेष्ठ आत्मा, वाह रे मैं पुण्य आत्मा, वाह रे मैं शिव शक्ति’ – इसी स्मृति में सदा रहो।

10.11.83... .. अगर मनन सारा दिन चलता रहे तो अमृतवले भी वही मनन किया हुआ खज़ाना सामने आने से खुशी होगी तो सुस्ती नहीं आयेगी।

पुरुषार्थ करते अगर कोई साइड-सीन आ भी जाती है तो उसमें घबराने की कोई बात नहीं है। जो भी साइड-सीन आती है उसको याद और खुशी से पार करते चलो। विजय वा सफलता तो आप सबका जन्म-सिद्ध अधिकार है।

1.12.83... .. दुख की परिस्थितियों में भी, ‘वाह मीठा ड्रामा, वाह हरेक पार्टधारी का पार्ट’ – इस नालेज की रोशनी द्वारा, अधिकार की खुशी द्वारा दुख को सुख में परिवर्तन कर देता। अधिकार से दुख के अंधकार को परिवर्तन कर, मास्टर सुखदाता बन स्वयं तो सुख के झूले में झूलते ही हैं लेकिन औरों को भी सुख के वायब्रेशन देने के निमित्त बनते हैं।

5.12.83... .. ब्राह्मण जीवन ही उमंग-उत्साह की जीवन है। जो मिला है वह सबको बाँटे यह उमंग रहे। और उत्साह सदा खुशी की निशानी है। उत्साह वाला सदा खुश रहेगा। उत्साह रहता – बस, पाना था वो पा लिया।

7.12.83... ..गांव वाले बहुत भोले होते हैं। बाप को भी भोलानाथ कहते हैं। जैसे भोलानाथ बाप वैसे भोले गांव वाले तो सदा यह खुशी रहे कि हम विशेष भोलानाथ के प्यारे हैं।

12.12.83... .. हर्षितमुखता खुशी की निशानी है। खुशी का चेहरा देख स्वतः पूछेंगे क्या पाया, क्या मिला! तो सदा खुशी में रहो। क्या थे, क्या बन गये, इससे ही सेवा होती रहेगी।

सदा स्मृति रहे कि हम तख्तनशीन हैं। हम वह सिकीलधी आत्मायें हैं जो प्रभु तख्त के अधिकारी बनी हैं। इस तिलक को धारण करने से सदा खुशी और नशे में रहेंगे। वैसे भी कहा जाता है – ‘तख्त और बख्त’। तख्तनशीन बनने का बख्त अर्थात् भाग्य मिला। तो सदा श्रेष्ठ तख्त और बख्त वाली आत्माएँ हैं, यही नशा और खुशी सदा रहे।

14.12.83... .. बच्चे जब स्नेह के गीत गाते हैं तो बापदादा भी खुशी में नाचते हैं ना। इसीलिए शंकर डांस बहुत मशहूर हैं। सेवा भी तो नाचना है ना। जिस समय सर्विस करते हो उस समय मन क्या करता है? नाचता है ना। तो सेवा करना भी नाचना ही है।

23.12.83... .. कहाँ-कहाँ से बापदादा ने चुनकर अपने अल्लाह के बगीचे में लगा लिया। यह खुशी रहती है ना! अभी सभी रूहानी गुलाब बन गये। सदा औरों को भी रूहानी खुशबू देने वाले ‘रूहे गुलाब’ हो। कोई भी आप

सबके समीप आता है, सम्पर्क में आता है तो आप सभी से क्या महसूस करता है? समझते हैं कि यह रूहानी हैं। अलौकिक हैं।

31.12.83... .. जितना लौकिक दुनिया में जिस स्थान पर हलचल हो, उसी हलचल के स्थान पर सदा खुशी की अचल स्थिति का झण्डा लहराना।

12.1.84... .. सबसे बड़े ते बड़ा स्नेह का गीत रोज़ बापदादा गाते हैं। जिस गीत को सुन-सुन सभी स्नेही बच्चों का मन खुशी में नाचता रहता है। रोज़ गीत गाते इसीलिए यादगार में भी गीत का महत्व श्रेष्ठ रहा है। बाप के गीत का यादगार – ‘गीता’ बना दी। और बच्चों के गीत सुन खुशी में नाचने और खुशी में, आनन्द में, सुख में भिन्न-भिन्न अनुभवों के यादगार – भागवत् बना दिया है। तो दोनों का यादगार हो गया ना। ऐसे श्रेष्ठ भाग्यवान अपने को समझते हो वा अनुभव करते हो!

14.1.84... .. जैसे आजकल की दुनिया में समाचार पत्रों में क्या खबरे निकलती है? दुःख की, अशान्ति की, उलझनों की। लेकिन आपके समाचार पत्र कौन से होंगे? सदा खुशखबरी के। खुशी के अनुभव – आज मैंने यह विशेष अनुभव किया। आज यह विशेष सेवा की। आज मंसा के सेवा की अनुभूति की। आज दिल शिकस्त को दिलवाला बना दिया। नीचे गिरे हुए को उड़ा दिया। ऐसे पत्र लिखेंगे ना।

14.1.84... .. स्वयं भाग्य विधाता भाग्य में मिल गया। इससे बड़ा भाग्य और क्या हो सकता है? तो सदा ये खुशी रहती है कि विश्व में सबसे बड़े ते बड़े भाग्यवान हम आत्मायें हैं। हम नहीं, हम आत्मायें। आत्मायें कहेंगे तो कभी भी उल्टा नशा नहीं आयेगा। देही-अभिमानि बनने से श्रेष्ठ नशा – ईश्वरीय नशा रहेगा। भाग्यवान आत्मायें हैं, जिन्हों के भाग्य का अब भी गायन हो रहा है। ‘भागवत’ – आपके भाग्य का यादगार है। ऐसा अविनाशी भाग्य जो अब तक भी गायन होता है, इसी खुशी में सदा आगे बढ़ते रहो।

13.2.84... ..अपने देश में जाकर धन की एकानामी का तरीका सिखलाना। मन की खुशी से धन की अनुभूति होती है। और धन की एकानामी ही मन की खुशी का आधार है। ऐसे धन की एकानामी और मन की खुशी का साधन बताना तो वे लोग आपको धन और मन की खुशी देने वाले – खुशी के फ़रिश्ते अनुभव करेंगे। तो अभी यहाँ से शान्ति और खुशी का फ़रिश्ता बनकर जाना।

18.2.84... .. डबल विदेशी बच्चों को नशा और खुशी रहती है कि हमें बापदादा ने इतना दूर होते हुए भी दूरदेश से चुनकर अपना बना लिया है। दुनिया बाप को ढूँढती और बाप ने हमें ढूँढा। ऐसे अपने को समझते हो? दुनिया पुकार रही है कि आ जाओ और आप सभी नम्बरवार क्या गीत गाते हो? तुम्हीं से बैठूँ, तुम्ही से खाऊँ, तुम्हीं से सदा साथ रहूँ। कहाँ पुकार और कहाँ सदा साथ! रात दिन का अन्तर हो गया ना! कहाँ एक सेकण्ड की सच्ची अविनाशी प्राप्ति के प्यासी आत्मायें और कहाँ आप सभी प्राप्ति स्वरूप आत्मायें! वह गायन करने वाली और आप सभी बाप की गोदी में बैठने वाले। वह चिल्लाने वाली और आप हर कदम उनकी मत पर चलने वाले। वह दर्शन की प्यासी और आप बाप द्वारा स्वयं दर्शनीयमूर्त्त बन गये। थोड़ा सा दुःख दर्द का अनुभव और बढ़ने दो फिर देखना आपके सेकण्ड के दर्शन, सेकण्ड की दृष्टि के लिए कितना प्यासे बन आपके सामने आते हैं।

18.2.84... .. आज के विश्व में सभी को खुशी और शान्ति दोनों चाहिए। तो यह दोनों ही इस राजयोग के अभ्यास द्वारा सदा के लिए प्राप्त हो जायेंगी। यह प्राप्ति चाहते हो तो सहज साधन यह है। इसको छोड़ना नहीं। साथ रखना। बहुत खुशी मिलेगी। जैसे खुशी की खान मिल जायेगी। जिससे औरों को भी सच्ची खुशी बाँट सकेंगे।

22.2.84... .. बाप कहा माना बालक सो मालिक हो गया। यही स्मृति विश्व-कल्याणकारी स्वतः बना देती है। और यही स्मृति सदा खुशी में उड़ाती है। यही ब्राह्मण जीवन है। सम्पन्न रहना, खुशी में उड़ना और सदा बाप के खज़ानों के अधिकार के नशे में रहना। ऐसे श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मायें हो।

15.3.84... .. आप सभी कितने अविनाशी उत्सव अर्थात् उत्साह में रहने के अनुभवी बने हो जो अब सिर्फ आपके यादगार दिन को भी मनाने से खुश हो जाते हैं। अन्त तक भी आपके उत्साह और खुशी का यादगार अनेक आत्माओं को खुशी का अनुभव कराता रहता है। तो ऐसे उत्साह भरे जीवन, खुशियों से भरी जीवन बना ली है ना!

10.4.84... .. पिछले हिसाब को हल्का करने का साधन है – वर्तमान को शक्तिशाली बनाओ। वर्तमान है ही शक्तिशाली। वर्तमान की प्राप्ति को सामने रखेंगे तो सब सहज हो जायेगा। पिछला सूली को काँटा हो जायेगा। क्या है, क्यों है! नहीं। पिछला है। पिछले को क्या देखना। जहाँ लगन है वहाँ विघ्न भारी नहीं लगता। खेल लगता है। वर्तमान की खुशी की दुआ से और दवा से सब हिसाब-किताब चुक्त्तू करो।

10.4.84... .. सदा याद रहे – वाह मेरे श्रेष्ठ तकदीर की श्रेष्ठ लकीर! बाप मिला, सेवा मिली, सेवास्थान मिला और सेवा के साथ-साथ सर्व आत्माओं का श्रेष्ठ परिवार मिला। क्या नहीं मिला! राज्य भाग्य सब मिल गया। यह खुशी सदा रहे। विधि द्वारा सदा वृद्धि को पाते रहो। निमित्त भाव की विधि से सेवा में वृद्धि होती रहेगी।

17.4.84... .. एक-एक ब्रह्माकुमार-कुमारी बाप का सन्देश सुनाने वाले सन्देशी हो। भगवान का सन्देश सुनाने वाले सन्देशी कितने श्रेष्ठ हुए! तो सदा इसी कार्य के निमित्त अवतरित हुए हैं। ऊपर से नीचे आये हैं यह सन्देश देने – यही स्मृति खुशी दिलाने वाली हैं। बस, अपना यही आक्यूपेशन सदा याद रखो कि खुशियों की खान के मालिक हैं। यही आपका टाइटिल है।

22.4.84... .. अविनाशी बाप है, अविनाशी शिक्षक है। तो अविनाशी द्वारा प्राप्ति भी अविनाशी है। यही खुशी के गीत गाते हो ना कि हमें सत बाप, सत शिक्षक द्वारा सर्व प्राप्ति का अधिकार मिल गया। इसी को ही कहा जाता है – विचित्र बाप, विचित्र स्टूडेंट्स और विचित्र पढ़ाई वा विचित्र प्राप्ति।

9.5.84... .. सदा एकरस उड़ने और उड़ाने के गीत क्यों नहीं गाते? ऐसे गीत गाओ जो सुनने वालों को पंख लग जाँँ और उड़ने लग जाए। लंगड़े को टाँगे मिल जाँँ और नाचने लग जाए। दुःख की शैय्या से उठ सुख के गीत गाने लगे। चिन्ता की चिता पर बैठे हुए प्राणी चिता से उठ खुशी में नाचने लगे। दिलशिकस्त आत्मायें उमंग उत्साह के गीत गाने लग जाँँ। भिखारी आत्मायें सर्व खज़ानों से सम्पन्न बन “मिल गया, पाल लिया” यह गीत गाने लग जायें। ये ही सिद्धि प्राप्त सेवा की विश्व की आवश्यकता है।

9.5.84... .. माताओं को विशेष कौन सा खज़ाना मिला है? खुशी का खज़ाना मिला है ना! यह खज़ाना बाप ने विशेष माताओं के लिए लाया है। उसी खुशी के खज़ाने से खेलते रहो। बांटते रहो। यही काम है। घर का काम करते भी खुशी का धन बांटते रहो। तो घर का काम भी ऐसे होगा जैसे खेल रहे हैं। खेल में थकना नहीं होता। तो सदा ऐसे आगे बढ़ते रहो।

माताओं के लिए तो स्वयं बाप सृष्टि पर आये हैं। ऐसी खुशी है ना – कि हमने बुलाया और बाप को आना पड़ा। क्यों? माताओं ने दुःख के कारण दिल से पुकारा और ऐसी पुकारने वाली माताओं को बाप ने पूज्य बना दिया। पुकार करने से छुड़ा दिया। अभी पुकारने की ज़रूरत नहीं। सब आशायें पूर्ण हो गईं। बाप मिला सब कुछ मिला – सदा इसी खुशी में रहते खुशी का दान देती रहो। अपने हमजिन्स पर रहम करो। आपके हमजिन्स कितने दुःखी

हैं। हमजिन्स को जगाना यही माताओं का काम है। जगे हैं जगाने के लिए। अभी से रहमदिल बन जगाओ नहीं तो आपकी हमजिन्स आपको उलहना देंगी कि हमें क्यों नहीं जगाया?

12.12.84... .. इतना जमा करो जो 21 जन्म आराम से खाते रहो। इतना स्टाक हो जो स्वयं भी दे सको। क्योंकि दाता के बच्चे हो। जितना जमा होगा उतनी खुशी ज़रूर होगी।

बाप ने माताओं को खुशी का, अतीन्द्रिय सुख का झूला दिया है। उसी झूले में झूलती रहो। सदा सुखी, सदा तो इसी खुशी में रहो। सुहागिन बन गई। अमर बाप के अमर बच्चे बन गये। बापदादा भी बच्चों को देखकर खुश होते हैं।

जो ख्याल ख्वाब में न था – वह प्रैक्टिकल में पा लिया। बाप ने हर कोने से बच्चों को निकाल अपना बना लिया। अपने को इस सृष्टि के अन्दर कोटों में कोई और कोई में भी कोई... ऐसी विशेष आत्मा समझते हो? जो गायन है कोटों में कोई बाप के बनते हैं, वह हम हैं। यह खुशी सदा रहती है? विश्व की अनेक आत्मायें बाप को पाने का प्रयत्न कर रहीं हैं और हमने पा लिया! बाप का बनना अर्थात् बाप को पाना।

26.12.84... .. जैसे भक्ति मार्ग में चित्र दिखाया है – सागर के बीच साँप के ऊपर नाच रहे हैं। है साँप लेकिन सत्यता की शक्ति से साँप भी नाचने की स्टेज बन जाते हैं। कैसी भी भयानक परिस्थिति हो, माया के विकराल रूप हों, सम्बन्ध सम्पर्क वाले परेशान करने वाले हों, वायुमण्डल कितना भी जहरीला हो लेकिन सत्यता की शक्ति वाला इन सबको खुशी में नाचने की स्टेज बना देता है। तो यह चित्र किसका है? आप सभी का है ना! सभी कृष्ण बनने वाले हैं।

31.12.84... .. वो लोग हैपी न्यू ईयर कहते, आप 'एवर हैपी न्यू ईयर' कहते। आज खुशी और कल दुख की घटना दुखी नहीं बनाती। कैसी भी दुःख की घटना हो लेकिन ऐसे समय पर भी सुख, शान्ति स्वरूप स्थिति द्वारा सर्व को सुख-शान्ति की किरणें देने वाले मास्टर सुख के सागर बन दाता का पार्ट बजाते हो। इसलिए घटना के प्रभाव से परे हो जाते हो। और एवर हैपी का सदा अनुभव करते हो।

सदा अपने को एक दिन में अनगिनत कमाई करने वाले पद्मापद्म भाग्यवान आत्मा समझ इसी खुशी में सदा रहो कि वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य! तो आपको खुश देखकर औरों को भी प्रेरणा मिलती रहेगी। यही सेवा का सहज साधन है।

7.1.85... .. सेवाधारी का अर्थ ही है सर्व खज़ानों से सम्पन्न। सदा भरपूरता का नशा और खुशी। कोई एक भी खज़ाने की कमी नहीं। शक्ति है, गुण नहीं।

9.1.85... .. भाग्यवान तो सभी बच्चे हैं क्योंकि भाग्यविधाता के बने हैं। इसलिए भाग्य तो जन्म-सिद्ध अधिकार है। जन्म-सिद्ध अधिकार के रूप में सभी को स्वतः ही अधिकार प्राप्त है। अधिकार तो सभी को है लेकिन उस अधिकार को स्व प्रति वा औरों के प्रति जीवन में अनुभव करना और कराना उसमें अन्तर है। इस भाग्य के अधिकार को अधिकारी बन उस खुशी और नशे में रहना।

16.1.85... .. वर्से को याद करने से सदा खुशी रहेगी और बाप को याद करने से सदा शक्तिशाली रहेंगे। शक्तिशाली आत्मा सदा मायाजीत रहेगी और खुशी है तो जीवन है। अगर खुशी नहीं तो जीवन क्या? जीवन होते भी ना के बराबर है। जीते हुए भी मृत्यु के समान है। जितना वर्सा याद रहेगा उतनी खुशी। सदा खुशी रहती है? ऐसा वर्सा कोटो में कोई को मिलता है और हमें मिला है। यह स्मृति कभी भी भूलना नहीं। जितनी याद उतनी प्राप्ति। सदा याद और सदा प्राप्ति की खुशी।

16.2.85... .. अपने इस श्रेष्ठ जन्म को जानते हो ना? हर श्वाँस में खुशी का साज बज रहा है। श्वाँस नहीं चलता लेकिन खुशी का साज चल रहा है। साज सुनने में आता है ना! नैचरल साज कितना श्रेष्ठ है! इस दिव्य जन्म का यह खुशी का साज अर्थात् श्वाँस, दिव्य जन्म की श्रेष्ठ सौगात है। ब्राह्मण जन्म होते ही यह खुशी का साज गिफ्ट में मिला है ना। साज में भी अंगुलियाँ नीचे ऊपर करते हो ना। तो श्वाँस भी नीचे ऊपर चलता है। तो श्वाँस चलना अर्थात् साज चलना। श्वाँस बन्द नहीं हो सकता। तो साज भी बन्द नहीं हो सकता। सभी का खुशी का साज ठीक चल रहा है ना!

वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य। जो भगवान ने खुद आपका भाग्य बनाया है। डायरेक्ट भगवान ने भाग्य की लकीर खींची, ऐसा श्रेष्ठ भाग्य है। जब यह श्रेष्ठ भाग्य स्मृति में रहता है तो खुशी में बुद्धि रूपी पाँव इस पृथ्वी पर नहीं रहते। ऐसे समझते हो ना।

21.2.85... .. सारे कल्प में ऐसी श्रेष्ठ जीवन कभी भी नहीं मिलनी है। सतयुग में भी ऐसी जीवन नहीं होगी क्योंकि अभी बाप के डायरेक्ट बच्चे बने हो फिर तो बाप की याद समा जायेगी, ऐसे इमर्ज रूप में नहीं होगी। अभी याद की विशेष खुशी होती है ना। इसीलिए यह जीवन अति श्रेष्ठ है। ऐसे जीवन की सदा खुशी रहे।

24.2.85... .. सदा महादानी रहमदिल विश्व-कल्याणकारी। यह बाप के संस्कार सो आपके संस्कार हों। इसलिए स्वभाव और संस्कार सदा खुशी की प्राप्ति कराते हैं।

27.2.85... .. थोड़े समय का त्याग सदाकाल का भाग्य बनाता है। तो सदा इसी लक्ष्य को समझते हुए आगे बढ़ते चलो। इससे बहुत खुशी का खज़ाना मिलेगा। जीवन में सबसे बड़े ते बड़ा खज़ाना खुशी है। अगर खुशी नहीं तो जीवन नहीं। तो अविनाशी खुशी का खज़ाना प्राप्त कर सकते हो।

बापदादा के पास सभी के खुशी की रूह-रूहान पहुँचती है। बापदादा भी सभी बच्चों को रूह-रूहान का रेसपाण्ड देते रहते हैं – और आज भी दे रहे हैं कि सदा विजयी रत्न हो और विजय आपका जन्म सिद्ध अधिकार है।

18.3.85... .. जहाँ सन्तुष्टता है वहाँ खुशी ज़रूर है। असन्तुष्टता खुशी को गायब करती है। यही ब्राह्मण जीवन की महिमा है।

जितना सेवा में निमित्त बनने का भाग्य मिलता है उतना डबल लाइट स्थिति से उड़ती कला में उड़ने के विशेष अनुभवी बन सकते हो। डबल लाइट स्थिति में रहने से सदा खुशी में नाचते रहेंगे और खुशी के महादानी बन खुशी की खान बढ़ाते रहेंगे।

24.3.85... .. एक समर्थ संकल्प का फल पद्मगुणा मिलता है। ऐसे ही एक व्यर्थ संकल्प का हिसाब-किताब – उदास होना, दिलशिकस्त होना वा खुशी गायब होना वा समझ नहीं आना कि मैं क्या हूँ, अपने को भी नहीं समझ सकते – यह भी एक का बहुत गुणा के हिसाब से अनुभव होता है। फिर सोचते हैं कि था तो कुछ नहीं। पता नहीं क्यों खुशी गुम हो गई। बात तो बड़ी नहीं थी लेकिन बहुत दिन हो गये हैं – खुशी कम हो गई है। पता नहीं क्यों अकेलापन अच्छा लगता है! कहाँ चले जावें, लेकिन जायेंगे कहाँ? अकेला अर्थात् बिना बाप के साथ अकेला तो नहीं जाना है ना। ऐसे भले अकेले हो जाओ लेकिन बाप के साथ से अकेले कभी नहीं होना। अगर बाप के साथ से अकेले हुए, वैरागी, उदासी यह तो दूसरा मठ है। ब्राह्मण जीवन नहीं। कम्बाइण्ड हो ना। संगमयुग कम्बाइण्ड रहने का युग है। ऐसी वण्डरपुल जोड़ी तो सारे कल्प में नहीं मिलेगी। चाहे लक्ष्मी नारायण भी बन जाएँ लेकिन ऐसी जोड़ी तो नहीं बनेगी ना! इसलिए संगमयुग का कम्बाइण्ड रूप है। यह सेकण्ड भी अलग नहीं हो सकता।

11.4.85... .. सिर्फ बोलना ही सर्विस नहीं होती लेकिन अपना चेहरा सदा हर्षित हो। रूहानी चेहरा भी सेवा करता है। लक्ष्य रखें उमंग- उत्साह से खुशी-खुशी से रूहानी खुशी की झलक दिखाते हुए आगे बढ़ें।

25.11.85.. निश्चयबुद्धि विजयी रत्न की निशानी – सत्य निर्णय होने के कारण मन में ज़रा भी मूँझ नहीं होगी। सदैव मौज होगी। खुशी की लहर होगी। चाहे सरकमस्टांस आग के समान हो लेकिन उसके लिए वह अग्नि-परीक्षा विजय की खुशी अनुभव करायेगी। क्योंकि परीक्षा में विजयी हो जायेंगे ना। अब भी लौकिक रीति किसी भी बात में विजय होती है तो खुशी मनाने के लिए हँसते नाचते ताली बजाते हैं। यह खुशी की निशानी है।

27.11.85.. .. एक है – आत्मिक स्वरूप का नशा। दूसरा है – अलौकिक जीवन का नशा। तीसरा है – फ़रिश्तेपन का नशा। फ़रिश्ता किसको कहा जाता है इसका भी विस्तार करो। चौथा है भविष्य का नशा। इन चार ही प्रकार के अलौकिक नशे में से कोई भी नशा जीवन में होगा तो स्वतः ही खुशी में नाचते रहेंगे। निश्चय भी है लेकिन खुशी नहीं है इसका कारण? नशा नहीं है।

अभी हर एक नशे को जीवन में लाओ। कोई भी आपके मस्तक तरफ देखे तो मस्तक द्वारा रूहानी नशे की वृत्ति अनुभव हो। चाहे कोई वर्णन करे न करे लेकिन वृत्ति, वायुमण्डल और वायुब्रेशन फैलाती है। आपकी वृत्ति दूसरे को भी खुशी के वायुमण्डल में खुशी के वायुब्रेशन अनुभव करावे। इसको कहा जाता है नशे में स्थित होना।

2.12.85... .. जैसे लौकिक दुनिया में अल्पकाल के साधन अल्पकाल की खुशी वा सुख की अनुभूति कराते हैं लेकिन आन्तरिक वा अविनाशी अनुभूति नहीं होती। ऐसे सूक्ष्म बन्धन में बंधी हुई आत्मा इस ब्राह्मण जीवन में भी थोड़े समय के लिए सेवा का साधन, संगठन की शक्ति का साधन, कोई न कोई प्राप्ति के साधन, श्रेष्ठ संग का साधन इन साधनों के आधार से चलते हैं। जब तक साधन हैं तब तक खुशी और सुख की अनुभूति करते हैं। लेकिन साधन समाप्त हुआ तो खुशी भी समाप्त। सदा एकरस नहीं रहते। कभी खुशी में ऐसा नाचता रहेगा उस समय जैसे कि उन जैसा कोई है नहीं। लेकिन रुकेगा फिर ऐसा जो छोटा-सा पत्थर भी पहाड़ समान अनुभव करेगा। क्योंकि ओरीजनल शक्ति न होने के कारण साधन के आधार पर खुशी में नाचते। साधन निकल गया तो कहाँ नाचेगा? इसलिए आन्तरिक रूहानी शक्ति तीनों रूपों में सदा साथ-साथ आवश्यक है।

16.12.85... .. सदा ज्ञान को स्मृति में रख, उसकी खुशी में रहो। खुशी अनेक प्रकार के दुःख भुलाने वाली है। दुनिया दुःखधाम में है और आप सभी संगमयुगी बन गये। यह भी भाग्य है।

6.1.86... .. डाक्टर्स का विशेष कार्य ही है – हर आत्मा को खुशी देना। पहली दवाई 'खुशी' है। खुशी आधी बीमारी खत्म कर देती है। तो रूहानी डाक्टर्स अर्थात् खुशी की दवाई देने वाले। तो ऐसे डाक्टर हो ना? एक बार भी खुशी की झलक आत्मा को अनुभव हो जाए तो वह आत्मा सदा खुशी की झलक से आगे उड़ती रहेगी। तो सभी को डबल लाइट बनाए उड़ाने वाले डाक्टर्स हो ना!

13.1.86... .. होली अर्थात् पवित्रता की प्रत्यक्ष निशानी – हैपी अर्थात् खुशी सदा प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देगी। अगर खुशी नहीं तो अवश्य कोई अपवित्रता अर्थात् संकल्प वा कर्म यथार्थ नहीं है, तब खुशी नहीं है। सभी ब्राह्मण बच्चों का ब्राह्मण जीवन धारण करने का लक्ष्य ही है – 'सदा खुश रहना'। खुशी की जीवन व्यतीत करने के लिए ही ब्राह्मण बने हो, न कि पुरुषार्थ की मेहनत वा किसी न किसी उलझन में रहने के लिए ब्राह्मण बने हो। रूहानी आन्तरिक खुशी वा अतीन्द्रिय सुख जो सारे कल्प में नहीं प्राप्त हो सकता है वह प्राप्त करने के लिए ब्राह्मण बने हो। लेकिन चेक करो कि खुशी किसी साधन के आधार पर, किसी हद की प्राप्ति के आधार पर, वा थोड़े समय की सफलता के आधार पर, मान्यता वा नामाचार के आधार पर, मन के हद की इच्छाओं के आधार

पर वा यही अच्छा लगता है – चाहे व्यक्ति, चाहे स्थान वा वैभव, ऐसे मन पसन्दी के प्रमाण खुशी की प्राप्ति का आधार तो नहीं है? इन आधारों से खुशी की प्राप्ति – यह कोई वास्तविक खुशी नहीं है। अविनाशी खुशी नहीं है। आधार हिला तो खुशी भी हिल जाती। ऐसी खुशी प्राप्त करने के लिए ब्राह्मण नहीं बने हो। अल्पकाल की प्राप्ति द्वारा खुशी – यह तो दुनिया वालों के पास भी है। उन्हों का भी स्लोगन है – खाओ पियो मौज करो। लेकिन वह अल्पकाल का आधार समाप्त हुआ तो खुशी भी समाप्त हो जाती। ऐसे ही ब्राह्मण जीवन में भी इन आधारों से खुशी की प्राप्ति हुई तो बाकी अन्तर क्या हुआ? खुशियों के सागर के बच्चे बने हो तो हर संकल्प में, हर सेकण्ड खुशी की लहरों में लहराने वाले हो। सदा खुशियों के भण्डार हो! इसको कहा जाता है – ‘होली और हैपी हंस’। बापदादा देख रहे थे कि जो लक्ष्य है बिना कोई हद के आधार के सदा आन्तरिक खुशी में रहने का, उस लक्ष्य से बदल और हद की प्राप्तियों की छोटी-छोटी गलियों में फँस जाने कारण कई बच्चे लक्ष्य अर्थात् मंजिल से दूर हो जाते हैं। हाईवे को छोड़कर गलियों में फँस जाते हैं। अपना लक्ष्य, खुशी को छोड़ हद की प्राप्तियों के पीछे लग जाते हैं। आज नाम हुआ वा काम हुआ, इच्छा पूर्ण हुई तो खुशी है। मनपसन्द, संकल्प पसन्द प्राप्ति हुई तो बहुत खुशी है। थोड़ी भी कमी हुई तो लक्ष्य वहाँ ही रह जाता। लक्ष्य हद के बन जाते इसलिए बेहद की अविनाशी खुशी से किनारा हो जाता है। तो बापदादा बच्चों से पूछते हैं कि क्या ब्राह्मण इसलिए बने हो? इसलिए यह रूहानी जीवन अपनाई है? यह तो साधारण जीवन है। इसको श्रेष्ठ जीवन नहीं कहा जाता। कोई भी कर्म करो चाहे कितनी भी बड़ी सेवा का काम हो लेकिन जो सेवा आन्तरिक खुशी, रूहानी मौज, बेहद की प्राप्ति से नीचे ले आती है अर्थात् हद में ले आती है, आज मौज कल मूँझ, आज खुशी कल व्यर्थ उलझन में डालती है, खुशी से वंचित कर देती है, ऐसी सेवा को छोड़ दो लेकिन खुशी को नहीं छोड़ो। सच्ची सेवा सदा बेहद की स्थिति का, बेहद की खुशी का अनुभव कराती है। अगर ऐसी अनुभूति नहीं है तो वह मिक्स सेवा है। सच्ची सेवा नहीं है। यह लक्ष्य सदैव रखो कि सेवा द्वारा स्वउन्नति, स्वप्राप्ति, सन्तुष्टता और महानता की अनुभूति हुई? जहाँ सन्तुष्टता की महानता होगी वहाँ अविनाशी प्राप्ति की अनुभूति होगी। सेवा अर्थात् फूलों के बगीचे को हरा-भरा करना। सेवा अर्थात् फूलों के बगीचे का अनुभव करना न कि कांटों के जंगल में फँसना। उलझन, अप्राप्ति, मन की मूँझ और मौज, अभी-अभी मूँझ – यह है कांटे। इन कांटों से किनारा करना अर्थात् बेहद की खुशी का अनुभव करना है। कुछ भी हो जाए – हद की प्राप्ति का त्याग भी करना पड़े, कई बातों को छोड़ना भी पड़े, बातों को छोड़ो लेकिन खुशी को नहीं छोड़ो। जिस लिए आये हो उस लक्ष्य से किनारे न हो जाओ। यह सूक्ष्म चेकिंग करो। खुश तो हैं लेकिन अल्पकाल की प्राप्ति के आधार से खुश रहना इसी को ही खुशी तो नहीं समझते? कहाँ साइडसीन को ही मंजिल तो नहीं समझ रहे हो? क्योंकि साइडसीन भी आकर्षण करने वाले होते हैं। लेकिन मंजिल को पाना अर्थात् बेहद के राज्य अधिकारी बनना। मंजिल से किनारा करने वाले विश्व के राज्य अधिकारी नहीं बन सकते। रायल फैमिली में भी नहीं आ सकते। इसलिए लक्ष्य को, मंजिल को सदा स्मृति में रखो। अपने से पूछो। चलते-चलते कहाँ कोई हद की गली में तो नहीं पहुँच रहे हैं! अल्पकाल की प्राप्ति की खुशी, सदाकाल की खुशनसीबी से किनारा तो नहीं करा रही है? थोड़े में खुश होने वाले तो नहीं हो? अपने आप को खुश तो नहीं कर रहे हो? जैसी हूँ, वैसी हूँ, ठीक हूँ, खुश हूँ। अविनाशी खुशी की निशानी है – उनको औरों से भी सदा खुशी की दुआयें अवश्य प्राप्त होंगी। बापदादा और निमित्त बड़ों के स्नेह की दुआयें अन्दर अलौकिक आत्मिक खुशी के सागर में लहराने का अनुभव करायेंगी। अलबेलेपन में यह नहीं सोचना कि मैं तो ठीक हूँ लेकिन दूसरे मेरे को नहीं जानते। क्या सूर्य की रोशनी छिप सकती है? सत्यता की खुशबू कभी मिट नहीं सकती। छिप नहीं सकती। इसलिए धोखा कभी नहीं खाना।

यही पाठ पक्का करना। पहले अपनी बेहद की अविनाशी खुशी फिर दूसरी बातें। बेहद की खुशी सेवा की वा सर्व के स्नेह की, सर्व द्वारा अविनाशी सम्मान प्राप्त होने की खुशनसीबी अर्थात् श्रेष्ठ भाग्य स्वतः ही अनुभूति करायेगी। जो सदा खुश है वह खुशनसीब है। बिना मेहनत, बिना इच्छा अथवा बिना कहने के सर्व प्राप्ति सहज होंगी। यह पाठ पक्का किया? सेवा अर्थात् फूलों के बगीचे को हरा-भरा करना। सेवा अर्थात् फूलों के बगीचे का अनुभव करना न कि कांटों के जंगल में फँसना। उलझन, अप्राप्ति, मन की मूँझ और मौज, अभी-अभी मूँझ – यह है कांटे। इन कांटों से किनारा करना अर्थात् बेहद की खुशी का अनुभव करना है। कुछ भी हो जाए – हद की प्राप्ति का त्याग भी करना पड़े, कई बातों को छोड़ना भी पड़े, बातों को छोड़ो लेकिन खुशी को नहीं छोड़ो। जिस लिए आये हो उस लक्ष्य से किनारे न हो जाओ। यह सूक्ष्म चेकिंग करो। खुश तो हैं लेकिन अल्पकाल की प्राप्ति के आधार से खुश रहना इसी को ही खुशी तो नहीं समझते? कहाँ साइडसीन को ही मंजिल तो नहीं समझ रहे हो? क्योंकि साइडसीन भी आकर्षण करने वाले होते हैं। लेकिन मंजिल को पाना अर्थात् बेहद के राज्य अधिकारी बनना। मंजिल से किनारा करने वाले विश्व के राज्य अधिकारी नहीं बन सकते। रायल फैमिली में भी नहीं आ सकते। इसलिए लक्ष्य को, मंजिल को सदा स्मृति में रखो। अपने से पूछो। चलते-चलते कहाँ कोई हद की गली में तो नहीं पहुँच रहे हैं! अल्पकाल की प्राप्ति की खुशी, सदाकाल की खुशनसीबी से किनारा तो नहीं करा रही है? थोड़े में खुश होने वाले तो नहीं हो? अपने आप को खुश तो नहीं कर रहे हो? जैसी हूँ, वैसी हूँ, ठीक हूँ, खुश हूँ। अविनाशी खुशी की निशानी है – उनको औरों से भी सदा खुशी की दुआयें अवश्य प्राप्त होंगी। बापदादा और निमित्त बड़ों के स्नेह की दुआयें अन्दर अलौकिक आत्मिक खुशी के सागर में लहराने का अनुभव करायेगी। अलबेलेपन में यह नहीं सोचना कि मैं तो ठीक हूँ लेकिन दूसरे मेरे को नहीं जानते। क्या सूर्य की रोशनी छिप सकती है? सत्यता की खुशबू कभी मिट नहीं सकती। छिप नहीं सकती। इसलिए धोखा कभी नहीं खाना। यही पाठ पक्का करना। पहले अपनी बेहद की अविनाशी खुशी फिर दूसरी बातें। बेहद की खुशी सेवा की वा सर्व के स्नेह की, सर्व द्वारा अविनाशी सम्मान प्राप्त होने की खुशनसीबी अर्थात् श्रेष्ठ भाग्य स्वतः ही अनुभूति करायेगी। जो सदा खुश है वह खुशनसीब है। बिना मेहनत, बिना इच्छा अथवा बिना कहने के सर्व प्राप्ति सहज होंगी। यह पाठ पक्का किया? बापदादा देखते हैं – आये किसलिए हैं, जाना कहाँ है और जा कहाँ रहे हैं। हद को छोड़ फिर भी हद में ही जाना तो बेहद का अनुभव कब करेंगे! बापदादा को भी बच्चों पर स्नेह होता है। रहम तो नहीं कहेंगे क्योंकि भिखारी थोड़े ही हो। दाता, विधाता के बच्चे हो, दुखियों पर रहम किया जाता है। आप तो सुख स्वरूप सुख दाता के बच्चे हो। अब समझा क्या करना है? बापदादा इस वर्ष के लिए बार-बार भिन्न-भिन्न बातों में अटेंशन दिला रहे हैं। इस वर्ष विशेष स्व पर अटेंशन रखने का समय दिया जा रहा है। दुनिया वाले तो सिर्फ कहते हैं कि खाओ पियो मौज करो। लेकिन बापदादा कहते हैं – खाओ और खिलाओ। मौज में रहो और मौज में लाओ। अच्छा –

दान देना अर्थात् जो भी कुछ कमजोरी हो उसको दान में दे दो। छोटी-सी बात समझकर दे दो। तिल समान समझकर दे दो। बड़ी बात नहीं समझो – छोड़ना पड़ेगा, देना पड़ेगा नहीं। तिल के समान छोटी-सी बात दान देना, खुशी खुशी छोटी-सी बात समझकर खुशी से दे दो। यह है 'दान' का महत्व। समझा।

15.1.86... .. सबसे ज़्यादा खुशी किसको है – बाप को है या आपको? क्यों नहीं कहते हो कि मेरे को है। द्वापर से भक्ति में पुकारा और अब प्राप्त कर लिया तो कितनी खुशी होगी! 63 जन्म प्राप्त करने की इच्छा रखी और 63 जन्मों की इच्छा पूर्ण हो गई तो कितनी खुशी होगी! किसी भी चीज़ की इच्छा पूर्ण होती है तो खुशी होती है

ना। यह खुशी ही विश्व को खुशी दिलाने वाली है। आप खुश होते हो तो सारी विश्व खुश हो जाती है। ऐसी खुशी मिली है ना! जब आप बदलते हो तो दुनिया भी बदल जाती है। और ऐसी बदलती है जिसमें दुःख और अशान्ति का नामो-निशान नहीं। तो सदा खुशी में नाचते रहो। सदा अपने श्रेष्ठ कर्मों का खाता जमा करते चलो। सभी को खुशी का खज़ाना बाँटो। आज के संसार में खुशी नहीं है। सब खुशी के भिखारी हैं, उन्हें खुशी से भरपूर बनाओ।

20.1.86... .. आपके सामने सदा स्वर्णिम दुनिया का स्वर्णिम सूर्य उदय हुआ ही पड़ा है। और उन्हों के सामने है – विनाश की काली घटाये। अभी आप सभी तो समय समीप होने के कारण सदा खुशी के घुँघरू डाल नाचते रहते हो कि आज पुरानी दुनिया है, कल स्वर्णिम दुनिया होगी। आज और कल, इतना समीप पहुँच गये हो।

दाता के बच्चे कभी लेने का हाथ नहीं फैलाते। बुद्धि से भी यह संकल्प करना कि यह करें तो मैं करूँ, यह स्नेह दे तो मैं दूँ। यह मान देवे तो मैं दूँ। यह भी हाथ फैलाना है। यह भी रॉयल भिखारीपन है। इसमें निष्काम योगी बनों। तब ही गोल्डन दुनिया की खुशी की लहर विश्व तक पहुँचेगी।

हर सेकण्ड गोल्डन हो। हर संकल्प गोल्डन हो। सदा हर आत्मा के प्रति स्नेह के, खुशी के सुनहरी पुष्प की वर्षा करते रहो।

आप ज्ञान की शक्ति वाले ऐसे शक्तिशाली वृत्ति और वायुमण्डल बनाओ जो थोड़े समय में चारों ओर खुशी की लहर, सृष्टि के श्रेष्ठ भविष्य की लहर, बहुत जल्दी से जल्दी फैल जाए। आधी दुनिया अभी आधा मरी हुई है। भय के मौत की शैय्या पर सोई हुई है। उसको खुशी की लहर की आक्सीजन दो। यही गोल्डन जुबली का गोल्डन संकल्प सदा इमर्ज रूप में रहे। समझा क्या करना है?

16.2.86... .. भरपूर आत्मा सदा ही खुशी के झूले में झूलती रहती है, सुख के झूले में झूलती रहती है। तो ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें बन गये। सदा सम्पन्न रहना ही है। चेक करो मिले हुए शक्तियों के खज़ाने को कहाँ तक कार्य में लगाया है!

22.2.86... .. गुप्त सेवाधारी सफलता की खुशी में सदा भरपूर रहता है।

10.3.86... .. फारेनर्स को हाथ में हाथ मिलाकर चलना अच्छा लगता है ना! तो बापदादा भी कहते हैं कि सदा बाप को हाथ में हाथ दे, फिर चलो। अकेले नहीं चलो। अकेले चलेंगे तो कभी बोर हो जायेंगे और कभी किसकी नज़र भी पड़ जायेगी। बाप के साथ चलेंगे तो एक तो कभी भी माया की नजर नहीं पड़ेगी और दूसरा साथ होने के कारण सदा ही खुशी-खुशी से मौज से खाते चलते मौज मनाते जायेंगे। तो साथी सबको पसन्द है ना!

22.3.86... .. मास्टर सर्वशक्तिवान के आगे समस्या कोई नहीं। हाथी के पांव के नीचे अगर चींटी आ जाए तो दिखाई देगी? तो यह समस्याएँ भी आप महारथियों के आगे चींटी समान है। खेल समझने से खुशी रहती। कितनी भी बड़ी बात भी छोटी हो जाती। जैसे आजकल बच्चों को कौन से खेल कराते हैं, बुद्धि के। वैसे बच्चों को हिसाब करने दो तो तंग हो जायेंगे। लेकिन खेल की रीति से हिसाब खुशी-खुशी करेंगे। तो आप सबके लिए भी समस्या चींटी समान है ना!

27.3.86... .. जब बाप से सदा का वर्सा इतना सहज मिल रहा है तो सदा को छोड़ थोड़ा सा वा कभी-कभी का क्यों लेवें! दाता दे रहा है तो लेने वाले कम क्यों लेवें। इसलिए सदा खुशी के झूले में झूलते रहो। सदा मायाजीत प्रकृति जीत, विजयी बन विजय का नगारा विश्व के आगे जोर-शोर से बजाओ।

31.3.86... .. सदा मुहब्बत में रहना, खुशी में रहना अर्थात् मुरलीधर बनना, सूर्यवंशी बनना।

9.4.86... .. अपने को पद्मापदम भाग्यवान अनुभव करते हो? क्योंकि देने वाला बाप इतना देता है जो एक जन्म तो भाग्यवान बनते ही हो लेकिन अनेक जन्म तक यह अविनाशी भाग्य चलता रहेगा। ऐसा अविनाशी भाग्य कभी स्वप्न में भी सोचा था! असम्भव लगता था ना? लेकिन आज सम्भव हो गया। तो ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें हैं – यह खुशी रहती है? कभी किसी भी परिस्थिति में खुशी गायब तो नहीं होती! क्योंकि बाप द्वारा खुशी का खज़ाना रोज मिलता रहता है, तो जो चीज़ रोज मिलती है वह बढ़ेगी ना। कभी भी खुशी कम हो नहीं सकती। क्योंकि खुशियों के सागर द्वारा मिलता ही रहता है। अखुट है।

ब्राह्मणों के लिए सब अच्छा है। बुरा कुछ नहीं। आप तो पहले ही बादशाह हो। अभी भी बादशाह, भविष्य में भी बादशाह। जब सदा के बादशाह बन गये तो बेफ़िकर हो गये। ऐसी बादशाही जो कोई छीन नहीं सकता। कोई बन्दूक से बादशाही उड़ा नहीं सकता। यही खुशी सदा रहे और औरों को भी देते जाओ। औरों को भी बेफ़िकर बादशाह बनाओ।

31.12.86... ..बापदादा सदा अविनाशी बच्चों को अविनाशी मुबारक देते हैं और अविनाशी बनाने की विधि बताते हैं। साकार दुनिया में साकारी सुहेज मनाते देख बापदादा भी खुश होते हैं। क्योंकि ऐसा सुन्दर परिवार जो पूरा ही परिवार ताजधारी, तख़्तधारी है और इतनी लाखों की संख्या में एक परिवार है, ऐसा परिवार सारे कल्प में एक ही बार मिलता है। इसलिए खूब नाचो, गाओ, मिठाई खाओ। बाप तो बच्चों को देख करके, भासना लेकर के ही खुश होते हैं। सभी के मन के गीत कौन-से बजते हैं? खुशी के गीत बज रहे हैं। सदा 'वाह! वाह!' के गीत गाओ। वाह बाबा! वाह तकदीर! वाह मीठा परिवार! वाह श्रेष्ठ संगम का सुहावना समय! हर कर्म 'वाह- वाह!' है। 'वाह! वाह!' के गीत गाते रहो।

23.1.87... .. बाप का बनकर भी अगर सदा खुश नहीं रहेंगे तो कब रहेंगे? बाप का बनना माना सदा खुशी में रहना। न दुःख है, न दुःख में रोयेंगे। सब दुःख दूर हो गये। तो अपने इस वरदान को सदा याद रखना।

5.10.87... .. राजयोगी सदा बेहद का मालिक हैं, हद के मालिक नहीं। हद से निकल गये। बेहद का अधिकार मिल गया - इसी खुशी में रहो। जैसे बेहद का बाप है, वैसे बेहद की खुशी में रहो, नशे में रहो।

17.10.87... .. सदा अपनी सर्व प्राप्तियों को देख हर्षित रहो। क्या-क्या मिला है, उसकी लिस्ट निकालो तो बहुत लम्बी लिस्ट हो जायेगी। क्या-क्या मिला? तन में खुशी मिली, तो तन की खुशी तन्दरुस्ती है; मन में शान्ति मिली, तो शान्ति मन की विशेषता है और धन में इतनी शक्ति आई जो दाल-रोटी 36 प्रकार के समान अनुभव हो।

जीवन में हर एक बेफ़िकर रहना चाहता है। जहाँ फ़िकर नहीं, वहाँ सदा खुशी होगी। तो तेरा कहने से, बेफ़िकर बनने से खुशी के खज़ाने भरपूर हो जाते हैं। बादशाह के पास खज़ाना भरपूर होता है। तो आप बेफ़िकर बादशाहों के पास अनगिनत, अखुट, अविनाशी खज़ाने हैं जो सतयुग में नहीं होंगे।

18.11.87... .. ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी बनने से रॉयल भी हो गये, साहूकार भी हो गये और अनेक जन्म मालामाल रहेंगे। जैसे पहले चलते थे, रहते थे, पहनते थे... उससे अभी कितने रॉयल हो गये हो! अभी सदा ही स्वच्छ रहते हो। पहले कपड़े भी मैले पहनेंगे, अभी अन्दर बाहर दोनों से स्वच्छ हो गये। तो ब्रह्माकुमार बनने में फ़ायदा हो गया ना। सब बदल जाता है, परिवर्तन हो जाता है। पहले की शक्ल, अक्ल देखो और अभी भी देखो तो फर्क का पता चलेगा। अभी रूहानियत की झलक आ गई है, इसलिए सूरत ही बदल गई है। तो सदा ऐसे खुशी में नाचते रहो। अच्छा।

27.11.87... आप सभी अनेक बार के विजयी हो - इसी खुशी में सदा आगे बढ़ते चलो। दुनिया में सबको आवश्यकता ही है खुशी की। चाहे सब प्राप्तियाँ हों लेकिन खुशी की प्राप्ति नहीं है। तो जो अविनाशी खुशी की आवश्यकता दुनिया को है, वह खुशी सदा बाँटते रहो।

6.12.87... सदा इस नशे और खुशी में रहो - वाह, मेरा हीरो पार्ट जो सारे विश्व की आत्मायें बार-बार हेयर-हेयर करती हैं! यह द्वापर से जो कीर्तन करते हैं यह आपके इस समय के हीरो पार्ट का ही यादगार है। कितना अच्छा यादगार बना हुआ है! आप स्वयं हीरो बने हो तब आपके पीछे अब तक भी आपका गायन चलता रहता है। अन्तिम जन्म में भी अपना गायन सुन रहे हैं। गोपीवल्लभ का भी गायन है तो ग्वाल बाप का भी गायन है, गोपिकाओं का भी गायन है। बाप का शिव के रूप में गायन है तो बच्चों का शक्तियों के रूप में गायन है। तो सदा हीरो पार्ट बजाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हैं - इसी स्मृति में खुशी में आगे बढ़ते चलो।

31.12.87... इस नये वर्ष में यही विशेष नवीनता जीवन में अनुभव करते रहो - जो हर सेकेण्ड और संकल्प में बाप को तो सदा मुबारक देते हो लेकिन आप सभी हर ब्राह्मण आत्मा वा कोई भी अन्जान, अज्ञानी आत्मा भी सम्बन्ध वा सम्पर्क में आये तो बाप समान हर समय हर आत्मा के प्रति दिल के खुशी की मुबारक वा बधाई निकलती रहे। कोई कैसा भी हो लेकिन आपके खुशी की बधाई उनको भी खुशी की प्राप्ति का अनुभव कराये। बधाई देना - यह खुशी की लेन-देन करना है। कभी भी किसी को बधाई देते तो वह खुशी की बधाई है। दुःख के समय बधाई नहीं कहेंगे। तो हर एक आत्मा को देख खुश होना वा खुशी देना - यही दिल की मुबारक वा बधाई है। दूसरी आत्मा भले आप से कैसा भी व्यवहार करे लेकिन आप बापदादा की हर समय बधाई लेने वाली श्रेष्ठ आत्मायें सदा हरेक को खुशी दो। वह काँटा दे, आप बदले में रूहानी गुलाब दो। वह दुःख दे, आप सुखदाता के बच्चे सुख दो। जैसे से -- वैसे नहीं बन जाओ, अज्ञानी से अज्ञानी नहीं बन सकते। संस्कारों के वा स्वभाव के वशीभूत आत्मा से आप भी 'वशीभूत' नहीं बन सकते।

18.1.88... किसी भी सेवा का पुण्य एकस्ट्रा 'खुशी', शक्ति की अनुभूति होती है। जब भी कोई सफलतास्वरूप बनके सेवा करते हो तो उस समय विशेष खुशी की अनुभूति करते हो ना। वर्णन करते हो कि आज बहुत अच्छा अनुभव हुआ! क्यों हुआ? बाप का परिचय सुनाकर के सफलता का अनुभव किया। कोई परिचय सुनकर के जाग जाता है या परिचय मिलते परिवर्तन हो जाता है तो उनकी प्राप्ति का प्रभाव आपके ऊपर भी पड़ता है। दिल में खुशी के गीत बजने शुरू हो जाते हैं - यह है प्रत्यक्षफल की प्राप्ति। तो सेवा करने वाला अर्थात् सदा प्राप्ति का मेवा खाने वाला। तो जो मेवा खाता है वह क्या होता? तन्दरुस्त होता है ना! अगर डॉक्टर्स भी किसको कमज़ोर देखते हैं तो क्या कहते हैं? फल खाओ। क्योंकि आजकल और ताकत की चीज़ - माखन खाओ, घी खाओ, वह तो हज़म नहीं कर सकते। आजकल ताकत के लिए फल देते हैं। तो सेवा का भी प्रत्यक्षफल मिलता है। चाहे कर्मणा भी करो, कर्मणा की भी खुशी होती है। मानो सफ़ाई करते हो, लेकिन जब स्थान सफ़ाई से चमकता है तो सच्चे दिल से करने कारण स्थान को चमकता हुआ देखकर के खुशी होती है ना।

सभी को खुश करने की सेवा नम्बर वन सेवा है। सबके अन्दर खुशी की लहर पैदा करना - यह है बाप समान सेवा।

22.1.88... डायरेक्ट भगवान की रचना - यह अभी अनुभव से कह सकते हो। तो भगवान की रचना कितनी श्रेष्ठ होगी! जैसा रचयिता वैसी रचना होगी ना। यह नशा और खुशी सदा रहती है? अपने को साधारण तो नहीं समझते हो? यह राज़ जब बुद्धि में आ जाता है तो सदा ही रूहानी नशा और खुशी चेहरे पर वा चलन में स्वतः ही

रहती है। आपका चेहरा देखकर के किसको अनुभव हो कि सचमुच यह श्रेष्ठ रचना की रचना हैं। जैसे राजा की राजकुमारी होगी तो उसकी चलन से पता चलेगा कि यह रायल घर की है। यह साहूकार घर की या यह साधारण घर की है। ऐसे आपके चलन से, चेहरे से अनुभव हो कि यह ऊँची रचना है, ऊँचे बाप के बच्चे हैं!

कन्यायें 100 ब्राह्मणों से उत्तम गाई हुई हैं यह महिमा क्यों है? क्योंकि जितना स्वयं श्रेष्ठ होंगे, उतना ही औरों को भी श्रेष्ठ बना सकेंगे। तो श्रेष्ठ आत्मायें हैं – यह खुशी रहती है? तो कुमारियाँ सेवाधारी बन सेवा में आगे बढ़ते चलो। क्योंकि यह संगमयुग है ही थोड़े समय का युग, इसमें जितना जो करने चाहे, उतना कर सकता है। तो श्रेष्ठ लक्ष्य और श्रेष्ठ लक्षण वाली हो ना? जहाँ लक्ष्य और लक्षण श्रेष्ठ हैं, वहाँ प्राप्ति भी सदा श्रेष्ठ अनुभव होती है। तो सदा इस ईश्वरीय जीवन का फल “खुशी” और “शक्ति” दोनों अनुभव करती हो? दुनिया में खुशी के लिए खर्चा करते, तो भी प्राप्त नहीं होती। अगर होती भी है तो अल्पकाल की और खुशी के साथ-साथ दुःख भी होगा। लेकिन आप लोगों की जीवन सदा खुशी की हो गई। दुनिया वाले खुशी के लिए तड़पते हैं और आपको खुशी प्रत्यक्षफल के रूप में मिल रही है। खुशी ही आपके जीवन की विशेषता है! अगर खुशी नहीं तो जीवन नहीं। तो सदा अपनी उन्नति करते हुए आगे बढ़ रही हो ना?

26.1.88... भक्ति-मार्ग के पूज्य बनने से श्रेष्ठ पूजा अब की है। जैसे भक्ति-मार्ग की पूज्य आत्माओं के दो घड़ी के सम्पर्क से अर्थात् सिर्फ मूर्ति के सामने जाने से दो घड़ी के लिए भी शान्ति, शक्ति, खुशी का अनुभव होता है। ऐसे संगमयुगी पूज्य आत्माओं द्वारा अब भी दो घड़ी-एक घड़ी भी दृष्टि मिलने से भी खुशी, शान्ति वा उमंग-उत्साह की शक्ति अनुभव होती है। ऐसी पूज्य आत्मायें अर्थात् नम्बरवन विशेष आत्मायें हैं।

अनेक बार की विजयी आत्मा हैं— इस स्मृति से कोई भी परिस्थिति को पार करना खेल लगता है। खुशी अनुभव होती है? विजयी आत्माओं को विजय अधिकार अनुभव होती है। अधिकार मेहनत से नहीं मिलता, स्वतः ही मिलता है। तो सदा विजय की खुशी से, अधिकार से आगे बढ़ते औरों को भी आगे बढ़ाते चलो।

30.1.88... शक्तियों को सदा कौन-सी खुशी रहती है? सदा बाप के साथ कम्बाइण्ड हूँ। शिव शक्ति का अर्थ ही है कम्बाइण्ड। बाप और आप - दोनों का मिलाकर कहते हैं – ‘शिव-शक्ति’। तो जो कम्बाइण्ड है, उसे कोई अलग नहीं कर सकता। ऐसी खुशी रहती है? निर्बल आत्मा को बाप ने शक्ति बना दिया। तो यही सदा याद रखो कि हम कम्बाइण्ड रहने के अधिकारी बन गये। पहले ढूँढने वाले थे और अभी साथ रहने वाले हैं – यह नशा सदा रहे।

3.2.88... सदा बेहद बाप, बेहद सेवा और बेहद राज्य-भाग्य - यही स्मृति में रखो तो बेहद की खुशी रहेगी। हद में खुशी गायब हो जाती है, बेहद में सदा खुशी रहेगी।

16.2.88... बापदादा को इस अवतरण-दिवस की अर्थात् शिव जयन्ति दिवस की बच्चों से भी ज़्यादा खुशी है, खुशी में खुशी है! क्योंकि यह अवतरण का दिवस हर वर्ष यादगार तो मनाते हैं लेकिन जब बाप का साकार ब्रह्मा तन में अवतरण होता है तो बापदादा को इसमें भी विशेष शिव बाप को विशेष इस बात की खुशी रहती – कितने समय से अपने समीप स्नेही बच्चों से अलग परमधाम में रहते, चाहे परमधाम में और आत्मायें रहती भी हैं लेकिन जो पहली रचना की आत्मायें हैं, जो बाप समान बनने वाली सेवा के साथी आत्मायें हैं, वह कितने समय के बाद अवतरित होने से फिर से आकर मिलती हैं! कितने समय की बिलुड़ी हुई श्रेष्ठ आत्मायें फिर से आकर मिलती हैं! अगर कोई अति स्नेही बिलुड़ा हुआ मिल जाए तो खुशी में विशेष खुशी होगी ना।

अगर माया के खेल को खेल समझ करो तो उत्साह बढ़ेगा और अगर माया की कोई भी परिस्थिति को दुश्मन समझ देखते हो तो घबरा जाते हो। मिक्की-माउस खेल में कभी बन्दर आ जाता, कभी बिल्ली, कभी कुत्ता, कभी चूहा आ जाता लेकिन आप घबराते हो क्या? मजा आता है ना देखने में। तो यह भी उत्सव के रूप में माया के भिन्न-भिन्न परिस्थितियों का खेल देखो। खेल देखने में कोई घबरा जाए तो क्या कहेंगे? खेल देखते-देखते भी कोई सोच ले कि गेंद मेरे पास ही आ रहा है, मेरे को ही न लग जाए तो खेल देख सकेंगा? तो खुशी और मजे से खेल देखो, माया से घबराओ नहीं। एक मनोरंजन समझो। चाहे शेर के रूप में आ जाए - घबराओ नहीं। यही स्मृति रखो कि ब्राह्मण जीवन की हर घड़ी उत्सव है, उत्साह है। उसी के बीच ये खेल भी देख रहे हैं, खुशी में नाच भी रहे हैं और बाप के ब्राह्मण परिवार के विशेषताओं के, गुणों के गीत भी गा रहे हैं और ब्रह्मा भोजन भी मजे से खा रहे हैं।

20.2.88... कभी-कभी जैसे बहुत काम होता है तो बहुत काम में एक तो बुद्धि की थकावट होने के कारण जितना चाहते उतना नहीं कर पाते और दूसरा - बहुत काम होने के कारण थोड़ा-सा भी किसी द्वारा थोड़ी हलचल होगी तो थकावट के कारण चिड़चिड़ापन हो जाता। उससे खुशी कम हो जाती है। वैसे अन्दर ठीक रहते हो, सेवा का बल भी मिल रहा है, खुशी भी मिल रही है, फिर भी शरीर तो पुराना है ना। इसलिए टू-मच (Too-much, अत्यधिक) में नहीं जाओ। बैलेन्स रखो।

कभी भी किसी भी बात में चाहे तन कमजोर भी हो या कार्य का ज़्यादा बोझ भी हो लेकिन मन से कभी भी थकना नहीं। तन की थकावट मन के खुशी से समाप्त हो जाती है। लेकिन मन की थकावट शरीर की थकावट को भी बढ़ा देती है। मन कभी थकना नहीं चाहिए। जब थक जाओ तो सेकण्ड में बाप के वतन में आ जाओ। हमेशा समझो - 'करावनहार करा रहा है, चलाने वाला चला रहा है।'

3.3.88... जैसे सुनाया था - कई बच्चे जब याद में बैठते हैं वा ब्राह्मण जीवन में चलते-फिरते याद का अभ्यास करते हैं तो याद में शान्ति का अनुभव करते हैं लेकिन खुशी का अनुभव नहीं करते। सिर्फ शान्ति की अनुभूति कभी माथा भारी कर देती है और कभी निद्रा के तरफ़ ले जाती है। शान्ति की स्थिति के साथ खुशी नहीं रहती। तो जहाँ खुशी नहीं, वहाँ उमंग-उत्साह नहीं होता और योग लगाते भी अपने से सन्तुष्ट नहीं होते, थके हुए रहते हैं। सदा सोच की मूड में रहते, सोचते ही रहते। खुशी क्यों नहीं आती, इसका भी कारण है। क्योंकि सिर्फ यह सोचते हो कि मैं आत्मा हूँ, बिन्दु हूँ, ज्योतिस्वरूप हूँ, बाप भी ऐसा ही है। लेकिन मैं कौन-सी आत्मा हूँ! मुझ आत्मा की विशेषता क्या है? जैसे मैं पद्मापद्म भाग्यवान आत्मा हूँ, मैं आदि रचना वाली आत्मा हूँ, मैं बाप के दिलतख़्तनशीन होने वाली आत्मा हूँ। यह विशेषतायें जो खुशी दिलाती है, वह नहीं सोचते हो। सिर्फ बिन्दी हूँ, ज्योति हूँ, शान्तस्वरूप हूँ - तो निल में चले जाते हो। इसलिए माथा भारी हो जाता है। ऐसे ही जब स्वयं के प्रति वा अन्य आत्माओं के प्रति परिवर्तन का दृढ़ संकल्प करते हो तो स्वयं प्रति वा अन्य आत्माओं के प्रति शुभ, श्रेष्ठ संकल्प वा विशेषता का स्वरूप सदा इमर्ज रूप में रखो तो परिवर्तन हो जायेगा।

7.3.88... भाग्यवान के नयन अर्थात् दिव्य दृष्टि किसी को भी सदा खुशी की लहर उत्पन्न कराने के निमित्त बनती है। जिसको भी दृष्टि मिलेगी वह रूहानियत का, रूहानी बाप का, परमात्म-याद का अनुभव करेगा। करावनहार बाप के डायरेक्शन प्रमाण हर कर्म करते चलो तो कर्म भी श्रेष्ठ और श्रेष्ठ कर्म का फल - सदा खुशी, सदा हल्कापन, फ़रिश्ता जीवन का अनुभव करते रहेंगे।

19.3.88... .. बाप की छत्रछाया में रहने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ – यही अनुभूति होती है। जो अभी छत्रछाया में रहते, वही छत्रधारी बनते हैं। तो छत्रछाया में रहने वाली भाग्यवान आत्मा हूँ – यह खुशी रहती है ना। छत्रछाया ही सेफ़्टी का साधन है। इस छत्रछाया के अन्दर कोई आ नहीं सकता। बाप की छत्रछाया के अन्दर हूँ – यह चित्र सदा सामने रखो।

भविष्य की राजाई के आगे यह प्राप्ति कितना ऊँची है! तो सदा प्राइज़ लेने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ – इसी नशे और खुशी से सदा आगे बढ़ते रहो। पहली और प्राइज़ दोनों स्मृति में सदा रहें तो आगे स्वतः बढ़ते रहेंगे।

जितनी सेवा करते हो, उतना पुण्य का खाता बढ़ता जाता है। तो पुण्य का खाता अविनाशी बन गया। यह पुण्य अनेक जन्म भरपूर करने वाला है। तो पुण्य आत्मा हो और सदा ही पुण्यात्मा बन औरों को भी पुण्य का रास्ता बताने वाले। यह पुण्य का खाता अनेक जन्म साथ रहेगा, अनेक जन्म मालामाल रहेंगे – इसी खुशी में सदा आगे बढ़ते चलो।

7.11.89... .. बापदादा सर्व स्नेही बच्चों को चाहे पास हैं, चाहे दूर होते भी दिल के पास हैं, स्नेह के रिटर्न में वरदान दे रहे हैं – “सदा खुशनसीब भव! सदा खुशनुमा भव। सदा खुशी की खुराक द्वारा तन्दरुस्त भव! सदा खुशी के खज़ाने से सम्पन्न भव!”

11.11.89... .. दुनिया के कोटों से आप बहुत-बहुत भाग्यवान हो। वह तड़फने वाले हैं और आप सम्पन्न आत्मायें हो। प्राप्ति स्वरूप आत्मायें हो। यह खुशी है ना। रोज़ अपने से बात करो कि हमारे सिवाए और कौन खुश रह सकता है? तो यही वरदान सदा स्मृति में रखना कि समीप हैं, सम्पन्न हैं। अभी तो समीप मिलना भी हो गया। जैसे स्थूल में समीप अच्छा लगता है, वैसे स्थिति में भी सदा समीप अर्थात् सदा सम्पन्न बनो।..

जैसे साहूकार लोगों के चलने, बैठने, उठने में नशा दिखाई देता है और जितना नशा होता उतनी खुशी होती है। तो यह है रूहानी नशा। इस नशे में रहने से खुशी स्वतः होगी। खुशी ही जन्म-सिद्ध अधिकार है। सदा खुशी की झलक से औरों को भी रूहानी झलक दिखाने वाले बनो। इसी वरदान को सदा स्मृति में रखना। कुछ भी हो जाए – खुशी के वरदान को खोना नहीं। समस्या आयेगी और जायेगी लेकिन खुशी नहीं जाये। क्योंकि खुशी हमारी चीज़ है, समस्या परिस्थिति है, दूसरे के तरफ़ से आई हुई है। अपनी चीज़ को तो सदा साथ रखते हैं ना। पराई चीज़ तो आयेगी भी और जायेगी भी। परिस्थिति माया की है, अपनी नहीं है। अपनी चीज़ को खोना नहीं होता है। तो खुशी को खोना नहीं। चाहे यह शरीर भी चला जाए लेकिन खुशी नहीं जाए। खुशी से शरीर भी जायेगा तो बढ़िया मिलेगा। पुराना जायेगा नया मिलेगा, तो गुजरात और महाराष्ट्र वाले इस महानता में सदा रहना। खुशी में महान बनना।

अकाल-तख़्त-नशीन श्रेष्ठ शान में रहने वाले, बाप के दिल-तख़्त-नशीन आत्मा है – इसी शान में रहना। तो सदा खुश रहना और खुशी बाँटना। अच्छा। दिल्ली फाउण्डेशन है सेवा का। फाउण्डेशन कच्चा हुआ तो सभी कच्चे हो जाते हैं। इसलिए सदा पक्के रहना।

19.11.89... .. सदा खुशहाल रहना और औरों को भी खुशहाल बनाना। कभी भी मुरझाना नहीं। तन भी खुश, मन भी खुश और धन भी खुशी से कमाने वाले और खुशी से कार्य में लगाने वाले। जहाँ खुशी है वहाँ एक सौ भी हज़ारों के समान होता है, खुशहाली आ जाती है। और जहाँ खुशी नहीं वहाँ एक लाख भी एक रुपया है। तो तन-मन-धन से खुशहाल रहने वाले हैं। दाल-रोटी भी – 36 प्रकार का भोजन अनुभव हो। तो यही वरदान याद रखना कि हम सदा खुशहाल रहने वाले हैं। मुरझाना काम माया के साथियों का है और खुशहाल रहना काम बाप के

बच्चों का है। अपने को गरीब कभी नहीं समझना। सबसे साहूकार हम हैं। दुनिया में साहूकार देखना हो तो आपको देखें। क्योंकि सच्चा धन आपके पास है। विनाशी धन तो आज है, कल नहीं होगा। लेकिन अविनाशी धन आपके पास है। तो सबसे साहूकार आप हो। चाहे सूखी रोटी भी खाते हो, तो भी साहूकार हो क्योंकि खुशी की खुराक सूखी रोटी में भरी हुई है। उसके आगे और कोई खुराक नहीं। सबसे अच्छी खुराक खाने वाले, सुख की रोटी खाने वाले आप लोग हो। इसलिए सदा खुशहाल हो। कभी यह नहीं सोचना कि अगर साहूकार होते तो यह करते! साहूकार होते तो आते ही नहीं, वंचित रह जाते। तो ऐसे खुशहाल रहना जो आपको खुशहाल देख और भी खुशहाल हो जाएँ। अच्छा!

जैसे साहूकार लोगों की साहूकारी की निशानी का पता उनके नशे से पड़ता है। उनके चलने में, बैठने में, उठने में नशा दिखाई देता है। और जितना नशा होगा उतनी खुशी होगी। तो आप भी सदा खुश रहते हो ना! 'खुशी' जन्म-सिद्ध अधिकार है। तो यही वरदान सदा स्मृति में रखना कि हम सदा जमा के नशे में रहने वाले, सदा खुशी की झलक से औरों को भी रूहानी झलक दिखाने वाले हैं। कुछ भी हो जाए - खुशी के वरदान को खोना नहीं। समस्या आयेगी और जायेगी लेकिन खुशी नहीं जाये। क्योंकि खुशी हमारी चीज़ है, समस्या परिस्थिति है, दूसरे के तरफ़ से आई हुई है। अपनी चीज़ को सदा साथ रखते हैं। पराई चीज़ तो आयेगी भी जायेगी भी। परिस्थिति माया की है, अपनी नहीं है। तो खुशी को खोना नहीं। चाहे यह शरीर भी चला जाए लेकिन खुशी नहीं जाए। खुशी से शरीर भी जायेगा तो बढ़िया मिलेगा, पुराना जायेगा तो नया मिलेगा। डरना नहीं कि पता नहीं क्या बनेंगे। अच्छे-से-अच्छा बनेंगे। अच्छा!

5.12.89... .. प्रसन्नता के वायब्रेशन सूर्य की किरणों समान वायुमण्डल को, व्यक्ति को और सब बातें भुलाए सच्चे रूहानी शान्ति की, खुशी की अनुभूति में बदल देते हैं।

कोटों में कोई। अक्षोणी सेना नहीं गाई हुई है, कोटों में कोई गाया हुआ है। तो यह खुशी वा स्मृति सदा इमर्ज रहे। हर कदम सदा अपने को बाप के सिकीलधे समझते हो? सिकीलधे अर्थात् बड़े सिक से बाप ने हमें ढूँढ़ा है। बाप ने बड़े सिक व प्रेम से आपको ढूँढ़ा है। आपने ढूँढ़ा लेकिन मिला नहीं। परिचय ही नहीं था तो मिले कैसे? लेकिन बाप ने आपको ढूँढ़ा इसलिए कहते हैं - 'सिकीलधे'। तो जिसको बाप ढूँढ़े वह कितने भाग्यवान होंगे! दुनिया वाले बाप को ढूँढ़ रहे हैं और आप मिलन मना रहे हो। कितने थोड़े हो, बहुतों का पार्ट है ही नहीं। थोड़ों का पार्ट है, इसलिए गाया हुआ है - में खुशी अनुभव हो। अल्पकाल की प्राप्ति वालों के चेहरे पर वह प्राप्ति की रेखा चमकती है। आपको तो सदाकाल की प्राप्ति है। तो चेहरा सदा खुशी में दिखाई दे, उदास न हो।

जैसा बीज होगा वैसा ही फल निकलेगा और खुशी-खुशी से काम करके कमाई करेंगे तो वह पैसा भी खुशी दिलायेगा। वह दो रुपया भी दो हजार का काम करेगा और वह दो लाख दो रुपये का काम करेगा। इतना फर्क हैं, इसलिए चिंता क्या करेंगे! सच्ची दिल वालों को सच की कमाई मिलती है। बाप भी दाल-रोटी जरूर देते हैं। सुस्त रहने वाले को नहीं देंगे। काम तो करना ही पड़ेगा क्योंकि पिछले हिसाब भी तो चुक्त् कर रहे हैं। लेकिन चिंता से नहीं, खुशी से। कोई भी काम करो - योगयुक्त होकर करो।

याद में कोई भी काम करते तो थकावट नहीं होती। खुशी-खुशी से करते तो थकते नहीं। मज़बूर होकर करते तो थक जाते हैं। बाप ने डॉयरेक्शन दिया है - योग से हिसाब-किताब चुक्त् करो। तो बाप के डॉयरेक्शन पर खुशी-खुशी से वह काम भी करो, मज़बूरी से नहीं।

बंधन है, बंधन है यही सोचते जायेंगे तो कहां जायेंगे? पिंजड़े में ही जायेंगे! अंत में अगर बंधन याद रहा तो गर्भ-जेल में जाना पड़ेगा और खुशी-खुशी से जायेंगे तो एडवांसपार्टी में सेवा के लिए जायेंगे, इसलिए कभी भी अपने से तंग नहीं हो। खुश रहो। क्या करें, कैसे करें यह गीत नहीं गाओ। खुशी के गीत गाओ।

सदा यही याद रखना कि हमें स्वयं बाप ने कोटों में से कोई को चुना है। बाप ने ढूँढा और अपना बना लिया - इसी नशे वा खुशी में हर कार्य करते सफलतामूर्त बनते चलो। यही स्मृति वरदान रूप बन जायेगी, शक्तिशाली बना देगी।

25.12.89.. रोज दिलखुश मिठाई खाना माना सदा दिलखुश रहें। यह अलौकिक खुशी के दिन कितने थोड़े हैं! देवताई खुशी और ब्राह्मणों की खुशी में भी फर्क है। यह ब्राह्मण जीवन की परमात्म-खुशी, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति देवताई जीवन में भी नहीं होगी। इसलिए इस खुशी को जितना चाहे मनाओ। रोज़ समझो आज खुशी मनाने का दिन है। यहाँ आने से खुशी बढ़ गई है ना! यहाँ से नीचे उतरेंगे तो कम तो नहीं होगी? उड़ती कला अभी है, फिर तो जितना पाया उतना खाते रहेंगे। तो सदा यह स्मृति में रखो कि हम दिलखुश मिठाई खाने वाले हैं और दूसरों को खिलाने वाले हैं क्योंकि जितना देंगे उतना और बढ़ती जायेगी। देखो, खुशी का चेहरा सबको अच्छा लगता है और कोई दुःख अशान्ति में घबराया हुआ चेहरा हो अच्छा नहीं लगेगा ना! जब दूसरों का अच्छा नहीं लगेगा तो अपना भी नहीं लगना चाहिए। तो सदैव खुशी के चेहरे से सेवा करते रहो। मातायें ऐसी सेवा करती हो? घर वाले आपको देखकर खुश हो जाएँ। चाहे कोई ज्ञान को बुरा भी समझते हो फिर भी खुशी की जीवन को देखकर मन से अनुभव जरूर करते हैं कि इनको कुछ मिला है जो खुश रहते हैं। बाहर अभिमान से न भी बोलें लेकिन अन्दर महसूस करते हैं और आखिर तो झुकना ही है। आज गाली देते हैं कल चरणों पर झुकेंगे। कहाँ झुकेंगे? “अहो प्रभु” कहकर झुकना जरूर है। तो ऐसी स्थिति होगी तब तो झुकेंगे ना! कोई भी किसी के आगे झुकता है तो उसमें कोई बड़ा-पन होता है, कोई विशेषता होती है – उस विशेषता पर झुकता है। ऐसे तो कोई नहीं झुकेगा ना। दिखाई दे – इन जैसी जीवन कोई की है ही नहीं, सदा खुश रहते हैं। रोने की परिस्थिति में भी खुश रहें, मन खुश रहे। ऐसे ही नहीं हँसते रहो, लेकिन मन खुश हो। पाण्डव क्या समझते हैं? ऐसा अनुभव दूसरों को होता है या अभी कम होता है? खुशमिजाज़ रहने वाले अपने चेहरे से बहुत सेवा करते हैं। मुख से बोलो या नहीं बोलो लेकिन आपकी सूरत, ज्ञान की सीरत को स्वतः प्रत्यक्ष करेगी। तो यही याद रखना कि दिलखुश मिठाई खानी है और औरों को भी खिलानी है। जो स्वयं खाता है वह खिलाने के बिना रह नहीं सकता है। अच्छा!

सभी खुशानसीब हो ना! सदा खुशी के गीत बजते रहते हैं। जैसे भक्ति मार्ग में कहते हैं – ‘अनहद’ शब्द चलता रहे तो अनहद शब्द सुनने के लिए, चलाने के लिए कितनी मेहनत करते हैं, आप लोगों ने क्या मेहनत की? सदा खुशी के गीत स्वतः बजते रहते हैं, यह कभी खत्म नहीं होते। वह कितना भी बड़ा गीत बनाओ तो भी बंद हो जायेगा। आटोमेटिक भी होगा तो भी बैटरी खत्म हो जायेगी। ज़्यादा टाइम चलायेंगे तो बैटरी खत्म हो जायेगी या गर्म हो जायेगी और आपकी बैटरी कभी खत्म होती है? अविनाशी गीत है, इसीलिए अनहद है अर्थात् हद नहीं है। तो अनहद गीत बजता है या बजाना पड़ता है? और काम ही क्या है! गाओ और नाचो। योग लगाना भी क्या है! खुशी में नाचना ही तो है ना।

29.12.89.. .. जैसे मधुबन अपने घर में आते हो तो कितनी खुशी रहती है। जब से टिकेट बुक कराते हो तब से जाना है, जाना है – यह बुद्धि में याद रहता है ना! तो जब मधुबन घर की खुशी है तो आत्मा के घर जाने की भी

खुशी है। लेकिन खुशी से कौन जायेगा? जितना सदा यह 'आने' और 'जाने' का अभ्यास होगा। जब चाहो तब अशरीरी स्थिति में स्थित हो जाओ और जब चाहो तब कर्मयोगी बन जाओ – यह अभ्यास बहुत पक्का चाहिए।

7.3.90.. ..ब्राह्मण जन्म ही खुशी के झूले में हुआ है और जायेंगे भी तो खुशी के झूले में झूलते-झूलते जायेंगे। ऐसे ही जायेंगे या दर्द में जायेंगे? ऐसे तो नहीं समझेंगे – हाय, कर्मबंधन, कर्मभोग बहुत कड़ा है! चाहे कितना भी कड़ा हिसाब हो लेकिन आप चुक्त्तू करने वाले हैं। तो चुक्त्तू का सदा नशा रहता है। कितना भी पुराना कड़ा हिसाब हो, लेकिन जब चुक्त्तू होता है तो खुशी होती है। ऐसे हिम्मत है या घबरा जायेंगे? थोड़ा-सा दर्द होगा तो घबरायेंगे तो नहीं? जब परमात्मा के प्यारे बन गये तो उसे खुशी होगी ना। अच्छा!

वैसे भी देखो – किसी भी आत्मा से मिलते हैं, अगर कोई सदा खुश रहने वाला होता है तो वो चेहरा अच्छा लगता है या जो खुश नहीं होता है वह अच्छा लगता है? आप सदा चियरफुल रहते हो? नशे से कहो – हम नहीं खुश होंगे तो कौन खुश रहेगा? बापदादा हर एक बच्चे का खुश चेहरा देखना चाहते हैं। आपको भी वही पसंद है तो बाप को भी वही पसंद है। इसलिए बापदादा कहते हैं कि यह गीत सदा गाते रहो – “पाना था वो पा लिया, काम बाकी क्या रहा!” यह गीता आपका है ना! बापदादा ने ब्राह्मण जन्म होते ही सबको बड़े-ते-बड़ा खज़ाना “खुशी” दी। यह ब्राह्मण जन्म की गिफ्ट है। सिर्फ संभालने में कभी-कभी अलबेले हो जाते हो तब सदा नहीं होता है। बापदादा के पास बच्चों के लिए ही यह खज़ाने हैं। जिसको जितना चाहिए उतना मिलता है, हिसाब की बात नहीं है। सबका पूरा अधिकार है।

13.12.90... ..महाराष्ट्र में रहते हुए सच्चे स्वरूप में महान बन गये – यह खुशी रहती है ना? वे तो नामधारी महान हैं, महात्माएं हैं, लेकिन आप प्रैक्टिकल स्वरूप से महात्माएं हो। यह खुशी है ना? तो महान आत्माएं सदैव ऊंची स्थिति में रहती हैं। वो लोग तो ऊंचे आसन पर बैठ जाते हैं, शिष्यों को नीचे बिठायेंगे, खुद ऊंचे बैठेंगे लेकिन आप कहाँ बैठते हो? ऊंची स्थिति के आसन पर। तो कितना सहज आसन मिल गया है! भाग्य के आगे त्याग कुछ भी नहीं है। छोड़ा भी क्या? जेवर पड़े हैं, कपड़े पड़े हैं, घर में रहते हो। अगर छोड़ा है तो किचड़े को छोड़ा है। तो सदा श्रेष्ठ आसन पर स्थित रहने वाली महान आत्माएं हो। जितना सोचा नहीं था उतना ही अति श्रेष्ठ प्राप्ति के अधिकारी बन गये। इस भाग्य की खुशी है ना? दुनिया में खुशी नहीं है। काला पैसा है लेकिन खुशी नहीं है। खुशी के खजाने से सब गरीब हैं, भिखारी हैं। आप खुशी के खजाने से भरपूर हो। यह खुशी कितना समय चलेगी? सारा कल्प चलती रहेगी। आपके जड़ चित्रों से भी खुशी लेंगे। तो चेक करो कि इतनी खुशी जमा हुई है? ऐसे तो नहीं सिर्फ एक दो जन्म चलेगी, फिर खत्म हो जायेगी! इतना स्टॉक जमा करो जो अनेक जन्म साथ रहे। जिसके पास जितना जमा होता है उतना उसके चेहरे पर खुशी और नशा रहता है। आप कहो, न कहो, लेकिन आपकी सुरत बोलेगी। कहते हैं ना – ब्रह्माकुमारियाँ सदा खुश रहती हैं, पता नहीं क्या हुआ है इनको? दुःख में भी खुश रहती हैं। आप बोलो, न बोलो, आपकी सुरत, आपके कर्म बोलते हैं। ब्रह्माकुमार कुमारियों की निशानी ही है – खुश रहना। दुःख के दिन खत्म हो गये। इतना खजाना मिला, फिर दुःख कहाँ से आयेगा?

31.12.90.. ..सारे कल्प में ब्रह्माकुमार और कुमारी श्रेष्ठ हैं। देव आत्माएं भी ब्राह्मणों के आगे कुछ नहीं हैं। सदा इस नशे में रहो, सदा खुश रहो और दूसरों को भी सदा खुश रखो। रहो भी और रखो भी। मैं तो खुश रहता हूँ, ये नहीं। मैं सबको खुश रखता हूँ – यह भी हो। मैं तो खुश रहता हूँ – यह भी स्वार्थ है। ब्राह्मणों की सेवा क्या है? ज्ञान देते ही हो खुशी के लिए।

18.1.91... .. सदैव चलते-फिरते, उठते-बैठते यह स्मृति रखो कि हम चैतन्य चित्र हैं। सारे विश्व की आत्माओं की हमारे तरफ नज़र है। चैतन्य चित्र में सबके आकर्षण की बात कौन सी होती है? सदा खुशी होगी। तो सदा खुश रहते हो या कभी उलझन आती है? या वहाँ जाकर कहेंगे – यह हो गया इसलिए खुशी कम हो गई। क्या भी हो जाये, खुशी नहीं जानी चाहिए। ऐसे पक्के हो?

10.4.91... .. नशे की निशानी है अविनाशी रूहानी खुशी। सदा अपने को विश्व में खुशनसीब आत्माएं समझते हो? वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य अर्थात् श्रेष्ठ नसीब! खुशनसीब भी हो और सदा खुशी की खुराक खाते और खिलाते हो। साथ-साथ सदा खुशी के झूले में झूलते रहते हो। औरों को भी खुशी का महादान दे खुशनसीब बनाते हो। ऐसे अमूल्य हीरे तुल्य जीवन बनाने वाले हो। बन गये हैं या अभी बनना है? ब्राह्मण जीवन का अर्थ ही है – खुशी में रहना, खुशी की खुराक खाना और खुशी के झूले में रहना। ऐसे ब्राह्मण हो ना? सिवाए खुशी के और जीवन ही क्या है! जीवन ही खुशी है। खुशी नहीं तो ब्राह्मण जीवन नहीं। खुश रहना ही जीना है।

23.1.95... ..बापदादा यह देख रहे हैं कि बच्चों ने दिल से सेवा का साधन बनाया है। जैसा नाम है “इण्टरनेशनल इन्फॉर्मेशन सेन्टर” वैसे ही विश्व में बाप की प्रत्यक्षता की इन्फॉर्मेशन देने के लिए यह म्यूज़ियम निमित्त बनेगा। अनेक आत्माओं के टेन्शन समाप्त हो अपने बाप की तरफ अटेन्शन जायेगा। अनेक सुख-शान्ति-खुशी के लिए भटकने वाली आत्माओं को सच्चा सहारा मिलेगा। अनेक आत्माओं के भाग्य का सितारा चमकेगा। साथ-साथ बच्चों को भी सन्देश देने का गोल्डन चांस मिलेगा क्योंकि सेवा करना अर्थात् प्रत्यक्ष फल अनुभव करना।

23.2.97... ..बाप ने पहले भी सुनाया है कि वर्तमान समय आप बच्चों की विश्व को इस सेवा की आवश्यकता है जो चेहरे से, नयनों से, दो शब्द से हर आत्मा के दुःख को दूर कर खुशी दे दो। आपको देखते ही खुश हो जाएं। इसलिए खुशनुमा चेहरा या खुशनुमा मूर्त सदा रहे क्योंकि मन की खुशी सूरत से स्पष्ट दिखाई देती है। कितना भी कोई भटकता हुआ, परेशान, दुःख की लहर में आये, खुशी में रहना असम्भव भी समझते हों लेकिन आपके सामने आते ही आपकी मूर्त, आपकी वृत्ति, आपकी दृष्टि आत्मा को परिवर्तन कर ले। आज मन की खुशी के लिए कितना खर्चा करते हैं, कितने मनोरंजन के नये-नये साधन बनाते हैं। वह हैं अल्पकाल के साधन और आपकी है सदाकाल की सच्ची साधना। तो साधना उन आत्माओं को परिवर्तन कर ले। हाय-हाय ले आवें और वाह-वाह लेकर जाये। वाह कमाल है – परमात्म आत्माओं की! तो यह सेवा करो। समय प्रति समय जितना अल्पकाल के साधनों से परेशान होते जायेंगे, ऐसे समय पर आपकी खुशी उन्हों को सहारा बन जायेगी क्योंकि आप हैं ही खुशनसीब। खुशनसीब हैं या नहीं? अधूरे तो नहीं? हैं ही खुशनसीब। आप जैसा खुशनसीब सारे कल्प में कोई आत्मायें नहीं। इतना नशा चेहरे और चलन से अनुभव कराओ। करा सकते हो या कराते भी हो?

बापदादा सदा हर एक बच्चे को खुशनसीब के नशे में, खुशनुमा चेहरे में और खुशी की खुराक से तन्दरूस्त और सदा खुशी के खजानों से सम्पन्न देखने चाहते हैं। जीवन में चाहिए क्या? खुराक और खजाना। और क्या चाहिए? तो आपके पास खुशी की खुराक है या स्टॉक कभी खत्म हो जाता है? खुशी का खजाना अखुट है। अखुट है ना? और जितना खर्चा उतना बढ़े। अगर और कोई भी पुरुषार्थ नहीं करो सिर्फ एक लक्ष्य रखो - कुछ भी हो जाए, चाहे अपने मन के स्थिति द्वारा, चाहे कोई अन्य आत्माओं द्वारा, चाहे प्रकृति द्वारा, चाहे वायुमण्डल द्वारा कुछ भी हो जाए, मुझे खुशी नहीं छोड़नी है। यह तो सहज पुरुषार्थ है ना या खुशी खिसक जाती है? सहज है या कभी-

कभी मुश्किल है? दृढ़ संकल्प रखो और बातों को भूल जाओ। एक ही बात पक्की रखो - मुझे खुश रहना है। तो बातें क्या लगेंगी? खेल। और अपनी खेल देखने की साक्षीपन की सीट पर सदा स्थित रहो। चाहे कोई अपमान करने वाला हो, आपको परेशान कर अपने साक्षीपन की शान से नीचे उतारने वाले हों, लेकिन आप साक्षीपन की सीट से नीचे नहीं आओ। नीचे आ जाते हो तभी खुशी कम हो जाती है।

कोई भी कार्य करे लेकिन सबका संगठित रूप में सहयोग होना चाहिए और सबको खुशी होनी चाहिए कि हम प्रोग्राम कर रहे हैं। ऐसे नहीं कि फलाने कर रहे हैं, हम तो देख रहे हैं, नहीं। हम देखने वाले नहीं हैं, करने वाले हैं। चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा। छोटे बड़े जो भी हैं, चाहे स्टेज पर कार्य करें, चाहे घर बैठे मन्सा सेवा करें, वाचा सेवा करें, लेकिन सबको सेवा में सहयोग की अंगुली देनी ही है।

14.12.97... ..= दादी जानकी तथा सर्व दादियों को दृष्टि देते हुए:- अच्छी ड्युटी ली है? सभी को खुशी में नचाने की ड्युटी अच्छी है। अभी यही चाहिए। शिक्षा सुनने कोई नहीं चाहता। तो सभी आदि रत्न यह ड्युटी विशेष बजाओ। कोई कैसा भी हो लेकिन आपके सामने आने से खुशी में नाचना शुरू कर दे। डायरेक्ट दाता के बच्चे हो ना और पहली रचना हो। तो आदि रचना का प्रभाव तो है ना। तो बापदादा भी आदि रत्नों को विशेष स्नेह देता है स्पेशल। अभी ऐसे साधियों को तैयार करो जो वायुमण्डल फैलायें।

12.3.98(दिव्य सन्देश)... .. आज बच्चों को कहना कि जो भी व्यर्थ है उस सबको योग अग्नि में खत्म कर दें, ऐसा जला दें जो राख हो जाए, ज़रा भी नाम-निशान न रहे। ऐसे खत्म करें जैसे पास्ट इज़ पास्ट, न मन में रहे, न चित्त में रहे, न वर्णन में रहे। ऐसे खत्म कर दें जैसे था ही नहीं। शूद्र पन के जीवन की बातें खत्म, ब्राह्मण जीवन की फरिश्ता जीवन की बातें, देवता जीवन की बातें यही बुद्धि के अन्दर स्मृति में रहें। यही चिन्तन-वर्णन रहे तो बच्चे खुशी में उमंग-उत्साह में उड़ते रहेंगे। तो बाबा ने कहा कि बाबा चाहता है इतना ज्ञान का, प्रेम का, शान्ति का, आनंद का रंग चढ़े जो उसके ऊपर कोई दूसरा पुरानी दुनिया का रंग चढ़े ही नहीं।

13.3.98... .. जब कोई अच्छा कर्म करते हो तो कर्म का फल उसी समय प्रत्यक्ष रूप में खुशी, शक्ति और सफलता के कारण डबल लाइट रहते हो क्योंकि याद रहता है बाप के साथ से कर्म किया। ऐसे खुशानुमः बनो जो मन की खुशी सूरत से स्पष्ट दिखाई दे। खुशी के खजाने से सम्पन्न और खुशी की खुराक से तन्दरूस्त बनो। सदा खुशी में रहने के लिए साक्षीपन की सीट पर स्थित रहो।

21.11.98... .. जो भी नये-पुराने बच्चे आये हैं वह बहुत प्यार से पहुँचे हैं, बापदादा सभी बच्चों का स्नेह और चारों ओर सेवा के सहयोग को देख खुश हैं और बच्चे भी सदा खुश हैं। खुश रहते हो ना? कभी खुशी कम नहीं करना। यह स्पेशल बाप का खज़ाना है। इसलिए खुशी कभी नहीं छोड़ना। सदा खुश।

31.12.98... .. बापदादा को खुशी है, नाज़ है कि मेरा एक-एक बच्चा अनेक बार का विजयी है। एक बार नहीं, अनेक बार की विजयी आत्मायें हो। तो कभी यह नहीं सोचना, पता नहीं क्या होगा? होगा शब्द नहीं लाना। विजय है और सदा रहेगी। सब पक्के हैं? बहुत अच्छा। अभी फिर वहाँ जाकर ऐसा कमज़ोर समाचार नहीं लिखना कि दादियां, बाबा माया आ गई, ऐसे नहीं लिखना। मायाजीत हैं। हम नहीं होंगे तो और कौन होगा, यह रूहानी नशा इमर्ज करो।

13.2.99... .. बाप को बच्चों से मिलकर खुशी हो रही है कि बच्चों का बर्थ डे बाप मनाने आये हैं और बच्चे कहते हैं कि हम बाप का बर्थ डे मनाने आये हैं। बाप को भी खुशी है, बच्चों को भी खुशी है। क्यों? क्योंकि यह

बर्थ डे सारे कल्प में न्यारा और प्यारा है। सारे कल्प में ऐसा बर्थ डे किसका भी मनाया नहीं जाता है। बाप और बच्चों का साथ में एक ही समय पर बर्थ डे हो – यह और किसी भी समय वा किसी का भी होता ही नहीं है। तो पहले बापदादा बच्चों को पद्मपद्मपद्मगुणा मुबारक दे रहे हैं। बच्चों की मुबारक तो अमृतवेले से बहुतबहुत दिल से, दिल की मुबारक बापदादा के पास पहुँच ही गई है। बापदादा इतने सब बच्चों को, सालिग्रामों को देख यही खुशी के गीत दिल में गाते हैं कि वाह लाडले बच्चे वाह! वाह अलौकिक जन्म, अलौकिक सिक्कीलधे बच्चे वाह! वाह बर्थ डे मनाने वाले वाह!

तो आप सभी और चारों ओर के बच्चे दूर बैठे भी बहुत उमंग-उत्साह से यह न्यारा और प्यारा बर्थ डे मना रहे हैं। मना रहे हैं ना? सभी खुश हो रहे हैं कि बाप हमारा बर्थ डे मना रहे हैं और हम बाप का मना रहे हैं। कितनी खुशी है! खुशी को माप सकते हैं? माप है? इस दुनिया में, इस अलौकिक खुशी का कोई माप करने का साधन निकला ही नहीं है। अगर आपको कहें कि सागर जितनी खुशी है? तो क्या कहेंगे? कि सागर तो कुछ भी नहीं है। अच्छा आकाश जितनी है? तो आकाश से भी ऊँचे आपका घर है, आपका सूक्ष्मवतन है। इसलिए कोई माप-तौल निकला नहीं है, न निकल सकता है। इतनी खुशी है तो एक हाथ की ताली बजाओ।

1.3.99. . . बापदादा देखते हैं कभी-कभी बच्चे अपने को इसी आधार पर अच्छा समझ, खुश समझ धोखा दे देते हैं, दे भी रहे हैं। दे देते हैं और दे भी रहे हैं, यह भी एक गुह्य राज़ है। क्या होता है, बाप दाता है, दाता के बच्चे हैं, तो सेवा युक्तियुक्त नहीं भी है, मिक्स है, कुछ याद और कुछ बाहर के साधनों वा खुशी के आधार पर है, दिल के आधार पर नहीं लेकिन दिमाग के आधार पर सेवा करते हैं तो सेवा का प्रत्यक्ष फल उन्हीं को भी मिलता है; क्योंकि बाप दाता है और वह उसी में ही खुश रहते हैं कि वाह हमको तो फल मिल गया, हमारी अच्छी सेवा है। लेकिन वह मन की सन्तुष्टता सदाकाल नहीं रहती और आत्मा योगयुक्त पावरफुल याद का अनुभव नहीं कर सकती, उससे वंचित रह जाते। बाकी कुछ भी नहीं मिलता हो, ऐसा नहीं है। कुछ-न-कुछ मिलता है लेकिन जमा नहीं होता। कमाया, खाया और खत्म। इसलिए यह भी अटेंशन रखना। सेवा बहुत अच्छी कर रहे हैं, फल भी अच्छा मिल गया, तो खाया और खत्म। जमा क्या हुआ? अच्छी सेवा की, अच्छी रिज़ल्ट निकली, लेकिन वह सेवा का फल मिला, जमा नहीं होता। इसलिए जमा करने की विधि है – मन्सा, वाचा, कर्मणा - पवित्रता। फाउण्डेशन पवित्रता है। सेवा में भी फाउण्डेशन पवित्रता है। स्वच्छ हो, साफ़ हो। और कोई भी भाव मिक्स नहीं हो। भाव में भी पवित्रता, भावना में भी पवित्रता।

सभी कहते हो बाबा का घर है, बाबा के घर में जा रहे हैं। कितने लाडले हो गये हो। इसीलिए सदा खुश। स्वप्न में भी दुःख की लहर नहीं आवे। स्वप्न भी आवें तो खुशी के। उदासी के नहीं, थकावट के नहीं, मूँझने वाले नहीं। खुशी के। तो ऐसे है? ऐसे खुश रहो जो आपका खुशी का चेहरा देख रोने वाले भी खुश हो जाएं। ऐसी खुशी है ना? रोने वाले को हँसा सकते हो ना! चेहरा बदली नहीं हो। कभी ऐसा, कभी ऐसा नहीं। सदा मुस्कराता रहे।

जब सब मिला, तो जहाँ सर्व प्राप्ति हैं, वहाँ सदा खुशी है ही। ऐसे है ना? खुशी कम तब होती है जब कोई अप्राप्ति है। तो कोई अप्राप्ति है क्या? तो सदा खुश। खुशी अपनी खुराक है। तो खुराक को कोई छोड़ता है क्या? तो सदा खुश रहने वाले, औरों को भी खुशी बांटते हैं। जब भी आपको कोई देखे तो खुशी की झलक दिखाई दे। ऐसे अनुभव करते हो? बापदादा सदा हर बच्चे को खुशनसीब की नज़र से देखते हैं। खुशनसीब हैं और खुशमिजाज हैं।

सभी अपनी ड्यूटी पर खुश हो? या थोड़ा-थोड़ा ड्यूटी में खिंटखिंट है? कुछ भी हो जाए, यह पेपर पास करना है। बात नहीं है, पेपर है। तो पेपर पास करने में खुशी होती है ना। क्लास आगे बढ़ते हैं ना! तो बात हो गई, समस्या आ गई यह नहीं सोचो। पेपर आया पास हुआ, मौज मनाओ। जब बच्चे पेपर पास करके आते हैं तो कितने मौज में होते हैं, मूँझते हैं क्या! यह पेपर तो आयेंगे। पेपर ही अनुभव में आगे बढ़ाते हैं, इसलिए सदा मौज में रहने वाले। सेवाधारी नहीं लेकिन मौज में रहने वाले। सदा यह अपना टाइटल याद करो।

10.8.99(अव्यक्त सन्देश). ..बापदादा ने कुमारों के 25-25, 30-30 के ग्रुप बनवाये और उस एक-एक ग्रुप को अपनी बाहों में समाया और दिल से लगाते यही बोला कि “दिल में रहने वाले दिल से कभी दूर नहीं होना।” तो सभी खुशी में फूले नहीं समा रहे थे। ऐसे लग रहा था जैसे नदी सागर में समा जाती है, ऐसे सभी अव्यक्त मिलन में समाये हुए थे।

23.10.99... .. कितना भी बिजी हो, लेकिन पहले से ही साधन के साथ साधना का समय एड करो। होता क्या है – सेवा तो बहुत अच्छी करते हो, समय भी लगाते हो, उसकी तो मुबारक है। लेकिन स्व-उन्नति या साधना बीच-बीच में न करने से थकावट का प्रभाव पड़ता है। बुद्धि भी थकती है, हाथ पांव भी थकता है और बीच-बीच में अगर साधना का समय निकालो तो जो थकावट है ना, वह दूर हो जाए। खुशी होती है ना। खुशी में कभी थकावट नहीं होती है। काम में लग जाते हो, बापदादा तो कहते हैं कि काफी समय एक्शन-कान्सेस रहते हो। ऐसे होता है ना? एक्शन-कान्सेस की मार्क्स तो मिलती हैं, वेस्ट तो नहीं जाता है लेकिन सोल-कान्सेस की मार्क और एक्शन कान्सेस की मार्क में अन्तर तो होगा ना। फ़र्क होता है ना? तो अभी बैलेन्स रखो।

15.11.99... .. सदा खुश-राज़ी रहना। सिर्फ मधुबन में खुश नहीं रहना। बापदादा ने पहले भी सुनाया, कि चलते-चलते कोई भी नाराज़ क्यों होते हैं? कोई-न-कोई ज्ञान का राज़ भूलता है तब नाराज़ होते हैं। तो आप तो सब राज़ को समझ, सोच पक्के होके जा रहे हैं ना! कभी नाराज़ नहीं होना - न अपने ऊपर, न कोई आत्मा के ऊपर। खुश रहना। ऐसे तो नहीं सेन्टर पर जाकर खुशी का खज़ाना एक मास जमा रहेगा फिर धीरे-धीरे खत्म हो जायेगा? खत्म तो नहीं होगा ना? सदा साथ रखना।

30.11.99... .. सोशल वर्कर क्या करते हैं? किसका दुःख दूर करके खुशी देते हैं। उसको सेट करते हैं, आप तो दिमाग को सेट कर देते हो। यह सोशल वर्क नहीं है तो क्या है! तो सेवा बहुत करते हो लेकिन रिकार्ड कम तैयार करते हो। जैसे बाम्बे की अखबारें हैं उसमें डाल सकते हो कि इतनी आत्मायें आती हैं, इतने बच्चे आते हैं उन्हीं की खुशी के साधन हैं, उन्हीं की तन्दरुस्ती बनती है, ऐसे-ऐसे रिकार्ड तैयार करो।

15.12.99... .. अनादिकाल, आदिकाल, मध्यमकाल और अब अन्तकाल में भी हाइएस्ट हो, श्रेष्ठ हो। इतना नशा रहता है? बापदादा कहते हैं इस स्मृति को इमर्ज करो। मन में, बुद्धि में इस प्राप्ति को दोहराओ। जितना स्मृति को इमर्ज रखेंगे उतना स्मृति से रूहानी नशा होगा। खुशी होगी, शक्तिशाली बनेंगे। इतना हाइएस्ट आत्मा बने हैं। यह निश्चय है पक्का? कि हम ही हाइएस्ट, श्रेष्ठ बने थे, बने हैं और सदा बनते रहेंगे। नशा है?

मातायें तो सदा खुशी के झूले में झूलती हैं, झूलती हैं ना! माताओं को बहुत नशा रहता है, क्या नशा रहता है? हमारे लिए बाप आया है। नशा है ना! द्वापर से सभी ने नीचे गिराया, इसलिए बाप को माताओं पर बहुत प्यार है और खास माताओं के लिए बाप आये हैं। खुश हो रहे हैं, लेकिन सदा खुश रहना। ऐसे नहीं अभी हाथ उठा रहे हैं

और ट्रेन में जाओ तो थोड़ा-थोड़ा नशा उतरता जाए, सदा एकरस, अविनाशी नशा हो। कभी-कभी का नशा नहीं, सदा का नशा सदा ही खुशी प्रदान करता है। आप माताओं के चेहरे सदा ऐसे होने चाहिए जो दूर से रूहानी गुलाब दिखाई दो क्योंकि इस विश्व विद्यालय की जो बात सबको अच्छी लगती है, विशेषता दिखाई देती है वह यही कि मातायें रूहानी गुलाब समान सदा खिला हुआ पुष्प हैं और मातायें ही जिम्मेवारी उठाए, मातायें इतना बड़ा कार्य कर रही हैं। चाहे महामण्डलेश्वर भी हैं लेकिन वह भी समझते हैं कि मातायें निमित्त बनी हैं और ऐसे श्रेष्ठ कार्य सहज चला रही हैं।

बापदादा को भी खुशी होती है, जब संगठित रूप में मिलकर सेवा का प्लैन बनाते हैं। जिस प्लैन में सब तरफ के निमित्त बनी हुई आत्माओं की दृष्टि पड़ जाती है, वायब्रेशन मिल जाते हैं तो उस प्लैन में दुआयें भर जाती हैं और चारों ओर एक ही सेवा का प्लैन चलने से चारों ओर का फैला हुआ आवाज़, आवाज़ बुलन्द करता है।

3.3.2000... आज मनाने का और मुबारक का दिन है। मनाने के समय क्या करते हो? बैण्ड बजाते हो। तो बापदादा सभी बच्चों के मन के खुशी की बैण्ड कहो, बाजे, गाने सुन रहे हैं। भक्त लोग पुकारते रहते हैं और आप बच्चे बाप के प्यार में समा जाते हो। समा जाना आता है ना? यह समा जाना ही समान बनाता है।

30.3.2000.. सभी खुश हो रहे हैं ना या सोचते कि हम भी दादियां होते! अच्छा है सभी का प्यार, यही दुआयें देता है। प्यार है इसलिए सभी को खुशी होती है। बस खुश रहना, कभी भी मूड आफ नहीं करना। सदा एकरस खुशानुमः चेहरा हो। जो भी देखे उसे रूहानी खुशी की अनुभूति हो। यह सेवा का साधन है। चेहरे पर रूहानी खुशी हो, साधारण खुशी नहीं, रूहानी खुशी। फेस चेंज नहीं हो। जैसे एकरस स्थिति, वैसे ही एकरस चेहरा हो। हो सकता है? एकरस मूड हो? हो सकता है या होना ही है? होगा ना अभी? कभी भी कोई भी अचानक आपका फोटो निकाले तो और कोई फोटो नहीं आवे, रूहानी मुस्कराहट का फोटो हो। चाहे कामकाज भी कर रहे हो, सर्विस का बहुत टेन्शन हो लेकिन चेहरे पर खुशी हो। फिर आपको ज्यादा मेहनत भी नहीं करनी पड़ेगी। एक घण्टा बोलने के बजाए अगर आपका रूहानी मुस्कान का चेहरा होगा तो वह एक घण्टे के बोलने की सेवा एक सेकण्ड में करेगा क्योंकि प्रत्यक्ष को प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं होती है। जो भी मिले, जैसा भी मिले, गाली देने वाला मिले, इनसल्ट करने वाला मिले, इज्जत न रखने वाला मिले, मान-शान न देने वाला मिले, लेकिन आपका एकरस चेहरा, रूहानी मुस्कान। हो सकता है? कुमार हो सकता है? पाण्डव हो सकता है? और पुरुषार्थ से बच जायेंगे। मेहनत नहीं लगेगी। मुझे रूहानी मुस्कान ही मुस्कराना है। कुछ भी हो जाए, मुझे अपनी मुस्कान छोड़नी नहीं है, हो सकता है? सोच रहे हैं? (करके दिखायेंगे) बहुत अच्छा, मुबारक हो! जो सामने बैठे हैं उन्हीं को तो करना ही पड़ेगा। अच्छा है ना - खुद भी खुश दूसरे भी खुश और चाहिए क्या? बापदादा तो खुश है ही, दादियां भी खुश। (बाबा आप ऐसे ही मिलते रहें) और नहीं मिले तो खुशी गुम। आप सदा मुस्कराते रहें, बाप मिलता रहेगा। बहुत अच्छा।

8.4.2000(अव्यक्त सन्देश)..जैसे बाप मर्सीफुल है तो फालो फादर तो करना ही है क्योंकि आजकल आत्माओं को अपनी समस्याओं का समाधान मिलने की बहुत तड़फ है। ऐसी भटकती, तड़फती आत्माओं प्रति सेवा के निमित्त बनने से उन आत्माओं के दिल द्वारा जो दुआयें मिलती हैं, उससे निमित्त बनने वाली आत्माओं को अपने प्रति भी खुशी, शक्ति, शान्ति प्राप्त करने का, स्व-परिवर्तन करने का एक्स्ट्रा बल मिल जाता है।

25.9.2000.. ..बाबा ने मीठी-मीठी दृष्टि से सभी का यादप्यार लिया भी और यादप्यार दिया भी। उसके बाद बाबा ने कहा – देखो अभी मैं एक स्विच आन करता हूँ। बाबा ने नीचे पांव से दबाया, वहाँ तो आटोमेटिक है, तो सभी के मस्तक से तीन लाइट निकली, वह तीन रंग की लाइट मस्तक में लम्बी किरणों की तरह थी। उन लम्बी किरणों में तीन शब्द लिखे थे - शान्ति, शक्ति और खुशी। वो लाइट चारों ओर जैसे लम्बी किरणों में फैल रही थी। सभी के मस्तक से वह लाइट चारों ओर दूर-दूर सबके द्वारा पड़ रही थी। फिर बाबा ने कहा – बच्चों को 'पीस विलेज' विशेष किसलिए दिया है? तो बाबा ने कहा कि यहाँ से सभी को ये तीनों ही लाइट्स देनी हैं क्योंकि आज दुनिया में और सब साधन हैं, वह भी खास अमेरिका में तो सभी साधन हैं। लेकिन शान्ति नहीं है क्योंकि दिमाग भी फास्ट है। चलना, फिरना, खाना पीना भी फास्ट है, फास्ट लाइफ है। फिर बाबा ने कहा कि शक्ति भी नहीं है। प्लैन्स ज्यादा बनते हैं, प्रैक्टिकल में नहीं है। बाबा ने अमेरिका के बारे में कहा कि यदि यहाँ लोगों के फेस भी देखेंगे तो बहुत ही आफिशल हैं। चेहरे पर खुशी दिखाई नहीं देती, जैसे मर्ज है, इमर्ज नहीं है। सीरियस नहीं हैं लेकिन बहुत आफिशल दिखाई देते हैं। इसलिए इन तीनों चीज़ों की यहाँ विशेष आवश्यकता है। इसीलिए मैंने सभी बच्चों को इमर्ज किया है। बाबा ने कहा कि बच्चों को अभी सारे विश्व में तो स्मृति से मन्सा सेवा करनी ही है परन्तु पहले 'चैरिटी बिगेन्स एट होम' क्योंकि अमेरिका से आवाज़ निकालना है। खुशी मिल गई, शान्ति मिल गई, शक्ति मिल गई।

11.11.2000.. ..सब ठीक आराम से रहे हुए हो? मन भी आराम में, तन भी आराम में। दोनों ही आराम हैं ना! तो मुस्कराओ। सीरियस नहीं रहो। अब तो सब मिल गया बाकी क्या चाहिए। नाचो, गाओ। मुस्कराना अच्छा लगता है ना! ऐसे अच्छा नहीं लगता। मुस्कराना अच्छा लगता है ना! दिल में खुशी है ना तो खुशी का चेहरे पर मुस्कराना आता है। मुस्कराते रहो और औरों को भी मुस्कराना सिखाओ। ठीक है ना! अच्छा।

4.2.2001.. .. बहुत नाजुक समय आना ही है। ऐसे समय पर आप उड़ती कला द्वारा फ़रिश्ता बन चारों ओर चक्कर लगाते, जिसको शान्ति चाहिए, जिसको खुशी चाहिए, जिसको सन्तुष्टता चाहिए, फ़रिश्ते रूप में सकाश देने का चक्कर लगायेंगे और वह अनुभव करेंगे। जैसे अभी अनुभव करते हैं ना, पानी मिल गया बहुत प्यास मिटी। खाना मिल गया, टेन्ट मिल गया, सहारा मिल गया। ऐसे अनुभव करेंगे फ़रिश्तों द्वारा शान्ति मिल गई, शक्ति मिल गई, खुशी मिल गई। ऐसे अन्तःवाहक अर्थात् अन्तिम स्थिति, पावरफुल स्थिति आपका अन्तिम वाहन बनेगा। और चारों ओर चक्कर लगाते सबको शक्तियाँ देंगे, साधन देंगे। अपना रूप सामने आता है? इमर्ज करो। कितने फ़रिश्ते चक्कर लगा रहे हैं! सकाश दे रहे हैं, तब कहेंगे जो आप एक गीत बजाते हो ना - शक्तियाँ आ गई.... शक्तियों द्वारा ही सर्वशक्तिवान स्वतः ही सिद्ध हो जायेगा। सुना।

विशेष सेवा का चांस लेने से परिवार के, दादियों के, दादाओं के सामने आते हैं। और खुशी भी होती है, क्यों खुशी होती है, कारण? देखो सेन्टर पर सेवा करते हो कितनों की? चलो ज़्यादा-में-ज़्यादा 50-100, और यहाँ जब सेवा करते हो तो हजारों की सेवा करते हो और हजारों की सेवा के रिटर्न में जो सबकी दुआयें मिलती हैं ना, बहुत अच्छी सेवा की, बहुत अच्छी सेवा की। यह दुआयें निकलती हैं। वह दुआयें एक तो वर्तमान समय में खुशी दिलाती हैं और दूसरा जमा भी होती है। डबल फायदा है। इसलिए जिन्होंने सेवा की तो सेवा का मेवा खुशी भी मिली और जमा का खाता भी जमा हुआ। डबल फायदा हो गया ना!

25.11.2001... .. आपकी ब्राह्मण जीवन है ही खुशी में नाचने की और अपने भाग्य और भगवान के गीत गाने की।

बापदादा ने देखा कि जो भी मातायें मधुवन में पहुँची हैं उन्हीं को एक बात की बहुत खुशी है, कौन-सी खुशी है? कि बापदादा ने हम माताओं को विशेष बुलाया है। तो माताओं से विशेष प्यार है ना! नशे से कहती हैं - बापदादा ने बुलाया है। हमको बुलाया है, हम क्यों नहीं आयेगे! बापदादा भी सबकी रूहरूहान सुनते रहते हैं, यह खुशी का नशा देखते रहते हैं।

15.12.2001... .. रूहानियत की शक्ति वाली आत्मा सदा नयनों से औरों को भी रूहानी शक्ति देती है। रूहानी मुस्कान औरों को भी खुशी की अनुभूति कराती है। उनकी चलन, चेहरा फ़रिश्तों के समान डबल लाइट दिखाई देता है। ऐसी रूहानियत का आधार है पवित्रता।

31.12.2001... .. नव वर्ष मनाना, यह तो विश्व में सभी मनाते हैं। लेकिन आप सभी नव युग बना रहे हो। नव युग की खुशी हर बच्चे के अन्दर है। जानते हो कि नव युग अभी आया कि आया। दुनिया वालों का नव वर्ष एक दिन मनाने का है और आप सबका नव युग पूरा ही संगमयुग मनाने का है। नव वर्ष में खुशी मनाते, एक-दो को गिफ्ट देते हैं। वह गिफ्ट भी क्या है! थोड़े समय के लिए वह गिफ्ट है। नव युग रचता बाप आप सब बच्चों के लिए कौन-सी गिफ्ट लाते हैं? गोल्डन गिफ्ट, जिस गोल्डन गिफ्ट अर्थात् गोल्डन युग में सब स्वतः ही गोल्ड हो जाता है, नया हो जाता है। थोड़े समय के बाद नया वर्ष शुरू होगा लेकिन सब नया नहीं हो जायेगा। आपके नव युग में प्रकृति भी नई बन जायेगी। आत्मा भी नये वस्त्र (शरीर) धारण करेगी। हर वस्तु नई अर्थात् सतोप्रधान गोल्डन एज वाली होगी। तो नये वर्ष को मनाते आपके मन में, बुद्धि में नया युग ही याद आ रहा है। नव युग याद है ना, कि आज के दिन नया वर्ष याद है?

3.2.2002... .. सेवा द्वारा सभी को अनुभव है, जब भी मनसा सेवा या वाणी द्वारा वा कर्म द्वारा भी सेवा करते हो तो उसकी प्राप्ति आत्मिक खुशी मिलती है। तो चेक करो सेवा द्वारा खुशी की अनुभूति कहाँ तक की है? अगर सेवा की और खुशी नहीं हुई, तो वह सेवा यथार्थ सेवा नहीं है। सेवा में कोई न कोई कमी है, इसलिए खुशी नहीं मिलती। सेवा का अर्थ है आत्मा अपने को खुशनुमः, खिला हुआ रूहानी गुलाब, खुशी के झूले में झूलने वाला अनुभव करेगी। तो चेक करो - सारा दिन सेवा की लेकिन सारे दिन की सेवा की तुलना में इतनी खुशी हुई या सोच-विचार ही चलते रहे, यह नहीं ये, यह नहीं ये...? और आपकी खुशी का प्रभाव एक तो सेवा स्थान पर, दूसरा सेवा साथियों पर, तीसरा जिन आत्माओं की सेवा की उन आत्माओं पर पड़े, वायुमण्डल भी खुश हो जाए। यह है सेवा का खज़ाना खुशी।

11.3.2002... .. बापदादा को सभी के खुशनुमा: चेहरे देख बहुत-बहुत खुशी है। खुशानसीब हो और सदा खुशनुमः चेहरा है और औरों को भी सदा दिलखुश मिठाई खिलाते रहना। अमृतवेले यह मिठाई सभी याद से खालो। तो सारा दिन इस मिठाई की शक्ति रहेगी, खुशी रहेगी। अच्छा।

8.10.2002... .. बापदादा को भी खुशी होती है कि बच्चे अपनी प्रालब्ध बहुत सहज और श्रेष्ठ बना रहे हैं। बस सेवा, सेवा और सेवा। और किसी बातों में नहीं जाना। सेवा अर्थात् जमा करना। जितना भी समय मिलता है तो डबल कमाई करो। प्रत्यक्षफल भी, भविष्य भी। सेवा का चांस भी आप आत्माओं को प्राप्त है। सेवाधारियों से बापदादा का विशेष प्यार होता है क्योंकि बापदादा भी विश्व का सेवक है। तो समान हो गये ना! मन को बिज़ी रखते हो या खाली रखते हो? मधुवन अर्थात् याद और सेवा। चलते-फिरते मन याद में या सेवा में बिज़ी रहे। सभी

खुश रहते हो? कभी-कभी वाले तो नहीं हो? सदा खुश रहने वाले। आपकी खुशी को देख दूसरे भी खुश हो जाते हैं।

8.10.2002... सभी अपने को खुशानसीब समझते हो? सारे विश्व में सबसे बड़े ते बड़ा नसीब किसका है? हरेक क्या समझते हैं कि सबसे बड़े ते बड़ा नसीब मेरा है! हर एक ऐसा समझते हैं? जब खुशानसीब हैं तो खुश रहते हैं? सदा खुश रहते हैं? कभी-कभी तो नहीं ना! जब बापदादा ने भाग्य का सितारा चमका दिया तो चमकते हुए सितारे को देख खुश रहते हो? दिल में सदा खुशी के बाजे बजते हैं। बजते हैं? कौन सा गीत दिल गाती है? “वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य” – यह गीत गाते हो? सारा कल्प आपके भाग्य का गायन होता रहता है। आधाकल्प भाग्य की प्रालब्ध भोगते हो और आधा कल्प आपके भाग्य का गायन अनेक आत्मायें गाती रहती हैं। सबसे विशेष बात है कि बाप को सारे विश्व में से कौन पसन्द आया? आप पसन्द आये ना! कितनी आत्मायें हैं लेकिन आप ही पसन्द आये। जिसको भगवान ने पसन्द कर लिया, उससे ज्यादा क्या होगा! तो सदा बाप के साथ अपना भाग्य भी याद रखो। भगवान और भाग्य। सारे कल्प में ऐसी कोई आत्मा होगी जिसको रोज़ याद प्यार मिले, प्रभु प्यार मिले। रोज़ यादप्यार मिलता है ना। सबसे ज्यादा लाडले कौन हैं? आप ही लाडले हो ना। तो सदा अपने भाग्य को याद करने से व्यर्थ बातें भाग जायेंगी। भगाना नहीं पड़ेगा, सहज ही भाग जायेंगी।

18.1.2003... बापदादा ने ब्राह्मण जन्म लेते ही आदि से अब तक क्या-क्या स्मृतियां दिलाई हैं। वह स्मृतियों की माला याद करो, बहुत बड़ी माला बन जायेगी। सबसे पहली स्मृति सबको क्या मिली? पहला पाठ याद है ना! मैं कौन! इस स्मृति ने ही नया जन्म दिया, वृत्ति दृष्टि स्मृति परिवर्तन कर दी है। ऐसी स्मृतियां याद आते ही रूहानी खुशी की झलक नयनों में, मुख में आ ही जाती है। आप स्मृतियां याद करते और भक्त माला सिमरण करते हैं।

13.2.2003... चलते फिरते अपने को आत्मा करावनहार है और यह कर्मेन्द्रियां करनहार कर्मचारी हैं, यह आत्मा की स्मृति का अनुभव सदा इमर्ज रूप में हो, ऐसे नहीं कि मैं तो हूँ ही आत्मा। नहीं, स्मृति में इमर्ज हो। मर्ज रूप में रहता है लेकिन इमर्ज रूप में रहने से वह नशा, खुशी और कन्ट्रोलिंग पावर रहती है। मजा भी आता है, क्यों! साक्षी हो करके कर्म कराते हो। तो बार-बार चेक करो कि करावनहार होकर कर्म करा रही हूँ?

15.11.2003... सर्व खजानों से जो सम्पन्न आत्मा है उसकी निशानी सदा नयनों से, चेहरे से, चलन से खुशी औरों को भी अनुभव होगी। जो भी आत्मा सम्पर्क में भी आयेगी वह अनुभव करेगी कि यह आत्मा अलौकिक खुशी से, अलौकिक न्यारी दिखाई देती है। आपकी खुशी को देख दूसरी आत्मायें भी थोड़े समय के लिए खुशी अनुभव करेंगी। जैसे आप ब्राह्मण आत्माओं की सफेद ड्रेस सभी को कितनी न्यारी और प्यारी लगती है। स्वच्छता, सादगी और पवित्रता अनुभव होती है। दूर से ही जान जाते हैं यह ब्रह्माकुमार कुमारी है। ऐसे ही आप ब्राह्मण आत्माओं के चलन और चेहरे से सदा खुशी की झलक, खुशानसीब की फलक दिखाई दे। आज सर्व आत्मायें महान दुःखी हैं, ऐसी आत्मायें आपका खुशानुमः चेहरा देख, चलन देख एक घड़ी की भी खुशी की अनुभूति करें, जैसे प्यासी आत्मा को अगर एक बूंद पानी की मिल जाती है तो कितना खुश हो जाता है। ऐसे खुशी की अंचली आत्माओं के लिए बहुत आवश्यक है। ऐसे सर्व खजानों से सदा सम्पन्न हो।

बापदादा ऑटोमेटिक टी.वी. से सब बच्चों के चेहरे देखते रहते हैं। तो क्या दिखाई देता है? एक दिन आप भी अपने खुशी के चार्ट को चेक करो - अमृतवेले से लेकर रात तक क्या एक जैसी परसेन्टेज खुशी की रहती है? वा बदलती है? चेक करना तो आता है ना, आजकल देखो साइंस ने भी चेकिंग की मशीनरी बहुत तेज कर दी है।

तो आप भी चेक करो और अविनाशी बनाओ। सभी बच्चों का बापदादा ने भी वर्तमान पुरुषार्थ चेक किया। पुरुषार्थ सब कर रहे हैं - कोई यथा शक्ति, कोई शक्तिशाली। तो आज बापदादा ने सभी बच्चों के मन की स्थिति को चेक किया क्योंकि मूल है ही मनमनाभव।

15.12.2003... .. एक है अलौकिक श्रेष्ठ जन्म का भाग्य, दूसरा है - श्रेष्ठ सम्बन्ध का भाग्य, तीसरा है - सर्व प्राप्तियों का भाग्य। तीनों भाग्य के चमकते हुए सितारों को देख बापदादा भी हर्षित हो रहे हैं। जन्म का भाग्य देखो - स्वयं भाग्य विधाता बाप द्वारा आप सबका जन्म है। जब जन्म-दाता ही भाग्य-विधाता है तो जन्म कितना अलौकिक और श्रेष्ठ है। आप सबको भी अपने इस भाग्य के जन्म का नशा और खुशी है ना! साथ-साथ सम्बन्ध की विशेषता देखो - सारे कल्याण में ऐसा सम्बन्ध अन्य किसी भी आत्मा का नहीं है। आप विशेष आत्माओं को ही एक द्वारा तीन सम्बन्ध प्राप्त हैं। एक ही बाप भी है, शिक्षक भी है और सतगुरु भी है। ऐसे एक द्वारा तीन सम्बन्ध सिवाए ब्राह्मण आत्माओं के किसी के भी नहीं हैं। अनुभव है ना? बाप के सम्बन्ध से वर्सा भी दे रहे हैं, पालना भी कर रहे हैं। वर्सा भी देखो कितना ऊंचा और अविनाशी है। दुनिया वाले कहते हैं - हमारा पालनहार भगवान है लेकिन आप बच्चे निश्चय और नशे से कहते हो हमारा पालनहार स्वयं भगवान है। ऐसी पालना, परमात्म पालना, पर-मात्म प्यार, परमात्म वर्सा किसको प्राप्त है! तो एक ही बाप भी है, पालनहार भी है और शिक्षक भी है।

31.12.2003... .. बापदादा सिर्फ इशारा करते तो राइट हैण्डस कहते - हाँ बाबा, हाज़िर बाबा, अभी बाबा। ऐसे मुरब्बी बच्चों को देख कितनी खुशी होती! बापदादा को रूहानी फखुर है कि सिवाए बापदादा के और किसी भी धर्म आत्मा, महान आत्मा को ऐसी और इतनी सहयोगी भुजायें नहीं मिलती। देखो सारे कल्याण में चक्कर लगाओ ऐसी भुजायें किसको मिली हैं? थो बापदादा हर भुजा की विशेषता को देख रहे हैं। सारे विश्व से चुनी हुई विशेष भुजायें हो, परमात्म सहयोगी भुजायें हो। मन्सा, वाचा, कर्म द्वारा सेवा तो की लेकिन जमा की निशानी है - सेवा करते हुए पहले स्वयं की सन्तुष्टता। साथ-साथ जिन्हों की सेवा करते, उन आत्माओं में खुशी की सन्तुष्टता आई? अगर दोनों तरफ सन्तुष्टता नहीं तो समझो सेवा के खाते में आपकी सेवा का फल जमा नहीं हुआ।

जैसे कांटा पांव में चुब जाता है ना तो क्या होता रहता है? अन्दर ही अन्दर काटता रहता है ना। ऐसे झूठ बोलने वाले के अन्दर खुशी कभी नहीं होगी। कोई न कोई प्राबलम ही प्राबलम होगी। इसीलिए स्पष्ट आत्मा बनने से स्पष्टता श्रेष्ठ बना देती है। मदद मिल जाती है, लिफ्ट हो जाती है। तो अपनी विशेषता कभी कम नहीं करना। इस विशेषता की आप लोगों को बहुत मदद है।

रात्रि 12 बजे के बाद प्यारे अव्यक्त बापदादा ने नये वर्ष 2004 की बधाईयां सभी बच्चों को दी डबल विदेशियों के प्रति और भारत के बच्चों के प्रति डबल गुडनाइट और गुडमार्निंग दोनों ही दे रहे हैं। जैसे अभी खुश हो रहे हो ना! तो जब कोई बात ऐसी आवे तो आज के दिन को याद करके खुशी में झूमना। खुशी के झूले में सदा झूलते रहना। कभी दुःख की लहर नहीं आवे। दुःख देखने वाले तो दुनिया में अनेक आत्मायें हैं, आप सुख देखने, सुख देने वाले, सुखदाता के बच्चे सुख स्वरूप हो। कभी सुख के झूले में झूलो, कभी प्यार के झूले में झूलो, कभी शान्ति के झूले में झूलो। झूलते ही रहो। नीचे मिट्टी में पांव नहीं रखना। झूलते ही रहना। खुश रहना और सभी को खुश रखना और लोगों को खुशी बांटना। अच्छा।

2.2.2004... .. आप सबको भी दादियों को देखके खुशी होती है। खुशी होती है ना! जिम्मेवारी का सुख भी तो मिलता है ना! सबकी दुआयें कितनी मिलती हैं। सभी को खुशी होती है, (दोनों दादियाँ बापदादा को गले लगी) जैसे यह देखकर खुशी होती है वैसे इन्हों जैसे बनके कितनी खुशी होगी क्योंकि बापदादा ने निमित्त बनाया है

तो कोई विशेषता है तब निमित्त बनाया है। और वही विशेषतायें आप हर एक में आ जाएं तो क्या हो जायेगा? अपना राज्य आ जायेगा। जो बापदादा डेट कहते हैं ना, वह आ जायेगी। अभी याद है ना डेट फिक्स करनी है। हर एक समझे मुझे करनी है। तो सभी निमित्त बन जायेंगे तो विश्व का नव निर्माण हो ही जायेगा। निमित्त भाव, यह गुणों की खान है। सिर्फ हर समय निमित्त भाव आ जाए तो और सभी गुण सहज आ सकते हैं क्योंकि निमित्त भाव में मैं पन नहीं है और मैं पन ही हलचल में लाता है। निमित्त बनने से मेरा पन भी खत्म, तेरा, तेरा हो जाता है। सहजयोगी बन जाते हैं। तो सभी का दादियों से प्यार है, बापदादा से प्यार है, तो प्यार का रिटर्न है - विशेषताओं को समान बनाना। तो ऐसे लक्ष्य रखो। विशेषताओं को समान बनाना है। किसी में भी कोई विशेषता देखो, विशेषता को भले फालो करो। आत्मा को फालो करने में दोनों दिखाई देंगे। विशेषता को देखो और उसमें समान बनो।

17.2.2004... आप लोग आपस में हंसी में कहते हो ना, मरना तो पड़ेगा ही। लेकिन यह मरना भगवान की गोदी में जीना है। यह मरना, मरना नहीं है। 21 जन्म देव आत्माओं के गोदी में जन्मना है। इसीलिए खुशी-खुशी से समर्पित होते हो ना! चिल्ला के तो नहीं होते? नहीं। भक्ति में भी चिल्लाया हुआ बलि स्वीकार नहीं होती है। तो जो खुशी से समर्पित होते हैं, हृद के मैं और मेरे में, वह जन्मजन्म वर्से के अधिकारी बन जाते हैं।

वैसे तो सदा दुआओं के पात्र हो लेकिन यह दुआओं की भर-भर थालियां मिलती हैं। संगठन होता है ना। तो यह दुआयें अगर कायम रखेंगे तो आपके पुरुषार्थ में एक लिफ्ट की गिफ्ट हो जायेगी। अच्छा किया है। सबकी दुआयें खुशी बढ़ाती हैं। तो सदा इस दुआओं को साथ रखना। तो मुबारक हो। सेवा की मुबारक हो।

21.10.2005... सभी जो भी टीचर्स निमित्त बैठी हैं वह जितनी वी.आई.पी. का अटेंशन रखते हो, उतनी पालना स्टूडेंट की भी रखो। स्टूडेंट में नवीनता लाओ, कोई न कोई नवीनता लाने से उमंग-उत्साह बढ़ेगा। बहुत बिजी हो जाते हो सेवा में फिर थक जाते हो, फिर पालना इतनी रूचि से नहीं करते हो। पहले तो राजधानी तैयार करो। वह तो स्टूडेंट से ही होगी ना। दिल से पालना करो। एक-एक की कमजोरी हटाने की मेहनत करो। खुशी की मेहनत करो, बोझ वाली नहीं क्योंकि क्लास के स्टूडेंट जितना ज्यादा बढ़ेंगे उतनी राजधानी जल्दी तैयार होगी।

18.1.2006... जब से ग्लोबल हॉस्पिटल खुली है आबू में, तब से यह वायुमण्डल में फर्क आया है। आबू वाले भी बदल रहे हैं। तो अच्छा है, आपकी डिपार्टमेंट चाहे कोई स्थूल काम भी करते हो, दवाई देने का, लेकिन यह सेवा फैल रही है कि ब्रह्माकुमारियां डबल काम कर सकती हैं। तो अच्छा कर रहे हैं, करते रहना। कोने कोने में अपने मेडिकल द्वारा भी सबके मन में खुशी, आशा का दीपक जगाते चलो।

25.2.2006... यह ऐसी जयन्ती है जो इस एक जयन्ती में बहुत जयन्ती समाई हुई है। आप सभी को भी बहुत खुशी हो रही है ना कि हम बाप को मुबारक देने आये हैं और बाप हमको मुबारक देने आये हैं क्योंकि बाप और बच्चों का इकट्ठा जन्म दिन होना यह अति प्यार की निशानी है। बाप बच्चों के सिवाए कुछ कर नहीं सकते और बच्चे बाप के सिवाए नहीं कर सकते। जन्म भी इकट्ठा है और संगमयुग में रहना भी इकट्ठा है क्योंकि बाप और बच्चे कम्बाइन्ड हैं। विश्व कल्याण का कार्य भी इकट्ठा है, अकेला बाप भी नहीं कर सकता, बच्चे भी नहीं कर सकते, साथ-साथ है और बाप का वायदा है - साथ रहेंगे, साथ चलेंगे, साथ चलेंगे ना! वायदा है ना! इतना प्यार बाप और बच्चों का देखा है? देखा है वा अनुभव कर रहे हो? इसलिए इस संगमयुग का महत्व है और इसी मिलन

का यादगार भिन्न-भिन्न मेलों में बनाया हुआ है। इस शिव जयन्ती के दिन भक्त पुकार रहे हैं - आओ। कब आयेगे, कैसे आयेगे, यही सोच रहे हैं और आप मना रहे हैं।

14.3.2006... आपके जीवन की इतनी वैल्यु है जो एक-एक कदम आपका उत्सव के रूप में मनाया जाता है। क्यों? आपने पूरा संगमयुग उत्साह उमंग की जीवन बनाई है। आपकी जीवन का यादगार एक दिन का उत्सव मना लेते हैं। तो सभी की ऐसी सदा उत्साह, उमंग, खुशी की जीवन है ना! है या कभी-कभी है? सदा उत्साह है वा कभी-कभी है? जो समझते हैं कि सदा उत्साह में रहते हैं, खुशी में रहते हैं, खुशी हमारे जीवन का विशेष परमात्म गिफ्ट है, ऐसे अनुभव होता है? कुछ भी हो जाए लेकिन ब्राह्मण जीवन की खुशी, उत्साह, उमंग जा नहीं सकता। बापदादा हर बच्चे का चेहरा सदा खुशनुमः देखने चाहते हैं क्योंकि आप जैसा खुशनुमीब न कोई बना है, न बन सकता है। भिन्न-भिन्न वर्ग वाले बैठे हो तो ऐसा अनुभवी मूर्त बनने का स्व प्रति प्लैन बनाया है?

बापदादा को एक बात की खुशी है कि जिस ज़ोन का टर्न होता है, वह जी भरके आ जाते हैं। अच्छा है। चांस मिलता है और चांस लेना यह बहुत अच्छी बात है। एकस्ट्रा सेवा और याद का वायुमण्डल, मदद मिलती है। अपने जीवन की कहानी में यह दिन विशेष प्राप्ति के सदा याद रखना। मधुबन में जितने भी दिन रहे, कोई विघ्न आया? जिसको कोई विघ्न आया हो वह हाथ उठाओ। मातायें भी। अगर नहीं आया तो जमा खाता कितना किया? विघ्न नहीं आया इसकी मुबारक हो लेकिन आपको जमा का चांस मिला। गोल्डन चांस। कितना जमा किया, वह चेक किया? एकस्ट्रा कमाई जमा हुई? जिसकी हुई वह हाथ उठाओ। जमा हुई? अब यह दिन गोल्डन दिन जमा के दिन सदा अपने जीवन में विशेष यादगार रखना। कभी भी कोई विघ्न आये भी तो यह दिन याद करना। बिना ट्रेन के टिकेट के (बुद्धि द्वारा) मधुबन में पहुंच जाना।

30.10.2006 जितना अभ्यास करते हैं उतना पुण्य कमाते हैं, दूसरों को सेवा करके परिवर्तन कराना, यह सेवा का पुण्य जमा हो जाता है और यह पुण्य वर्तमान समय खुशी दिलाता है और भविष्य में भी जमा होता है।

16.11.2006... आबू निवासियों को नशा है ना, खुशी है ना, घर बैठे पुण्य जमा होता रहता है, प्यार और निःस्वार्थ से सेवा करते तो पुण्य की भण्डारी भरती जाती, ऑटोमेटिक। हाथ से डालने की जरूरत नहीं है सिर्फ प्यार से सेवा करने की बात है। तो दिल और चुल पर तो हो ही। चुल पर भी हो दिल पर भी हो, अभी आबू वालों ने कितने वारिस निकाले, हिसाब तो पूछेंगे ना!

16.11.2006... दादियों से:- सभी साथ देते चल रहे हैं-यह बापदादा को खुशी है, हर एक अपनी विशेषता की अंगुली देर हे हैं। (दादीजीसे) सभी को आदि रत्न देख करके खुशी होती है ना। आदि से लेके सेवा में अपनी हड्डियां लगाई है। हड्डी सेवा की है। बहुत अच्छा है। देखो कुछ भी होता है लेकिन एक बात देखो, चाहे बेड पर हैं, चाहे कहाँ भी हैं लेकिन बाप को नहीं भूले हैं। बाप दिल में समाया हुआ है। ऐसे है ना। देखो कितना अच्छा मुस्करा रही है। बाकी आयु बड़ी है, और धर्मराजपुरी सेटाटा करके जान है, सजा नहीं खानी है, धर्मराज को भी सिर झुकाना पड़ेगा। स्वागत करनी पड़ेगी ना। टाटा करना पड़ेगा, इसीलिए यहाँ थोड़ा बहुत बाप की याद में हिसाब पूरा कर रहे हैं। बाकी कष्ट नहीं है, बीमारी भले है लेकिन दुःख की मात्रा नहीं है। (परदादीसे) यह बहुत मुस्करा रही है। सबको दृष्टि दो।

31.12.2006... .. बापदादा को खुशी है कि हिम्मत वाले बच्चे हैं। चतुराई से जवाब देने वाले बच्चे हैं। क्यों? क्योंकि जानते हैं कि एक कदम हमारी हिम्मत का और हजारों कदम बाप की मदद का तो मिलना ही है। अधिकारी हो।

(रमेश भाई से) तबियत ठीक है, सम्भाल करो। (गोलक भाई से) अथक है ना या थक जाते हो। खिटखिट होती है लेकिन खिटखिट को खुशी के रूप में परिवर्तन करो। माला है ना। नम्बरवन और लास्ट कुछ तो अन्तर होगा ना, सब एक जैसे तो नहीं होंगे। ठीक है। ठीक चल रहा है।

02.02.07... बापदादा सदा कहते हैं कि सारे दिन में खुशी कभी नहीं गंवाओ। क्यों? खुशी ऐसी चीज़ है जो एक ही खुशी में हेल्थ भी है, वेल्थ भी है और हैपी भी है। खुशी नहीं तो जीवन नीरस रहती है। खुशी को ही कहा जाता है - “खुशी जैसा कोई खजाना नहीं।” कितने भी खजाने हो लेकिन खुशी नहीं तो खजाने से भी प्राप्ति नहीं कर सकते हैं। खुशी के लिए कहा जाता है - खुशी जैसी कोई खुराक नहीं। तो वेल्थ भी है खुशी और खुशी हेल्थ भी है और नाम ही खुशी है तो हैपी तो है ही है। तो खुशी में तीनों ही चीज़ें हैं। और बाप ने अविनाशी खुशी का खजाना दिया है, बाप का खजाना गंवाना नहीं। तो सदा खुश रहते? बापदादा ने होमवर्क दिया तो खुश रहना है और खुशी बांटनी है क्योंकि खुशी ऐसी चीज़ है जो जितनी बांटेंगे उतनी बढ़ेगी।

सभी बहुत-बहुत-बहुत खुश हैं, खुश है! बहुत खुश है? कितना बहुत? तो सदा ऐसे रहना। कुछ भी हो जाये होने दो, अभी खुश रहना है। हमें उड़ना है, कोई नीचे नहीं ला सकता। पक्का! पक्का वायदा है? कितना पक्का? बस, खुश रहो सबको खुशी दो। कोई भी बात अच्छी नहीं लगे तो भी खुशी नहीं गँवाओ। बात को चला लो, खुशी नहीं चली जाये। बात तो खत्म हो ही जानी है लेकिन खुशी तो साथ में चलनी है ना! तो जो साथ में चलने वाली है उसको छोड़ देते हो और जो छूटने वाली है उस छोड़ने वाली को पास में रख देते हो। यह नहीं करना। अमृतवेले रोज़ पहले अपने आपको खुशी की खुराक खिलाओ।

15.12.07... स्व परिवर्तन और विश्व परिवर्तन। कुछ भी हो जाए खुशी कभी नहीं गंवाना। सदा खुश रहना। खुश हैं। खुशी जायेगी तो नहीं? कभी नहीं जाये, सदा खुश रहना। खुशानसीब हो जो साथ मिला है। तो खुश रहना। परमात्म कार्य में लग गया तो वह कार्य क्या है? यह तो पक्का है, विजयी है। जो भाई ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनता है उसको अन्दर खुशी की अनुभूति होती है। तो खुशी हो ती है ना। क्योंकि अविनाशी बाप द्वारा आटोमेटिक प्राप्ति होती है तो सदा खुशानसीब हो। खुशानसीब हैं और खुशी देने वाले हैं। ठीक है।

02.02.08... एक कर्मणा सेवा की और दूसरी सेवा से वायुमण्डल शक्तिशाली बनाया, सन्तुष्ट करने का बनाया, उसका भी डबल पुण्य यज्ञ सेवा का प्रत्यक्षफल भी खाया, खुशी हुई ना। खुश रहे ना बहुत सभी। तो खुशी का प्रत्यक्षफल भी मिला और भविष्य भी जमा हुआ, डबल प्राप्ति की। क्योंकि सब देख करके खुश होते हैं कि कितनी निर्विघ्न सेवा हो रही है।

जो स्वयं को अनुभव होता है, वह औरों को देने के बिना रह नहीं सकते। खुशी है ना। तो खुशी बांटने के बिना रह नहीं सकेंगे। और आप भी खुशी देंगे। सब खुश होंगे ना यह खुश क्यों रहता है, तो सेवा हो जायेगी। यह भी सेवा करते।

18.01.09... एक तो जा हंगामा करने वाले हैं, उनसे सिक्युरिटी करते हो, दूसरे जो बिचारे चाहना रखते हैं कि हम सदा सुख में रहे, शान्ति में रहे, उनकी भी सिक्युरिटी करो, उन्हीं को मनमनाभव का मन्त्र देकर शिव

मन्त्र देकरके कम से कम खुश रहें , खुशी की सिक्कुरिटी , खुशी गंवायें नहीं यह सिक्कुरिटी का रास्ता बताओ । तो डबल सिक्कुरिटी करो तो कितनी आपके आशीर्वाद मिलेगी । दुःखी को सुखी करना, गमगी न को खुश करना तो आशीर्वाद मिलेगी और ऐसा हर एक के घर को छोटा सा मन्त्र दो, जो खुशी नहीं गंवाये , हर घर में खुशी हो , जितनी यह सेवा करेंगे तो डबल सिक्कुरिटी वाले बन जायेंगे । फैलाओ। हर स्थान पर यह रेसपान्सिबिल्टी दो, हैं तो सब स्थान वाले, अपने देश में पहले यह सिक्कुरिटी का काम करो , गांव गांव, बड़े बड़े स्थान, खुशनुमा हो जायें।

22.02.09... यह गीत नहीं दिल के गीत बिना मेहनत के खुशी हुई और स्टार्ट हो जाते हैं। खुशी दिल के गीतों की चाबी है। वाह बाबा, मीठा बाबा कहा, यह चाबी है। है ना चाबी? कभी कभी चाबी नहीं। सदा खुश। बापदादा को कोई भी बच्चे का चेहरा, बोल या कर्म थोड़ा भी चिंतन वाला चिंता वाला, व्यर्थ संकल्प वाला, दुविधा वाला चेहरा देखते हैं ना तो अच्छा नहीं लगता। भगवान के बच्चे अगर सदा खुश नहीं रहेंगे , तो कौन रहेंगे ! आप ही हो ना। चेहरा कभी भी चिंता वाला नहीं , शुभचिंतक। जब चिंता आवे ना किसी भी प्रकार की, तो बाप मेरे कम्बाइण्ड है, चिंता बाप को दे दो, शुभचिंतक आप बन जाओ। क्योंकि बापदादा सदा हर्षित रहते हैं ना तो बच्चे मुरझाये हुए हों, किसके बच्चे हैं? भगवान के। चेहरा कभी भी, चाहे पहाड़ आ जाए लेकिन पहाड़ को भी आप रुई बना सकते हो। बाप के साथ अपने को जोड़ लो तो क्या हो जायेगा? जो पहाड़ है वह रुई हो जायेगा क्योंकि सर्व शक्तिवान को साथ कर दिया ना। आप भले कमजोर हो लेकिन सर्व शक्तिवान आपके साथ कम्बाइण्ड है तो समय पर काम में लगाओ। कहने तक नहीं काम में लगाओ। तो सदा खुशनुमा चेहरा और दिल सदा खुशनुमा ब। बापदादा चैलेन्ज करें कि अगर खुशनुमा ब, खुशनुमा चेहरा देखना हो तो भगवान के नृपतियों पर देखो, करें चैलेन्ज। करें चैलेन्ज? कभी मुरझाना नहीं पड़ेगा। क्यों मुरझायें? कोई कमी हो तो मुरझाओ। क्या कमी है? खुशी की खुराक, मानों आपको कमी है कोई भी, हेल्थ की वेल्थ की, तो खुशी के लिए क्या कहते हैं? खुशी जैसा कोई खजाना नहीं। तो वेल्थ हुआ ना। है वेल्थ आपके पास। खुशी है? हाथ उठाओ। खुशी है ना! तो वेल्थ है। और खुशी जैसा कोई भोजन नहीं, खुशी जैसी कोई खुराक ही नहीं है चाहे 36 प्रकार की भोजन हो लेकिन खुशी नहीं तो सूखा। और खुशी है तो सूखी रोटी 36 प्रकार का सुख देगी और बाप का वायदा भी है जो सच्ची दिल, साफ दिल, बड़ी दिल। तीन बातें याद रखो सच्ची दिल, साफ दिल, बड़ी दिल यह तीनों बातें अगर याद रहें, तो कोई भी समय दुनिया की हालतें कैसी भी हों लेकिन तीन ही बातें याद हैं तो आप सबको दाल रोटी बाप खिलायेगा। दो चार सब्जी नहीं खिलायेगा। दाल रोटी खिलायेगा। दाल रोटी खाओ प्रभु के गुण गाओ। अनुभव किया है ना! पुराने जमाने पहले पहले आये हैं उन्होंने अनुभव कर लिया है। कभी भूखे रहे? और ही जो गुड़ है ना उसको बोर्नवीटा बनाके बापदादा हाथ से खिलाता था। और बापदादा के हाथ से रोटी खाते सबका पेट भर गया।

07.04.09... चेहरे द्वारा सदा खुशकिस्मत, मन सदा खुशी में नाचता रहे, कोई भी सामने आवे, अनुभव करे कि इन जैसी खुशी कहाँ भी नहीं है और सबक सीखके जाये।

15.11.09... सबके अन्दर खुशी का खजाना सदा ही चेहरे और चलन में दिखाई दे। खुशी अविनाशी बाप की देन है। तो अविनाशी बाप की देन को अविनाशी रखो। खुशी के लिए कहा जाता है - खुशी जैसी कोई खुराक नहीं, खुशी जैसा कोई खजाना नहीं। तो जिसके अन्दर सदा खुशी है उनके नयनों से, चेहरे से, चलन से

आटोमेटिक दिखाई देती है। बापदादा का वरदान है कि सदा खुश रहो और सदा खुशी बांटो क्योंकि खुशी बांटने से खुशी बढ़ेगी और कोई भी खजाना बांटने से कम होता है लेकिन खुशी का खजाना जितना बांटेंगे उतना बढ़ेगा। तो चेक करो खुशी का खजाना सदा कायम है?

इन्हों को देखकर खुश होती हो ना। इन्होंने अपनी जीवन कितनी अच्छी बनाई है, आप भी बना रही हो, खुश रहती हो ना। खुशी कभी नहीं गंवाना। खुशी जैसी और कोई खुराक नहीं, खुश रहना और औरों को भी खुशी बांटना।

30.11.09... जितना जो सेवा करते हैं उसका फल है सदा खुशी रहती है। सेवा का फल खुशी, निर्विघ्न।

18.01.10... बापदादा को यह खुशी है कि फिर भी टूलेट के बोर्ड के पहले आ गये, यह बहुत खुशी की बात है। आप लोग अगर आगे गये तो हम सब खुश होंगे यह नहीं कहेंगे कि आप क्यों, हम क्यों नहीं, नहीं। पहले आप।

28.02.10... बापदादा एक बात फिर से याद दिला रहा है कि अपना चेहरा सदा खुशनुमा, खुशी में चमकता रहे। बातें चली जायें लेकिन खुशी नहीं जाये। संगमयुग की खुशी परमात्म गिफ्ट है। तो होली अर्थात् कोई ऐसी बातें आवें तो याद करना कि होली मनाके आये हैं, जो होली बात हो ली, खुशी नहीं जाये। परमात्म सौगात, खजाना खुशी है। बापदादा सदा कहते हैं यह स्लोगन सदा याद रहे खुश रहना है और खुशी बांटनी है। जितना बांटेंगे उतनी बढ़ेगी और खुशनुमा चेहरा चलते फिरते ऑटोमेटिक सेवा करता रहेगा। जो भी देखेगा वह यही सोचेगा क्या मिला है। तो आज होली की दिलखुश मिठाई है खुशी। सबने खाई? सदा खाते रहना। इसमें कोई बीमारी नहीं होगी।

31.03.10... चेक करो सेवा तो की लेकिन पहले भी सुनाया कि सेवा की खुशी तब होती है जब स्वयं साथी और वायुमण्डल जब सभी सन्तुष्टता के वायुब्रेशन में हो।

खुश रहते हैं। खुशी तो रहती है ना! खुशी जाती तो नहीं? खुशी नहीं जानी चाहिए। क्योंकि खुशी परमात्म गिफ्ट है। परमात्म गिफ्ट सम्भाल वे रखनी चाहिए। बात, बात में हो गई, खुशी क्या जावें। बात पावरपुल या खुशी परमात्म गिफ्ट? तो यह भी कोशिश करो खुशी नहीं जाये। सदा फेस खुशनुमा रहे। खुशनुमा। रह सकती है खुशी? रह सकती है? कांध हिलाओ। रह सकती है अटेन्शन देंगे तो हो जायेगी ना। हो जायेगी? पीछे वाले? तो बापदादा सभी के लिए कह रहे हैं एक मास के बाद सभी से यह चार्ट मंगायेगे कि एक ही मास खुश रहा? आज की तारीख याद करना। सभी को कह रहे हैं सिर्फ फॉरेनर्स को नहीं। एक मास की ट्रायल करो, कोई भी बात आवे दिल में नहीं समाना। समझना बात राइट है रांग है क्या करना है लेकिन दिल में नहीं समाना। दिल में समा जाती है तभी खुशी जाती है। समझने वाला खुश रहेगा और बात को समझके पूरी करेगा। तो एक मास का पेपर है यह। खुश रहना है।

02.02.11... कहाँ भी कोई भी कार्य कर रहे हो लेकिन अपनी जीवन में खुशी कभी नहीं गंवाना। सदा खुश मिजाज क्योंकि खुशी है, कहते हैं खुशी जैसी कोई खुराक नहीं, तो जीवन की जीने की, जीते तो बहुत हैं लेकिन मजे से जीना, जीवन का मजा लेना, वह खुशी है तो। खुशी नहीं तो कभी कैसा, कभी कैसा। तो आप लोगों को देख करके दूसरों में भी खुशी आयेगी। क्योंकि जीवन में कुछ तो प्राप्ति चाहिए। तो सबसे बड़ी खुशी है। खुशी कभी नहीं गंवाना। पैसा चला जाए लेकिन खुशी नहीं जाये। पैसा आ जायेगा, खुशी से पैसा डबल हो जायेगा।

17.02.011... अपने काम में ज्यादा बिजी रहते हैं तो आप लोग उन्हीं को विशेष खुशी का अनुभव कराओ। हम सुखी भी रहते और खुश भी रहते, ऐसा रिकार्ड निकाले, कितने गांव में सर्विस की, उसमें कितनों ने अनुभव किया। क्योंकि अनुभव जो करते हैं वह भूलते नहीं हैं। अनुभव करो और कराओ तो यह रिजल्ट निकालना कितने गांव में कितनी आत्मायें खुश हुईं और कनेक्शन में रहती हैं।

02.03.11... ऐसा खुशी-खुशी से संकल्प करेंगे तो आप सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे मास्टर सर्वशक्तिवान के लिए क्या बड़ी बात है! सीट पर रहना, मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सदा सेट रहना।

20.03.12... बापदादा हर बच्चे को यही शिक्षा देने चाहते हैं कि सदा खुश रहो और खुशी बांटो। जितनी खुशी बांटेंगे उतनी खुशी बढ़ेगी। आपको खुशनुमा देख दूसरे भी 5 मिनट के लिए तो खुश होंगे। दुःखी आत्मायें अगर आपको देख करके 5 मिनट भी खुश हो जाएं तो उन्हीं के लिए तो बहुत दिलपसन्द बात है। तो आज बापदादा हर एक बच्चे को विशेष सन्तुष्टता की शक्ति चलन और चेहरे से धारण कर और अन्य को भी कराने का विशेष ध्यान खिचवा रहे हैं।

20.05.12... बापदादा हर बच्चे को यही शिक्षा देने चाहते हैं कि सदा खुश रहो और खुशी बांटो। जितनी खुशी बांटेंगे उतनी खुशी बढ़ेगी। आपको खुशनुमा देख दूसरे भी 5 मिनट के लिए तो खुश होंगे। दुःखी आत्मायें अगर आपको देख करके 5 मिनट भी खुश हो जाएं तो उन्हीं के लिए तो बहुत दिलपसन्द बात है। तो आज बापदादा विशेष सन्तुष्टता की शक्ति हर एक बच्चे को चलन और चेहरे से धारण कर और अन्य को भी कराने का विशेष ध्यान खिचवा रहे हैं।

05.04.13... तो आप इतने खुशमिजाज बच्चों को देख कितने खुश हो जायेंगे। तो पक्का प्रॉमिस करो, क्या करो? खुश रहेंगे और खुशी बांटेंगे। पक्का है? कि यहाँ भी कोई बात हो गई तो खुशी गायब हो जायेगी। नहीं। खुशी गायब होने की बात ही नहीं है। आज से सभी चेक करना। खुशी को जाने नहीं देना। है ताकत? है हाथ उठाओ। अच्छा। देखना। आपके ज़ोन वाले, आपके सेन्टर वाले आपका हाथ देख रहे हैं। बापदादा खुश है। हिम्मत तो रखी है। आपकी हिम्मत बाप की मदद साथ में रहेगी। सभी का फोटो तो निकाल रहे हो ना! फिर यह फोटो इस ज़ोन को भी देना। अगर आने वाले चाहें तो उन्हीं को यह फोटो देना। आज जैसी शक्ल सदा रहे। तो सभी को मंजूर है, सदा खुश रहेंगे और खुशी बांटेंगे? है मंजूर। दो दो हाथ उठाओ।

आप एक-एक को कोई भी दूर से देखे तो खुद भी मुस्कराये, आपके खुशी की शक्ल देख करके खुद भी खुश हो जाये, यह सेवा करेंगे!

अभी हर एक सेन्टर अपने साथियों को चेक करना, कहना नहीं कुछ, क्यों क्या नहीं कहना लेकिन अपनी शक्ल ऐसी प्यार की करना जो चुप हो जाए। ऐसी सेवा करेंगे ना! खुद रहना औरों को भी आप समान बनाना। कोई भी अचानक कभी भी किसी सेन्टर पर जाये तो ऐसे अनुभव करे कि हम खुशी के स्थान पर आये हैं। जहाँ खुशी है वहाँ सब कुछ है। कभी भी देखो, कोई भी किसी से विदाई लेते हैं, तो क्या कहते हैं? खुश रहो आबाद रहो। तो अभी बापदादा अचानक कोई को भेजेगा गुप्त, देखेंगे क्योंकि आप सभी बच्चे बड़े-बड़े बाप के बच्चे हो। बापदादा भी बच्चों को देख खुश हो रहे हैं और दिल से बधाई दे रहे हैं। सदा खुश आबाद रहो और आज तो बापदादा देख रहे हैं कि नये-नये भी बहुत आये हैं।

15.12.13... बापदादा भी लाडले बच्चों को देख खुश होते हैं। बच्चों को भी सदा खुशी में डांस करते हुए देखते हैं और सदा देखने चाहते हैं। खुशी में रहते तो हैं लेकिन बाप सदा चाहते हैं। सदा खुश रहते हो या खुशी में फर्क पड़ता है? कभी बहुत खुशी, कभी थोड़ी कम और कभी बहुत कम!

वर्तमान समय आप बच्चों की विश्व को इस सेवा की आवश्यकता है जो चेहरे से, नयनों से, दो शब्द से हर आत्मा के दुःख को दूर कर खुशी दे दो। आपको देखते ही खुश हो जाएं।

31.12.13... जैसे अभी दिलखुश हैं, अभी दिलखुश हैं ना! हैं खुश हाथ उठाओ। तो यह समय याद करना। जैसे अभी दिलखुश है इस दिलखुश समय को दोहराते रहो। और बापदादा सभी बच्चों का फोटो निकालेगा। वह फोटो साधारण नहीं होता है। तो सदा खुश, सदा खुश रहेंगे? पक्का? कितना पक्का? खुशी को जाने ही नहीं देना ना। खुश रहना, खुशी बांटना।

खुशनुमा चेहरा या खुशनुमा मूर्त सदा रहे क्योंकि मन की खुशी सूरत से स्पष्ट दिखाई देती है। कितना भी कोई भटकता हुआ, परेशान, दुःख की लहर में आये, खुशी में रहना असम्भव भी समझते हों लेकिन आपके सामने आते ही आपकी मूर्त, आपकी वृत्ति, आपकी दृष्टि आत्मा को परिवर्तन कर ले। आज मन की खुशी के लिए कितना खर्चा करते हैं, कितने मनोरंजन के नये-नये साधन बनाते हैं। वह हैं अल्पकाल के साधन और आपकी है सदाकाल की सच्ची साधना। तो साधना उन आत्माओं को परिवर्तन कर ले। हाय-हाय ले आवें और वाह-वाह लेकर जाये। वाह कमाल है – परमात्म आत्माओं की! तो यह सेवा करो। समय प्रति समय जितना अल्पकाल के साधनों से परेशान होते जायेंगे, ऐसे समय पर आपकी खुशी उन्हीं को सहारा बन जायेगी क्योंकि आप हैं ही खुशानसीब। खुशानसीब हैं या नहीं? अधूरे तो नहीं? हैं ही खुशानसीब। आप जैसा खुशानसीब सारे कल्प में कोई आत्मायें नहीं। इतना नशा चेहरे और चलन से अनुभव कराओ। करा सकते हो या कराते भी हो?

05.11.14... खुशी तो आपकी अपनी चीज़ है, खुशी कोई और चीज़ नहीं, अपनी चीज़ है वह अपने में लाओ बस और क्या करना है!

हर एक को चांस मिलता है और सब खुशी-खुशी से चांस को प्रैक्टिकल में लाते हैं। तो देखो कितने आये हुए हैं। सेवा का भाग्य बहुत अच्छा मिला हुआ है। ब्राह्मण ब्राह्मणों की सेवा करते हैं। यह भाग्य कितना प्यारा है और खुश कितने होते हैं। आप सबको खुशी हो रही है ना कि हमको चांस मिला है।

12.10.14... बापदादा को खुशी है कि हर बच्चा चाहे सिन्धी है चाहे हिन्दी है लेकिन हर बच्चा खुश रहता है मैजारिटी। यह देख करके बाबा बहुत खुश होता है। खुशी कभी नहीं गंवाना। बात होती है लेकिन बात हमारी खुशी क्यों ले जाये। खुशी हर एक की अपनी चीज़ है वह कभी नहीं जानी चाहिए। बातें आती हैं वह भी पेपर आता है। तो जो बच्चे अच्छे पुरुषार्थी हैं वह पेपर में सदा पास होते हैं उनके लिए पेपर कोई बड़ी बात नहीं। हैं ही रेडी।

14.10.15... हम हैं क्या और क्या बनने वाले हैं! नशा है, खुशी है, हम ही थे और हम ही हो रहे हैं। खुशी है! है खुशी तो हाथ उठाओ। हाँ देखो कितनी खुशी है क्योंकि हमारा युग आने वाला है।

तो खुशी होती है हमारा राज्य आ गया। बाप आया ही है राज्य देने के लिए। और सबको कितनी खुशी है! अब अपना राज्य होगा। हमारा राज्य। नशा कितना है! और राज्य की खुशी कितनी है! हमारा राज्य आया कि आया। कितनी खुशी है! बताओ। अभी तो दुःखी होना या रोना उसकी जरूरत ही नहीं है, खुशी के दिन आ गये, हमारा

राज्य आ गया, हमारा राज्य... नशा कितना है! दूसरे के राज्य में बहुत टाइम रहे अभी हमारा राज्य, खुशी है ना! भाईयों को खुशी है! बहनों को है? देखो, चारों ओर खुशी देख करके कितना अच्छा लग रहा है। कोई के दिल में दुःख की लहर नहीं, खुश और बापदादा भी आप सभी को इस खुशी की बहुत-बहुत-बहुत बधाई दे रहे हैं।

वह भी खुशी में ठीक हो जायेगी। फिर भी देखो वायुमण्डल का फर्क तो होता है ना। वहाँ और यहाँ रहने में तबियत में फर्क तो पड़ता है। सभी की तबियत ठीक है। कोई भी ऐसा बीमार नहीं है, सभी ठीक हैं, कोई बीमार नहीं हैं। खुश हैं तो बीमार नहीं। सब खुश है ना! हाथ उठाओ। यह खुशी ही खुराक है। और खुराक मिले या नहीं मिले। यह खुशी की खुराक अच्छी है।

31.12.15... आज बाबा आया खुशी है। बाबा की कमाल है जो यहाँ इतना समय बैठी। मैंने अन्दर से सोचा कल सुबह को भी मुरली सुनायेंगी। तो यह बाबा की हर कदम पर मदद है। यह (हंसा) निमित्त है मेरे को ट्रेवलिंग कराने की। बाबा आया तो कितनी खुशी हुई। अभी तो नये साल में सब निमित्त बने हुए बाबा के बच्चे हर एक अपने-अपने कार्य को अच्छे से अच्छा करेंगे ही।

11. क्षमा भाव

23.10.1970...जो भी बच्चा अपनी गलतियों को एक बार बाप के सामने रखता है उनको यह समझना चाहिए कि बाप के आगे अपनी कमियों को रखने के बाद अगर दुबारा कर लिया तो क्षमा के सागर के साथ 100 गुणा सजा भी ड्रामा प्रमाण स्वतः ही मिल जाती है। अपने को सौगुणा सजा से बचाने लिये सदैव बापदादा को अपने सामने रखो। हर कदम बापदादा को फालो करते चलना है।

06.09.1975... आप क्षमा के सागर हो, कृपालु हो, दयालु हो, रहमदिल हो- ऐसी कई बातों से रिझाते हैं। फिर बाप क्या करते हैं? बाप फिर लव (Love) और लॉ (Law) का बैलेन्स (Balance) रखते हैं।

03.02.1979... कैसी भी पतित आत्मा वा पुरुषार्थहीन आत्मा दोनों में से कोई भी हो अज्ञानी पतित आत्मा होगी और ब्राह्मण परिवार की पुरुषार्थहीन आत्मा होगी—दोनों आत्माओं के प्रति विश्व कल्याणकारी अर्थात् बेहद की दाता आत्मा, विश्व परिवर्तन अधिकारी आत्मा सदा उन आत्माओं की बुराई वा कमजोरियों को कल्याणकारी होने के नाते पहले क्षमा करेंगी। जैसे बेहद का बाप बच्चों को क्षमा करते हैं किस बात पर? बच्चों की बुराई वा कमजोरियों को दिल में न समाए क्षमा करते हैं, पूज्य देवता भक्तों पर क्षमा करते हैं। तो विश्व कल्याणकारी मास्टर रचता भी है, विश्व अधिकारी भी है अर्थात् छोटों के आगे बड़ा राजा के समान है, बाप के समान है, पूज्य आत्मा है, इन तीनों सम्बन्ध के आधार से बुराई वा कमजोरी दिल पर न रख क्षमा करेंगे। उसके बाद ऐसी आत्मा के कल्याण प्रति सदा हर आत्मा के वास्तविक स्वरूप ओर गुण को सामने रखते हुए महिमा करेंगे अर्थात् उस आत्मा को अपनी महानता की स्मृति दिलायेंगे। किसके बच्चे हो – किस कुल के हो! संगमयुग की विशेषता वा वरदान क्या है! बाप का कर्तव्य असम्भव को भी सम्भव करने का है, तुम आत्मा आदिकाल की राजवंशी हो, अब ब्रह्मावंशी हो, मास्टर सर्वशक्तिवान हो, इस प्रकार की महिमा करेंगे – जिससे वह आत्मा गुणों को सुनते हुए स्मृति और समर्थी में आये और कमजोरी को वा बुराई को मिटाने की हिम्मत में आये।

30.01.1988... जो आज सामना करता और कल क्षमा मांगता, उनके मुख से भी यही बोल निकलते – ‘बाबा तो बाबा है!’ इसको कहा जाता है सहनशीलता द्वारा फेल को भी पास बनाए विघ्न को पास करना।

17.12.1989... पत्र 3 पेज में भी लिखा जा सकता है। कोई को विस्तार से लिखने का डायरेक्शन मिलता है तो भल लिखो लेकिन दो लाइन में अपनी गलती की क्षमा ले सकते हो।

13.02.1991... अच्छे के साथ अच्छा चलना यह तो सभी जानते हैं। लेकिन अकल्याण के वृत्ति वाले को अपने कल्याण की वृत्ति से परिवर्तन करो या क्षमा करो। परिवर्तन न भी कर सकते, क्षमा तो कर सकते हो ना! मास्टर क्षमा के सागर तो हो ना! तो आपकी क्षमा उस आत्मा के लिए शिक्षा हो जायेगी। आजकल शिक्षा देने से कोई समझता, कोई नहीं समझता। यह करो तो यह शिक्षा हो जायेगी। क्षमा अर्थात् शुभ भावना की दुवाएं देना, सहयोग देना। शिक्षा देने का समय अभी चला गया। अभी स्नेह दो, सम्मान दो, क्षमा करो।

16.03.1992... अगर सच्ची दिल से कोई अपनी कमजोरी भी लिखता है तो बाप क्षमा का सागर उसी समय रिटर्न में क्षमा कर देता है।

30.11.1992.... दुआएं लेना और दुआएं देना—यह बीज है, इसमें झाड़ स्वतः ही समाया हुआ है। इसकी विधि है—दो शब्द याद रखो। एक है ‘शिक्षा’ और दूसरी है ‘क्षमा’, रहम। तो शिक्षा देने की कोशिश बहुत करते हो, क्षमा करना नहीं आता। तो क्षमा करनी है। क्षमा करना ही शिक्षा देना हो जायेगा। शिक्षा देते हो तो क्षमा भूल जाते

हो। लेकिन क्षमा करेंगे तो शिक्षा स्वतः आ जायेगी। शिक्षक बनना बहुत सहज है। सप्ताह-कोर्स के बाद ही शिक्षक बन जाते हैं। तो क्षमा करनी है, रहमदिल बनना है। सिर्फ शिक्षक नहीं बनना है। क्षमा करेंगे—अभी से यह संस्कार धारण करेंगे तब ही दुआएं दे सकेंगे।

26.03.1993... मन और बुद्धि को बिल्कुल व्यर्थ से फ्री करो। यही फास्ट गति को साधारण गति में ले आती है। इसलिए ये समाप्ति समारोह करो अर्थात् स्वाहा करो। बिल्कुल क्लीन। कैसा भी है, लेकिन क्षमा करो। शुभ भावना, शुभ कामना के वृत्ति से शुभ वायब्रेशन्स धारण करो।

13.03.1998... क्षमा के सागर के बच्चे मास्टर क्षमा करने वाली आत्मायें हो।

23.10.1999... कोई कैसा भी हो, क्या भी हो, मुझे देना है। तो दाता सदा ही बेहद की वृत्ति वाला होगा, हद नहीं और दाता सदा सम्पन्न, भरपूर होगा। दाता सदा ही क्षमा का मास्टर सागर होगा। इस कारण जो हद के अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार वह इमर्ज नहीं होंगे, मर्ज होंगे। मुझे देना है। कोई दे, नहीं दे लेकिन मुझे दाता बनना है।

10.08.1999... किसी से घृणा नहीं करना, क्षमा करना, शुभ भावना रखना।

04.11.2001... अभी तो सिर्फ बाप का रूप चल रहा है, शिक्षक और सतगुरु तो है ही। लेकिन बाप का रूप चल रहा है। क्षमा के सागर का पार्ट चल रहा है। लेकिन धर्मराज का पार्ट चला तो? क्या करेंगे? बापदादा यही चाहते हैं कि धर्मराज के पार्ट में भी वाह! बच्चे वाह! का आवाज कानों में गूंजे। फिर बाप को उलहना नहीं देना। बाबा, आपने सुनाया नहीं, हम तैयार हो जाते थे ना! इसलिए अभी हद की छोटी-छोटी बातों में, स्वभाव में, संस्कारों में समय नहीं गंवाओ।

24.02.2002... ब्रह्मा बाप को प्रत्यक्ष में देखा कैसी भी बार-बार गलती करने वाली आत्मा रही लेकिन बापदादा (विशेष साकार रूप में ब्रह्मा बाप) ने सर्व बच्चों प्रति याद-प्यार देते, सर्व बच्चों को मीठे-मीठे कहा। दो चार कडुवे और बाकी मीठे...क्या ऐसे कहा? फिर भी ऐसी आत्माओं के प्रति भी सदा रहमदिल बने। क्षमा के सागर बने। लेकिन अच्छा आपने अपनी वृत्ति में किसी के प्रति भी अगर निगेटिव भाव रखा, तो इससे आपको क्या फायदा है? अगर आपको इसमें फायदा है, फिर तो भले रखो, छुट्टी है। अगर फायदा नहीं है, परेशानी होती है..., वह बात सामने आयेगी। बापदादा देखते हैं, उस समय उसको आइना दिखाना चाहिए।

20.03.2004... शुभ चिंतक, शुभ चिंतन, शुभ भावना, परिवर्तन की भावना, सहयोग देने की भावना, रहम दिल की भावना इमर्ज करो। अभी मर्ज करके रखी है। इमर्ज करो। शिक्षा बहुत नहीं दो, क्षमा करो। एक दो को शिक्षा देने में सब होशियार हैं लेकिन क्षमा के साथ शिक्षा दो। मुरली सुनाने, कोर्स कराने या जो भी आप प्रोग्राम्स चलाते हो, उसमें भले शिक्षा दो, लेकिन आपस में जब कारोबार में आते हो तो क्षमा के साथ शिक्षा दो। सिर्फ शिक्षा नहीं दो, रहमदिल बनके शिक्षा दो तो आपका रहम ऐसा काम करेगा जो दूसरे की कमजोरी की क्षमा हो जायेगी।

15.11.2005... अगर कोई असफल करता है, तो बोल द्वारा शिक्षा द्वारा नहीं, अपने शुभ भावना, शुभ कामना और सदा शुभ सम्मान देने द्वारा सफल कराओ। सिर्फ शिक्षा नहीं दो, अगर शिक्षा देनी भी पड़ती है लेकिन क्षमा और शिक्षा, क्षमा रूप बनकर शिक्षा दो। मर्सीफुल बनो, रहमदिल बनो। आपका मर्सीफुल रूप अवश्य शिक्षा का फल दिखायेगा। देखो आजकल साइंस वाले भी पहले आपरेशन करते हैं, लेकिन पहले क्या करते हैं? पहले सुला देते हैं। पीछे काटते हैं, पहले ही नहीं काटते हैं, टिंचर भी लगाते हैं, पहले फूंक देते हैं फिर टिंचर लगाते हैं। तो

आप भी पहले मर्सिफल बनो, फिर शिक्षा दो तो प्रभाव डालेगी नहीं तो क्या होता है? आप शिक्षा देने लगते हो वह पहले ही आपसे ज्यादा शिक्षक है। तो शिक्षक, शिक्षक की शिक्षा नहीं मानता। जो प्वाइंट आप देंगे, ऐसे नहीं करो, ऐसे करो, उसके पास कट करने की 10 प्वाइंट होंगी। इसीलिए क्षमा और शिक्षा साथ-साथ हो।

31.03.2007... क्षमा में बाप के साथी बनो।

02.04.2008... एक सबजेक्ट में भी अगर पास विद ऑनर नहीं तो विजय माला का मणका बनना मुश्किल हो जायेगा। और एक दो के प्रति कैसे भी हो लेकिन ब्राह्मण परिवार का तो है, हर एक के प्रति शिक्षा भी हो और साथ में क्षमा भी हो।

31.12.2009... ब्राह्मणियाँ जो हैं क्लास टीचर्स, उन्हीं को भी अपने नये भाई-बहनों के ऊपर क्षमा करना है। हर सप्ताह इन्हीं का हालचाल पूछते रहना, को ई प्रॉब्लम तो नहीं है ! और को ई भी प्रॉब्लम हो तो सुना देना, उसका निवारण ले लेना। छोड़ नहीं देना। आया और गया, दिल में रखना नहीं।

अव्यक्त वाणी संकलित दिव्य गुणों की माला

भाग - 1

आकर्षणमूत
अचल / अखंड /
अडोल
आज्ञाकारी
ऑलराउण्डर /
एवररेडी
अलर्ट
अनासक्त
अन्तर्मुखता
एकांत एकांतप्रिय
एकाग्रता
एकरस / एकमत /
एकता
एकनामी, इकाँनामी

भाग - 2

अनुभवीमूर्त
अटूट / अटल /
अथक
अधिकारी
ब्लिसफूल
चियरफुल
केयर फुल
नालेजफुल
पॉवरफुल
सक्सेसफुल / सफलता
सेंन्सीबल / इसेन्सफुल
सर्विसएबल
दिव्यता
दृढ़ता

भाग - 3

इजी और अलर्ट
फेथफुल
फ्राकदिल
गम्भीरता ,
रमणीकता
गुह्यता
हर्षितमुख
हिम्मत / साहस
होलिएस्ट / ऑनेस्ट
जिम्मेवार
खुशी
क्षमा

भाग - 4

लॉ-फुल / ला मेकर
लकी और लवली
मधुरता
महीनता / महानता
नम्रता,
निर्माणता
नष्टोमोहा / मोहजीत
निद्राजीत
निमित्त
निराकारी/निर्विकारी/
निरंहकारी
निश्चय
निश्चित
न्यारा और प्यारा

भाग - 5

परोपकारी
पवित्रता, रियल्टी, रॉयल्टी
रहमदिल, दयाभाव
रिगार्ड रिस्पेक्ट/सत्कारी
रुहानियत
सदा ब्रह्मचारी
सहनशीलता / सरल चित
संतुष्टता / स्पष्टता
संयम
संतुलन (बैलेन्स)
शीतलता
शुभचिंतक

भाग - 6

स्नेह सहयोग
स्वतंत्रता
समीपता
साक्षीपन / साथीपन / ट्रस्टी
उपराम
सर्वस्व त्यागी
सिम्पलिसिटी
सच्चाई, सत्यता, निर्भयता
उमंग उत्साह
वफादार / फरमानवरदार
वैराग्य

अन्य किताबें

- मेरे ब्रह्माबाबा
- विकर्माजीत भव भाग 1-8
- दिव्य शक्तियाँ भाग 1-4
- सहज योग भाग 1-4
- उदाहरण मूर्त भव।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क : बी.के.निलिमा (मो) 9869131644,8422960681

स्वतंत्रता